Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृत व्याकरण सार

लेखक—

प्रो० रामचन्द्र शर्मा एम० ए०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

संस्कृत-व्याकरण-सार

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(With Exercises in Grammar and Translation)

FOR THE USE OF COLLEGE STUDENTS.

393

लेखक

प्रो० रामचन्द्र शर्म्मा, एम० ए०,

अध्यक्ष, संस्कृत विभाग,

श्रीमद्दयानन्द एँगलो-वैदिक कालेज,

जालन्धर ।

प्रकाशक

मोतीलाल बनारसीदास

पुस्तक प्रकाशक तथा विक्रेता,

पोस्ट बाक्स ७५ चौक, बनारस ।

तीय संस्करण १९४९ मूल्य ६)

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Extracts from the Preface of the 'Essentials of Sanskrit Grammar.'

It has been observed by the writer that an average college student knows very little of Sanskrit Grammar. To him Sanskrit Grammar is a bugbear. But without grammar it is almost impossible to have any fair knowledge of Sanskrit language. It is why such students fail to acquire a practical knowledge of the language, and most of them waste their time and energy in cram work. This dread of Sanskrit Grammar has become traditional in our sc[illegible] colleges, and is mainly responsible for the neglect o[illegible]s study by most of the students.

The writer has, t[illegible] tried to keep in view the requirements of our students in particular, and has included in the '*Essentials of Sanskrit Grammar*.' The vas[illegible] of Sanskrit Grammar has been covered by [illegible] sections only, and special care has been taken to avoid unnecessary details, that generally confuse and frighten the student rather than add to his knowledge. But nothing important has been overlooked. As to the treatment of the subject matter no departure has been made from the usual practice of Sanskrit Grammars. Every possible effort has been made to render the treatment as scientific and comprehensible as possible. Ready-made forms have generally been preferred to long and complicated rules. Special care has been taken to simplify the treatment of verb, so puzzling to the student. Paradigms of the most importont roots are given in all the tenses and moods and lists of important

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

forms have been added, wherever necessary. The subject of *'Sabdoccarana'* so poorly dealt in other grammars, has been fully treated, because the writer believes it to be the foundation of the science of grammar. The syntax portion, which affords a very good ground for a practical knowledge of the language, has duly been elaborated—but not in unnecessary details-with a view to teach the student how to translate a foreign language into Sanskrit.

An almost exhaustive list showing the changes in the meaning of roots by the addition of prepositions, has been included with illustrations. The book closes with two useful appendices, one deals with prosody and the other gives a list of verb... with ... important forms, for ready reference.

An Important Departure ... from the usual practic... has been made in in...cluding exercises for translatio... and composit... ...ion. Translation is of supreme value as a help to assimilate the knowledge of Sanskr... Grammar. The Universities too have rightly recognised its importance by alloting a fairly large numbe... of marks to it. Translation enables the student to have a practical acquaintance with the rules of grammar and to write simple Sanskrit correctly. So exercises appropriate to the rules, have been given throughout to enable the student to apply the same rules after he has learnt them. All the requirements of the University examinations in translation, composition, etc., will be supplied by these exercises. Though this novel feature has increased the volum... of the book, yet it is believed, it is sure to yiel... good result and remove that criminal apathy t... Sanskrit Grammar and translation.

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका

संस्कृत-व्याकरण-सार की रचना पंजाब यूनिवर्सिटी की नई पाठ्य-विधि के आधार पर की गई है। पंजाब यूनिवर्सिटी ने 'इन्टरमीडियेट' और 'बी० ए०' में हिन्दी को संस्कृत की परीक्षा का वैकल्पिक माध्यम बना दिया है। इसलिए इन विद्यार्थियों को हिन्दी माध्यम के संस्कृत व्याकरण की अत्यन्त आवश्यकता थी। इसे पूरा करने के लिए हमने अपने 'Essentials of Sanskrit Grammar' को हिन्दी माध्यम में परिणत कर दिया है। 'Essentials of Sanskrit Grammar' से संस्कृत के विद्यार्थी भली-भाँति परिचित हैं। पंजाब के कालेजों में विशेषतः और सामान्यतः अन्यत्र भी पिछले दस वर्षों में इसका प्रचार रहा है। इसलिए इसके हिन्दी रूपान्तर, 'संस्कृत-व्याकरण-सार', के विस्तृत परिचय की कोई आवश्यकता प्रतीत नहीं होती।

नई पाठ्य-विधि के अनुसार कुछ साधारण परिवर्तन किए गए हैं। सुबन्तों [illegible] शब्द-रूपावलियों के नीचे समान शब्दों को सूचियाँ सर्वत्र दी गई हैं। शब्दोच्चारण के विषय का भी यथावत् अनुपम निरूपण किया गया है। परस्मैपद और आत्मनेपद पर एक नया अध्याय बढ़ा दिया गया है।

'Essentials of Sanskrit Grammar' की भाँति इसकी विशेषता इसका रचना (syntax) भाग भी है। संस्कृत के व्यावहारिक ज्ञान के लिए इसका विवेचन अत्यन्त आवश्यक है। व्यावहारिक ज्ञान की आवश्यकता अनुभव करके प्रयोगात्मक अभ्यासों में और भी वृद्धि कर दी गई है। अभ्यास ही व्याकरण की उपयोगिता का आधार हैं। यह आवश्यकता पहली बार 'Essentials of Sanskrit Grammar' ने ही पूरी की। इसके पीछे जो भी व्याकरण लिखे गए उनमें या तो अभ्यास पाए ही नहीं जाते और यदि पाए जाते हैं तो नाममात्र और वे भी प्रयोगात्मक नहीं। सो इस पुस्तक में ऐसे अभ्यासों को और भी बढ़ा दिया गया है, जिससे परीक्षा की सभी ज़रूरतें पूरी हो सकेंगी।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुवाद भी 'Essentials of Sanskrit Grammar' की एक मुख्य विशेषता रही है। अनुभव ने सिद्ध कर दिया है कि अनुवाद द्वारा व्याकरण के जटिल नियमों का बोध सुगम और स्थायी होता है। परीक्षा का एक मुख्य विषय अनुवाद भी है। विद्यार्थी जो कुछ व्याकरण में प्रति दिन पढ़ें और उसका अनुवाद द्वारा अभ्यास भी करें तो उन्हें व्याकरण और अनुवाद दोनों पर अधिकार हो जाएगा। अनुवाद और व्याकरण को जुदा करने से दोनों अधूरे रह जाएँगे। अनुवाद के बिना संस्कृत का उचित ज्ञान संभव नहीं। किसी भाषा के लिखने के अभ्यास से प्राप्त ज्ञान ही स्थायी हो सकता है। इसलिए व्याकरण में इसका समावेश आवश्यक प्रतीत होता है। सो इस पुस्तक में भी अनुवाद के लिए अभ्यास निरन्तर दिए गए हैं।

पंजाब यूनिवर्सिटी की पाठ्य-विधि के बाहर भी कुछ विषयों का विवेचन किया गया है ताकि यह पुस्तक अन्य यूनिवर्सिटियों के विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को भी पूरा कर सके। पंजाब यूनिवर्सिटी की परीक्षाओं की पाठ्य-विधियाँ परिशिष्ट ३ में दी गई हैं। इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़ लेना उचित होगा। परिशिष्ट ४ में पंजाब यूनिवर्सिटी की परीक्षाओं के कुछ प्रश्न दिग्दर्शन के लिए दिए गए हैं।

जो भी संस्कृत व्याकरण हिन्दी में लिखे गए हैं वे प्रायः मैट्रिकुलेशन के लिये हैं। 'संस्कृत-व्याकरण-सार' ही पहला पुस्तक है जिसमें हिन्दी माध्यम में यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों के लिये वैज्ञानिक रूप में विषय प्रतिपादन किया गया है। सो कुछ इस कारण से कुछ समय के अभाव से जो कोई त्रुटियाँ रह गई हों उनके लिए हम अपने मित्र अध्यापक वर्ग और छात्रवर्ग से क्षमा चाहते हैं, और आशा करते हैं कि यह ग्रन्थ 'इन्टरमीडियेट' और 'बी० ए०' के विद्यार्थियों की सभी ज़रूरतों को पूरा करके बड़ी सरलता से उन्हें संस्कृत भाषा का व्यावहारिक और स्थायी ज्ञान देने में समर्थ होगा।

दयानन्द एँगलो-वैदिक कालेज,
जालंधर।
अक्तूबर १९४१।

रामचन्द्र शर्मा

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय संस्करण की भूमिका।

'संस्कृत व्याकरण सार' का दूसरा संस्करण बड़ी देर के पीछे प्रकाशित हो रहा है। युद्ध के दिनों में ही प्रथम संस्करण समाप्त हो गया था। परन्तु उस समय कागज का मिलना बड़ा कठिन था। इसलिए इसका प्रकाशन रुका रहा। १९४६ के अन्त में प्रकाशक महोदयों ने बड़े परिश्रम से कागज़ का प्रबन्ध किया और जनवरी १९४७ में प्रकाशन का काम आरंभ हुआ। परन्तु मार्च के आरंभ से ही लाहौर में गड़-बड़ आरंभ हो गई और अगस्त १९४७ के हत्या-कांड ने लाहौर को प्रायः समाप्त ही कर दिया। प्रकाशक महोदयों की, दुकान, मकान, प्रेस आदि सारी संपत्ति भस्मसात् हो गई, और लाहौर से सीधा उन्होंने बनारस में आश्रय लिया। वहां कुछ काम चलने ही लगा था कि इस बार जल के प्रकोप ने उन्हें आघेरा। सो बड़ी कठिनाइयों से इस संस्करण का प्रकाशन हो पाया है। इधर अनेक मित्रों, अध्यापकों तथा छात्रों के निरन्तर अनुरोध-पूर्ण पत्र आ रहे थे कि 'व्याकरण-सार' के अभाव में बड़ा कष्ट हो रहा है। सो ईश्वर का धन्यवाद है कि जैसे-कैसे अब यह संस्करण संपूर्ण हो गया है।

यह संस्करण प्रथम संस्करण की मानों आवृत्ति ही है। जो त्रुटियां, छापे की अशुद्धियां आदि रहगई थीं उनका सर्वत्र संशोधन कर दिया गया है। कुछ छोटे-मोटे परिवर्तन भी किए गए हैं जिस से अन्य विश्वविद्यालयों के छात्रों को आवश्यकताएँ भी पूरी हो जाएँगी।

प्रकाशकों ने पूरा प्रयत्न किया है कि छपाई आदि पूर्ववत् सुन्दर हो। वर्तमान स्थिति में जो कुछ संभव था सो किया गया है। इसके लिए ला० सुन्दरलाल का धन्यावाद है।

अन्त में मित्र अध्यापक वर्ग का भी धन्यवाद है, जिन्होंने 'संस्कृत व्याकरण-सार' को अपना कर इसे प्रान्त भर तथा इसके बाहर भी सर्वप्रिय बनाने की कृपा की है। आशा है इस अनिवार्य विलंब के लिए अध्यापक महोदय तथा छात्र हमें क्षमा प्रदान करेंगे। इति।

दयानन्द एँगलो-वैदिक कालेज,
जालन्धर।
जून १९४९।

रामचन्द्र वर्मा

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ॐ

संस्कृत-व्याकरण-सारः ।

प्रथमोऽध्यायः ।

वर्ण–शिक्षा

१. वर्ण-माला ।

१. संस्कृत भाषा प्राधान्यतः देवनागरी लिपि में लिखी जाती है, परन्तु भिन्न भिन्न प्रान्तों में बंगाली, उड़िया, आदि लिपियों का भी प्रयोग होता है। दक्षिण भारत के द्रविड प्रान्तों में निरन्तर द्रविड़ अक्षरों में संस्कृत लिखी जाती है।

२. देवनागरी वर्ण-माला का जन्म ब्राह्मी लिपि से हुआ है। आठवीं शताब्दी के मध्य में यह वर्ण-माला अपने वर्तमान रूप की विशेषताओं को धारण कर चुकी थी। इस वर्ण-माला में ४६ वर्ण हैं, जिनमें तेरह स्वर और तैंतीस व्यंजन हैं।

३. तेरह स्वरों में नौ सादे (Simple) स्वर हैं और चार संध्यक्षर (Dipthongs)

(१) सादे स्वरः—अ (—), इ (ि), उ (ु)' ऋ (ृ), ऌ (ॢ)
आ (ा), ई (ी), ऊ (ू), ॠ (ॄ)

(२) संध्यक्षर :—ए (े), ऐ (ै), ओ (ो), औ (ौ)[1]

---

१ स्वरों के ऊपर लिखे रूप शब्दों के आरंभ में ही रहते हैं। जब स्वर शब्दों के बीच या अन्त में हों तो मात्रा अर्थात् बदले हुए रूप में लिखे जाते हैं।

अ—की कोई मात्रा नहीं। सब व्यंजनों में 'अ' मौजूद होता है। जिस व्यंजन में 'अ' नहीं होता उसे हलन्त कहते हैं। जैसे, क् च् , म्।

इ—की मात्रा (ि) व्यंजनों के पहले (बएँ) लगाई जाती है। जैसे, क + इ = कि, म + इ = मि।

आ (ा), ई (ी) ओ (ो) और औ (ौ) की मात्राएँ व्यंजनों

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४. उच्चारण के अनुसार व्यंजन तीन भागों में विभक्त हैं:—(१) स्पर्श 'mutes' (१) अन्तस्थ 'semivowels' और (२) ऊष्म 'sibilants'. स्पर्श वर्णों की संख्या २५ है और ये पाँच पाँच वर्णों के पाँच वर्गों में विभक्त हैं। प्रत्येक वर्ग अपने प्रथम वर्ण से प्रसिद्ध है :—

(क) स्पर्श—१. कवर्ग—क् ख् ग् घ् ङ्।
२. चवर्ग—च् छ् ज् झ् ञ्।
३. टवर्ग—ट् ठ् ड् ढ् ण्।
४. तवर्ग—त् थ् द् ध् न्।
५. पवर्ग—प् फ् ब् भ् म्।
(ख) अन्तस्थ —य् र् ल् व्।
(ग) ऊष्म —श् ष् स ह्।[1]

५. इन ३३ व्यंजनों के अतिरिक्त अनुस्वार (ं) 'nasal'[2] और विसर्जनीय या विसर्ग (ः) 'spirant'[3] दो और अक्षर व्यंजनों में प्राय:

के पीछे (दाहिने) लगाई जाती हैं। जैसे, का की को कौ।

उ (ु), ऊ (ू), ऋ (ृ), ॠ (ॄ), और ऌ (ॢ) की मात्राएँ व्यंजनों के नीचे लगाई जाती है। जैसे, कु, पू, तृ, कॄ, कॢ।

ए (े) और ऐ (ै) की मात्राएँ व्यंजनों के उपर लगाई जाती हैं। जैसे, के, गै।

१. महर्षि पाणिनि ने समस्त वर्णों को नीचे लिखे १४ माहेश्वर सूत्रों में दिया है:—

अइउण्। ऋऌक्। एओङ्। ऐऔच्। हयवरट्। लण्। ञमङणनम्। झभञ्। घढधष्। जबगडदश्। खफछठथचटतव्। कपय्। शषसर्। हल्।

यहां अन्त का अक्षर वर्णमाला में नहीं गिना जाता। यह केवल प्रत्याहार दर्शाने को है। जैसे, अच् = स्वर, हल् = व्यंजन, यण्=अन्तस्थ, शल् = ऊष्म। ह्रस्व स्वरों में दीर्घ स्वर भी शामिल है। ऌ का दीर्घ नही होता।

२. अनुनासिक (ँ) का प्रयोग केवल सन्धि में पाया जाता है। जैसे, पुँस्कोकिलः।

३. रूप-भेद से विसर्जनीय के जिह्वामूलीय और उपध्मानीय (ᳵ) दो और नाम भी हैं। ये क्रमशः क, ख और प, फ से पूर्व आते हैं। प्राचीन शिला-लेखों में इनका प्रयोग मिलता है, साधारण संस्कृत में नहीं।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिने जाते हैं, जिससे व्यंजनों की संख्या ३५ हो जाती है। अनुस्वार और विसर्ग सदैव स्वरों के पीछे प्रयुक्त होते हैं। इस लिए इन्हें स्वर भी माना जाता है।

६. जब दो या अधिक व्यंजनों के बीच में कोई स्वर न हो तो उनका संयोग हो जाता है और ऐसे व्यंजनों को संयुक्त अक्षर कहते हैं। संयोग के कुछ नियम नीचे दिए जाते हैं:—

(१) संयोग में जिस क्रम से व्यंजनों का उच्चारण होता है उसी क्रम से वे लिखे जाते हैं। जैसे त् + क = त्क, क् + त = क्त।

(२) यदि संयोग में पहला व्यंजन पाई वाला हो, तो पाई का लोप हो जाता है। जैसे, ज् + म = ज्म, ग् + य = ग्य, त् + न = त्न।

(३) यदि संयोग में पहला वर्ण बिना पाई और दूसरा पाई वाला हो, तो बिनापाई का व्यंजन अधकटा लिखा जाता है। जैसे, द् + य = द्य, द् + म = द्म, ह् + म = ह्म।

(४) बिना पाई के व्यंजनों के संयोग में दूसरा पहले के नीचे लिखा जाता है जैसे, ङ् + क = ङ्क, ट् + ट = ट्ट, ड् + ड = ड्ड।

(५) यदि संयोग में र किसी व्यंजन से परे आए तो उसके नीचे लिखा जाता है, जैसे, क् + र = क्र, म् + र = म्र, छ + र = छ्र, ट + र = ट्र।

और यदि र् किसी व्यंजन से पहले आए तो उसके ऊपर मात्रा (यदि हो) के पीछे लिखा जाता है। जैसे, र + ण = र्ण, र् + क = र्क, वर्णौः, अर्केन्दुः, निर्ऋति।

(६) कुछ संयुक्त वर्णों में वर्णों का असली रूप स्पष्ट जान नहीं पड़ता। जैसे, क् + त = क्त, त् + त = त्त, त् + र = त्र, क् + ष = क्ष, ज् + ञ = ज्ञ।

७. कुछ प्रसिद्ध संयुक्त व्यंजनों को सूची नीचे दी जाती है :—

क्क or क्क k-ka, क्ख or क्ख k-kha, क्त k-ta, क्त्य k.t-ya, क्त्र or क्त्र k-t-ra, क्त्व or त्क k-t-va, क्न k-na, क्न्य k-ya, क्म k-ma, क्य k-ya, क्र or क्र k-ra, क्र्य or क्र्य k-r-ya, क्ल k-la, क्व k-va, क्ष k-ṣa, क्ष्ण k-ṣ-ṇa, क्ष्य k-ṣ-ya, क्ष्व k-ṣ-va.

ख्य kh-ya, ख्र kh-ra, ग्ध g-dha, ग्य g-ya, ग्र g-ra, ग्र्य g-r-ya, घ्न gh-na, घ्न्य gh-n-ya, घ्म gh-ma, घ्य gh-ya, घ्र gh-ra, ङ्क ṅ-ka, ङ्क्त ṅ-k-ta, ङ्क्त्य ṅ-k-t-ya, ङ्क्य ṅ-k-ya, ङ्क्ष ṅ-k-ṣa, ङ्क्ष्व ṅ-k-ṣ-va, ङ्ख ṅ-kha, ङ्ख्य ṅ-kh-ya, ङ्ग ṅ-ga, ङ्ग्य ṅ-g-ya, ङ्घ ṅ-gha, ङ्घ्य ṅ-gh-ya, ङ्घ्र ṅ-gh-ra, ङ्ङ ṅ-ṅa, ङ्न ṅ-na, ङ्म ṅ-ma, ङ्य ṅ-ya.

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

च्च c-ca, च्छ c-cha, च्छ्र c-ch-ra, च्ञ c-ña, च्म c-ma, च्य c-ya, छ्य ch-ya, छ्र ch-ra, ज्ज j-ja ज्झ j-jha ज्ञ j-ña, ज्ञ्य j-ñ-ya, ज्म j-ma, ज्य j-ya, ज्र j-ra, ज्व j-va, ञ्च ñ-ca, ञ्च्म ñ-c ma, ञ्च्य ñ-c-ya, ञ्छ ñ-cha, ञ्ज ñ-ja, ञ्ज्य ñ-j-ya.

ट्ट ṭ-ṭa, ट्य ṭ-ya, ठ्य ṭh-ya, ठ्र ṭh-ra, ड्ग ḍ-ga, ड्ग्य ḍ-g-ya, ढ्य ḍh-ya, ढ्र ḍh-ra, ण्ट ṇ-ṭa, ण्ठ ṇ-ṭha, ण्ड ṇ-ḍa, ण्ड्य ṇ-ḍ-ya, ण्ड्र ṇ-ḍ-ra, ण्ड्र्य ṇ-ḍ-r-ya, ण्ढ ṇ-ḍha, ण्ण ṇ-ṇa, ण्म ṇ-ma, ण्य ṇ-ya.

त्क t-ka, त्क्र t-k-ra, त्त t-ta, त्त्य t-t-ya, त्त्र t-t-ra, त्त्व t-t-va, त्थ t-tha, त्न or त्न t-na, त्न्य t-n-ya, त्य t-ya, त्प्र t-p-ra, त्म t-ma, त्म्य t-m-ya, त्य t-ya, त्र t-ra, त्र्य t-rya, त्व t.va, त्स t-sa, त्स्न t-s-na, त्स्न्य t-s-n-ya, थ्य th-ya, द्ग d-ga, द्ग्र d-g-ra, द्घ d-gha, द्द d-da, द्ध d-dha द्ध्य d-dh-ya, द्न d-na, द्ब d-ba-द्भ d-bha, द्भ्य d-bh-ya, द्म d-ma, द्य d-ya, द्र d-ra, द्य्र d-y-ra, द्व्य d-v-ya, ध्न dh.na, ध्न्य dh-n-ya, ध्म dh-ma, ध्य dh-ya, ध्र dh-ra, ध्र्य dh-r-ya, ध्व dh-va, न्त n-ta, न्त्य n-t-ya, न्त्र n-t-ra, न्द n-da, न्द्र n-d-ra, न्ध n-dha, न्ध्र n-dh-ra, न्न n-na, न्प n-pa, न्म n-ma, न्य n-ya, न्स n-sa.

प्त p-ta, प्त्य p-t-ay, प्न p-na, प्प p-pa, प्म p-ma, प्य p-ya, प्र p-ra, प्ल p-la, प्स p-sa, प्व p-va, प्स्व p-s-va, ब्भ b-bha, ब्ज b-ja, ब्द b-da, ब्ध b-dha, ब्न b-na, ब्ब b-ba, ब्भ b-bha, ब्भ्य b-bh-ya, ब्य b-ya, ब्र b-ra, भ्न bh-na, भ्य bh-ya, भ्र bh-ra, भ्व bh-va, म्न m-na-म्प m-pa, म्प्र m-p-ra, म्ब m-ba, म्भ m-bha, म्म m-ma, म्य m-ya, म्र m-ra, म्ल m-la, म्व m-va.

य्य y-ya, य्व y-va, ल्क l-ka, ल्प l-pa, ल्म l--ma, ल्य l-ya, ल्ल l-la, ल्व l-va, ल्ह l-ha, व्न v--na, व्य v-ya, व्र v-ra, व्व v-va.

श्च ś-ca, श्च्य ś-c-ya, श्न ś-na, श्य ś-ya, श्र ś-ra, श्र्य ś-r-ya, श्ल ś-la, श्व ś-va श्व्य ś-v-ya- श्श ś-śa; ष्ट ṣ-ṭa, ष्ट्य ṣ-ṭ-ya, ष्ट्र ṣ-ṭ-ra, ष्ट्र्य ṣ-ṭ-r-ya, ष्ट्व ṣ-ṭ-va, ष्ठ ṣ-ṭha, ष्ण ṣ-ṇa- ष्ण्य ṣ-ṇ-ya, ष्प ṣ-pa ष्प्र ṣ-ra, ष्म ṣ-ma, ष्य ṣ-ya, ष्व ṣ-va, स्क s-ka-, स्ख s-kha, स्त s-ta, स्त्य s-t-ya, स्त्र s-tra, स्त्व s-t-va, स्थ s-tha.

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
स्न s-na, स्न्य s-n-ya, स्प s-pa, स्फ s-pha, स्म s-ma, स्म्य s-m-ya, स्य s-ya, स्र s-ra, स्व s-va, स्स s-sa.

ह्ण h-ṇa, ह्न h-na, ह्म h-ma, ह्य h-ya, ह्र h-ra, ह्ल h-la, ह्व h-va.

८. संस्कृत में विराम चिन्ह अधिक नहीं। वाक्य या पद के अन्त में (।) और श्लोक या वाक्य-समूह के अन्त में (॥) ये चिन्ह प्रयुक्त होते हैं। अवग्रह का चिन्ह (ऽ) यह है और संक्षेप का (॰) यह चिन्ह है। जैसे, तेऽपि अ॰ = अध्याय।

९. संस्कृत में नीचे लिखे अंकों के रूप प्रयुक्त होते हैं :—

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ०

२. वर्णोच्चारण 'Phonetics'.

१० जब मनुष्य का आत्मा कहने की इच्छा करता है, तो मन नाभि-मंडल के वायु को प्रेरता है और वह वायु उरःस्थल (lungs) में विचरता हुआ कंठ द्वारा मुख में आकर ध्वनि को उत्पन्न करता है। इन ध्वनियों को यथार्थ प्रकाशित करने को वर्णोच्चारण कहते हैं। कैसे ये ध्वनियां उत्पन्न होती हैं, कैसे इनमें भेद होते हैं और कैसे इन्हें शुद्ध बोला जाता है, यह सब वर्णोच्चारण का ही विषय है।

११. वर्णोच्चारण के साधनों में निम्नलिखित विचारणीय हैं :—

(१) उरःस्थल या फेफड़े, (२) श्वासनालिका 'wind-pipe' और कण्ठनाल 'larynx' (३) मुख और जिह्वा, तथा ओष्ठ, दन्त, तालु आदि मुख के स्थान और (४) नासिका।

(१) उरःस्थल या फेफड़े 'lungs' एक धोंकनी की भाँति काम करते हैं। जब ये खुलते हैं तो बाहर से वायु (श्वास) अंदर आता है। और जब संकुचित होते हैं तो सांस बाहर जाता है। यह बाहर जाने वाला सांस ही शब्दोच्चारण का साधन है। इस प्राण का थोड़ा या ज्यादा होना भी उच्चारण में परिवर्तन करता है। अतः प्राणों के परिणाम (quantity) के कारण वर्ण दो भागों में विभक्त हैं। जब वायु कम होता है तो वर्ण 'अल्पप्राण' (unaspirated) होता है। और जब सांस अधिक होता है तो 'महाप्राण' (aspirated) होता है। इसके अनुसार वर्णों का विभाग ऐसे है:—'अल्प-प्राण':—वर्गों का 'प्रथम', तृतीय', 'पञ्चम' और अन्तस्थ। 'महाप्राण':—वर्गों का 'द्वितीय', 'चतुर्थ', 'ऊष्म' और 'ह्'।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) श्वासनालिका मानो एक मार्ग है जिसके द्वारा फेफड़ों और मुख के बीच श्वास आता-जाता है। इस नाली में श्वास निरंतर विचरता है। मुख के निकट इस नालिका के भाग को कण्ठनाल कहते हैं। यह मानो एक छोटी सी 'संदूकची' होती है, जिसमें उच्चारण के साधनभूत दो बारीक परदे (vocal chords) होते हैं। इसको साधारण बोली में घिट्टी (Adam's apple) भी कहते हैं। यह बाहर से भी अनुभव की जा सकती है। इस घिट्टी के अगले भाग को जरा नीचा करने से दोनों परदे मिल जाते हैं। संवृत परदों को प्रयत्न से परे हटा कर सांस बाहर निकलता है। इससे ये परदे हिलते हैं और घोष 'sonance' पैदा होता है। इस ध्वनि को नाद भी कहते हैं। और परदों के बन्द होने के कारण इस प्रकार उच्चारण किए हुए अक्षरों को संवार कहते हैं। जैसे, ग (१) वर्गों के 'तीसरे' 'चौथे', 'पांचवें' और 'अन्तस्थों' का प्रयत्न 'संवार' और 'घोष' है।

परन्तु इसके प्रतिकूल जब ये परदे खुले (विवृत) होते हैं तो वायु को बाहर जाने के लिए पर्याप्त स्थान होता है, अतः श्वास सहज ही में बाहर निकल जाता है। और परदों के न हिलने से कोई ध्वनि (अघोष) उत्पन्न नहीं होती। जिस समय 'क' उच्चारण करते हैं उस समय परदे (vocal chords) हटे होते हैं। अतः इसको 'विवार' (surd or hard) कहते हैं, और ध्वनि के अभाव से इसे अघोष (unvoiced) कहते हैं। (२) वर्गों के 'पहले', 'दूसरे' और 'ऊष्मों' (sibilants) का भी यही 'प्रयत्न' है।[1]

(१) मुख के भीतर जिह्वा भी प्रयत्न करती है। मुख के भीतरी आकार को जिह्वा अपनी क्रिया से बदलती रहती है (क) कभी तो यह निष्क्रिय रहती है या इसमें इतनी थोड़ी क्रिया होती है कि भीतर से आने वाले श्वास का मुख-मार्ग सर्वथा खुला रहता है। स्वरों के उच्चारण में जिह्वा की ऐसी अवस्था होती है। अतः इन्हें विवृत (open) वर्ण कहते हैं। (ख) कभी जिह्वा का अग्र-भाग दन्त, तालु आदि मुख के भिन्न भिन्न स्थानों को स्पर्श करके बाहर जाते हुए

---

१. एक विशेष प्रकार का शीशा मुख के सामने रखने से इन हालतों का पता आसानी से लग सकता है। घिट्टी पर उंगली रखने से भी पता लग जाएगा कि 'क' के उच्चारण में परदे नहीं हिलते और 'ग' के उच्चारण में हिलते हैं। कानों में अंगुलियां देकर 'क' और 'ग' के उच्चारण करने से भी यह भेद अनुभव हो सकता है।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
श्वास को वहां रोक कर तुरन्त छोड़ देता है, जिससे बलपूर्वक ध्वनि पैदा होती है। ऐसे वर्णों को स्पृष्ट (stops) कहते हैं। क से म तक सभी व्यंजन स्पृष्ट हैं। (ग) कभी जिह्वा ऊपर कहे मुख के स्थानों को स्पर्श नहीं करती और ना ही निष्क्रिय रहती है, प्रत्युत इन दोनों अवस्थाओं के मध्य रहती हुई श्वास के मुखमार्ग का तंग कर देती है, जिससे श्वास उच्चारण स्थान और जिह्वा को रगड़ता हुआ बाहर जाता है, जैसा कि 'स' के उच्चारण में। ऐसे वर्णों को ईषत्स्पृष्ट (fricatives) कहते हैं। जैसे, अन्तस्थ और ऊष्म।

(क) ओष्ठ भी जिह्वा की भाँति तीन प्रकार के वर्ण उच्चारण करने में सहायक होते हैं। (१) या तो वे खुले रहते हैं, जैसा स्वरों के उच्चारण में, या (२) बंद हो कर श्वास को रोक कर छोड़ते हैं, जैसे, प, फ और ब, भ (स्पृष्ट) के उच्चारण में, या (३) इन दोनों के बीच की अवस्था में होते हैं जब कि ऊपर के दाँतों और नीचे के ओष्ठ में बहुत कम अन्तर होता है (ईषत्स्पृष्ट) और श्वास रगड़ खाता हुआ बाहर जाता है, जैसे 'व्' के उच्चारण में।

ऐसे ही दन्त, तालु, मूर्धा आदि उच्चारण-स्थानों पर भी स्पृष्टादि वर्ण पैदा होते हैं। इनका विवरण आगे दिया जाएगा।

(४) नासिका भी उच्चारण का साधन है। जब अलिजिह्वा (soft-palate) का अग्र-भाग मुख में नीचे लटक जाता है तो श्वास का मार्ग नासिका की ओर बदल जाता है। यदि ओष्ठ बंद कर लिए जाएँ तो श्वास नासिका के मार्ग से जाएगा और यदि इस श्वास में नाद भी है तो 'म्' का उच्चारण होगा। ऐसे ही श्वास को कण्ठ, मूर्धा तालु और दांतों पर रोक कर नासिका द्वारा क्रमशः ङ्, ण्, ञ् और न् का उच्चारण होगा। सभी अनुनासिकों का प्रयत्न घोष और नाद होता है।

यदि नासिका और मुख दोनों मार्ग खुले हों तो श्वास दोनों से ही जाएगा और उच्चारण स्थान के अनुसार अनुनासिक स्वरों का उच्चारण होगा। अनुस्वार का उच्चारण नासिका में ही होता है और जिह्वा पूर्ववर्ती स्वर के उच्चारण-स्थान पर होती है। जैसे, अं, इं।

स्वराः 'Vowels'.

१२—स्वर उस ध्वनि (voice) को कहते हैं जो कंठ द्वारा भिन्न भिन्न रूपों को धारण करती है। स्वतः कठ-ध्वनि होने के कारण इसके उच्चारण में अन्य किसी वर्ण की अपेक्षा नहीं होती[1]।

---

१. स्वयं राजन्त इति स्वराः। महाभाष्य। १, २. २९. १।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) स्वरों के उच्चारण में होंठों की अवस्था प्रधान होती है। कभी वे खुले होते हैं, (जैसे आ में), कभी कुछ तंग (जैसे इ में) और कभी गोल (जैसे उ में) होते हैं। जिह्वा में भी कुछ क्रिया होती है। कभी वह प्रायः निश्चल ही रहती है कभी आगे को बढ़ती है और कभी पीछे को हटती है।

१३. स्वरों के उच्चारण में जिह्वा की तीन प्रधान स्थितियां होती हैं:—
(१) जब वह प्रायः निष्क्रिय होती है, जैसे अ, आ के उच्चारण में,
(२) जब इसका अग्रभाग ऊँचा होता है, जैसे इ के उच्चारण में, और
(३) जब इसका पिछला भाग ऊँचा होता है, जैसे उ के उच्चारण में।
अतः स्वरों का उच्चारण एक तिकोन द्वारा प्रकाशित किया जा सकता है:—
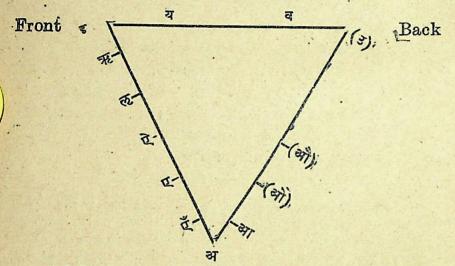
यह तिकोन जिह्वा की स्थिति को दिखाती है। इ के उच्चारण में जिह्वा का अग्र-भाग ऊँचा होता है अर्थात् इसके अग्र-भाग और तालु में थोड़ा अंतर होता है। इसके प्रतिकूल उ के उच्चारण में जिह्वा का पिछला भाग ऊँचा होता है। ओष्ठों का आकार गोल होता है, जैसा कि () कोष्ठ चिन्ह से दिखाया गया है। अ के उच्चारण में जिह्वा में प्रायः कोई क्रिया नहीं होती।

इ से अ तक जाने में जिह्वा क्रमशः नीचे बैठती और पीछे को हटती है और क्रमशः ऋ, लृ, ऐ और ए का उच्चारण होता है। उ से अ तक जाने में जिह्वा का पिछला भाग क्रमशः नीचे बैठता है और यह आगे को बढ़ती है जिससे क्रमशः औ, ओ और आ का उच्चारण होता है।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
१४. किसी स्वर के उच्चारण में जितनी अधिक क्रिया जिह्वा में होगी उतना ही वह स्वर व्यंजनों के उच्चारण के निकट होगा और उतनी ही आसानी से वह स्वभावतः व्यंजन में बदल सकेगा। अ, आ के उच्चारण में जिह्वा में कोई क्रिया नहीं होती, परन्तु इसके प्रतिकूल इ, उ, आदि अन्य सब स्वरोंके उच्चारण में जिह्वा अधिक सक्रिय होती है, अतः व्यंजनों के उच्चार-स्थान के अधिक निकट होती है। इस लिए ये स्वर क्रमशः य, व, आदि अन्तस्थ वर्णों में बदल जाते हैं। इसे संप्रसारण कहते हैं और इन स्वरों को संप्रसारण स्वर कहते हैं।[1]

१५. स्वरों का विभाग अधोलिखित है:—

१. (क) ह्रस्व (short) स्वरः—अ, इ, उ, ऋ, ऌ।
(ख) दीर्घ (long) स्वरः—आ, ई, ऊ, ॠ,।[2]
(ग) संयुक्त (dipthongs) स्वरः—ए, ऐ, ओ, औ।

२. (क) असंप्रसारण (neutral) स्वरः—अ, आ।
(ख) संप्रसारण (liquid) स्वरः—इ, ई; उ, ऊ; ऋ, ॠ; ऌ; ए, ऐ; ओ, औ।[3]

३. (क) सादे (simple) स्वरः—अ आ; इ, ई; उ, ऊ; ऋ, ॠ, ऌ।
(ख) गुण स्वरः—अ, ए, ओ, अर्, अल्।[4]
(ग) वृद्धि स्वरः—आ, ऐ, औ, आर्।

व्यंजन 'Consonants'.

१६. व्यंजन के उच्चारण में कंठ या उपजिह्वा (glottis) गौण होती

---

१. अन्तस्थ क्रमशः इ, उ, ऋ, ऌ में बदल जाते हैं, क्योंकि इनके उच्चारण में स्पृष्टों की अपेक्षा जिह्वा में कम क्रिया होती है और कुछ ढील होने से जिह्वा निकट-वर्ती स्वर के स्थान पर आ जाती है

२. ऌवर्णस्य दीर्घा न सन्ति।

३. संध्यक्षरों का अन्तिम भाग इ और उ होता है, क्योंकि ए=अ+इ, ऐ=आ+इ, ओ=अ+उ, औ=आ+उ। इसी कारण ये क्रमशः अय्, आय्, अव् और आव् में बदल जाते हैं।

४. सादे स्वरों के पहले 'अ' लगाने से गुण होता है, पर अ को सवर्ण स्वर के योग में भी 'आ' नहीं होता। गुण स्वरों के पहले 'अ' लगाने से वृद्धि होती है। कुछ भाषाविज्ञान के विद्वानों का मत है कि गुण-स्वरों से 'अ' निकाल कर सादे स्वर और उनमें 'अ' लगाने से वृद्धि-स्वर बने हैं।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। इनकी ध्वनि रगड़ (audible friction) से पैदा होती है। इनके उच्चारण में स्वरों की अपेक्षा होती है।[1]

१७. व्यंजनों का विभागः—

१. (क) स्पृष्ट—क से म तक।
(ख) ईषत्स्पृष्ट—अन्तस्थ और उष्म।

२. (क) संवार—वर्गों के तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्ण और अन्तस्थ।
(ख) विवार— वर्गों के पहले, दूसरे वर्ण और ऊष्म।

३. (क) अल्पप्राण—वर्गों के पहले, तीसरे और पांचवें वर्ण और अन्तस्थ।
(ख) महाप्राण—वर्गों के दूसरे, चौथे वर्ण, ऊष्म और ह्।

४. स्थान के अनुसार व्यंजनों के पांच भेद हैं[2]:—

(i) कण्ठ्य (Gutterals) अर्थात् जो जिह्वा के मूल कंठ के अग्र-भाग से बोले जाते हैं:—कवर्ग ह् और विसर्जनीय।

(ii) तालव्य (Palatals) अर्थात् जिनका उच्चारण जिह्वा के अग्रभाग को तालु में लगाने से होता है:—चवर्ग, य और श।

(iii) मूर्धन्य (Ceredrals), जिसका उच्चारण जिह्वा के अग्र-भाग को मूर्द्धा स्थान में, जो तालु से ऊपर है, लगाकर होता है:—टवर्ग, र और ष।

(iv) दन्त्य (Dentals), जिनका उच्चारण जिह्वा के अग्र-भाग को दांतों में लगाकर होता है:—तवर्ग, ल और स।

(v) ओष्ठ्य (Labials), जिनका उच्चारण दोनों होठों के मिलाने से होता है। जिह्वा होठों से कुछ दूर तकरीबन निश्चल रहती है:—पवर्ग।[3]

१८. देवनागरी वर्ण-माला का क्रम ही उच्चारण के मौलिक सिद्धान्तों पर आश्रित है। इस कारण यह वर्ण-माला संसार की सभी वर्णमालाओं से श्रेष्ठ है। नीचे दिए चित्र से इस क्रम की वैज्ञानिकता स्पष्ट है:—

---

१. अन्वग्भवतीति व्यंजनम् महाभा०। १. २. २९. १।

२. स्थानानुसार स्वरों के भी भेद हैं। कण्ठ्य—अ, आ। तालव्य—इ, ई। मूर्धन्य—ऋ-ॠ। दन्त्य—ऌ। ओष्ठ्य—उ, ऊ। ए ऐ कण्ठ्य-तालव्य और ओ, औ कण्ठ्यौष्ठ्य हैं।

३. व का स्थान दन्त्यौष्ठ्य है।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयत्न	Quality.	विवार. Hard.		संवार. Soft.			Soft.	Hard.	संवार Soft. स्वराः		
		स्पृष्ट. Stop.		स्पृष्ट. Stop.			ईषत्स्पृष्ट Fricative		Open.		
	Quantity.	अल्प-प्राण unaspirate.	महा-प्राण aspirate.	अल्प-प्राण unaspirate.	महा-प्राण aspirate.	अनुनासिक Nasal.	अन्तस्थ अल्प० Semivowels.	ऊष्म महा० Spirants.	ह्रस्व Short.	दीर्घ Long.	संध्यक्षर Dipthongs.
कण्ठ्य	Gutturals.	क	ख	ग	घ	ङ	ह[१]	:[२]	अ	आ	ए ऐ
तालव्य	Palatals.	च	छ	ज	झ	ञ	य	श	इ	ई	
मूर्धन्य	Cerebrals.	ट	ठ	ड	ढ	ण	र	ष	ऋ	ॠ	
दन्त्य	Dentals.	त	थ	द	ध	न	ल	स	ऌ	...	
औष्ठ्य	Labials.	प	फ	ब	भ	म	व	:[२]	उ	ऊ	ओ औ

इसका फुट नोट पृष्ठ १२ पर देखें
CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विसर्ग का उच्चारण प्रायः महाप्राण वर्णों की अन्तिम ध्वनि की भाँति होता है। श्वास का परिणाम इसमें प्रधान रहता है। विसर्ग के उच्चारण में पूर्ववर्ती स्वर की ध्वनि निरन्तर बनी रहती है।

अभ्यास १.

१. वर्णोच्चारण किन साधनों पर आश्रित है? इन साधनों का वर्णन करो।

२. वर्णोच्चारण में जिह्वा क्या काम करती है? इसके आधार पर वर्णों का विभाग करो।

३. अनुनासिकों का उच्चारण कैसे होता है? सोदाहरण स्पष्ट करो।

४. प्रयत्न क्या है और इसके अनुसार वर्णों का विभाग क्या है?

५. स्वरों के उच्चारण को एक तिकोन से क्यों और कैसे स्पष्ट करोगे?

६. सम्प्रसारण किसे कहते हैं? इसका क्या आधार है? सोदाहरण लिखो।

७. सम्प्रसारण स्वर कौन से हैं? इनमें और अन्य स्वरों में क्या भेद है?

८. स्वर किसे कहते हैं और इनका क्या विभाग है?

९. उच्चारण-स्थान के अनुसार नागरी वर्णों का क्या विभाग है?

१०. देवनागरी वर्णों का प्रयत्न और उच्चारण-स्थान के अनुसार विभाग करो।

११. नीचे लिखे वर्णों में क्या भेद है:—अ और इ, उ और ए, ऋ और र, क और ख, च और ज, ग और न, क और य, त और स, य और र, श और ष, व और ब, स और ल।

---

१. 'ह' वस्तुतः अन्तस्थानों में नहीं है। 'ह' उच्चारण में 'अ' से बहुत मिलता है। अतः अन्य सादे स्वरों के सादृश्य से इसको अन्तस्थों में लिख दिया गया है। अन्तस्थ अल्पप्राण हैं और 'ह' महाप्राण है।

२. कवर्ग के पश्चात् आने वाली विसर्जनीय को 'जिह्वामूलीय' (formed at the root of the tongue) और पवर्ग के पश्चात् 'उपध्मानीय' (on breathing) कहते हैं। ये पहिले ≍। ऐसे लिखी जाती थीं।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीयोऽध्यायः ।

संहिता या सन्धि

१९. प्रत्येक संस्कृत शब्द और वाक्य संनिहित अक्षरों की एक शृंखला होती है । अत्यन्त निकट अन्त्य और आदि दो वर्णों के मिलने से जो ध्वनि में विकार होता है उसे संहिता या सन्धि कहते हैं।[1] संस्कृत में दो स्वर अत्यन्त निकट नहीं आसकते, क्योंकि इससे ध्वनि-भंग (hiatus) पैदा होता है । ऐसे ही दो असवर्ण वर्ण भी इकट्ठे नहीं आसकते । ऐसी अवस्था में साम्य-परिणाम (assimilation) हो जाता है । सन्धि के प्रायः सभी नियम इन दो मौलिक सिद्धान्तों पर आश्रित हैं ।

(क) एक शब्द, धातु और उपसर्ग, तथा समस्तपद में सन्धि नित्य होती है । अन्यत्र वाक्य आदि में वक्ता की इच्छा पर निर्भर होती है ।[2] कभी सन्धि का अभाव वाक्य में विराम का भी काम देता है ।

(ख) दो अत्यत निकट स्वरों के मिलने से जो ध्वनि में विकार होता है उसे अच्-सन्धि या स्वर-सन्धि कहते हैं । व्यजनों के व्यंजन या स्वर के साथ मिलने से जो विकार होता है उसे हल्-सन्धि या व्यंजन-सन्धि कहते हैं और विसर्ग के स्वर या व्यंजन के योग में जो विकार होता है उसे विसर्जनीय-सन्धि या विसर्ग-सन्धि कहते हैं ।

स्वर-सन्धि 'Combination of Vowels'.

२०. यदि एक ही सादा स्वर (ह्रस्व या दीर्घ) अन्त्य और आदि वर्ण हो तो दोनों के स्थान में दीर्घ हो जाता है ।[3]

---

१. परः सन्निकर्षः संहिता । पाणिनि । १. ४. १०९

२. संहितैकपदे नित्या नित्या धातूपसर्गयोः ।
नित्या समासे वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते ॥ कारिका ।

३. अकः सवर्णे दीर्घः । ६. १. १०१ ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) यदि अ या आ से परे अ या आ हो तो दोनों को आ हो जाता है, अर्थात् (अ या आ) + (अ या आ) = आ। जैसे, मुर + अरिः = मुरारिः। हिम + आलयः = हिमालयः। विद्या + अर्थी = विद्यार्थी। दया + आनन्दः = दयानन्दः।

(ख) यदि इ या ई से परे इ या ई हो तो दोनों को ई हो जाता है, अर्थात् (इ या ई) + (इ या ई) = ई। कवि + इन्द्रः = कवीन्द्रः। गिरि + ईशः = गिरीशः। मही + इन्द्रः = महीन्द्रः। श्री + ईशः = श्रीशः।

(ग) यदि उ या ऊ से परे उ या ऊ हो तो दोनों को ऊ हो जाता है, अर्थात् (उ या ऊ) + (उ या ऊ) = ऊ। सु + उक्तम् = सूक्तम्। लघु + ऊर्म्मिः = लघूर्म्मिः। वधू + उत्सव = : वधूत्सवः। भू + ऊर्द्धम् = भूर्द्धम्।

(घ) यदि ऋ से परे ऋ या ऌ हो तो दोनों को ॠ हो जाता है। अर्थात् ऋ + (ऋ या ऌ) = ॠ। जैसे, पितृ + ऋणम् = पितॄणम्। भ्रातृ + ऋद्धिः = भ्रातॄद्धिः। होतृ + ऌकारः = होतॄकारः।

(ङ) यदि ऋ से परे ऋ हो तो विकल्प से ऋ होता है।[1] जैसे, होतृ + ऋकारः = होतॄकारः, होतृकारः या होतृऋकारः।

२१. यदि अ या आ से परे कोई अन्य सादा स्वर ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ, ऌ) हो तो दोनों के स्थान में सवर्ण गुणस्वरों का आदेश होता है।[2]

(क) यदि अ या आ से परे इ या ई हो तो दोनों को ए; उ या ऊ हो तो ओ और ऋ या ऌ हो तो क्रमशः अर् या अल् आदेश होता है। अर्थात्

(१) (अ या आ) + (इ या ई) = ए जैसे, देव + इन्द्रः = देवेन्द्रः। नर + ईशः = नरेशः। महा + इन्द्र = महेन्द्रः। रमा + ईशः = रमेशः।

(२) (अ या आ) + (उ या ऊ) = ओ। जैसे, हित + उपदेशः = हितोपदेशः। गङ्गा + उदकम् = गङ्गोदकम्। देव + ऊरुः = देवोरुः। गङ्गा + ऊर्म्मिः = गङ्गोर्म्मिः।

(३) (अ या आ) + (ऋ या ऌ) = अर् या अल्। जैसे, परम + ऋषिः = परमर्षिः। महा + ऋषिः = महर्षिः। तव + ऌकारः = तवल्कारः।

२२. यदि अ या आ से परे कोई गुण या वृद्धि स्वर (ए, ओ, ऐ, औ) हो तो दोनों के स्थान में सवर्ण वृद्धि स्वरों का आदेश होता है।[3] अर्थात्

(१) (अ या आ) + (ए या ऐ) = ऐ। जैसे, एक + एकम् = एकैकम्।

---

१. ऋति सवर्णे ऋ वा। वार्त्तिक। २. आद् गुणः। पा० ६.१.८६।
३. वृद्धिरेचि। ६.१.८८।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मम + ऐश्वर्यम् = ममैश्वर्यम्। तथा + एव = तथैव। महा + ऐरावतः = महैरावतः।

(२) (अ या आ) + (ओ या औ) = औ। जैसे, मम + ओष्ठः = ममौष्ठः। महा + ओषधिः = महौषधिः। चित्त + औदार्यम् = चित्तौदार्यम्। महा + औत्सुक्यम् = महौत्सुक्यम्।

२३. यदि सम्प्रसारण स्वरों (इ, ई; उ, ऊ, ऋ. ऌ) से परे कोई असवर्ण स्वर हो तो वे अन्तस्थों (य्, व्, र्, ल्) में क्रमशः बदल जाते हैं अर्थात्

(क) (इ या ई) + (अ, आ, उ ऊ, ऋ, ॠ, ए, ऐ, ओ औ) = य्। जैसे, दधि + अत्र = (दध् + इ) + (अ + त्र) = (दध् + य्) + (अ + त्र) = दध्य् + अत्र = दध्यत्र। अति + आचारः = अत्याचारः। अभि + उदयः = अभ्युदयः। गच्छति + ऋषिः = गच्छत्यृषिः। पश्यति + एनम् = पश्यत्येनम्। पति + औषधम् = पत्यौषधम्। नदी + अम्बु = नद्यम्बु। देवी + आगता = देव्यागता। बली + ऋषभः = बल्यृषभः। गोपी + एषा = गोप्येषा। सखी + उक्तम् = सख्युक्तम्। सरस्वती + ओघः = सरस्वत्योघः। वाणी + औचित्यम् = वाण्यौचित्यम्।

(ख) (उ या ऊ) + (अ, आ, इ ई, ऋ, ॠ. ए ऐ. ओ, औ) = व्। जैसे, मधु + अस्ति = (मध् + उ) + अस्ति = मध् + व + अस्ति = मध्व् + अस्ति मध्वस्ति। सु + आगतम् = स्वागतम्। साधु + ईहितम् = साध्वीहितम्। मधु + ऋते = मध्वृते। अनु + एषणम् = अन्वेषणम्। पचतु + ओदनम् = पचत्वोदनम्। ददातु + औषधम् = ददात्वौषधम्। सरयू + अम्बु = सरय्वम्बु। वधू + आदिः = वध्वादिः। तनू + इन्द्रियम् = तन्विन्द्रियम्। तनू + ईश्वरः = तन्वीश्वरः। वधू + औदार्यम् = वध्वौदार्यम्।

(ग) (ऋ या ॠ) + अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ) = र्। जैसे, मातृ + अनुग्रहः = (मात् + ऋ) + अनुग्रहः = (मात् + र) + अनुग्रहः = मात्रनुग्रहः। पितृ + आदेशः = पित्रादेशः। पितृ + इच्छा = पित्रिच्छा। पितृ + उपदेशः = पित्रुपदेशः। पितृ + ऊहः = पित्रूहः। पितृ + एषणा = पित्रेषणा। पितृ + ऐश्वर्यम् = पित्रैश्वर्यम्। पितृ + ओकः = पित्रोकः। पितृ + औदार्यम् = पित्रौदार्यम्।

(घ) यदि ऌ से परे कोई असवर्ण स्वर हो तो उसे ल् हो जाता है। जैसे, ऌ + आकारः = लाकारः।

२४. यदि संध्यक्षरों (ए, ओ, ऐ, औ) से परे कोई स्वर हो तो वे अय्, अव्, आय् और आव् में क्रमशः बदल जाते हैं।[1]

---

१. एचोऽयवायावः। ६. १. ७८।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१) (ए या ओ) + कोई स्वर = अय् या अव्। जैसे, शे + अनम् = (श + ए) + अनम् = (श् + अय्) अनम् = शय् + अनम् = शयनम्। शे + आते = शयाते। शे + इतम् = शयितम्। शे + ए = शये। शे + ऐ = शयै। भो + अनम् = (भ् + ओ) + अनम् = (भ् + अव्) + अनम् = भव् + अनम् = भवनम्। भो + आमि = भव् + आमि = भवामि। भो + इता = भविता। गो + ए = गवे। गो + ओः = गवोः।

(२) (ऐ या औ) + कोई स्वर = आय् या आव्। जैसे, नै + अकः = (न् + ऐ) + अकः = (न् + आय्) + अकः = नाय् + अकः = नायकः। रै + आ = राया। रै + इ = रायि। रै + ऐ = रायै। रै + ओः = रायोः। रै + औ = रायौ। पौ + अकः = (प् + औ) + अकः = (प् + आव्) अकः = पाव् + अकः = पावकः। नौ + आ = नावा। भौ + इनि = भाविनि। भौ + उकः = भावुकः। नौ + ए = नावे। नौ + ओः = नावोः। नौ + औ = नावौ।

(क) यदि पदान्त ए, ओ और ऐ, औ से परे कोई स्वर, अन्तस्थ या संवार हो तो इन्हें विकल्प से अ और आ क्रमशः हो जाते हैं[1]। अर्थात् अव् और आय्, आव् के य् और व् का लोप हो जाता है[2]। जैसे, सखे + आगच्छ = सखे आगच्छ या सखयागच्छ। सखे + इह = सख इह या सखयिह। मुने + एहि = मुन एहि या मुनवेहि। साधो + आगच्छ = साध आगच्छ या साधवागच्छ। प्रभो + उच्यताम् = प्रभ उच्यताम् या प्रभवुच्यताम्। प्रभो + एहि = प्रभ एहि या प्रभवेहि। श्रियै + अर्थः = श्रिया अर्थः या श्रियायर्थः। श्रियै + इच्छति = श्रिया इच्छति या श्रियायिच्छति। श्रियै + उत्सुकः = श्रिया उत्सुकः या श्रियायुत्सुकः। श्रियै + औत्सुक्यम् या श्रियायौत्सुक्यम्। साधौ + आगते = साधा आगते या साधावागते। गतौ + इमौ = गता इमौ या गताविमौ। विधौ + उदिते = विधा उदिते या विधावुदिते। तौ + एतौ = ता एतौ या तावेतौ।

(ख) यदि पदान्त ए या ओ से परे ह्रस्व अ हो तो अ का लोप हो जाता है।[3] जैसे, ते + अपि = तेऽपि। कवे + अवेहि = कवेऽवेहि। प्रभो + अनुगृहाण = प्रभोऽनुगृहाण। विष्णो + अत्र = विष्णोऽत्र।

१. लोपः शाकल्यस्य। ८. ३. १९।

२. य् और व् के लोप के पश्चात् जो अ और आ रहते हैं, उनकी किसी आदि स्वर के साथ सन्धि नहीं होती। यहां ध्वनि-भंग बना रहता है।

३. एङः पदान्तादति। ६. १. १०९। इस लुप्त 'अ' को अवग्रह छिन्ह (ऽ) से दिखाया जाता है।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर-सन्धि के कुछ अपवाद।

२५. नीचे लिखे समस्त पदों में सन्धि के नियमों का अपवाद है :—

कुल + अटा = कुलटा, मार्त + अण्ड: = मार्तण्ड:, शक + अन्धुः = शकन्धुः, सीमन् + अन्तः = सीमन्तः, सार + अङ्गः = सारङ्गः, स्व + इरः = स्वैरः, स्व + इरिणी = स्वैरिणी, अक्ष + ऊहिनी = अक्षौहिणी, मनस् + ईषा = मनीषा, गो + अक्षः = गवाक्षः, गो + इन्द्रः = गवेन्द्रः।

२६. यदि अवर्णान्त उपसर्ग (preposition) से परे धातु का ऋ हो तो गुण के स्थान में वृद्धि होती है।[१] अर्थात् अर् के स्थान में आर् होता है। उप + ऋच्छति = उपार्च्छति। प्र + ऋच्छति = प्रार्च्छति। उप + ऋषति = उपार्षति।

२७. यदि अवर्णान्त उपसर्ग से परे धातु का आदि ए या ओ हो तो पररूप होता है।[२] अर्थात् ऐ या औ वृद्धि-आदेश नहीं होता। जैसे, उप + एजते = उपेजते। प्र + ओषति + प्रोषति।

(क) परन्तु एध् (grow) और इ (go) धातुओं के ए को वृद्धि होती है। केवल लोट् के मध्यम पुरुष एक वचन में पररूप (ए) होता है। जैसे, उप + एधते = उपैधते। उप + एति = उपैति। परन्तु अव + एहि = अवेहि। उप + एहि = उपेहि। उप + एधस्व = उपेधस्व।

२८. यदि ओतु (cat) ओष्ठ (lip) के ओ से पूर्व समास में अ या आ हो तो उसे विकल्प से ओ या औ होता है।[३] जैसे, स्थूल + ओतुः = स्थूलोतुः या स्थूलौतुः। बिम्ब + ओष्ठः = बिम्बोष्ठः या बिम्बौष्ठः।

२९. यदि तृतीया तत्पुरुष समास में ऋत के ऋ से पूर्व अ या आ हो तो उसे वृद्धि होती है।[४] अर्थात् अर् के स्थान में आर् होता है। जैसे, दुःख + ऋतः = दुःखार्तः। तृष्णा + ऋतः = तृष्णार्तः।

३०. यदि अ से परे ओम् और आ (preposition) हों तो अ का लोप हो जाता है।[५] जैसे, शिवाय + ओम् नमः = शिवायोन्नमः। शिव + एहि (= आ + एहि) = शिवेहि।

प्रगृह्य "Absence of Vowel-Sandhi'.

३१. द्विवचनान्त इ, ऊ और ए की प्रगृह्य संज्ञा होती है।[६] अर्थात्

---

१. उपसर्गादृति धातौ। ६. १. ९१। २. एङि पररूपम् ६. १. ९४। ३. ओत्वोष्ठयोः समासे वा। ४. ऋते च तृतीयासमासे। वा०। ५. ओमाङोश्च। ६. १. ९५। ६. ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम् १. १. ११।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनको किसी परे आने वाले आदि स्वर के साथ सन्धि नहीं होती। जैसे, कवी + इमौ = कवी इमौ, हरी+एतौ = हरी एतौ, साधू+इमौ = साधू इमौ, गङ्गे+अमू = गङ्गे अमू, लते + एते = लते एते, याचेते + अर्थम् = याचेते अर्थम्।

३२. अदस् शब्द के अमी और अमू रूपों की भी प्रगृह्य संज्ञा है।[1] जैसे, अमी + अश्वाः = अमी अश्वाः, अमू + आसाते = अमू आसाते।

३३. एकाच् (of one vowel) निपातों (particles) की भी प्रगृह्य संज्ञा है[2]। जैसे, इ + इन्द्रः = इ इन्द्रः। उ + उमेशः = उ उमेशः। आ + एवम् = आ एवम्। परन्तु, आ + उष्णम् = ओष्णम् (यहां 'आ' का अर्थ 'कुछ' है)।

(क) ओकारान्त निपातों की भी (हे की भी) प्रगृह्य संज्ञा है।[3] जैसे, अहो + ईशः = अहो ईशः। हे + इन्द्र = हे इन्द्र।

व्यंजन-सन्धि 'Combination of Consonants'.

३४. पद के अन्त में क्, ट्, त्, प्, ङ्, न्, म् और : (विसर्ग) ये आठ व्यंजन ही प्रायः पाए जाते हैं। किसी पद का अन्त्य व्यंजन प्रायः अल्पप्राण विवार होता है। चवर्ग और 'ह्' प्रायः 'क्' और 'ट्' में, 'ष्' प्रायः 'ट्' में, और 'स्' तथा 'र्' विसर्ग में बदल जाते हैं। 'ण्, य्, ल्, व्' पद के अन्त में नहीं आते। परन्तु एक शब्द के अंदर सभी व्यंजनों की सन्धि होती है।

३५. यदि पदान्त अल्पप्राण विवार से परे कोई स्वर या संवार हो तो उसे सवर्ण अल्पप्राण संवार हो जाता है। अर्थात् यदि अन्त्य क्, ट्, त्, प्, से परे कोई स्वर या संवार हो तो उन्हें क्रमशः ग्, ड्, द्, ब्, हो जाते हैं।[4] जैसे, (१) दिक् + अन्तः = दिगन्तः। वाक् + ईशः = वागीशः। सम्यक् + उक्तम् = सम्यगुक्तम्। प्राक् + एव = प्रागेव। दिक् + गजः = दिग्गजः। वाक् + जालम् = वाग्जालम्। वाक् + दानम् = वाग्दानम्। दिक् + भागः = दिग्भागः। सम्यक् + वदति = सम्यग्वदति॥ (२) परिव्राट् + अयम् = परिव्राडयम्। प्राट् + विवाकः = प्राड्विवाकः। परिव्राट् + गच्छति = परिव्राड्गच्छति॥ (३) जगत् + अन्तः = जगदन्तः। जगत् + ईशः = जगदीशः। भवत् + उक्तम् = भवदुक्तम्। भवत् + ऋणम् = भवदृणम्। महत् + ओजः = महदोजः। भवत् + दर्शनम् = भवद्दर्शनम्। जगत् + बन्धुः = जगद्बन्धुः। बृहत् + रथः = बृहद्रथः। महत् + वनम् = महद्वनम्॥ (४) ककुप् + अत्र = ककुबत्र।

---

१. अदसो मात्। १. १. १२। २. निपात एकाजनाङ्। १. १. १४। ३. ओत्। १. १. १५। ४. झलां जशोऽन्ते। ८. २. ३९।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अप् + इन्धनम् = अबिन्धनम् । अप् + जः = अब्जः । अप् + वासः = अब्वासः ।

२६. यदि क्, ट्, त्, प्, से परे आदि न् या म् हो तो उन्हें विकल्प से (पर व्यवहार में नित्य) सवर्ण अनुनासिक (ङ्, ण्; न्, म्) हो जाता है ।[1] जैसे, दिक् + नागः = दिङ्नागः या दिग्नागः । प्राक् + मुखः = प्राङ्मुखः या प्राग्मुखः ॥ मधुलिट् + नर्दति = मधुलिण्नर्दति या मधुलिड्नर्दति । मधुलिट् + मत्तः = मधुलिण्मत्तः या मधुलिड्मत्तः । षट् + मुखः = षण्मुखः या षड्मुखः ॥ जगत्+नाथः=जगन्नाथः या जगद्नाथः । भवत्+मतम् = भवन्मतम् या भवद्मतम् ॥ अप् + नदी = अम्नदी या अब्नदी । अप् + मानम् = अम्मानम् या अब्मानम् ॥

(क) परन्तु यदि क्, ट्, त्, प् से परे मय और मात्र प्रत्यय हों तो उन्हें सवर्ण अनुनासिक नित्य ही होता है ।[2] जैसे, वाक् + मयम् = वाङ्मयम् । वाक् + मात्रम् = वाङ्मात्रम् । मधुलिट् + मात्रम् = मधुलिण्मात्रम् । चित् + मयम् = चिन्मयम् । तत् + मात्रम् = तन्मात्रम् । अप् = मयम् = अम्मयम् ।

२७. यदि तवर्ग (त्, न्,) से परे ल् हो तो तवर्ग (त्) को ल् हो जाता है । न् के पूर्व-वर्ण को ँ (चन्द्रबिन्दु) हो जाता है ।[3] जैसे तत् + लब्धम् = तल्लब्धम् । महान् + लाभः = महाँल्लाभः ।

२८. यदि पहले, दूसरे, तीसरे या चौथे वर्गीय वर्ण से परे ह् हो तो विकल्प से 'ह्' को पूर्व वर्ण के वर्ग का चौथा वर्ण हो जाता है ।[4] अर्थात् अन्त्य क्, ट्, त्, प्, को आदि 'ह्' से पूर्व क्रमशः ग्, ड्, द्, ब्, और 'ह्' को क्रमशः घ्, ढ्, ध्, भ्, हो जाते हैं । जैसे, वाक् + हरिः = वाग्हरिः या वाग्घरिः । परिव्राट् + हतः = परिव्राड्हतः या परिव्राड्ढतः । तत् + हितम् = तद्हितम् या तद्धितम् । अप् + हरणम् = अब्हरणम् या अब्भरणम् ।

२९. यदि तीसरे या चौथे वर्गीय वर्ण से परे कोई पहला या दूसरा वर्गीय वर्ण या श्, ष्, स् (विवार) हों तो उसे सवर्ण अल्पप्राण विवार (पहला वर्गीय वर्ण) हो जाता है ।[5] भेद् + ता = भेत्ता । सुहृद् + सु = सुहृत्सु । लिभ् + सा = लिप्सा । युयुध् + सते = युयुत्सते । ककुभ् + सु = ककुप्सु । कुमुद् + प्रकाशते = कुमुत्प्रकाशते ।

परन्तु महाप्राण संवार वर्ण से परे 'त्' या 'थ्' को 'ध्' हो जाता है । जैसे, लभ् + तः = लब्धः । रुन्ध् + थः = रुन्द्धः ।

---

१. यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा ८. ४. ४५ । २. प्रत्यये भाषायां नित्यम् । ३. तोर्लि । ८. ४. ६० । ४. झयो होऽन्यतरस्याम् । ८. ४. ६२ । ५. खरि च । ८. ४. ५५ ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) यदि तीसरे या चौथे वर्गीय वर्ण से परे महाप्राण संवार (४ था) वर्ण हो तो उसे उसी वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है।[1] जैसे, लभ् + था = लभ् + धा = लब्धा। लभ् + तुम् = लभ् + धुम् = लब्धुम्।

४०. (क) तवर्गीय अनुनासिक अन्त्य न् नीचे लिखी अवस्थाओं में अविकृत रहता है:—

१. स्वरों से पूर्व। जैसे, तान् + उवाच = तानुवाच।

२. कवर्ग और ह् से पूर्व। जैसे, बुद्धिमान् कथयति, तान् हत्वा।

३. पवर्ग से पूर्व। जैसे, एतान् पाशान् भिनत्ति।

४. तीसरे, चौथे और पांचवें तवर्गों से पूर्व। जैसे, राजपुत्रान् नयति।

५. अन्तस्थों से पूर्व। जैसे, हंसान् रक्षति।

६. ष् और स् से पूर्व विकल्प से 'त्' का आगम होता है। जैसे तान् + सहते = तान् सहते या तान्त्सहते।

(क) यदि तवर्गीय पदान्त न् से परे च्, छ्; ट्, ठ्; और त्, थ्; हों तो न् के स्थान में अनुस्वार और श्, ष् और स् क्रमशः हो जाते हैं।[2] जैसे, हसन् + चकार = हसंश्चकार, पाशान् + छेत्तुम् = पाशांश्छेत्तुम्, चलन् + टिट्टिभः = चलंष्टिट्टिभः, पतन् + तरुः = पतंस्तरुः।

(१) धातु के अन्त्य न् को स् से पूर्व अनुस्वार हो जाता है। जैसे, मन् + स्यते = मंस्यते।

(२) परन्तु संवार ज्, झ्; ड्, ढ्; के परे होने पर पदान्त न् को ञ् और ण् क्रमशः हो जाते हैं।[3] जैसे, तान् + जयति = ताञ्जयति। तान् + डम्बरान् = ताण्डम्बरान्।

४१. यदि तवर्ग या स् के पीछे या पहले चवर्ग या श् हो तो तवर्ग को क्रमशः चवर्ग और स् को श् होता है।[4] जैसे, (१) सत् + चित् = सच्चित्। तत् + छादयति = तच्छादयति। तत् + जायते = तद् + जायते = तज्जायते। तत् + झनत्कारः = तज्झनत्कारः। विपद् + जालम् = विपज्जालम्। जगत् + शरण्यम् = जगच्छरण्यम्।[5] तद् + शरीरम् = तच्छरीरम्। धावन् + शशः = धावञ्छशः। तान् + जयति = ताञ्जयति। रामस् + चिनोति = रामश्चिनोति। (२) यज् + नः = यज्ञः। याच् + ना = याच्ञा।

---

१. झलां जश् झशि। ८. ४. ५३। २. नश्छव्यप्रशान्। ८. ३. ७। ३. यह सन्धि स्थान-विकार के अन्तर्गत है। ४. स्तोःश्चुना श्चुः। ८. ४. ४०। ५. यहां श् को छ् हुआ है।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) यदि तवर्ग या स के पीछे या पहले टवर्ग या ष् हो तो तवर्ग को क्रमशः टवर्ग और स् को ष् होता है।[1] जैसे, (१) तत् + टीका = तट्टीका। सत् + ठकारः = सट्ठकारः। उत् + डयते = उद् + डयते = उड्डयते। तत् + ढौकते = तड्ढौकते। महान् + डामरः = महाण्डामरः। रामः+टीकते = रामष्टीकते। रामस् + षष्ठः = रामष्षष्ठः। (२) इष् + तः = इष्टः। आकृष् + तः = आकृष्टः। षष् + थः = षष्ठः। द्विष् + धि = द्विड् + धि = द्विड्ढि।

४२. यदि एक पद में न् से पूर्व र्, ष्, ऋ या ॠ हो तो न् को ण् हो जाता है।[2] जैसे, विस्तीर् + नम् = विस्तीर्णम्। दूष् + नम् = दूषणम्। पूष् + ना = पूष्णा। नॄ + नाम् = नॄणाम्।

(क) स्वर, कवर्ग, पवर्ग, अनुस्वार, (अनुनासिक) और य्, व्, ह् के व्यवधान में भी इस न् को ण् आदेश होता है।[3] जैसे, अर्केण, मूर्खेण, प्रेम्णा, क्षिष्णुः, ब्रह्मण्यः, प्रायेण, बृंहणम्, रामायणम्। परन्तु अर्चनम्, दर्शनम् (चवर्ग का व्यवधान)। अर्णवेन, कर्णेन (टवर्ग)। अर्थेन, रसेन (तवर्ग)। शृगालेन (ल)।

(ख) परन्तु ऐसे पदान्त न् को ण् नहीं होता।[4] जैसे, रामान्, नरान्।

४३. यदि आदेश (substitute) या प्रत्यय के अपदान्त (not at the end of a grammatical form) दन्त्य स से पूर्व अ और आ के अतिरिक्त कोई स्वर, अन्तस्थ, कवर्ग या ह हो तो इस स् को मूर्धन्य ष् हो जाता है।[5] जैसे, सर्पि + सा = सर्पिषा। करि + स्यति = करिष्यति। नदी + सु = नदीषु। धेनु + सु = धेनुषु। भू + सु = भूषु। मातृ + सु = मातृषु। फले + सु = फलेषु। गो + सु = गोषु। गीर् + सु = गीर्षु। वाक् + सु = वाक्षु। प्राङ् + सु = प्राङ्षु। परन्तु युव + सु = युवसु (अ)। लता + सु = लतासु (आ)। सर्पि + स् = सर्पिः (पदान्त)।

(क) अनुस्वार, विसर्ग, और ऊष्मों (श्, ष्, स्) के व्यवधान में भी ऊपर लिखे स् को ष् हो जाता है।[6] जैसे, हवीं + सि = हवींषि। सर्पिः + सु = सर्पिःषु। दोस् + सु = दोष्षु or दोःषु। परन्तु सुहृत्सु, समित्सु, ककुप्सु।

---

१. ष्टुनाष्टुः। ८. ४. ४१। २. रषाभ्यां नो णः समानपदे। ८. ४. १। ३. अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि। ८. ४. २। ४. पदान्तस्य। ८. ४. ३७। ५. आदेशप्रत्यययोः। ८.३.५९। अपदान्तस्य मूर्धन्यः। ८. ३. ५५। इण्कोः। ८. ३. ५७। ६. नुम्विसर्जनीयशर्व्यवायेऽपि। ८. ३. ५८।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४४. ओष्ठयम्—

(क) पदान्त म् स्वरों से पूर्व अविकृत रहता है। जैसे, किम् + अत्र = किमत्र।

एक पद में यदि म् से परे य्, र्, ल्, हों तो कोई विकार नहीं होता, पर यदि परे प्रत्यय का आदि व् हो तो म् को न् हो जाता है। जैसे, काम् + यः = काम्यः, ताम्र, अम्ल। परन्तु जगम् + वान् = जगन्वान्।

(ख) पदान्त म् से परे यदि कोई व्यंजन हो तो म् को अनुस्वार हो जाता है।[1]

(१) पदान्त म् को अनुस्वार नित्य ही होता है यदि परे अन्तस्थ, ऊष्म या ह् हो। जैसे, मातरम् + वन्दे = मातरं वन्दे। भृशम् + रोदिति = भृशं रोदिति। मोक्षम् + सेवते = मोक्षं सेवते। शय्यायाम् + शेते = शय्यायां शेते। मधुरम् + हसति = मधुरं हसति।

(२) परन्तु यदि पदान्त म् (अनुस्वार) से परे कोई स्पर्श वर्ण हो तो म् को विकल्प से अनुस्वार या सवर्ण पांचवां वर्ण हो जाता है।[2] जैसे किम् + करोषि = किं करोषि या किङ्करोषि। शत्रुम् + जहि = शत्रुं जहि या शत्रुञ्जहि। क्षिप्रम् + चलति = क्षिप्रं चलति या क्षिप्रञ्चलति। धनम् + ददाति = धनं ददाति या धनन्ददाति। गुरुम् + नमति = गुरुं नमति या गुरुन्नमति। चन्द्रम् + पश्यति = चन्द्रं पश्यति या चन्द्रम्पश्यति। किम् + फलम् = किं फलम् या किम्फलम्। सत्यम् + ब्रूयात् = सत्यं ब्रूयात् या सत्यम्ब्रूयात्।

परन्तु यदि एक पद में अनुस्वार (म्, न्) से परे अनुनासिक के बिना कोई स्पर्श वर्ण हो तो उसे उसी वर्ग का पाँचवां वर्ण नित्य ही होता है।[3] जैसे, शाम् + तः = शां + तः = शान्तः। अन् + कितः = अं + कितः = अङ्कितः। मन् + ता = मं + ता = मन्ता।

(३) कृ (do) धातु से पूर्व सम् के 'म्' को सं या सँ हो जाता है। जैसे, सम् + कर्ता = संस्कर्ता या सँस्कर्ता। ऐसे ही पुम् + कोकिलः = पुंस्कोकिलः या पुँस्कोकिलः। पुम् + चली = पुंश्चली या पुँश्चली।

४५. यदि ङ्, ण् और न् से पूर्व कोई ह्रस्व स्वर हो और परे कोई स्वर हो तो इन्हें द्वित्व हो जाता है।[4] जैसे, प्रत्यङ् + आत्मा = प्रत्यङ्ङात्मा।

---

१. मोऽनुस्वारः। ८. ३. २३। २. अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः। वा पदान्तस्य। ८. ४. ५८, ५९। ३. नश्चापदान्तस्य झलि। ८. ३. २४। ४. ङमो ह्रस्वादचि ङमुण्नित्यम्। ८. ३. ३२।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सुगण् + ईशः = सुगण्णीशः । धावन् + अश्वः = धावन्नश्वः । हसन् + आगतः = हसन्नागतः । सृजन् + ईश्वरः = सृजन्नीश्वरः । स्मरन् + उवाच = स्मरन्नुवाच ।

४६. यदि पद के आदि छ् से पूर्व कोई ह्रस्व स्वर या आ या मा (particles) हों तो उसे च्छ् (द्वित्व) हो जाता है ।[१] जैसे, स्व + छाया = स्वच्छाया । परि + छदः = परिच्छदः । तरु + छाया = तरुच्छाया । आ + छादयति = आच्छादयति । मा + छिदत् = माच्छिदत् ।

(क) परन्तु यदि इस छ् से पूर्व पदान्त दीर्घ स्वर हो तो इसे विकल्प से च्छ् होता है ।[२] जैसे, लक्ष्मी + छाया = लक्ष्मीछाया या लक्ष्मीच्छाया । परन्तु म्लेच्छति, इच्छति, (एकपद) ।

४७. यदि र् से परे र् हो तो पूर्व र् का लोप होकर[३] उसके पूर्ववर्ती ह्रस्व स्वर को दीर्घ हो जाता है ।[४] निर् + रसः = नीरसः । निर् + रोगः = नीरोगः । पुनर् + रोगी = पुनारोगी । पुनर् + रमते = पुनारमते । हरिर् + रक्षति = हरीरक्षति ।

४८. पदान्त स् और सजुष् के ष् को र् हो जाता है ।[५] यदि इस र् से परे कोई विवार वर्ण या कुछ भी न हो (पदान्त) तो र् को विसर्ग हो जाता है ।[६] जैसे, रामस् + रामर् = रामः । सजुष् + मेद्यति = सजुर्मेद्यति । रामर् + करोति = रामः करोति ।

विसर्ग-सन्धि ।

४९. यदि विसर्ग से परे च् , छ् ; ट् , ठ् ; त् , थ् ; (विवार) हों तो उसे क्रमशः श् , ष् , स् (ऊष्म) हो जाते हैं ।[७] जैसे, पूर्णः + चन्द्रः = पूर्णश्चन्द्रः । धावितः + छागः = धावितश्छागः । रामः + टीकते = रामष्टीकते । नद्याः + तीरम् = नद्यास्तीरम् ।

(क) यदि विसर्ग से परे ऊष्म (श् , ष् , स्) हों तो इसे विकल्प से विसर्ग या क्रमशः श् , ष् , स् हो जाते हैं ।[८] जैसे, सुतः + शिशुः = सुतः शिशुः या सुतश्शिशुः । हरिः + शेते = हरिः शेते या हरिश्शेते । प्रथमः + सर्गः = प्रथमः सर्गः या प्रथमस्सर्गः । रामः + षष्ठः = रामः षष्ठः या रामष्षष्ठः ।

(ख) यदि विसर्ग से परे क् , ख् ; प् , फ् ; हों तो कोई विकार नहीं होता । जैसे, कः करोति, नद्याः पारम् ।

---

१. छे च । आङ्माङोश्च । ६. १. ७३, ७४ । २. दीर्घात् । पदान्ताद्वा । ६. १. ७५, ७६ । ३. रो रि । ८. ३. १४ । ४. ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः । ६. ३. १११ । ५. ससजुषो रुः । ८. २. ६६ । ६. खरवसानयोर्विसर्जनीयः । ८. ७. १५ । ७. विसर्जनीयस्य सः । ८. ३. ३४ । ८. वा शरि । ८. ३. ३६ ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५०. यदि विसर्ग से पूर्व सम्प्रसारण स्वर (अ, आ के बिना कोई स्वर) और परे कोई स्वर या संवार (३, ४, ५, य्, र्, ल्, व्, ह्) वर्ण हो तो विसर्ग को र् हो जाता है। जैसे, कविः + अयम् = कविरयम्। रविः + उदेति = रविरुदेति। सुधीः + एषः = सुधीरेषः। गुरुः + उवाच = गुरुरुवाच। भूः + इयम् = भूरियम्। रवेः + उदयः रवेरुदयः। तैः + उक्तम् = तैरुक्तम्। प्रभोः + आदेशः = प्रभोरादेशः। गौः + अयम् = गौरयम्। वायुः + वाति = वायुर्वाति। ऋषिः + गच्छति = ऋषिर्गच्छति। गुरुः + जयति = गुरुर्जयति। निः + धनम् = निर्धनम्। दुः + नीति = दुर्नीति। शिशुः + हसति = शिशुर्हसति।

५१. यदि विसर्ग से पूर्व आ हो और परे कोई स्वर या संवार (३, ४, ५, य्, र्, ल्, व्, ह्) हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है। जैसे, अश्वाः + अमी = अश्वा अमी। आगताः + ऋषयः = आगताऋषयः। नराः + एते = नरा एते। हताः + गजाः = हतागजाः। पुत्राः + जाताः = पुत्रा जाताः। अश्वाः + धावन्ति = अश्वा धावन्ति। भीताः + नराः = भीता नराः। अतीताः + मासाः = अतीता मासाः। माः + भिः = माभिः। वाताः + वान्ति = वाता वान्ति। नराः + हसन्ति = नरा हसन्ति।

५२. यदि विसर्ग से पूर्व अ हो और परे 'अ' के अतिरिक्त कोई स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है।[1] जैसे, कुतः + आगतः = कुत आगतः। नरः + इव = नर इव। चन्द्रः + उदेति = चन्द्र उदेति। कः + एषः = क एषः। नरः + एति = नर एति। रक्तः + ओष्ठः = रक्त ओष्ठः। राज्ञः + औदार्यम् = राज्ञ औदार्यम्।

५३. यदि विसर्ग से पूर्व अ हो और परे भी अ हो तो अ और विसर्ग अः को ओ और परले अ का लोप हो जाता है। जैसे, नरः + अयम् = नरोऽयम्। वेदः + अधीतः = वेदोऽधीतः।

(क) यदि उपरिलिखित अ और विसर्ग (अः) से परे कोई संवार (३, ४, ५, य्, र्, ल्, व्, ह्) व्यंजन हो तो अ और विसर्ग (अः) को ओ हो जाता है।[2] जैसे, शोभनः + गन्धः = शोभनो गन्धः। नूतनः + घटः = नूतनो घटः। सद्यः + जातः = सद्यो जातः। आनीतः + दीपः = आनीतो दीपः। अश्वः + धावति = अश्वोधावति। दृढः + बन्धः = दृढो बन्धः। मनः + भिः = मनोभिः। कृतः + यत्नः = कृतो यत्नः। शान्तः + रोषः = शान्तो रोषः। कृतः + लोभः = कृतो लोभः। देवः + वन्द्यः = देवो वन्द्यः। वामः + हस्तः = वामो हस्तः।

(ख) यदि अ या आ के पीछे आने वाला विसर्ग र् का आदेश हो तो

---

१. अतो रोरप्लुतादप्लुते। ६. १. ११३। २. हशि च। ६. १. ११४।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊपर लिखे ५१, ५२, ५३, ५३ (क), के अपवाद में इस विसर्ग को र् ही होता है। जैसे, पुनः + अपि = पुनर् + अपि = पुनरपि। प्रातः + एव = प्रातरेव। द्वाः + एषा = द्वारेषा। प्रातः + गच्छ = प्रातर्गच्छ। अन्तः + धानम् = अन्तर्धानम्। स्वः + गतः = स्वर्गतः। भ्रातः + आगच्छ = भ्रातरागच्छ। मातः + देहि = मातर्देहि।

५४. तद् और एतद् सर्वनामों के रूपों 'सः और एषः' के विसर्ग का (१) लोप हो जाता है यदि परे अ के विना कोई वर्ण हो, (२) यदि परे अ हो तो पूर्व अ और विसर्ग को ओ और पर अ का लोप हो जाता है, और (३) यदि वाक्य के अन्त में हो तो विसर्ग बना रहता है। जैसे, (१) सः + आगतः = स आगतः। सः+उवाच = स उवाच। सः+करोति = सकरोति। सः+चलति = स चलति। सः + हसति = स हसति। एषः+आयाति = एष आयाति। एषः+एति = एष एति। एषः+धावति = एष धावति। एषः+वदति = एष वदति। (२) सः+अभवत् = सोऽभवत्। सः+अहम् = सोऽहम्। एषः+अगच्छत् = एषोऽगच्छत्। एषः+असौ = एषोऽसौ। (३) अगच्छत् लवपुरं सः। अपश्यत् एषः।

(क) भोः और भगोः के विसर्ग का लोप हो जाता है यदि परे कोई स्वर या संवार हो। जैसे, भोः + इन्द्र = भो इन्द्र। भोः + उमापते = भो उमापते। भोः + देवाः = भो देवाः। भो माधव, भो यदुपते। भगोः+नमस्ते = भगो नमस्ते। परन्तु भोः+छात्राः = भोश्छात्राः (विवार वर्ण)। भोः+तपोधनाः = भोस्तपोधनाः।

५५. नीचे लिखे विसर्ग सन्धि के अपवाद हैं :—

(१) निः, आविः, बहिः, दुः, प्रादुः, चतुः के विसर्ग को क, ख; प, फ; से पूर्व समस्त-पद में ष् हो जाता है।[1] जैसे, निः + कामः = निष्कामः। निः + खेदः = निष्खेदः। निः+पीड़ा = निष्पीड़ा। निः+फलम् = निष्फलम्। आविः+कृतम् = आविष्कृतम्। बहिः+कृतः = बहिष्कृतः। प्रादुः+कृतम् = प्रादुष्कृतम्। चतुः + कोणम् = चतुष्कोणम्। चतुः + पथम् = चतुष्पथम्।

ऐसे ही हविः, सर्पिः, आयुः, धनुः आदि के विसर्ग को भी समास में ष् होता है। जैसे, हविष्पानम्, सर्पिष्पात्रम्, आयुष्कामः, धनुष्पाणिः।

(२) अहर् और स्वर् का पति के साथ समास में विकल्प से र् बना रहता है।[2] जैसे, अहर्पति, स्वर्पति (अहःपति) परन्तु अहोरात्रः।

(३) कृ धातु के साथ समास में नमः, तिरः, पुरः, आदि के विसर्ग को स् होता है। जैसे, नमस्कारः, तिरस्कारः, पुरस्कारः।

---

१. इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्य। ८. ३. ४१। २. अहरादीनां पत्यादिषु वा रेफः। वा०।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे ही नीचे लिखे समासों में भी 'क्' से पूर्व विसर्ग को 'स्' होता है :— श्रेयस्करः, पयस्कारः, अयस्कान्तः, मनस्कामः, अयस्कुम्भः, पयस्पात्रम्, वाचस्पतिः, दिवस्पतिः, भास्करः, अहस्करः, इत्यादि ।

अभ्यास २.

१. सन्धि का क्या अर्थ है ? किन स्थानों में यह नित्य है और क्यों ?

२. 'ए' का 'अय्' में बदलना सम्प्रसारण का ही उदाहरण है । इसकी व्याख्या करो ।

३. असम्प्रसारण स्वरों (अ, आ) और सम्प्रसारण स्वरों के मेल से क्या विकार होता है ? सोदाहरण लिखो ।

४. किन स्वरों की सन्धि में अन्तस्थों का आदेश होता है और क्यों ? सोदाहरण लिखो ।

५. प्रगृह्य किसे कहते हैं ? यह किन अवस्थाओं में होता है ? सोदाहरण लिखो ।

६. व्यंजन सन्धि में स्थान-विकार और प्रयत्न-विकार का क्या अर्थ है ? सोदाहरण लिखो ।

७. पदान्त दन्त्य 'न्' को अन्य वर्णों से पूर्व क्या विकार होता है ? सोदाहरण लिखो ।

८. अपदान्त दन्त्य 'न्' और 'स्' को कब मूर्धन्य 'ण्' और 'ष्' होते हैं ? सोदाहरण लिखो ।

९. पदान्त 'म्' को अन्य वर्णों से पूर्व क्या विकार होता है ? सोदाहरण लिखो ।

१०. विसर्ग सन्धि के प्रसिद्ध नियम सोदाहरण लिखो ।

११. नीचे लिखे शब्दों में सन्धि-छेद या सन्धि करो और नियम भी लिखो:—

भ्रातरागच्छ, चतुष्पथम्, शान्तः, द्विड्ढि, बृंहणम्, महाँल्लाभः, सौषधिः, सख इह, उपार्षति, दिङ्नागः, ककुबत्र, तान्त्सहते, पतँस्तरु, तच्छिनत्ति, मनोभिः, लप्स्ये, लब्धः, राष्ट्रः, यज्ञः, इष्टः, नृणाम्, वाक्षु, लेक्षि, पुनारोगी, नरोऽयम्, सा + उक्ता, कर्तृ + उत्, प्रभो + एहि, विद्ये + इमे, सम्यक् + उक्तम्, हसन् + चकार, तत् + शृणोति, शत्रुम् + जहि, सुतः + शिशुः, गौः + गच्छति, माः + भिः, द्वाः + एषा, सः + अहम्, तव + छाया, वाक् + हि, दह् + स्यति, भोः + छात्राः, भीताः + नराः, नरः + इव, मा + छिदत्, वाक् + सु, जगम् + वान्, रुन्ध् +

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थः, वाक् + मात्रम्. अहो + ईशः, उप + एहि, ते + अपि, तौ + एतौ, सखि + उक्तम्, मधु + ऋते, हित + उपदेशः, पौ + अकः, पश्यति + एनम्।

१२. अधोलिखित वाक्यों को सन्धि-सहित लिखोः—

(क) चकोराः चन्द्रिकां पिबन्ति। अनुष्ठितः देवस्य आदेशः। प्रियायाः मञ्जु जल्पितम् निशम्य अतीव प्रीतः अभवत् नारायणः। पदम् हि सर्वत्र गुणैः निधीयते। सः पृष्टः तेन कः त्वम् भोः हेतुः च आगमने अत्र कः। दयायाः अधिकः धर्मः न वर्तते। कथम् कवी इमौ अद्य अपि अत्र तिष्ठतः। मेघेभ्यः जल-बिन्दवः अपतन्। पितः रक्ष माम् शरणागतम्। एषः नरः अद्य यास्यति। अमी उपाध्यायाः छात्रान् पाठयन्ति। विद्वन् इयम् ते अर्हणा। शार्ङ्गिन् छिन्धि ऋषि-पाशान्। अहरहः एतत् वाक्यम् स्मर। अमी आगच्छन्ति ऋषिपुत्राः। अस्मिन् उपवने उपविश। पुनः चक्रिन् त्रायस्व माम्। अधोक् हरिः रमणीयाम् धेनुम्। अहः अहः आख्यानम् श्रावय। काव्यम् तत् टीकते पण्डितः अयम्।

(ख) अलम् विवादेन यथा श्रुतः त्वया, तथाविधः तावत् अशेषम् अस्तु सः।
मम अत्र भावैकरसम् मनः स्थितम्, न कामवृत्तिः वचनीयम् ईक्षते॥
आजन्मनः शाठ्यम् अशिक्षितः यः, तस्य अप्रमाणम् वचनम् जनस्य।
परातिसंधानम् अधीयते यैः, विद्या इति ते सन्तु किल आप्तवाचः॥

देव्याः अपि हि वैदेह्याः सापवादः यतः जनः।
रक्षोगृहस्थितिः मूलम् अग्निशुद्धौ तु अनिश्चयः॥

(१३) नीचे लिखे वाक्यों को सन्धि-रहित लिखो :—

संग्रामो नाम शूराणामयं परम उत्सवः। न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम। अचिन्त्यानप्यर्थान्विधिर्घटयति। श्रीशस्त्वावतु मापीह। दीनो वा राजहीनो वा यो मे भर्ता स मे गुरुः। नाथे कुतस्त्वय्यशुभं प्रजानाम्। तमेव विदित्वाति-मृत्युमेति, नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय। महदपि परदुःखं शीतलं सम्यगाहुः। किमपि वक्तुकामोऽसि। किमिति किलैषा मंस्यत एव परित्याग एषोऽभिषङ्ग इति। सर्वथा व्यवहर्तव्यं कुतो ह्यवचनीयता। कथं नु खलु वत्साया मे बध्वा वनगतायास्तस्याः पितू राजर्षेर्मुखं दर्शयामः।

———

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीयोऽध्यायः ।

सुबन्त 'Declensions'

५६. संस्कृत भाषा में तीन प्रकार के शब्द हैं, **नाम** (noun), **आख्यात** (verb) और **अव्यय** या उपसर्ग और निपात (indeclinables) । सर्वनाम, संख्यावाचक और विशेषण भी नाम के ही अन्तर्गत हैं । नाम को प्रातिपदिक कहते हैं । प्रातिपदिकों के साथ सुप् प्रत्यय लगाने से संज्ञा पद बनते हैं । प्रत्येक नाम के **पुंलिंग** (masculine), **स्त्रीलिंग** (feminine) और **नपुंसकलिंग** (neuter) तीन लिंग होते हैं । और **एकवचन** (singular **द्विवचन** (dual) और **बहुवचन**, (plural) तीन वचन होते हैं । नामों के नीचे लिखे **आठ कारक** (cases) होते हैं :—

(१) कर्ता कारक (nominative), (२) कर्म (accusative), करण (instrumental), (४) सम्प्रदान (dative), (५) अपादान (ablative), (६) सम्बन्ध (genetive), (७) अधिकरण (locative) और (८) सम्बोधन[1] (vocative) ।

(क) प्रातिपदिक पर विभक्ति लगाने से जो रूप बनता है उसे पद कहते हैं, और जिस शब्द पर कोई प्रत्यय लगाया जाए उसे उस प्रत्यय के लिए अङ्ग (base) कहते हैं ।

५७. नीचे लिखे सुप् प्रत्यय (case-endings) नामों की विभक्तियों में लगाए जाते हैं :—

पुं और स्त्रीलिंग

	कारक[2]	एक०	द्वि०	बहु०
(१)	प्रथमा, कर्त्ता	सु (स)	औ	अस्

१. सम्बोधन को कोई जुदा कारक नहीं माना जाता, क्योंकि इसके रूप कर्ता के समान ही होते हैं, केवल एकवचन में भेद होता है । वैयाकरण सम्बन्ध को कारक नहीं मानते । देखो कारक प्रकरण ।

२. कारकों की क्रमशः (१) प्रथमा, (२) द्वितीया, आदि विभक्ति संज्ञा है ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२)	द्वितीया, कर्म	अम्	औ	अस्
(३)	तृतीया, करण	आ	भ्याम्	भिस्
(४)	चतुर्थी, संप्रदान	ए	भ्याम्	भ्यस्
(५)	पंचमी, अपादान	अस्	भ्याम्	भ्यस्
(६)	षष्ठी, संबन्ध	अस्	ओस्	आम्
(७)	सप्तमी, अधिकरण	इ	ओस्	सु (सुप्[1])

नपुं०

	एक०	द्वि०	बहु०
(१)	म्	ई	इ
(२)	म्	ई	इ

बाकी पुं० की भाँति।

(क) पुं० और स्त्री० स्वरान्त तथा 'अत्, अन्, इन्, अश्, वस्, यस्' अन्त वाले नामों के एक वचन के अतिरिक्त सम्बोधन के रूप कर्ता के समान होते हैं।

(ख) अकारान्त शब्दों को प्रथमा और द्वितीया के नपुं० एक वचन में 'म्' प्रत्यय लगता है, अन्यथा कोई प्रत्यय नहीं लगता।

(ग) नपुंसक लिंग में प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन में स्वरान्त प्रातिपदिक में इ से पूर्व और हलन्त में असंयुक्त स्पर्श और ऊष्म वर्णों से पूर्व न् का आगम होता है। यह न् परवर्ती वर्ण के अनुनासिक में बदल जाता है। जैसे, फलानि, महान्ति, यशांसि।

५८. पहले पांच प्रत्यय (स्, औ, अस्, अम्, औ) की पुं० और स्त्री० में **सर्वनामस्थान** (strong) संज्ञा है। भ्याम्, भिस्, भ्यस् और सु प्रत्ययों की **असर्वनामस्थान हलादि** (middle) संज्ञा है और शेष **अजादि** (begenning with vowel) विभक्ति-प्रत्ययों की **असर्वनामस्थान अजादि** (weak) संज्ञा है।

(क) नपुंसक लिंग में प्रथमा और द्वितीया के केवल बहुवचन के प्रत्यय की **सर्वनामस्थान** संज्ञा है।

---

१. प्रथमा के एकवचन (सु) से लेकर सप्तमी के बहुवचन (सुप्) तक सुप् प्रत्याहार कहलाता है। इससे सब विभक्तियों (case-endings) का ग्रहण होता है और इसी से विभक्त्यन्त प्रातिपदिक को सुबन्त कहते हैं।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संज्ञा

५९. सुबन्तों के लिए नामों के दो विभाग हैं, (१) अजन्त या स्वरान्त और (२) हलन्त। ऊपर लिखे सुप् प्रत्याहार के योग से प्रातिपदिकों में अनेक परिवर्तन होते हैं। इनके कठिन नियम न दे कर आदर्शभूत शब्दों के सिद्ध रूप ही दिए जाएँगे। विशेषणों के रूप संज्ञाओं की भाँति होते हैं। अतः केवल भिन्न रूप ही दिए जाएँगे।

१. अजन्त शब्द।

६०. अकारान्त पुंलिंग और नपुंसकलिंग शब्द।

राम पुं० 'Rama'.

	एक०	द्वि०	बहु०
१.	रामः	रामौ	रामाः
२.	रामम्	रामौ	रामान्
३.	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
४.	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
५.	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
६.	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
७.	रामे	रामयोः	रामेषु
८.	हे राम	रामौ	रामाः

नीचे लिखे अकारान्त पुं० शब्दों के रूप राम की भाँति जानो :—

नर man आदमी। छात्र student विद्यार्थी। ग्राम village गाँव। देह body शरीर। अश्व horse घोड़ा। सर्प snake साँप। मूषक rat चूहा। आदर respect इज्जत। हस्त hand हाथ। पाद foot पाँव। चौर theif चोर। दास servant नौकर। मेघ cloud बादल। शुक parrot तोता। पुत्र son बेटा। शर arrow तीर। गन्ध fragrance खुशबू। क्रोध anger गुस्सा। विघ्न obstacle रोक। योध warrior योधा। वृक्ष tree पेड़। विवाह marriage ब्याह। विनोद play खेल। नापित barber नाई। रोग disease बीमारी। संशय doubt शंका। यत्न effort कोशिश। ज्वर fever बुखार। धीवर fisher-man झींवर, मछुआ। प्रश्न question सवाल। दर्पण mirror शीशा। बिडाल, मार्जार cat बिल्ली। रजक washer-man धोबी। कूप well कुँवा। भ्रम mistake भूल। आम्र mango tree आम का पेड़।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञान नपुं० 'Knowledge'.

१, २, ८ ज्ञान	ज्ञाने	ज्ञानानि

शेष राम की भाँति।

नीचे लिखे **अकारान्त नपुं०** शब्दों के रूप **ज्ञान** की भाँति जानो :—

पुस्तक book पोथी। **जल** water पानी। **द्वार** door दरवाजा। **मित्र** friend सखा। **वन** forest जंगल। **शरीर** body देह। **वस्त्र** cloth कपड़ा। **यन्त्र** machine कला। **भूषण** ornament जेवर। **नगर** city शहर। **सुख** comfort चैन। **दुःख** misery कष्ट। **नेत्र** eye आँख। **मुख** mouth मुँह। **पुष्प** flower फूल। **उद्यान** garden बाग़। **पाप** sin गुनाह। **भय** fear डर। **रूप** beauty सौन्दर्य। **युद्ध** battle लड़ाई। **अनृत** false-hood झूठ। **सत्य** truth सचाई। **मल** filth मैल। **आकाश** sky आसमान। **अन्न** food अनाज। **गृह** house घर। **औषध** medicine दवाई। **छत्र** umbrella छतरी। **आम्र** mango-fruit आम का फल। **लवण** salt नमक। **गद्य** prose नसर। **पद्य** poetry कविता।

६१. आकारान्त पुं० और स्त्रीलिंग शब्द।

गोपा पुं० 'Cowherd'.

१.	गोपाः	गोपौ	गोपाः
२.	गोपाम्	गोपौ	गोपः
३.	गोपा	गोपाभ्याम्	गोपाभिः
४.	गोपे	गोपाभ्याम्	गोपाभ्यः
५.	गोपः	गोपाभ्याम्	गोपाभ्यः
६.	गोपः	गोपोः	गोपाम्
७.	गोपि	गोपोः	गोपासु

ऐसे ही **विश्वपा** 'संसार का रक्षक', **शंखध्मा** 'शंख बजाने वाला', **सोमपा** 'सोम पीने वाला', **धूम्रपा** 'धूँआ (तंबाकू) पीने वाला', **बलदा** 'बल देने वाला', आदि आकारान्त शब्दों के रूप जानो।

(क) जिन आकारान्त शब्दों के अन्त में धातु का आ नहीं उनके 'आ' का अजादि विभक्तियों से पूर्व लोप हो जाता है। जैसे, **हाहा** 'गंधर्व' के अजादि विभक्तियों में ये रूप होंगे :—२ बहु० **हाहान्** ४, ५, ६, ७. एक० में क्रमशः **हाहै, हाहाः, हाहाः, हाहे।**

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकारान्त स्त्री०—लता स्त्री० 'Creeper, बेल'

१.	लता	लते	लताः
२.	लताम्	लते	लताः
३.	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
४.	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
५.	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
६.	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
७.	लतायाम्	लतयोः	लतासु
८.	लते		

नीचे लिखे आकारान्त स्त्री० शब्दों के रूप लता की भाँति जानो :—

कन्या girl लड़की। विद्या knowledge ज्ञान। लज्जा modesty लाज। छाया shade छाँव। कथा story कहानी। चिन्ता worry सोच। तृष्णा thirst प्यास। आज्ञा order हुकुम। क्रीड़ा play खेल। भार्या wife पत्नी। कान्ता woman स्त्री। निशा night रात। आशा hope उम्मीद। शंका doubt संशय। परीक्षा examination इमतिहान। मक्षिका fly मक्खी। वार्त्ता news खबर। भिक्षा alms भीख। शोभा beauty सौन्दर्य। निन्दा blame बुराई। ग्रीवा neck गरदन। सन्ध्या evening शाम। माला garland हार। गंगा, रमा, सीता, शकुन्तला आदि। अम्बा 'माता' का सं० (८) एक० अम्ब है।

जरा स्त्री० 'old age बुढ़ापा' को अजादि विभक्तियों से पूर्व विकल्प से जरस् हो जाता है :—

१.	जरा	जरे, जरसौ	जराः, जरसः
२.	जराम्, जरसम्	जरे, जरसौ	जराः, जरसः
३.	जरया, जरसा	जराभ्याम्	जराभिः
४.	जरायै, जरसे	जराभ्याम्	जराभ्यः
५.	जरायाः जरसः	जराभ्याम्	जराभ्यः
६.	जरायाः, जरसः	जरयोः, जरसोः	जराणाम्, जरसाम्
७.	जरायाम्, जरसि	जरयोः, जरसोः	जरासु
८.	जरे		

६२. इकारान्त और उकारान्त पुं० नपुं० और स्त्री० शब्द।

इकारान्त पुं०—हरि पुं० 'Hari, विष्णु'

१.	हरिः	हरी	हरयः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२.	हरिम्	हरी	हरीन्
३.	हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः
४.	हरये	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
५.	हरेः	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
६.	हरेः	हर्योः	हरीणाम्
७.	हरौ	हर्योः	हरिषु
८.	हरे		

नीचे लिखे इकारान्त पुं० शब्दों के रूप हरि की भाँति जानोः—

अग्नि fire आग। सारथि charioteer गाड़ीवान। अरि enemy शत्रु। पाणि hand हाथ। कवि poet। गिरि, अद्रि mountain पहाड़। ऋषि sage। रवि sun सूरज। अवि sheep भेड़। असि sword खड्ग। निधि treasure कोश। कपि monkey बंदर। यति, मुनि monk योगी। अतिथि guest पाहुना। जलधि ocean समुद्र। तिथि lunar day चांद का दिन। रश्मि ray किरण। मणि gem रत्न। विधि fate ब्रह्मा, भाग्य। भूपति king राजा।

इकारान्त स्त्री०—मति स्त्री० 'Intelect, बुद्धि'।

१.	मतिः	मती	मतयः
२.	मतिम्	मती	मतीः
३.	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
४.	मतये, मत्यै	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
५.	मतेः, मत्याः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
६.	मतेः, मत्याः	मत्योः	मतीनाम्
७.	मतौ, मत्याम्	मत्योः	मतिषु
८.	मते		

नीचे लिखे इकारान्त स्त्री० शब्दों के रूप मति की भाँति जानो :—

गति gate चाल। मूर्ति form मूरत। भक्ति devotion भगती। प्रीति love प्यार। स्तुति praise बड़ाई। श्रुति वेद। धृति fortitude धीरज। स्मृति memory याद। कीर्ति fame यश। कान्ति luster चमक। जाति caste जात। मुक्ति release छुटकारा। सृष्टि creation दुनिया। रात्रि night रात। भूमि earth जमीन। शक्ति power ताकत। बुद्धि intelect। रीति custom रिवाज। आकृति form शकल।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हानि loss नुकसान। **वृष्टि** rain वर्षा। **दृष्टि** sight नज़र। **रुचि** relish स्वाद, भूख। **स्तुति** praise प्रशंसा।

इकारान्त नपुं०—वारि नपुं० 'Water, पानी'।

१.	वारि	वारिणी	वारीणि
२.	वारि	वारिणी	वारीणि
३.	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
४.	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
५.	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
६.	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
७.	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
८.	वारि, वारे		

इकारान्त नपुं० शब्द मसि ink 'स्याही', नाभि 'naval' आदि के रूप वारि की भाँति जानो। अक्षि, अस्थि, सक्थि और दधि इसके अपवाद हैं।

उकारान्त पुं०—वायु पुं० 'Wind, हवा'।

१.	वायुः	वायू	वायवः
२.	वायुम्	वायू	वायून्
३.	वायुना	वायुभ्याम्	वायुभिः
४.	वायवे	वायुभ्याम्	वायुभ्यः
५.	वायोः	वायुभ्याम्	वायुभ्यः
६.	वायोः	वाय्वोः	वायूनाम्
७.	वायौ	वाय्वोः	वायुषु
८.	वायो		

नीचे लिखे उकारान्त पुं० शब्दों के रूप वायु की भाँति जानोः—

गुरु teacher आचार्य। **भानु** sun सूरज। **मन्यु** anger क्रोध। **बाहु** arm बाँह। **तरु** tree पेड़। **सेतु** bridge पुल। **पशु** beast। **असु** life प्राण। **हेतु** cause कारण। **सूनु** son बेटा। **बिन्दु** drop बूँद। **शिशु** child बच्चा। **प्रभु** master स्वामी। **ऋतु** season मौसिम। **इषु** arrow तीर। **विधु** moon चाँद। **इक्षु** sugar-cane गन्ना। **तन्तु** thread धागा। **शत्रु, रिपु** enemy दुश्मन। **मृत्यु** death मौत। **बन्धु** relative रिश्तेदार। **साधु** good भला।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उकारान्त स्त्री०—धेनु स्त्री० 'Cow, गौ'।

१.	धेनुः	धेनू	धेनवः
२.	धेनुम्	धेनू	धेनूः
३.	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
४.	धेनवे, धेन्वै	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
५.	धेनोः, धेन्वाः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
६.	धेनोः, धेन्वाः	धेन्वोः	धेनूनाम्
७.	धेनौ, धेन्वाम्	धेन्वोः	धेनुषु
८.	धेनो		

नीचे लिखे उकारान्त स्त्री० शब्दों के रूप धेनु की भाँति जानो :—

तनु body शरीर। रज्जु rope रस्सी। रेणु dust धूली। चञ्चु beak चोंच।

उकारान्त नपुं०—मधु नपुं० 'Honey, शहद'।

१.	मधु	मधुनी	मधूनी
२.	मधु	मधुनी	मधूनि
३.	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
४.	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
५.	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
६.	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
७.	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
८.	मधु, मधो		

नीचे लिखे उकारान्त नपुं० शब्दों के रूप मधु की भाँति जानो:—

वस्तु thing चीज़। अश्रु tear आँसू। वसु wealth धन। जानु knee गोड़ा। तालु palate। श्मश्रु beard दाढ़ी। दारु wood लकड़ी। सानु peak चोटी।

इकारान्त और उकारान्त विशेषण।

इकारान्त शुचि 'Pure, पवित्र'।

१, २.	शुचि	शुचिनी	शुचीनि
३.	शुचिना	शुचिभ्याम्	शुचिभिः
४.	शुचये, शुचिने	शुचिभ्याम्	शुचिभ्यः
५.	शुचेः, शुचिनः	शुचिभ्याम्	शुचिभ्यः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६.	शुचेः, शुचिनः	शुच्योः, शुचिनोः	शुचीनाम्
७.	शुचौ, शुचिनि	शुच्योः, शुचिनोः	शुचिषु
८.	शुचि, शुचे		

ऐसे उकारान्त विशेषणों के भी पु० की भाँति रूप होते हैं। वैकल्पिक रूपों में शुचि की भाँति 'न्' का आगम होता है। जैसे गुरु 'heavy, भारी' के वैकल्पिक रूप ऐसे होंगे :—

एकवचन—गुरुणे (४), गुरुणः (५, ६), गुरुणि (७)
द्विवचन—गुरुणोः (६, ७)।

६३. इकारान्त और उकारान्त अपवादक शब्द :—

(१) पति पुं० 'Husband' के एकवचन में अजादि 'weak' विभक्तियों के रूप अपवाद हैं। शेष हरि की भाँति जानो। जब समास में पति 'lord' उत्तर-पद हो (जैसे भूपति) तो इसके रूप हरि की भाँति होते हैं। इसका स्त्री० पत्नी 'wife' है।

१.	पतिः	पती	पतयः
२.	पतिम्	पती	पतीन्
३.	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः
४.	पत्ये	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
५.	पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
६.	पत्युः	पत्योः	पतीनाम्
७.	पत्यौ	पत्योः	पतिषु
८.	पते		

(२) सखि पुं० 'friend, मित्र' के एक० अजादि विभक्तियों के अतिरिक्त सर्वनामस्थान (strong) विभक्तियों के रूप भी अपवादक हैं। शेष हरि की भाँति हैं। सुसखि, परमसखि आदि समस्तपदों के रूप सर्वनामस्थान विभक्तियों (१,२,८) में सखि की और शेष में हरि की भाँति होते हैं। इसका स्त्री० सखी है।

१.	सखा	सखायौ	सखायः
२	सखायम्	सखायौ	सखीन्
३.	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
४.	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
५.	सख्युः	सखिभ्याम्	सखिभ्यः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६.	सख्युः	सख्योः	सखीनाम्
७.	सख्यौ	सख्योः	सखिषु
८.	सखे		

(३) इकारान्त नपुं० अक्षि 'eye आँख', अस्थि 'bone हड्डी,' दधि 'curds दही' और सक्थि 'thigh जांघ' के रूप एक ही प्रकार बनते हैं। असर्वनाम अजादि (weak) विभक्तियों में इनके रूप अन् अन्त वाले शब्दों के समान होते हैं:—

१,२,८,	अक्षि	अक्षिणी	अक्षीणि
३,	अक्ष्णा	अक्षिभ्याम्	अक्षिभिः
४.	अक्ष्णे	अक्षिभ्याम्	अक्षिभ्यः
५.	अक्ष्णः	अक्षिभ्याम्	अक्षिभ्यः
६.	अक्ष्णः	अक्ष्णोः	अक्ष्णाम्
७.	अक्षिण, अक्षणि	अक्ष्णोः	अक्षिषु

५४. ईकारान्त और ऊकारान्त स्त्री० एकाच् monosyllabic और अनेकाच् polysyllabic शब्दों के रूपों में भेद रहता है:—

(१) अनेकाच् शब्दों के ई और ऊ को स्वरों से पूर्व क्रमशः य् और व् और एकाच् शब्दों में क्रमशः इय् और उव् होता है।

(२) अनेकाच् शब्दों के एक० में केवल ए (४) आः (५, ६) और आम् (७) प्रत्यय लगते हैं, परन्तु एकाच् में ये विकल्प से लगते हैं।

(३) अनेकाच् शब्दों के सम्बोधन एक० में ई, ऊ को ह्रस्व हो जाता है, परन्तु एकाच् में प्रथमा एक० पर स् (:) लगता है।

(४) ईकारान्त अनेकाच् शब्दों के प्रथमा एक० में स् (:) नहीं लगता, परन्तु एकाच् में लगता है। लक्ष्मीः 'goddess of wealth' तन्त्रीः 'lute', और तरीः 'boat', अपवाद हैं।

(५) अनेकाच् शब्दों के द्वितीया के एक० और बहु० क्रमशः ईम्, ऊम् और ईस्, ऊस् में अन्त होते हैं।

(क) अनेकाच् शब्द—

नदी स्त्री० 'River'

१.	नदी	नद्यौ	नद्यः
२.	नदीम्	नद्यौ	नदीः
३.	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४.	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
५.	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
६.	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
७.	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
८.	नदि		

नीचे लिखे अनेकाच् ईकारान्त स्त्री० शब्दों के रूप नदी की भाँति जानोः—

कुमारी maiden कुँवारी। नारी woman स्त्री। जननी mother माता। दासी female servant नौकरानी। नगरी town शहर। पत्नी wife। वल्ली creeper बेल। महिषी queen रानी। पृथ्वी earth भूमि। श्रेणी class जमात। मैत्री friendship मित्रता। पुत्री daughter बेटी। धात्री nurse धाया। वापी। pool तालाब। वीची wave लहर। जानकी, सावित्री, इत्यादि।

वधू स्त्री० 'Bride, बहू'।

१.	वधूः	वध्वौ	वध्वः
२.	वधूम्	वध्वौ	वधूः
३.	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
४.	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
५.	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
६.	वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्
७.	वध्वाम्	वध्वोः	वधूषु
८.	वधु		

नीचे लिखे अनेकाच् ऊकारान्त स्त्री० शब्दों के रूप वधू की भाँति जानोः—

श्वश्रू mother-in-law सासू। चमू army सेना। कर्कन्धू jujube tree or fruit बेरी या बेर। यवागू rice-gruel पीच। चम्पू a kind of composition। चंचू beak चोंच।

(ख धातु-व्युत्पन्न शब्द 'Root nouns'

एकाच्—धी स्त्री० 'Intelect'

१. ८.	धीः	धियौ	धियः
२.	धियम्	धियौ	धियः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३.	धिया	धीभ्याम्	धीभिः
४.	धिये, धियै	धीभ्याम्	धीभ्यः
५.	धियः, धियाः	धीभ्याम्	धीभ्यः
६.	धियः, धियाः	धियोः	धीनाम्, धियाम्
७.	धियि, धियाम्	धियोः	धीषु

ऐसे ही ह्री 'shame शरम'। श्री 'riches धन'। भी 'fear डर' इत्यादि अन्य ईकारान्त एकाच् स्त्री० शब्दों के रूप जानो।

भू स्त्री० 'Earth, भूमि'।

१, ८.	भूः	भुवौ	भुवः
२.	भुवम्	भुवौ	भुवः
३.	भुवा	भूभ्याम्	भूभिः
४.	भुवे, भुवै	भूभ्याम्	भूभ्यः
५.	भुवः, भुवाः	भूभ्याम्	भूभ्यः
६.	भुवः, भुवाः	भुवोः	भूनाम्, भुवाम्
७.	भुवि, भुवाम्	भुवोः	भूषु

ऐसे ही भ्रू 'eye-brow भौं'। जू 'speed रफ्तार'। सू 'birth, 'mother, जन्म, माता' आदि के रूप जानो।

सुधी (सुष्ठु ध्यायति) पुं० 'Wise, बुद्धिमान्'।

१, ८.	सुधीः	सुधियौ	सुधियः
२.	सुधियम्	सुधियौ	सुधियः
३.	सुधिया	सुधीभ्याम्	सुधीभिः
४.	सुधिये	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
५.	सुधियः	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
६.	सुधियः	सुधियोः	सुधियाम्
७.	सुधियि	सुधियोः	सुधीषु

ऐसे ही शुद्धधी, सुश्री, परमधी, आदि के रूप जानो।

सेनानी पुं० 'General'.

१.	सेनानीः	सेनान्यौ	सेनान्यः
२.	सेनान्यम्	सेनान्यौ	सेनान्यः
३.	सेनान्या	सेनानीभ्याम्	सेनानीभिः
४.	सेनान्ये	सेनानीभ्याम्	सेनानीभ्यः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५.	सेनान्यः	सेनानीभ्याम्	सेनानीभ्यः
६.	सेनान्यः	सेनान्योः	सेनान्याम्
७.	सेनान्याम्	सेनान्योः	सेनानीषु

स्त्री स्त्री० 'Woman'.

१.	स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः
२.	स्त्रियम्, स्त्रीम्	स्त्रियौ	स्त्रियः, स्त्रीः
३.	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः
४.	स्त्रियै	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
५.	स्त्रियाः	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
६.	स्त्रियाः	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्
७.	स्त्रियाम्	स्त्रियोः	स्त्रीषु
८.	स्त्रि		

वर्षाभू स्त्री० 'Frog, मेंडक'।

१.	वर्षाभूः	वर्षाभ्वौ	वर्षाभ्वः
२.	वर्षाभ्वम्	वर्षाभ्वौ	वर्षाभ्वः
३.	वर्षाभ्वा	वर्षाभूभ्याम्	वर्षाभूभिः
४.	वर्षाभ्वै	वर्षाभूभ्याम्	वर्षाभूभ्यः
५.	वर्षाभ्वाः	वर्षाभूभ्याम्	वर्षाभूभ्यः
६.	वर्षाभ्वाः	वर्षाभ्वोः	वर्षाभूणाम्
७.	वर्षाभ्वाम्	वर्षाभ्वोः	वर्षाभूषु
८.	वर्षाभु		

ऐसे ही प्रसू 'mother, मां'। वीरसू 'mother of warrior, वीर को पैदा करने वाली'। पुनर्भू 'remarried widow, पुनर्विवाहित विधवा' आदि के रूप जानो।

स्वयंभू पुं० 'Self-existent, ब्रह्मा'।

१, ८.	स्वयंभूः	स्वयंभुवौ	स्वयंभुवः
२.	स्वयंभुवम्	स्वयंभुवौ	स्वयंभुवः
३.	स्वयंभुवा	स्वयंभूभ्याम्	स्वयंभूभिः
४.	स्वयंभुवे	स्वयंभूभ्याम्	स्वयंभूभ्यः
५.	स्वयंभुवः	स्वयंभूभ्याम्	स्वयंभूभ्यः
६.	स्वयंभुवः	स्वयंभुवोः	स्वयंभुवाम्

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७.	स्वयंभुवि	स्वयंभुवो:	स्वयंभूषु

६५. ऋकारान्त शब्द प्रायः तृ में अन्त होते हैं। सर्वनामस्थान (strong) विभक्तियों में इस तृ को तर् या तार् हो जाता है, असर्वनाम० हलादि (middle) में तृ और असर्वनाम० अजादि (weak में त्र होता है। पुं० और स्त्री० में प्रायः समान रूप रहते हैं, परन्तु द्वितीया के बहु० में भेद है। पुं० में ॠन् और स्त्री० में ॠस् में रूप अन्त होते हैं। सर्वनामस्थान विभक्तियों से पूर्व अव्युत्पन्न पितृ आदि संबंधियों के नामों (name of relations) को गुण (अर्) होता है और कर्तृ आदि व्युत्पन्न (agent-nouns) को वृद्धि (आर्) होती है।

कर्तृ पुं० 'Agent, Doer करने वाला'।

१.	कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः
२.	कर्तारम्	कर्तारौ	कर्तॄन्
३.	कर्त्रा	कर्तृभ्याम्	कर्तृभिः
४.	कर्त्रे	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्यः
५.	कर्तुः	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्यः
६.	कर्तुः	कर्त्रोः	कर्तॄणाम्
७.	कर्तरि	कर्त्रोः	कर्तृषु
८.	कर्तः		

नीचे लिखे ऋकारान्त व्युत्पन्न पुं० शब्दों के रूप कर्तृ की भाँति जानोः—

धातृ creator रचयिता। नेतृ leader अगुआ। दातृ giver देने वाला। जेतृ conquerer जीतने वाला। योद्धृ fighter लड़ने वाला। गोप्तृ protector रक्षक। होतृ sacrificer हवन करने वाला। वक्तृ speaker बोलने वाला। भर्तृ husband पति, पालने वाला। नप्तृ grand-son पोता।

धातृ नपुं० 'Creator, ब्रह्मा'।

१, २.	धातृ	धातृणी	धातॄणि
३.	धात्रा, धातृणा	धातृभ्याम्	धातृभिः
४.	धात्रे, धातृणे	धातृभ्याम्	धातृभ्यः
५.	धातुः, धातृणः	धातृभ्याम्	धातृभ्यः
६.	धातुः, धातृणः	धात्रोः, धातृणोः	धातॄणाम्

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७.	धातरि, धातृणि	धात्रोः, धातृणोः	धातृषु
८.	धातः, धातृ		

ऐसे ही कर्तृ, नेतृ आदि नपुं० ऋकारान्त शब्दों के रूप जानोः—

पितृ पुं० 'father, पिता'।

१.	पिता	पितरौ	पितरः
२.	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
३.	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
४.	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
५.	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
६.	पितुः	पित्रोः	पितॄणाम्
७.	पितरि	पित्रोः	पितृषु
८.	पितः		

नीचे लिखे संबंधवाचक पुं० शब्दों के रूप पितृ की भाँति जानो :— भ्रातृ brother भाई। जामातृ son-in-law जँवाई। देवृ husband's brother देवर। शंस्तृ praiser प्रशंसक। नृ 'man आदमी' का षष्ठी बहु० नॄणाम् या नृणाम् होता है।

मातृ स्त्री० 'mother, माता'।

१.	माता	मातरौ	मातरः
२.	मातरम्	मातरौ	मातॄः

शेष पितृ की भाँति।

ऐसे ही दुहितृ daughter बेटी। यातृ husband's brother's wife। ननान्दृ husband's sister ननद। आदि के रूप जानो।

(क) नप्तृ 'grand-son पोता' और भर्तृ 'husband पति संबंधवाचकों के रूप कर्तृ के समान होते हैं। स्वसृ स्त्री० 'sister बहिन' के रूप भी (२) बहु० के अतिरिक्त कर्तृ की भाँति होते हैं :—

१.	स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः
२.	स्वसारम्	स्वसारौ	स्वसॄः

(ख) क्रोष्टु पुं० 'jackal गीदड़' के पहले पांच रूप ऋकारान्त शब्दों की भाँति बनते हैं। अजादि विभक्तियों में विकल्प से और असर्वनाम० हलादि विभक्तियों में कोई विकार नहीं होता।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६६. ऐ, ओ और औ अन्त वाले शब्दों में रै wealth, गो 'cow' द्यो 'sky' और नौ 'boat' ही प्रसिद्ध हैं। रै के ऐ को स्वरों से पूर्व आय् और व्यंजनों से पूर्व आ हो जाता है। गो को सर्वनामस्थान विभक्तियों में वृद्धि (गौ) और (२) बहु० में गा हो जाता है।

रै पुं० 'wealth, धन'।

१, ८.	राः	रायौ	रायः
२.	रायम्	रायौ	रायः
३.	राया	राभ्याम्	राभिः
४.	राये	राभ्याम्	राभ्यः
५.	रायः	राभ्याम्	राभ्यः
६.	रायः	रायोः	रायाम्
७.	रायि	रायोः	रासु

गो पुं० स्त्री० 'bull, cow, बैल, गौ'।

१, ८.	गौः	गावौ	गावः
२.	गाम्	गावौ	गाः
३.	गवा	गोभ्याम्	गोभिः
४.	गवे	गोभ्याम्	गोभ्यः
५.	गोः	गोभ्याम्	गोभ्यः
६.	गोः	गवोः	गवाम्
७.	गवि	गवोः	गोषु

नौ स्त्री० 'boat, किश्ती'।

१, ८.	नौः	नावौ	नावः
२.	नावम्	नावौ	नावः
३.	नावा	नौभ्याम्	नौभिः
४.	नावे	नौभ्याम्	नौभ्यः
५.	नावः	नौभ्याम्	नौभ्यः
६.	नावः	नावोः	नावाम्
७.	नावि	नावोः	नौषु

अभ्यास ३.

संस्कृत में अनुवाद करोः—

विद्यार्थी पोथी पढ़ता है (पठ्)। लड़की स्कूल जाती है। माता अपने

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुत्र (सूनु) को देखती है। नदी में पानी है। बाग में पेड़ हैं। सूरज की गरमी (आतप) बहुत तेज़ (तीक्ष्ण) है। भाई ने अपनी बहिन (स्वसृ) को देखा। गौ हरा घास (शष्प) खाती है। पिता अपनी बेटी (दुहितृ) को धन (रै) देता है। बरसात के मौसिम में मेंडक (वर्षाभू) भूमि से बाहर आते हैं (निर्-गम्)। मैंने अपनी आँखों (अक्षि) वहाँ तीन स्त्रियों को देखा। जनरल (सेनानी) अपनी सेना (चमू) को शत्रु के विरुद्ध ले गया (नी)। नदी के किनारे (तट) आप का मित्र बैठा था। इस कुँवे का पानी (वारि) साफ़ (शुचि) है। आप का भार बहुत भारी (गुरु) है। कवि लोग सृष्टि के रक्षक (विश्वपा) की बुद्धि की प्रशंसा करते हैं।

पत्नी अपने पति की सेवा करती है (सेव)। यह स्त्री घर की मालकिन (पती) है। उसे धन (श्री) की इच्छा है। हे बहिन (स्वसृ), मैं तुम्हारा मित्र (सखि) हूँ। देवताओं (देव) ने हड्डियों (अस्थि) के शस्त्र बनाए। उसमें कोई अकल (धी) नहीं। सीता ने आँखें मूँद लीं (नि मील्) पिछले दिनों में भारत धन (रै) के लिए प्रसिद्ध था। उसने जँवाई को मीठे (स्वादु) आम भेजे। मुनि को उन्होंने अपना नेता बनाया और शत्रुओं (अरि) को मारा (हन्)। स्वयम्भू ने इस संसार को रचा है। नंबरदार (ग्रामणी) ने अतिथि को दही दिया। अर्जुन ने दुर्योधन की जांघ (सक्थि) को तोड़ा (भञ्ज्)। राम ने नौ से नदी को पार किया (तृ)।

२. हलन्त शब्द।

६७. हलन्त शब्दों के दो भेद हैं, अविकृत और विकृत। अविकृत शब्दों में शब्द के अंदर कोई विकार नहीं होता। इनमें केवल अन्त्य व्यंजनों का विभक्ति-प्रत्ययों के साथ सन्धि-विकार होता है। पुं० और स्त्री० में समान रूप रहते हैं। नपुं० में केवल कर्ता, कर्म और संबोधन के द्वि० और बहु० भिन्न होते हैं।

(क) इन शब्दों के अन्त्य व्यंजन **प्रथमा एक०** के प्रत्यय स् और **सप्तमी बहु०** के सु से पूर्व **अविकृत** रहते हैं। अन्यत्र वे क्, ट्, त्, प्, या विसर्ग में बदल जाते हैं, और इन्हें भ् से आरंभ होने वाले प्रत्ययों से पूर्व क्रमशः ग्, ड्, द्, ब् या र् होते हैं। अस् अन्त वाले शब्दों के अतिरिक्त पु० और स्त्री० में **संबोधन एक०** **प्रथमा के समान** होता है।

६८. विकृत हलन्त शब्दों में किसी स्वर की **वृद्धि** या **गुण** से अथवा किसी स्वर या व्यंजन के **लोप के कारण अंग में विकार** होता है। इन शब्दों

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अन्त में प्रायः नीचे लिखे अक्षर होते हैं:—

त्—अत्, मत्, वत्। न्—अन्, मन्, वन्।

इन्—मिन्, विन्। स्—यस्, वस्। च्—अच्।

इनमें अत्, इन् और यस् अन्त वाले शब्दों के दो अंग होते हैं:— (१) सर्वनामस्थान (strong) विभक्तियों से पूर्व (पहले पांच रूप) और (१) शेष असर्वनामस्थान (weak) विभक्तियों से पूर्व।

अन्, वस् और अच् अन्त वाले शब्दों के तीन अंग होते हैं:—(१) सर्वनामस्थान (strong) विभक्तियों से पूर्व, (२) असर्वनाम० हलादि (middle) से पूर्व और (३) असर्वनाम० अजादि (weak) से पूर्व।

(क) अत् और अच् अन्त वाले शब्दों के अतिरिक्त, प्रथमा पुं० एक० में अंग के प्रत्यय का स्वर दीर्घ हो जाता है। इन शब्दों के प्रथमा पुं० एक० के अन्त में न् रहता है, परन्तु जिन शब्दों के अन्त में न् होता है वहाँ यह गिर जाता है। जैसे, श्रीमान्, श्रेयान्, विद्वान्, राजा, युवा, धनी, मनस्वी। परन्तु अदन्, प्रत्यङ्।

(ख) जिन ऊपर कहे शब्दों का प्रथमा पुं० एक में स्वर दीर्घ होता है, उनका संबोधन में स्वर ह्रस्व और न् बना रहता है। जैसे, श्रीमन्, श्रेयन्, विद्वन्, राजन्, युवन्, धनिन्, मनस्विन्।

अविकृत हलन्त शब्द।

तवर्गान्त शब्द

मरुत् पुं० 'Wind' हवा'

	एक०	द्वि०	बहु०
१, ८.	मरुत्-द्[1]	मरुतौ	मरुतः
२.	मरुतम्	मरुतौ	मरुतः
३.	मरुता	मरुद्भ्याम्	मरुद्भिः
४.	मरुते	मरुद्भ्याम्	मरुद्भ्यः
५.	मरुतः	मरुद्भ्याम्	मरुद्भ्यः
६.	मरुतः	मरुतोः	मरुताम्
७.	मरुति	मरुतोः	मरुत्सु

१. हलन्त शब्दों के प्रथमा के एक० में पहला और तीसरा वर्गीय वर्ण रहते हैं। आगे दिए रूपों में केवल पहला वर्ण ही दिया जाएगा।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वजित् 'All-conquering'.

१, ८.	विश्वजित्	विश्वजितौ	विश्वजितः
२.	विश्वजितम्	विश्वजितौ	विश्वजितः
३.	विश्वजिता	विश्वजिद्भ्याम्	विश्वजिद्भिः
४.	विश्वजिते	विश्वजिद्भ्याम्	विश्वजिद्भ्यः
५.	विश्वजितः	विश्वजिद्भ्याम्	विश्वजिद्भ्यः
६.	विश्वजितः	विश्वजितोः	विश्वजिताम्
७.	विश्वजिति	विश्वजितोः	विश्वजित्सु

नीचे लिखे अविकृत तकारांत शब्दों के रूप मरुत् की भाँति जानो :—

भूभृत् पुं० king, mountain राजा, पहाड़। योषित् स्त्री० woman स्त्री। सरित् स्त्री० stream नदी। तडित्, विद्युत् स्त्री० lightning बिजली। हरित् green हरा। रोहित् sun सूरज। नोट—विकृत शब्दों के रूप आगे दिए जायँगे।

जगत् नपुं० 'world'.

१, २, ८, जगत्	जगती	जगन्ति

शेष मरुत् की भाँति।

७०. सुहृद् पुं० 'Friend मित्र'।

१, ८.	सुहृत्	सुहृदौ	सुहृदः
२.	सुहृदम्	सुहृदौ	सुहृदः
३.	सुहृदा	सुहृद्भ्याम्	सुहृद्भिः
४.	सुहृदे	सुहृद्भ्याम्	सुहृद्भ्यः
५.	सुहृदः	सुहृद्भ्याम्	सुहृद्भ्यः
६.	सुहृदः	सुहृदोः	सुहृदाम्
७.	सुहृदि	सुहृदोः	सुहृत्सु

तमोनुद् 'Darkness-destroyer.'

१. ८	तमोनुत्	तमोनुदौ	तमोनुदः
२.	तमोनुदम्	तमोनुदौ	तमोनुदः
३.	तमोनुदा	तमोनुद्भ्याम्	तमोनुद्भिः
४.	तमोनुदे	तमोनुद्भ्याम्	तमोनुद्भ्यः
५.	तमोनुदः	तमोनुद्भ्याम्	तमोनुद्भ्यः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६.	तमोनुदः	तमोनुदोः	तमोनुदाम्
७.	तमोनुदि	तमोनुदोः	तमोनुत्सु

दृषद् स्त्री० 'Rock, चटान'।

१, ८.	दृषद्	दृषदौ	दृषदः
२.	दृषदम्	दृषदौ	दृषदः
३.	दृषदा	दृषद्भ्याम्	दृषद्भिः

शेष सुहृद् की भाँति।

नीचे लिखे दकारान्त अविकृत शब्दों के रूप सुहृद् की भाँति जानो :—

शरद् स्त्री० autumn पतझड़। ककुद् स्त्री० peak चोटी। मुद् स्त्री० joy आनंद। सम्पद् स्त्री० riches धन। विपद्, आपद् स्त्री० misfortune मुसीबत। मृद् स्त्री० clay मिट्टी। संसद् स्त्री० assembly सभा। प्रतिपद् स्त्री० first-day of lunar fortnight पड़वा। वेदविद् Vedic scholar वेद जानने वाला। नखच्छिद् nail-cutter नाखुन काटने वाला।

समिध् स्त्री० 'sacrificial stick, समिधा'।

१, ८.	समित्	समिधौ	समिधः
२.	समिधम्	समिधौ	समिधः
३.	समिधा	समिद्भ्याम्	समिद्भिः
४.	समिधे	समिद्भ्याम्	समिद्भ्यः
५.	समिधः	समिद्भ्याम्	समिद्भ्यः
६.	समिधः	समिधोः	समिधाम्
७.	समिधि	समिधोः	समित्सु

ऐसे ही क्षुध् hunger भूख। युध् war जंग। तथा सर्वशक् all-powerful। चित्रलिख् painter चितेरा। आदि के रूप जानो।

पवर्गान्त शब्द।

७१. पवर्गान्त शब्द बहुत कम प्रयोग में आते हैं। इनके रूप मरुत् या सुहृद् की भाँति होते हैं। जैसे ककुभ् direction दिशा।

१.	ककुप्	ककुभौ	ककुभः

(२) एक० ककुभम्। (३) एक० ककुभा, बहु० ककुब्भिः। (७) बहु० ककुप्सु।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चवर्गान्त शब्द ।[1]

७२. वाच् स्त्री॰ 'Speech, वाणी ।'

१. ८.	वाक्	वाचौ	वाचः
२.	वाचम्	वाचौ	वाचः
३.	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः
४.	वाचे	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
५.	वाचः	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
६.	वाचः	वाचोः	वाचाम्
७.	वाचि	वाचोः	वाक्षु

पयोमुच् पुं॰ 'Cloud, बादल' ।

१, ८.	पयोमुक्	पयोमुचौ	पयोमुचः
२.	पयोमुचम्	पयोमुचौ	पयोमुचः
३.	पयोमुचा	पयोमुग्भ्याम्	पयोमुग्भिः
४.	पयोमुचे	पयोमुग्भ्याम्	पयोमुग्भ्यः
५.	पयोमुचः	पयोमुग्भ्याम्	पयोमुग्भ्यः
६.	पयोमुचः	पयोमुचोः	पयोमुचाम्
७.	पयोमुचि	पयोमुचोः	पयोमुक्षु

ऐसे ही त्वच् स्त्री॰ skin खाल । रुच् स्त्री॰ luster चमक । स्रुच् स्त्री॰ sacrificial laddle स्रुवा । आदि चकारान्त शब्दों के रूप जानो । तिर्यच् आदि अपवाद हैं ।

वणिज् पुं॰ 'Merchant, बनिया' ।

१, ८.	वणिक्	वणिजौ	वणिजः
२.	वणिजम्	वणिजौ	वणिजः
३.	वणिजा	वणिग्भ्याम्	वणिग्भिः
४.	वणिजे	वणिग्भ्याम्	वणिग्भ्यः
५.	वणिजः	वणिग्भ्याम्	वणिग्भ्यः
६.	वणिजः	वणिजोः	वणिजाम्
७.	वणिजि	वणिजोः	वणिक्षु

[1] चवर्ग पद के अन्त में और हलादि विभक्तियों से पूर्व क् या ग् में बदल जाता है, श् प्रायः क् या ग् में और कभी ट् या ड् में भी बदल जाता है ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुज् स्त्री० 'Pain, disease रोग'।

१, ८.	रुक्	रुजौ	रुजः
२.	रुजम्	रुजौ	रुजः
३.	रुजा	रुग्भ्याम्	रुग्भिः
७.	रुजि	रुजोः	रुक्षु

नीचे लिखे जकारान्त शब्दों के रूप वणिज् की भाँति जानोः —

स्रज् स्त्री० garland माला। ऊर्ज् स्त्री० strength बल। असृज् नपुं० blood लोहू। ऋत्विज् sacrificer याजक। भिषज् पुं० physician वैद्य। सम्राज् आदि शब्द अपवादक हैं।

सम्राज् पुं० 'Emperor, overlord महाराजा'

१, ८.	सम्राट्	सम्राजौ	सम्राजः
२.	सम्राजम्	सम्राजौ	सम्राजः
३.	सम्राजा	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भिः
४.	सम्राजे	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भ्यः
५.	सम्राजः	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भ्यः
६.	सम्राजः	सम्राजोः	सम्राजाम्
७.	सम्राजि	सम्राजोः	सम्राट्सु

नीचे लिखे जकारान्त शब्दों के रूप सम्राज् की भाँति जानो :—

राज् पुं० king राजा। विभ्राज् पुं० sun सूरज। देवराज् पुं० Indra। विराज् पुं० splendour चमक, क्षत्रिय। परिव्राज् पुं० hermit संन्यासी। विश्वसृज् पुं० Brahma ब्रह्मा।

विश् पुं० 'Vaishya, वैश्य'।

१, ८.	विट्	विशौ	विशः
२.	विशम्	विशौ	विशः
३.	विशा	विड्भ्याम्	विड्भिः
४.	विशे	विड्भ्याम्	विड्भ्यः
५.	विशः	विड्भ्याम्	विड्भ्यः
६.	विशः	विशोः	विशाम्
७.	विशि	विशोः	विट्सु

ऐसे ही अन्य शकारान्त शब्दों के रूप जानो। दृश्, तादृश् अपवाद हैं।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिश् स्त्री० 'Direction'.

१, ८.	दिक्	दिशौ	दिशः
२.	दिशम्	दिशौ	दिशः
३.	दिशा	दिग्भ्याम्	दिग्भिः
४.	दिशे	दिग्भ्याम्	दिग्भ्यः
५.	दिशः	दिग्भ्याम्	दिग्भ्यः
६.	दिशः	दिशोः	दिशाम्
७.	दिशि	दिशोः	दिक्षु

ऐसे ही तादृश् such-like वैसा। ईदृश्, such ऐसा। दृश्, बहुस्पृश्, स्पृश्, आदि शब्दों के रूप जानो।

टवर्गान्त शब्द

७३. टवर्गान्त या मूर्धन्यन्त शब्दों में षकारान्त ही प्रसिद्ध हैं। इनके ष् को ट् या ड् हो जाता है।

द्विष् पुं० 'enemy, शत्रु'।

१,८.	द्विट्	द्विषौ	द्विषः
२.	द्विषम्	द्विषौ	द्विषः
३.	द्विषा	द्विड्भ्याम्	द्विड्भिः
४.	द्विषे	द्विड्भ्याम्	द्विड्भ्यः
५.	द्विषः	द्विड्भ्याम्	द्विड्भ्यः
६.	द्विषः	द्विषोः	द्विषाम्
७.	द्विषि	द्विषोः	द्विट्सु

(१) एक० (१) बहु० (३) बहु (७) बहु०

प्रावृष् स्त्री० 'rainy season' प्रावृट् प्रावृषः प्रावृड्भिः प्रावृट्सु

त्विष् स्त्री० 'light, luster' त्विट् त्विषः त्विड्भिः त्विट्सु

रकारान्त शब्द।

७४. प्रथमा के एक० में र् को विसर्ग हो जाता है। सप्तमी के बहु० में सु से पूर्व र् ही बना रहता है। पद के अन्त में या व्यंजन से पूर्व र् के पूर्व-वर्त्ती इ और उ को दीर्घ हो जाता है।

गिर् स्त्री० 'Speech, वाणी'।

१,८.	गीः	गिरौ	गिरः
२.	गिरम्	गिरौ	गिरः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३.	गिरा	गीर्भ्याम्	गीर्भिः
४.	गिरे	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः
५.	गिरः	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः
६.	गिरः	गिरोः	गिराम्
७.	गिरि	गिरोः	गीर्षु

	(१) एक०	(२) बहु०	(३) बहु०	(७) बहु०
पुर् स्त्री० 'town'	पूः	पुरः	पूर्भिः	पूर्षु
धुर् स्त्री० 'yoke'	धूः	धुरः	धूर्भिः	धूर्षु
द्वार् स्त्री० 'door'	द्वाः	द्वारः	द्वार्भिः	द्वार्षु

सकारान्त शब्द ।

७५. सकारान्त शब्द **अस्**, **इस्** और **उस्** प्रत्ययों द्वारा बनते हैं। इनका लिंग प्रायः नपुं० होता है। प्रथमा, द्वितीया और संबोधन नपुं० के बहु० में इनके अन्त्य स्वर को दीर्घ हो जाता है। यदि समास में ये उत्तर-पद हों तो ये पुं० और स्त्री० विशेषण होते हैं।

चन्द्रमस् पुं० 'Moon, चाँद।

१.	चन्द्रमाः	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
२.	चन्द्रमसम्	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
३.	चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभिः
४.	चन्द्रमसे	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः
५.	चन्द्रमसः	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः
६.	चन्द्रमसः	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसाम्
७.	चन्द्रमसि	चन्द्रमसोः	चन्द्रमःसु, चन्द्रमस्सु
८.	चन्द्रमः		

नीचे लिखे सकारान्त पुं० शब्दों के रूप चन्द्रमस् की भाँति जानोः—

वेधस् creator ब्रह्मा। **सुमनस्** good-minded सज्जन। **दुर्मनस्** ill-minded दुर्जन। **उन्मनस्** agitated पागल। **अप्सरस्** स्त्री० nymph अप्सरा।

पयस् नपुं० 'Milk, दूध'।

१, २.	पयः	पयसी	पयांसि

शेष चन्द्रमस् की भाँति।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीचे लिखे सकारान्त नपुं० शब्दों के रूप पयस् की भाँति जानोः—

मनस् mind मन। नभस् sky आकाश। तपस् penance तप। तमस् darkness अँधेरा। रजस् dust धूली। यशस् fame कीर्ति। वयस् age आयु। अवस् protection रक्षा। वचस् speech वाणी। सरस् lake झील। वक्षस्, उरस् chest छाती। तेजस्, वर्चस् glory तेज। शिरस् head सिर। चेतस् mind चित्त। एनस् sin पाप। स्रोतस् stream नदी। वासस् garment वस्त्र। अम्भस् water पानी। तरस् speed रफ्तार, वेग।

ज्योतिस् नपुं० 'Light, रोशनी'।

१, २.	ज्योतिः	ज्योतिषी	ज्योतींषि
३.	ज्योतिषा	ज्योतिर्भ्याम्	ज्योतिर्भिः
४.	ज्योतिषे	ज्योतिर्भ्याम्	ज्योतिर्भ्यः
५.	ज्योतिषः	ज्योतिर्भ्याम्	ज्योतिर्भ्यः
६.	ज्योतिषः	ज्योतिषोः	ज्योतिषाम्
७.	ज्योतिषि	ज्योतिषोः	ज्योतिःषु-ष्षु

ऐसे ही हविस् 'oblation', सर्पिस् 'ghee', तथा अन्य इस् अन्त वाले शब्दों के रूप जानो। धनुस् 'bow', आयुस् 'age', चक्षुस् 'eye', वपुस् 'body' तथा अन्य उस् अन्त वाले शब्दों के रूप भी ज्योतिस् की भाँति जानो।

अर्चिस् स्त्री० 'Flame'

१.	अर्चिः	अर्चिषौ	अर्चिषः
२.	अर्चिषम्	अर्चिषौ	अर्चिषः
३.	अर्चिषा	अर्चिर्भ्याम्	अर्चिर्भिः

शेष ज्योतिस् की भाँति जानो।

धनुस् नपुं० 'Bow, कमान'।

१, २.	धनुः	धनुषी	धनूंषि

शेष ज्योतिस् की भाँति।

(क) यदि मनस् बहुव्रीहि समास में उत्तरपद हो तो पुं० और स्त्री० में चन्द्रमस् की भाँति इसके रूप होते हैं। जैसे, सुमनाः, प्रसन्नमनाः। अङ्गिरस् और उषस् के रूप भी ऐसे ही होते हैं, जैसे, अङ्गिराः, उषाः। उशनस् का प्रथमा का एक० उशना होता है।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ख) आशिस् स्त्री० 'blessing' की इ को प्रथमा के एक० में और व्यंजनों से पूर्व दीर्घ हो जाता है। जैसे, (१) एक० आशीः, बहु० आशिषः। (३) बहु० आशीर्भिः। (७) बहु० आशीःषु।

(ग) दोस् पुं० 'arm' के पहले पांच रूपों के अतिरिक्त अन्यत्र दो दो रूप बनते हैं। जैसे, एक० (३) दोषा या दोष्णा। (४) दोषे या दोष्णे। (५,६) दोषः या दोष्णः। (७) दोषि या दोष्णि-षणि। द्वि० (३) दोर्भ्याम् या दोषभ्याम्। (६) दोषोः या दोष्णोः। बहु० (३) दोर्भिः या दोषभिः। (६) दोषाम् या दोष्णाम्। (७) दोष्षु-दोःषु या दोषषु।

हकारान्त शब्द।

७६. हकारान्त शब्दों में पद के अन्त में या हलादि प्रत्ययों से पूर्व ह् कवर्ग में बदल जाता है, परन्तु मधुलिह् और उपानह् का ह् क्रमशः टवर्ग और तवर्ग में बदलता है।

दुह् पुं०

१, ८.	धुक्	दुहौ	दुहः
२.	दुहम्	दुहौ	दुहः
३.	दुहा	धुग्भ्याम्	धुग्भिः
६.	दुहः	दुहोः	दुहाम्
७.	दुहि	दुहोः	धुक्षु

मधुलिह् पुं० 'Bee, भौंरा'

१, ८.	मधुलिट्	मधुलिहौ	मधुलिहः
२.	मधुलिहम्	मधुलिहौ	मधुलिहः
३.	मधुलिहा	मधुलिड्भ्याम्	मधुलिड्भिः
४.	मधुलिहे	मधुलिड्भ्याम्	मधुलिड्भ्यः
५.	मधुलिहः	मधुलिड्भ्याम्	मधुलिड्भ्यः
६.	मधुलिहः	मधुलिहोः	मधुलिहाम्
७.	मधुलिहि	मधुलिहोः	मधुलिट्सु

ऐसे अन्य हकारान्त पुं० और स्त्री० शब्दों के रूप जानो। अनडुह् पुं० और उपानह् स्त्री० अपवादक हैं। अनडुह् विकृत शब्द है।

उपानह् स्त्री० 'Shoe जूता'।

१, ८.	उपानत्	उपानहौ	उपानहः
२.	उपानहम्	उपानहौ	उपानहः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३.	उपानहा	उपानद्भ्याम्	उपानद्भिः
४.	उपानहे	उपानद्भ्याम्	उपानद्भ्यः
५.	उपानहः	उपानद्भ्याम्	उपानद्भ्यः
६.	उपानहः	उपानहोः	उपानहाम्
७.	उपानहि	उपानहोः	उपानत्सु

अभ्यास ४.

संस्कृत में अनुवाद करो :—

हवा (मरुत्) जहाज़ (नौ) को चटान (दृषद्) की ओर ले गई। संसार (जगत्) में मित्र (सुहृद्) बड़े उपकारी होते हैं। विद्यार्थी अग्नि में समिधा (समिध्) की आहुति डालता है। राजा (भूभृत्) लड़ाई (युध्) में लड़ते हैं (युध्)। भूख (क्षुध्) में मनुष्य पाप भी कर डालता है। सौदागर (वणिज्) ने यज्ञ करने वाले (ऋत्विज्) को धन दिया। वैद्य (भेषज्) ने रोग (रुज्) का इलाज किया (प्रतिकृ)। संन्यासी (परिव्राज्) ने महाराज (सम्राज्) के शब्द (वाच्) सुने (श्रु)। मैंने चारों ओर (दिश्) एक रोशनी (रुच्) देखी। ऐसा (ईदृश्) शत्रु (द्विष्) शहर (पुर्) में दाखिल हुआ। गोपाल बड़ी आफत (आपद्) में ग्रस्त है। आकाश (नभस्) में चाँद चमक रहा है। वर्षा ऋतु (प्रावृष्) में तालाब (सरस्) पानी से भर जाते हैं। प्रातःकाल (उषस्) सूरज की रोशनी (ज्योतिस्) कमलों को प्रकाशित करती है। क्षण में (सहसा) अग्नि की लपटें (अर्चिस्) सारे शहर (पुर्) पर फैल गईं। सब लोगों ने अपने दरवाज़े (द्वार्) बन्द कर लिए। उसका जूता (उपानह) धूली (रजस्) से भरा है। उसने अंधेरे (तमस्) में भी मेरी आवाज़ (गिर्) को जान लिया। उशनस् ऋषि ने अंगिरा (अङ्गिरस्) ऋषि को आशीर्वाद (आशिस्) दिया।

हलन्त विकृत शब्द।

दो अंगों वाले शब्द।

७७, **अत्** अन्त वाले शब्द प्रायः शत्रन्त और क्त्वन्त होते हैं। **सर्वनामस्थान** (strong) विभक्तियों से पूर्व **अत्** को **अन्त्** हो जाता है और **असर्वनामस्थान** (weak) में **अत्** रहता है।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भवत्[1] पुं० 'being'.

१, ८.	भवन	भवन्तौ	भवन्तः
२.	भवन्तम्	भवन्तौ	भवतः
३.	भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः
४.	भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
५.	भवतः	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
६.	भवतः	भवतोः	भवताम्
७.	भवति	भवतोः	भवत्सु

भवत् नपुं०

१, २.	भवत्	भवती	भवन्ति ।

ददत् पुं० 'giving'.

१.	ददत्	ददतौ	ददतः
२.	ददतम्	ददतौ	ददतः

शेष भवत् या मरुत् की भाँति जानो ।

ददत् नपुं०

१, २.	ददत्	ददती	ददति, ददन्ति

सभी शत्रन्त और स्यत्रन्तों के रूप भवत् की भाँति जानो । परन्तु जुहोत्यादि गण की धातुओं के शत्रन्तों के रूप ददत् की भाँति जानो ।

महत् पुं० 'great' बड़ा' ।

१.	महान्	महान्तौ	महान्तः
२.	महान्तम्	महान्तौ	महतः
८.	महन्		

शेष मरुत् की भाँति ।

महत् नपुंसक०

१, २.	महत्	महती	महान्ति

७८. क्त्वन्त कृदन्त और मत्, वत् अन्त वाले शब्दों का अन्त्य स्वर पुं० प्रथमा के एक० में दीर्घ हो जाता है ।

---

१. भवत् आदि शत्रन्तों के रूप मरुत् की भाँति होते हैं, यह पाँच रूप भिन्न हैं । भवत् सर्वनाम के भवान्, भवन्तौ, भवन्तः । भवन्तं, भवन्तौ, भवतः । आदि रूप होते हैं ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धीमत् पुं० 'Talented, wise बुद्धिमान् ।'

१.	धीमान्	धीमन्तौ	धीमन्तः
२.	धीमन्तम्	धीमन्तौ	धीमतः
३.	धीमता	धीमद्भ्याम्	धीमद्भिः
४.	धीमते	धीमद्भ्याम्	धीमद्भ्यः
५.	धीमतः	धीमद्भ्याम्	धीमद्भ्यः
६.	धीमतः	धीमतोः	धीमताम्
७.	धीमति	धीमतोः	धीमत्सु
८.	धीमन्		

धीमत् नपुं०

१, २.	धीमत्	धीमती	धीमन्ति

कृतवत् पुं०

१.	कृतवान्	कृतवन्तौ	कृतवन्तः
२.	कृतवन्तम्	कृतवन्तौ	कृतवतः
८.	कृतवन्		

(क) वत् अन्त वाले विशेषण तथा इयत्, कियत्, आदि के रूप भी ऐसे ही जानो ।

विद्यावत् पुं० 'Possessed of knowledge'.

१.	विद्यावान्	विद्यावन्तौ	विद्यावन्तः
२.	विद्यावन्तम्	विद्यावन्तौ	विद्यावतः
८.	विद्यावन्		

शेष मरुत वत् ।

इयत् 'So much, इतना' ।

१.	इयान्	इयन्तौ	इयन्तः
२.	इयन्तम्	इयन्तौ	इयतः, इत्यादि

कियत् 'How much, कितना' ।

१.	कियान्	कियन्तौ	कियन्तः
२.	कियन्तम्	कियन्तौ	कियतः, इत्यादि

७९. इन् (possession) अन्त वाले विशेषणों का हलादि प्रत्ययों से पूर्व और प्रथमा तथा द्वितीया के एक० नपुं० में न का लोप हो जाता है।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथमा के एक० पुं० और प्रथमा, द्वितीया तथा संबोधन के बहु० नपुं० में उपधा की इ को दीर्घ हो जाता है।

धनिन् पुं० 'Possessing wealth, wealthy'.

१.	धनी	धनिनौ	धनिनः
२.	धनिनम्	धनिनौ	धनिनः
३.	धनिना	धनिभ्याम्	धनिभिः
४.	धनिने	धनिभ्याम्	धनिभ्यः
५.	धनिनः	धनिभ्याम्	धनिभ्यः
६.	धनिनः	धनिनोः	धनीनाम्
७.	धनिनि	धनिनोः	धनिषु
८.	धनिन्		

दण्डिन् नपुं०

१, २.	दण्डि	दण्डिनी	दण्डीनि
८.	दण्डि, दण्डिन्		

नीचे लिखे इन् अन्त वाले शब्दों के रूप धनिन् की भाँति जानो :—

हस्तिन्, करिन्, 'elephant, हाथी'। शशिन् moon चाँद। गुणिन् talented गुणी। मन्त्रिन् minister वज़ीर। पक्षिन् bird पक्षी। अर्थिन् begger मांगने वाला। वैरिन् foe शत्रु। निवासिन् inhabitant रहने वाला, वासी। रक्षिन् guard रक्षक। रोगिन् sick बीमार। पापिन् sinner पापी। विद्यार्थिन् student पढ़ने वाला। अपराधिन् offender अपराध करने वाला। ग्रामिन् villager गाँव का रहने वाला। साक्षिन् witness गवाह। वाजिन् horse घोड़ा।

ऐसे ही नीचे लिखे मिन् और विन् अन्त वाले शब्दों के भी रूप जानो:—

स्वामिन् master मालिक। वाग्मिन् eloquent अच्छा बोलने वाला। मनस्विन् noble बड़े दिल वाला। तपस्विन् ascetic योगी। तेजस्विन् splendid तेज वाला। यशस्विन् illustrious यशवाला मशहूर।

८०. यस् और ईयस् अन्त वाले विशेषणों को सर्वनामस्थान विभक्तियों के अंग में यांस् और इयांस् हो जाता है।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रेयस् पुं० 'More praise-worthy'.

१.	श्रेयान्	श्रेयांसौ	श्रेयांसः
२.	श्रेयांसम्	श्रेयांसौ	श्रेयसः
३.	श्रेयसा	श्रेयोभ्याम्	श्रेयोभिः
४.	श्रेयसे	श्रेयोभ्याम्	श्रेयोभ्यः
५.	श्रेयसः	श्रेयोभ्याम्	श्रेयोभ्यः
६.	श्रेयसः	श्रेयसोः	श्रेयसाम्
७.	श्रेयसि	श्रेयसोः	श्रेयस्सु
८.	श्रेयन्		

श्रेयस् नपुं०

१, २, ८. श्रेयः	श्रेयसी	श्रेयांसि

शेष पयस् वत् ।

ऐसे ही यस् अन्त वाले तुलनात्मक विशेषण (comparative adj.) प्रेयस् 'dearer' । भूयस् 'more' । ज्यायस् 'elder' आदि के रूप जानो ।

ईयस् अन्त वाले विशेषणों के रूप भी श्रेयस् के समान जानो । जैसे, गरीयस् 'heavier' । द्राघीयस् 'longer' । दवीयस् 'more distant' । यवीयस् कनीयस् 'younger' । ह्रसीयस् 'shorter' । नेदीयस् 'nearer' । इत्यादि ।

गरीयस् पुं० 'Heavier'

१.	गरीयान्	गरीयांसौ	गरीयांसः
२.	गरीयांसम्	गरीयांसौ	गरीयसः
३.	गरीयसा	गरीयोभ्याम्	गरीयोभिः
४.	गरीयसे	गरीयोभ्याम्	गरीयोभ्यः
५.	गरीयसः	गरीयोभ्याम्	गरीयोभ्यः
६.	गरीयसः	गरीयसोः	गरीयसाम्
७.	गरीयसि	गरीयसोः	गरीयस्सु

दिव् स्त्री० 'Sky, आकाश' ।

१, ८.	द्यौः	दिवौ	दिवः
२.	दिवम्, द्याम्	दिवौ	दिवः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३.	दिवा	द्युभ्याम्	द्युभिः
४.	दिवे	द्युभ्याम्	द्युभ्यः
५.	दिवः	द्युभ्याम्	द्युभ्यः
६.	दिवः	दिवोः	दिवाम्
७.	दिवि	दिवोः	द्युषु

अभ्यास ५.

संस्कृत में अनुवाद करोः—

हरि चलता हुआ (गच्छत्) पढ़ता है। गोपाल ने खड़े हुए (तिष्ठत्) गोविंद को पुस्तक दी। फल खाते हुए (अदत्) राम से पाठ नहीं पढ़ा जाता। क्या तुमने लड़कों को खेलते (क्रीड़त्) देखा। मैंने उसे गीत सुनते (शृण्वत्) पाया। बड़े (महत्) सदा बड़े (महत्) काम ही करते हैं। बुद्धिमान् (धीमत्) अपने मालिक (स्वामिन्) की सदा सेवा करते हैं (सेव)। अमीर (धनिन्) से गरीब धन मांगते हैं (याच्)। कितना (कियत्) समय बीत गया। इतने (इयत्) धन का वह क्या करेगा। आपका वज़ीर (मन्त्रिन्) बड़ा अच्छा वक्ता (वाग्मिन्) है। बड़े दिल वालों का (मनस्विन्) लोग सदा मान करते हैं। न्यायाधीश ने अपराध करने वाले को (अपराधिन्) दंड दिया। कर्मसे ज्ञान बढ़ कर (श्रेयस्) है। गंगा यमुना से अधिक लम्बी (द्राघीयस्) है। आकाश (दिव्) में तारे चमकते हैं।

तीन अंगों वाले शब्द।

८१. अच् अन्त वाले विशेषणों के अच् को सर्वनामस्थान (strong) विभक्तियों में अञ्च्, असर्वनामस्थान हलादि (middle) में अच् और असर्वनामस्थान अजादि (weak) में (य् से पूर्व) ईच् या (व् से पूर्व) ऊच् हो जाता है। प्रथमा के एक० पुं० में अङ् होता है।

प्रत्यच् पुं० 'backward, westward पीछे, पश्चिम'।

१, ८.	प्रत्यङ्	प्रत्यञ्चौ	प्रत्यञ्चः
२.	प्रत्यञ्चम्	प्रत्यञ्चौ	प्रतीचः
३.	प्रतीचा	प्रत्यग्भ्याम्	प्रत्यग्भिः
४.	प्रतीचे	प्रत्यग्भ्याम्	प्रत्यग्भ्यः
५.	प्रतीचः	प्रत्यग्भ्याम्	प्रत्यग्भ्यः
६.	प्रतीचः	प्रतीचोः	प्रतीचाम्
७.	प्रतीचि	प्रतीचोः	प्रत्यक्षु

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नपुंसक०

१, २, ८.	प्रत्यक्	प्रतीची	प्रत्यञ्चि

प्राच् पुं० 'forward, eastern पहले, पूर्व'।

१, ८.	प्राङ्	प्राञ्चौ	प्राञ्चः
२.	प्राञ्चम्	प्राञ्चौ	प्राचः
३.	प्राचा	प्राग्भ्याम्	प्राग्भिः
४.	प्राचे	प्राग्भ्याम्	प्राग्भ्यः
५.	प्राचः	प्राग्भ्याम्	प्राग्भ्यः
६.	प्राचः	प्राचोः	प्राचाम्
७.	प्राचि	प्राचोः	प्राक्षु

नपुंसक०

१, २, ८.	प्राक्-ग्	प्राची	प्राञ्चि

अवाच् पुं० 'downward, southern नीचे, दक्षिण'।

१, ८.	अवाङ्	अवाञ्चौ	अवाञ्चः
२.	अवाञ्चम्	अवाञ्चौ	अवाचः
३.	अवाचा	अवाग्भ्याम्	अवाग्भिः
७.	अवाचि	अवाचोः	अवाक्षु

नपुंसक०

१, २, ८.	अवाक्-ग्	अवाची	अवाञ्चि

उदच् पुं० upwards, northern ऊपर, उत्तर'।

१, ८.	उदङ्	उदञ्चौ	उदञ्चः
२.	उदञ्चम्	उदञ्चौ	उदीचः
३.	उदीचा	उदग्भ्याम्	उदग्भिः
७.	उदीचि	उदीचोः	उदक्षु

तिर्यच पुं० 'moving crookedly टेढ़ा चलने वाला, पक्षी'।

१, ८.	तिर्यङ्	तिर्यञ्चौ	तिर्यञ्चः
२.	तिर्यञ्चम्	तिर्यञ्चौ	तिरश्चः
३.	तिरश्चा	तिर्यग्भ्याम्	तिर्यग्भिः
६.	तिरश्चः	तिरश्चोः	तिरश्चाम्
७.	तिरश्चि	तिरश्चोः	तिर्यक्षु

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे ही नीचे लिखे शब्दों के रूप जानो :—

	strong	middle	weak
न्यच् 'downward'	न्यञ्च्	न्यक्	नीच
उदच् 'upward'	उदञ्च्	उदक्	उदीच
सम्यच् 'right'	सम्यञ्च्	सम्यक्	समीच
अन्वच् 'following'	अन्वञ्च्	अन्वक्	अनूच
विष्वच् 'all-pervading'	विष्वञ्च्	विष्वक्	विषूच

८२. क्वसु कृदन्तों (past perfect-participles) के वस को सर्वनामस्थान (strong) विभक्तियों में वांस्, असर्व० हलादि (middle) में वत् और असर्व० अजादि (work) में उष् हो जाता है। संबोधन के एक० में वन् होता है। हलादि प्रत्ययों से पूर्व और प्रथमा, द्वितीया तथा संबोधन के एक० नपुं० में स् को द् हो जाता है।

विद्वस् पुं० 'learned man'.

१.	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
२.	विद्वांसम्	विद्वांसौ	विदुषः
३.	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
४.	विदुषे	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
५.	विदुषः	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
६.	विदुषः	विदुषोः	विदुषाम्
७.	विदुषि	विदुषोः	विद्वत्सु
८	विद्वन्		

नपुंसक०

१, २, ८.	विद्वत्	विदुषी	विद्वांसि

ऐसे ही चकृवस्, शुश्रुवस्, दाश्वस्, निनीवस्, बभूवस् आदि के रूप जानो।

	(१) एक०	(१) बहु	(२) बहु	(३) बहु०
चकृवस्	चकृवान्	चकृवांसः	चक्रुषः	चकृवद्भिः
निनीवस्	निनीवान्	निनीवांसः	निन्युषः	निनीवद्भिः
बभूवस्	बभूवान्	बभूवांसः	बभूवुषः	बभूवद्भिः
शुश्रुवस्	शुश्रुवान्	शुश्रुवांसः	शुश्रुवुषः	शुश्रुवद्भिः
दाश्वस्	दाश्वान्	दाश्वांसः	दाशुषः	दाश्वद्भिः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) कुछ धातुओं में वस् से पूर्व इ (इवस्) लगता है। उष् (weak base) से पूर्व इस इ का लोप हो जाता है।

	(१) एक०	(१) बहु०	(२) बहु०	(३) बहु०
तस्थिवस्	तस्थिवान्	तस्थिवांसः	तस्थुषः	तस्थिवद्भिः
तेनिवस्	तेनिवान्	तेनिवांसः	तेनुषः	तेनिवद्भिः
जघ्निवस्	जघ्निवान्	जघ्निवांसः	जघ्नुषः	जघ्निवद्भिः
सेदिवस्	सेदिवान्	सेदिवांसः	सेदुषः	सेदिवद्भिः
जग्मिवस्	जग्मिवान्	जग्मिवांसः	जग्मुषः	जग्मिवद्भिः
जगन्वस्	जगन्वान्	जगन्वांसः	जग्मुषः	जगन्वद्भिः

८३. अन् (मन्, वन्) अन्त वाले पुं० और नपुं० शब्दों के अन् को सर्वनाम० (strong) विभक्तियों में आन्, असर्व० हलादि (middle) में अ और असर्व० अजादि (weak) में न् हो जाता है। प्रथमा के एक० पुं० में न् का लोप और उपधा के अ को दीर्घ हो जाता है। सप्तमी के एक० पुं० और नपुं० में तथा प्रथमा, द्वितीया और संबोधन नपुं० में अन् के अ का लोप वैकल्पिक है।

राजन् पुं० 'King' राजा'।

१.	राजा	राजानौ	राजानः
२.	राजानम्	राजानौ	राज्ञः
३.	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
४.	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्यः
५.	राज्ञः	राजभ्याम्	राजभ्यः
६.	राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्
७.	राज्ञि, राजनि	राज्ञोः	राजसु
८.	राजन्		

ऐसे ही नीचे लिखे अन्-अन्त पुं० शब्दों के रूप राजन् की भाँति जानोः—

महिमन्, गरिमन् greatness बड़ाई। लघिमन् meanness छोटाई। अणिमन् thinness बारीकी। तक्षन् carpenter तर्खान्, बढ़ई। मज्जन् marrow हड्डियों का सार। सुनामन् auspicious. named अच्छे नाम वाला। मूर्धन् head सिर। पीवन् fat मोटा।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नामन् नपुं० 'Name, नाम'।

१, २.	नाम	नाम्नी, नामनी	नामानि
३.	नाम्ना	नामभ्याम्	नामभिः
८.	नाम, नामन्		

शेष राजन् वत्।

नीचे लिखे अन्-अन्त नपुं० शब्दों के रूप नामन् की भाँति जानोः—

प्रेमन् love प्यार। कर्मन् action काम। जन्मन् birth उत्पत्ति। धन्वन् bow कमान। वर्मन् armour कवच, ज़रह बक्तर। वेश्मन् house घर। छद्मन् pretext छल। चर्मन् leather चमड़ा। व्योमन् sky आकाश। धामन् luster, house ज्योति, घर। सामन् hymn सामवेद का मंत्र। पर्वन् joint जोड़।

आत्मन् पुं० 'Self'.

१.	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
२.	आत्मानम्	आत्मानौ	आत्मनः
३.	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
४.	आत्मने	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
५.	आत्मनः	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
६.	आत्मनः	आत्मनोः	आत्मनाम्
७.	आत्मनि	आत्मनोः	आत्मसु
८.	आत्मन्		

नीचे लिखे शब्दों के रूप आत्मन् की भाँति जानोः—

ब्रह्मन् creator स्रष्टा। यज्वन् sacrificer यज्ञ करने वाला। अध्वन् road मार्ग, सड़क। अश्मन् stone पत्थर। सुशर्मन्, कृष्णवर्मन्, इत्यादि व्यक्ति-वाचक नाम भी।

ब्रह्मन् पुं० 'creator'.

१.	ब्रह्मा	ब्रह्माणौ	ब्रह्माणः
२.	ब्रह्माणम्	ब्रह्माणौ	ब्रह्मणः
३.	ब्रह्मणा	ब्रह्मभ्याम्	ब्रह्मभिः
४.	ब्रह्मणे	ब्रह्मभ्याम्	ब्रह्मभ्यः
५.	ब्रह्मणः	ब्रह्मभ्याम्	ब्रह्मभ्यः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६.	ब्रह्मणः	ब्रह्मणोः	ब्रह्मणाम्
७.	ब्रह्मणि	ब्रह्मणोः	ब्रह्मसु

ग्रावन् पुं० 'stone, पत्थर'।

१.	ग्रावा	ग्रावाणौ	ग्रावाणः
२.	ग्रावाणम्	ग्रावाणौ	ग्राव्णः
३.	ग्राव्णा	ग्रावभ्याम्	ग्रावभिः
७.	ग्राव्णि	ग्राव्णोः	ग्रावसु

लघिमन् पुं० 'littleness, छोटाई'।

१.	लघिमा	लघिमानौ	लघिमानः
२.	लघिमानम्	लघिमानौ	लघिम्नः
३.	लघिम्ना	लघिमभ्याम्	लघिमभिः
४.	लघिम्ने	लघिमभ्याम्	लघिमभ्यः
५.	लघिम्नः	लघिमभ्याम्	लघिमभ्यः
६.	लघिम्नः	लघिम्नोः	लघिम्नाम्
७.	लघिम्नि-मनि	लघिम्नोः	लघिमसु

ऐसे ही कुछ अन्य शब्द नीचे दिए गए हैं :—

	(१) एक०	(१) बहु०	(२) बहु०	(७) एक०
सीमन्	सीमा	सीमानः	सीम्नः	सीम्नि-मनि
गरिमन्	गरिमा	गरिमाणः	गरिम्णः	गरिम्णि-मणि
महिमन्	महिमा	महिमानः	महिम्नः	महिम्नि-मनि
अणिमन्	अणिमा	अणिमानः	अणिम्नः	अणिम्नि-मनि
सुनामन्	सुनामा	सुनामानः	सुनाम्नः	सुनाम्नि-मनि

अपवादक शब्द।

८४. पूषन्, अर्यमन् तथा हन् अन्त वाले शब्दों की उपधा के अ को प्रथमा के एक० में दीर्घ हो जाता है। हन् को सर्वनाम० (strong) में हन्, असर्व० हलादि (middle) में ह और असर्व० अजादि (weak) विभक्तियों में घ्न हो जाता है।

पूषन् ० 'Sun, सूरज'।

१.	पूषा	पूषणौ	पूषणः
२.	पूषणम्	पूषणौ	पूष्णः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३.	पूष्णा	पूषभ्याम्	पूषभिः
६.	पूष्णः	पूष्णोः	पूष्णाम्
७.	पूष्णि, पूषणि	पूष्णोः	पूषसु

ऐसे ही अर्य्यमन् के रूप जानो।

वृत्रहन् पुं० 'Killer of Vritra, Indra, इन्द्र'।

१.	वृत्रहा	वृत्रहणौ	वृत्रहणः
२.	वृत्रहणम्	वृत्रहणौ	वृत्रघ्नः
३.	वृत्रघ्ना	वृत्रहभ्याम्	वृत्रहभिः
४.	वृत्रघ्ने	वृत्रहभ्याम्	वृत्रहभ्यः
५.	वृत्रघ्नः	वृत्रहभ्याम्	वृत्रहभ्यः
६.	वृत्रघ्नः	वृत्रघ्नोः	वृत्रघ्नाम्
७.	वृत्रघ्नि, वृत्रहणि	वृत्रघ्नोः	वृत्रहसु
८.	वृत्रहन्		

(क) श्वन्, युवन् और मघवन् के व को असर्व० अजादि (weak) विभक्तियों में उ हो कर उन्हें क्रमशः शुन्, यून् और मघोन् अंगों का आदेश हो जाता है।

श्वन् पुं० 'Dog, कुत्ता'।

१.	श्वा	श्वानौ	श्वानः
२.	श्वानम्	श्वानौ	शुनः
३.	शुना	श्वभ्याम्	श्वभिः
४.	शुने	श्वभ्याम्	श्वभ्यः
५.	शुनः	श्वभ्याम्	श्वभ्यः
६.	शुनः	शुनोः	शुनाम्
७.	शुनि	शुनोः	श्वसु
८.	श्वन्		

युवन् पुं० 'A youth, जवान'।

१.	युवा	युवानौ	युवानः
२.	युवानम्	युवानौ	यूनः
३.	यूना	युवभ्याम्	युवभिः
४.	यूने	युवभ्याम्	युवभ्यः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५.	यूनः	युवभ्याम्	युवभ्यः
६.	यूनः	यूनोः	यूनाम्
७.	यूनि	यूनोः	युवसु

मघवन् पुं० 'Indra, इन्द्र'।

१.	मघवा	मघवानौ	मघवानः
२.	मघवानम्	मघवानौ	मघोनः
३.	मघोना	मघवभ्याम्	मघवभिः
७.	मघोनि	मघोनोः	मघवसु

(ख) अहन् नपुं० 'day दिन' के न् को हलादि प्रत्ययों से पूर्व र् (:) होता है, अतः असर्व० हलादि विभक्तियों (middle base) में इसे अहः होता है, अन्यथा इस के रूप नामन् की भाँति होते हैं।

१, २, ८.	अहः	अह्नी, अहनी	अहानि
३.	अह्ना	अहोभ्याम्	अहोभिः
४.	अह्ने	अहोभ्याम्	अहोभ्यः
५.	अह्नः	अहोभ्याम्	अहोभ्यः
६.	अह्नः	अह्नोः	अह्नाम्
७.	अह्नि, अहनि	अह्नोः	अहस्सु, अहःसु

(ग) पथिन् पु० 'path रास्ता' को सर्वनाम० (strong) में पन्थान्, असर्व० हलादि (middle) में पथि और असर्व० अजादि (weak) विभक्तियों में पथ् हो जाता है। प्रथमा के एक० में स् लग कर पन्थाः होता है।

१, ८.	पन्थाः	पन्थानौ	पन्थानः
२.	पन्थानम्	पन्थानौ	पथः
३.	पथा	पथिभ्याम्	पथिभिः
४.	पथे	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
५.	पथः	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
६.	पथः	पथोः	पथाम्
७.	पथि	पथोः	पथिषु

ऐसे ही मथिन् 'churning rod मथानी', ऋभुक्षिन् 'Indra', आदि के रूप जानो।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८५. विकृत शब्दों के स्त्रीलिंग ई लगाने से बनते हैं। दो अंगों वाले शब्दों में असर्वनामस्थान (weak) विभक्तियों के पूर्ववर्ती अंग पर, और तीन अंगों वाले शब्दों में असर्व० अजादि (weakest) के पूर्ववर्ती अंग पर ई लगाने से स्त्रीलिंग बनता है। इनके रूप नदी की भाँति होते हैं। जैसे, अदत्-अदती, धनिन्-धनिनी, श्रेयस्-श्रेयसी, प्राच्-प्राची, प्रत्यच्-प्रतीची, विद्वस्-विदुषी, राजन्-राज्ञी, श्वन्-शुनी, इत्यादि।

(क) भ्वादि, दिवादि, तुदादि, तथा चुरादि गण की धातुओं के शत्रन्त और सब धातुओं के स्यत्रन्त के सर्वनामस्थानीय (strong) अंग (अन्त्) पर ई लगाने से स्त्रीलिंग बनता है। जैसे, भवत्-भवन्ती, दीव्यत्-दीव्यन्ती, तुदत्-तुदन्ती, चोरयत्-चोरयन्ती। भविष्यन्ती, करिष्यन्ती, दास्यन्ती, ज्ञास्यन्ती।

(ख) ऊपर लिखे चार गणों के अतिरिक्त अन्य गणों के धातुओं के शत्रन्त का असर्व० अजादि (weak) अंग (अत्) पर ई लगाने से स्त्रीलिंग बनता है। जैसे, जाग्रत्-जाग्रती, सुन्वत्-सुन्वती, कुर्वत्-कुर्वती, क्रीणत्-क्रीणती।

अपवादक विकृत शब्द।

८६. (क) अप् स्त्री० 'water' सदा बहुवचन में प्रयुक्त होता है। इसे सर्वनाम० (strong) विभक्तियों में आप् हो जाता है, और प्रत्यय के भ् से पूर्व प् को त् हो जाता है। जैसे,

(१) आपः (२) अपः। (३) अद्भिः। (४), (५) अद्भ्यः। (६) अपाम्। (७) अप्सु।

(ख) पुम्स् या पुंस् पुं० 'man' को सर्वनाम० में पुमांस्, असर्व० हलादि में पुम् और असर्व० अजादि में पुंस् हो जाता है।

१.	पुमान्	पुमांसौ	पुमांसः
२.	पुमांसम्	पुमांसौ	पुंसः
३.	पुंसा	पुंभ्याम्	पुंभिः
४.	पुंसे	पुंभ्याम्	पुंभ्यः
५.	पुंसः	पुंभ्याम्	पुंभ्यः
६.	पुंसः	पुंसोः	पुंसाम्
७.	पुंसि	पुंसोः	पुंसु
८.	पुमन्		

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनडुह् पुं० '०x' को **सर्वनाम०** में **अनड्वाह्**, **असर्व०** हलादि में **अनडुत्** और **असर्व०** अजादि में **अनडुह्** होता है। प्रथमा और संबोधन का एक० **वत्** अन्त वाले शब्दों के समान होता है।

१.	अनड्वान्	अनड्वाहौ	अनड्वाहः
२.	अनड्वाहम्	अनड्वाहौ	अनडुहः
३.	अनडुहा	अनडुद्भ्याम्	अनडुद्भिः
४.	अनडुहे	अनडुद्भ्याम्	अनडुद्भ्यः
५.	अनडुहः	अनडुद्भ्याम्	अनडुद्भ्यः
६.	अनडुहः	अनडुहोः	अनडुहाम्
७.	अनडुहि	अनडुहोः	अनडुत्सु
८.	अनड्वन्		

अभ्यास ६

संस्कृत में अनुवाद करो :—

वह पूर्व (प्राच्) से आया और पश्चिम (प्रत्यच्) को गया। एक विश्व-व्यापी (विष्वच्) सुगन्ध सारे फैल रही है। यह सीधा (सम्यच्) रास्ता (पथिन्) है। राजा (राजन्) लोग विद्वानों ([illegible]) की पूजा करते हैं। मैंने उसे तब देखा जब वह बैठ चुका था (सेदिवस्)। यह कहानी गोपाल ने, जो इसे स्वयं सुन चुका था (शुश्रुवस्), मुझे सुनाई है। संसार को बनाने वाला (ब्रह्मन्) मनुष्यों के कामों (कर्मन्) को भलीभाँति जानता है। (ज्ञा)। यज्ञ करने वाला (यज्वन्) सामवेद के मंत्रों को (सामन्) गाता है (गै)। परिंदे (पक्षिन्) आकाश (व्योमन्) में उड़ते हैं। इस नगर (पुर) की यही हद (सीमन्) है। युवकों (युवन्) को राजा की बड़ाई (महिमन्) खूब मालूम (विदित) है। मैंने सड़क (पथिन्) पर कुत्ते (श्वन्) देखे। नौजवान (युवन्) ने पत्थर (ग्रावन्) को तोड़ डाला। दिन (अहिन्) में आकाश (व्योमन्) साफ था। लोग (पुम्स्) इन्द्र (मघवन्) की पूजा करते हैं। सूरज (पूषन्) की किरनें (रश्मी) घरों (धामन्) पर पड़ती हैं (पत्)। इन्द्र जलों (अप्) को छुड़ाता है (मोचय)। यह पानी (अप्) लोगों (पुंस्) से पिया नहीं जाता।

(ख) पश्चिम (प्रत्यच्) के लोगों (विश्) ने राजा को माला (स्रज्) दी। आकाश (दिव्) बादलों (जलमुच्) से ढँका है (आवृत)। उस

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन (अहन्) ब्रह्म-हत्यारे (ब्रह्महन्) को राजा ने दंड दिया । गो-घातक (गोहन्) दो आदमियों (पुम्स्) से पकड़ा गया । इन्द्र (ऋभुक्षिन्) को वृत्र का मारने वाला (वृत्रहन्) कहते हैं । बैल (अनडुह्) ने गाड़ी को खींचा । मधु-मक्खियाँ (मधुलिह) उड़ रही हैं । गोपाल शहर (पुर) में गया और वहाँ से उसने एक जूता (उपानह्) खरीदा । बड़े भारी (महत्) परिश्रम से वे लोग विद्वान् हो गए । बड़े (महत्) अपनी बड़ाई (महिमन्) के कारण मान पाते हैं । नीच लोग अपनी छोटाई (लघिमन्) के कारण उन्नति नहीं कर पाते । उस ने अपने (आत्मन्) सिर (मूर्धन्) पर रख रक्खा । बढ़ई (तक्षन्) ने लकड़ी के जोड़ों (पर्वन्) को देखा । चमड़े (चर्मन्) से उसने पत्थर (अश्मन्) को ढका । जन्म (जन्मन्) से ही क्षत्रिय कमान (धन्वन्) और कवच (वर्मन) को धारण करता है ।

सर्वनाम ।

१. पुरुषवाचक सर्वनाम 'Personal Pronouns'

८७. अस्मद्[1] 'I'

१.	अहम्	आवाम्	वयम्
२.	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
३.	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
४.	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः
५.	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
६.	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः
७.	मयि	आवयोः	अस्मासु

युष्मद् 'you'

१.	त्वम्	युवाम्	यूयम्
२.	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
३.	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
४.	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः
५.	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
६.	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः
७.	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

[1] अस्मद् और युष्मद् के रूप तीनों लिंगों में समान होते हैं ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) भवत् (८०. क) अन्य पुरुषवाचक (third person) सर्वनाम है। अत्र और तत्र के साथ समास में इसका प्रयोग होता है। जैसे, अत्रभवत्, तत्रभवत्।

(ख) अस्मद् और युष्मद् के मा, त्वा, आदि संक्षिप्त रूप वाक्य या पद के आदि में और च, वा, ह, हा, अह, एव के पूर्व प्रयुक्त नहीं होते। संबोधन से पूर्व भी ये प्रयुक्त नहीं होते यदि संम्बोधन से पूर्व कोई विशेषण न हो। इन अवस्थाओं में पूर्ण रूप ही प्रयुक्त करने चाहिएँ।

८८. निश्चयवाचक सर्वनाम 'Demonstrative Pronouns'.

तद्[1] पुं० that, he वह'।

१.	सः	तौ	ते
२.	तम्	तौ	तान्
३.	तेन	ताभ्याम्	तैः
४.	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
५.	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
६.	तस्य	तयोः	तेषाम्
७.	तस्मिन्	तयोः	तेषु

तद् स्त्रीलिंग

१.	सा	ते	ताः
२.	ताम्	ते	ताः
३.	तया	ताभ्याम्	ताभिः
४.	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
५.	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
६.	तस्याः	तयोः	तासाम्
७.	तस्याम्	तयोः	तासु

---

१. तद् को प्रथमा एक० पुं० में सः और अन्यत्र त हो जाता है, और फिर राम की भाँति इसके रूप बनते हैं। एकवचन में नीचे लिखे विभक्ति-प्रत्यय लगते हैं:--पुं०--(४) स्मै, (५) स्मात्, (६) स्य, (७) स्मिन्। और बहु० (६) इषाम्।

स्त्री०--(४) स्यै, (५), (६) स्यास्, (७) स्याम्। और बहु० (६) साम्।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तद् नपुंसक०

१, २.	तत्	ते	तानि

शेष पुं० की भाँति।

एतद् पुं० 'this (definite) यह'।

१.	एषः	एतौ	एते
२.	एतम्, एनम्	एतौ, एनौ	एतान्, एनान्
३.	एतेन्, एनेन	एताभ्याम्	एतैः
४.	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
५.	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
६.	एतस्य	एतयोः, एनयोः	एतेषाम्
७.	एतस्मिन्	एतयोः, एनयोः	एतेषु

स्त्रीलिंग

१.	एषा	एते	एताः
२.	एताम्, एनाम्	एते, एने	एताः, एनाः
३.	एतया, एनया	एताभ्याम्	एताभिः
४.	एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्यः
५.	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः
६.	एतस्याः	एतयोः, एनयोः	एतासाम्
७.	एतस्याम्	एतयोः, एनयोः	एतासु

नपुंसक०

१.	एतत्	एते	एतानि
२.	एतत्, एनत्	एते, एने	एतानि, एनानि

शेष पुं० की भाँति।

इदम् पुं० 'this' (indefinite) यह'।

१.	अयम्	इमौ	इमे
२.	इमम्, एनम्	इमौ, एनौ	इमान्, एनान्
३.	अनेन, एनेन	आभ्याम्	एभिः
४.	अस्मै[1]	आभ्याम्	एभ्यः
५.	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
६.	अस्य	अनयोः, एनयोः	एषाम्

१. यहाँ तथा अन्यत्र द् का लोप हो कर इ को अ हो जाता है।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७.	अस्मिन्	अनयोः, एनयोः	एषु

स्त्रीलिंग

१.	इयम्	इमे	इमाः
२.	इमाम् , एनाम्	इमे, एने	इमाः, एनाः
३.	अनया, एनया	आभ्याम्	आभिः
४.	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
५.	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
६.	अस्याः	अनयोः, एनयोः	आसाम्
७.	अस्याम्	अनयोः, एनयोः	आसु

नपुंसक

१.	इदम्	इमे	इमानि
२.	इदम्, एनत्	इमे, एने	इमानि, एनानि[1]

अदस्[2] पुं० 'that, you वह' ।

१.	असौ	अमू	अमी
२.	अमुम्	अमू	अमून्
३.	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
४.	अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
५.	अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
६.	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
७.	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु

स्त्रीलिंग[3]

१.	असौ	अमू	अमूः

---

१. इदम् और एतद् के वैकल्पिक रूपों का अन्वादेश में प्रयोग होता है।

२. अदस् को प्रथमा के एक० में असौ और अन्यत्र अमु अंग होता है। पुं० बहु० में अमी (परन्तु २ बहु० अमून्) और स्त्री० बहु० तथा प्रत्यय के भ् से पूर्व द्वि० में अमू अंग होता है।

३. इदम् निकटवर्ती पुरुष या वस्तु के लिए, एतद् अत्यन्त निकटवर्ती के लिए, अदस् दूर के लिए, और तद् परोक्ष के लिए प्रयुक्त होता है। देखो नीचे लिखी कारिकाः—

इदमस्तु सन्निकृष्टं समीपतरवर्ति चैतदो रूपम्।
अदसस्तु विप्रकृष्टं तदिति परोक्षे विजानीयात् ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२.	अमूम्	अमू	अमूः
३.	अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
४.	अमुष्यै	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
५.	अमुष्याः	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
६.	अमुष्याः	अमुयोः	अमूषाम्
७.	अमुष्याम्	अमुयोः	अमूषु

नपुंसक

१, २.	अदः	अमू	अमूनि

८९. सम्बन्धवाचक सर्वनाम 'Relative Pronouns.'

यद्[1] पुं० 'who जो'।

१.	यः	यौ	ये
२.	यम्	यौ	यान्
३.	येन	याभ्याम्	यैः
४.	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
५.	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
६.	यस्य	ययोः	येषाम्
७.	यस्मिन्	ययोः	येषु

स्त्रीलिंग

१.	या	ये	याः
२.	याम्	ये	याः
३.	यया	याभ्याम्	याभिः
४.	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
५.	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
६.	यस्याः	ययोः	यासाम्
७.	यस्याम्	ययोः	यासु

नपुंसक०

१, २.	यत्	ये	यानि

९० प्रश्नवाचक सर्वनाम 'Interrogative Pronouns.'

किम् पुं० 'who कौन'।

१.	कः	कौ	के

१. यद् को 'य' हो जाता है और इसके रूप 'तद्' की भाँति होते हैं।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२.	कम्	कौ	कान्
३.	केन	काभ्याम्	कैः
४.	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
५.	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
६.	कस्य	कयोः	केषाम्
७.	कस्मिन्	कयोः	केषु
		स्त्रीलिंग	
१.	का	के	काः
२.	काम्	के	काः
३.	कया	काभ्याम्	काभिः
४.	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
५.	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
६.	कस्याः	कयोः	कासाम्
७.	कस्याम्	कयोः	कासु
		नपुंसक०	
१, २	किम्	के	कानि

शेष पुँलिंग की भाँति।

निजवाचक सर्वनाम 'Reflexive Pronouns'.

९१. (क) निजवाचक सर्वनाम आत्मन् 'self' (८३) सदा एक वचन (पुँ०) में सब पुरुषों और लिंगों के लिए प्रयुक्त होता है।

(ख) स्वयम् 'self' अव्यय (निजवाचक क्रियाविशेषण) है और सब वचनों और पुरुषों में समान प्रयुक्त होता है।

(ग) स्वः, स्वा, स्वम् 'own' निजवाचक विशेषण है, और तीनों वचनों और पुरुषों में निजवाचक सर्वनाम की भाँति प्रयुक्त होता है। निज 'own, inborn' का भी ऐसे ही प्रयोग होता है।

६. पुरुषसम्बन्धवाचक सर्वनाम 'Possessive Pronouns'.

९२. अस्मद्, युष्मद्, तद् आदि सर्वनामों पर ईय प्रत्यय लगाने से पुरुषसंबन्धवाचक सर्वनाम बनते हैं। जैसे, अस्मदीय 'our' मदीय 'my', युष्मदीय 'your', त्वदीय 'thy', तदीय 'his, her', भवदीय 'your'.

(क) मम और तव (६ एक०) से क प्रत्यय लगा कर। जैसे,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मामक 'my', तावक 'thy', भावत्क 'your'। कभी ईन प्रत्यय भी लगता है। जैसे, तावकीन 'thy', यौष्माकीण 'your'.

(ख) जो पुरुषसंबन्धवाचक सर्वनाम क प्रत्यय से बनते हैं उनके स्त्री० ई में और शेष के आ में बनते हैं। इनके रूप, अ, आ, या ई अन्त वाली संज्ञाओं के समान होते हैं।

७. अनिश्चयवाचक सर्वनाम 'Indefenite Pronouns'.

९३. प्रश्नवाचक सर्वनाम किम् (सब लिंगों और विभक्तियों में) पर चित्, चन, अपि या स्वित् (some, some-one) लगाने से अनिश्चयवाचक सर्वनाम बनते हैं। जैसे, कश्चित्, काचित्, किंचित्, कश्चन, काचन, किंचन, कोपि, कयापि, किमपि, किंस्वित्, केनस्वित् इत्यादि।

ऐसे ही अनिश्चयवाचक क्रियाविशेषण भी बनते हैं। जैसे, कदाचित्, कदाचन 'some time', क्वचित् 'somewhere'.

(क) प्रश्नवाचक सर्वनाम के पूर्व संबन्धवाचक प्रयुक्त करने से भी अनिश्चयवाचक बन जाता है। जैसे, यः कः 'जो कोई'। 'यस्मै कस्मै जिस किसे, जिस किसी को'।

८ परस्परसंबन्धवाचक सर्वनाम 'Correlative Pronouns'.

९४. परस्परसंबन्धवाचक सर्वनाम बनाने की विधि नीचे लिखी जाती है:—

(१) यद्, तद्, और एतद् पर वत् प्रत्यय लगाने से। इन्हें वत् से पूर्व क्रमशः या, ता, और एता हो जाता है। जैसे, यावत् 'जितना', तावत्, 'उतना' एतावत् 'इतना'।

(२) इदम् (=इ) और किम् (=कि) पर यत् प्रत्यय लगाने से। जैसे, इयत् 'so much इतना'। कियत् 'how much कितना'। उपरिलिखितों के रूप वत् अन्त वाली संज्ञाओं की भाँति होते हैं(७८)।

(३) इदम् (=ई) और किम् (=की) पर दृश या दृश् लगाने से। जैसे, ईदृश ,ईदृश 'such ऐसा'। कीदृश् 'कैसा' यादृश 'जैसा'। तादृश' वैसा'।

(४) तद् (=त्), यद् (=य्) और किम् (=क्) पर अति लगाने से। जैसे, तति 'so many उतने'। यति 'as many जितने'। कति 'how many कितने'। प्रथमा और द्वितीया में इनके यही रूप रहते हैं, शेष हरि की भाँति। इनका केवल बहु० ही होता है।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६. सार्वनामिक विशेषण 'Pronominal adjectives.'

७५. अन्य 'another', अन्यतर 'either' इतर 'other', कतर 'which of two', कतम 'which of many', एकतम 'one of many', यतर 'which of two', यतम 'which of many', ततर 'that one (of two)', और ततम 'that one (of many),' के रूप यद् की भाँति जानो।

(क) सर्व, विश्व, इतर, एकतर के रूप भी प्रथमा और द्वितीया एक० नपुं० के अतिरिक्त यद् की भाँति बनते हैं।

सर्व पुं० 'All' सब।

१.	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
२.	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
३.	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
४.	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
५.	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
६.	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
७.	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

स्त्रीलिंग

१.	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
२.	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः
३.	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
४.	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
५.	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
६.	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्
७.	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु

नपुंसक०

१, २.	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि

(ख) पूर्व prior, east पहला, पूरब। अवर posterior, west पीछा, पच्छम। दक्षिण south दक्खन। उत्तर superior, north, subsequent, बड़ा, उत्तर दिशा, पिछला। अपर other, inferior दूसरा, घटिया। अधर inferior, निचला, घटिया। पर other दूसरा। अन्तर outer बाहरला। स्व own अपना। आदि जब व्यवस्था के अर्थ

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
में सर्वनाम प्रयुक्त होते हैं तो इनके रूप **सर्व** के समान होते हैं, परन्तु (१) बहु०, (७) एक०, पुं० आदि में **राम** का विकल्प से अनुकरण करते हैं। जैसे, **पूर्वे** या **पूर्वाः**। **पूर्वात्** या **पूर्वस्मात्**। **पूर्वे** या **पूर्वस्मिन्**। परन्तु **उत्तराः** (न तु उत्तरे) कुरवः।

(ग) **संख्यावाचक एक** के एक वचन में और **द्वि** के द्विवचन में ही रूप होते हैं। **द्वि** को **द्व** हो जाता है। दोनों के रूप **सर्व** की भाँति होते हैं। जैसे, **एक, एका, एकस्मै, एकस्यै**। इत्यादि।

(घ) यदि सार्वनामिक विशेषण बहुव्रीहि समास में उत्तर-पद (last member) हो तो उसके रूप साधारण विशेषण के समान होते हैं।

अभ्यास ७.

संस्कृत में अनुवाद करो:—

उसकी (तद्) बहिन ने मेरे (अस्मद्) भाई को पोथी दी। हम (अस्मद्) आप (युष्मद्) से एक प्रश्न पूछते हैं। उसने (स्त्री०) मुझसे आपकी (युष्मद्) पोथी ली। यह (एतद्) वही (तद्) आदमी है। यह (एतद्) आभूषण उस (स्त्री०) (अदस्) से इस (इदम्) लड़की को दिया गया। वह (अदस्) हमारा (अस्मद्) गाँव है। उस (अदस्) नगर (पुर) में कौन (किम्) रहते हैं। यह (इदम्) मैं आप (आत्मन्) कर लूँगा। उन्होंने अपनी (आत्मन्) प्रशंसा आप की। वह लड़की आप ही (स्वयम्) तुम्हें (युष्मद्) वह (अदस्) कहानी सुनाएगी। कोई (किम्-अपि) मेरी (अस्मदीय) पोथी चुरा ले गया। यह फल किसी (किम्-चित्) बालक को दो। ऐसी (ईदृश) गौ जिस किसी (यद्-किम्) को मत दो। जो कोई (यद्-किम्) वैसा (तादृश) काम करेगा यह (इदम्) इनाम पाएगा। इस पेड़ पर कितने (कति) आम लगे हैं। इतने (एतावत्) काम से एक मनुष्य को अवश्य सफलता होगी। यह तो सभी (सर्व) को मालूम है। यह दूसरे (अपर) से अच्छा है।

संख्यावाचक शब्द 'Numerals.'

९६. गणना-वाचक विशेषण 'Cardinals'.

१. एक	२. द्वि
३. त्रि	४. चतुर्

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५. पञ्चन्
६. षष्
७. सप्तन्
८. अष्टन्
९. नवन्
१०. दशन्
११. एकादशन्
१२. द्वादशन्
१३. त्रयोदशन्
१४. चतुर्दशन्
१५. पञ्चदशन्
१६. षोडशन्
१७. सप्तदशन्
१८. अष्टादशन्
१९. नव दशन्, एकोन-
विंशति, ऊनविंशति
२०. विंशति (स्त्री०)
२१. एकविंशति
२२. द्वाविंशति
२३. त्रयोविंशति
२४. चतुर्विंशति
२५. पञ्चविंशति
२६. षड्विंशति
२७. सप्तविंशति
२८. अष्टाविंशति
२९. नवविंशति, एकोन-
त्रिंशत्, ऊनत्रिंशत्
३०. त्रिंशत् (स्त्री०)
३१. एकत्रिंशत्
३२. द्वात्रिंशत्
३३. त्रयस्त्रिंशत्
३४. चतुस्त्रिंशत्
३५. पञ्चत्रिंशत्
३६. षटत्रिंशत्
३७. सप्तत्रिंशत्
३८. अष्टात्रिंशत्
३९. नवत्रिंशत्, एकोन-
चत्वारिंशत्
४०. चत्वारिंशत् (स्त्री०)
४१. एकचत्वारिंशत्
४२. द्वाचत्वारिंशत्,
द्विचत्वारिंशत्
४३. त्रयश्चत्वारिंशत्
त्रिचत्वारिंशत्
४४. चतुश्चत्वारिंशत्
४५. पञ्चचत्वारिंशत्
४६. षट्चत्वारिंशत्
४७. सप्तचत्वारिंशत्
४८. अष्टा-अष्ट चत्वारिंशत्
४९. नवचत्वारिंशत्,
एकोनपंचाशत्
५०. पञ्चाशत् (स्त्री०)
५१. एकपञ्चाशत्
५२. द्वा-द्वि पञ्चाशत्
५३. त्रयः–त्रि-पञ्चाशत्
५४. चतुःपञ्चाशत्
५५. पञ्चपञ्चाशत्
५६. षट्पञ्चाशत्

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५७. सप्तपञ्चाशत् ,
५८. अष्टपञ्चाशत्
५९. नवपञ्चाशत् , एकोनषष्टि
६०. षष्टि (स्त्री०)
६१. एकषष्टि
६२. द्वाषष्टि, द्विषष्टि
६३. त्रयःषष्टि , त्रिषष्टि
६४. चतुष्षष्टि
६५. पञ्चषष्टि
६६. षटषष्टि
६७. सप्तषष्टि
६८. अष्टाषष्टि, अष्टषष्टि
६९. नवषष्टि, एकोनसप्तति
७०. सप्तति (स्त्री०)
७१. एकसप्तति,
७२. द्वासप्तति, द्विसप्तति
७३. त्रयस्सप्तति, त्रिसप्तति
७४. चतुस्सप्तति
७५. पञ्चसप्तति
७६. षट्सप्तति
७७. सप्तसप्तति
७८. अष्टासप्तति, अष्टसप्तति
७९. नवसप्तति, एकोनाशीति
८०. अशीति
८१. एकाशीति
८२. द्व्यशीति
८३. त्र्यशीति
८४. चतुरशीति
८५. पञ्चाशीति
८६. षड्शीति
८७. सप्ताशीति
८८. अष्टाशीति
८९. नवाशीति, एकोननवति
९०. नवति (स्त्री०)
९१. एकनवति
९२. द्वानवति, द्विनवति
९३. त्रयोनवति, त्रिनवति
९४. चतुर्नवति
९५. पञ्चनवति
९६. षण्णवति
९७. सप्तनवति
९८. अष्टानवति, अष्टनवति
९९. नवनवति, एकोनशतम्
१००. शत (नपुं०)
१०१. एकशत, एकाधिकं शतम्
१०२. द्विशतम् , द्व्यधिकं शतम्
१०३. त्रिशतम् , त्र्यधिकं शतम्
११०. दशशतम् , दशाधिकं शत
२००. द्वे शते, द्विशतम्
३००. त्रीणि शतानि, त्रिशतम्
१,०००. दशशत *n.* दशशती, सहस्र (नपुं०)
१०,००० अयुत (नपुं०)
१००,०००. लक्ष (नपुं०)
१,०००,०००. नियुत (नपुं०)
१०,०००,०००. कोटि (स्त्री०)

अर्बुद, अब्ज, खर्व *m.* निखर्व, महापद्म, शंकु, जलधि, अन्त्य *n.* मध्य, परार्ध; each is ten times of the preceding.

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९७. विंशति से शत तक गणनावाचक विंशति आदि से पूर्व एक, द्वि—नवन् लगाने से बनते हैं। यहाँ द्वि, त्रि और अष्टन् को विंशति और त्रिंशत् से पूर्व नित्य और अन्यत्र विकल्प से क्रमशः द्वा, त्रयः और अष्टा हो जाता है। अशीति से पूर्व कोई विकार नहीं होता। जैसे, द्वाविंशति, त्रयोविंशति अष्टाविंशति, त्रयस्त्रिंशत, अष्टात्रिंशत्। द्वाचत्वारिंशत् या द्विचत्वारिंशत्, त्रिपंचाशत् या त्रयः पंचाशत्। द्व्यशीति।

(क) नवन् की गणना में एकोन ऊन या एकान्न पहले लगते हैं। जैसे, नवविंशति, एकोनत्रिंशत्, ऊनत्रिंशत्, एकान्नत्रिंशत् (२९)।

(ख) शतम् से ऊपर के गणनावाचक अधिक के योग से बनते हैं। जैसे, एकाधिकं शतम् या एकाधिकशतम् (१०१)। अष्टादशाधिकं शतम् (११८) पञ्चादशाधिकं शतम् (१५०)।

सहस्र के ऊपर अधिक प्रत्येक दहाई और सैकड़े पर लगता है। जैसे, एकचत्वारिंशदधिकनवशताधिकसहस्रम् (१९४१).

क्रमवाचक संख्यावाचक 'Ordinals'.

९८. गणनावाचकों से क्रमवाचक बनाने की विधि अधोलिखित है:—

(१) एक, द्वि, त्रि, चतुर्, और षष् के क्रमवाचक अनियमित हैं।

(२) पञ्चन्, सप्तन्, अष्टन्, नवन् और दशन् के क्रमवाचक न् हटाकर म लगाने से बनते हैं। जैसे, पञ्चमः, दशमः।

(३) दशन् से नवदशन् तक केवल न् हटाने से। जैसे, दशः, नवदशः।

(४) विंशति से ऊपर तम लगाने से या विंशति का ति और शेष के अन्त्य व्यंजन हटाने से। इस अवस्था में संयुक्त गणनावाचकों का अन्त्य स्वर अ में बदल जाता है। परन्तु षष्टि, सप्तति, अशीति, नवति, का तम लगाने से ही क्रमवाचक बनता है। जैसे, विंशतितमः, या विंशः, पचाशत्तमः या पंचाशः, एकषष्टः या एकषष्टितमः। परन्तु षष्टितमः, नवतितमः। शत से शततमः।

इनके रूप राम की भाँति होते हैं, और पहले चार के अतिरिक्त, इनके स्त्रीलिंग ई लगाने से बनते हैं।

1st प्रथमः or आदिमः, *f*. आ
2nd द्वितीयः, *f*. आ।
3rd तृतीयः, *f*. आ
4th चतुर्थः, *f*, ई
तुरीयः, तुर्यः, *f*. आ
5th पञ्चमः, *f*. ई

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

6th षष्ठः
7th सप्तमः
8th अष्टमः
9th नवमः
10th दशमः
11th एकादशः
12th द्वादशः
13th त्रयोदशः
14th चतुर्दशः
15th पञ्चदशः
16th षोडशः
17th सप्तदशः
18th अष्टादशः
19th नवदशः एकोनविंशः, ०विंशतितमः
ऊनविंशः, ०विंशतितमः
एकान्नविंशः ०शतितमः
20th विंशः, विंशतितमः
21st एकविंशः, ०तितमः
22nd द्वाविंशः, ०तितमः
23rd त्रयोविंशः, ०तितमः
24th चतुर्विंशः, ०तितमः
25th पञ्चविंशः, ०तितमः
26th षड्विंशः, ०तितमः
27th सप्तविंशः, ०तितमः
28th अष्टाविंशः, ०तितमः
29th नवविंशः, नवविंशतितमः
एकोनत्रिंशः, ०त्रिंशत्तमः
ऊनत्रिंशः, ०त्रिंशत्तमः
एकान्नत्रिंशः, ०त्रिंशत्तमः
30th त्रिंशः, त्रिंशततमः
40th चत्वारिंशः, चत्वारिंशत्तमः
50th पञ्चाशः, पञ्चाशत्तमः
60th षष्टितमः
61st एकषष्टः, एकषष्टितमः
70th सप्ततितमः
71st एकसप्ततः, एकसप्ततितमः
80th अशीतितमः
81st एकाशीतः, एकाशीतितमः
90th नवतितमः
91st एकनवतः, एकनवतितमः
100th शततमः
1000th सहस्रतमः

संख्यावाचकों के सुबन्त

९९. एक (एका स्त्री०), द्वि (द्वा स्त्री०), त्रि (तिसृ स्त्री०) and चतुर् (चतसृ स्त्री०) संख्यावाचक विशेषण हैं। अतः इनकी समता विशेष्य से रहती है। एक के एकवचन और द्वि के द्विवचन (९५) और अन्य के बहुवचन में ही रूप होते हैं।

	त्रि०		चतुर्	
	पुं०	स्त्री०	पुं०	स्त्री०
१.	त्रयः	तिस्रः	चत्वारः	चतस्रः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२.	त्रीन्	तिस्रः	चतुरः	चतस्रः
३.	त्रिभिः	तिसृभिः	चतुर्भिः	चतसृभिः
४,५.	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः
६.	त्रयाणाम्	तिसृणाम्	चतुर्णाम्	चतसृणाम्
७.	त्रिषु	तिसृषु	चतुर्षु	चतसृषु
	नपुंसक०	त्रीणि	चत्वारि	१. २. ८.

(क) पञ्चन् से नवदशन् तक के रूप बहु० में और तीनों लिंगों में समान होते हैं ।

	पञ्चन्	षष्	अष्टन्
१,२,८.	पञ्च	षट्, षड्	अष्ट अष्टौ
३.	पञ्चभिः	षड्भिः	अष्टभिः, अष्टाभिः
४,५.	पञ्चभ्यः	षड्भ्यः	अष्टभ्यः, अष्टाभ्यः
६.	पञ्चानाम्	षण्णाम्	अष्टानाम्
७.	पञ्चसु	षट्सु	अष्टसु, अष्टासु

सप्तन्, नवन् तथा नवदशन् तक अन्य गणनावाचकों के रूप पञ्चन् की भाँति जानो ।

(ख) विंशति से नवनवति तक सभी गणनावाचक स्त्रीलिंगक हैं। शत और सहस्र नपुं० हैं। इन सबके रूप एकवचनान्त रहते हैं और एकवचनान्त ही बहुवचनान्त विशेष्यों के साथ प्रयुक्त होते हैं। जैसे, विंशति ब्राह्मणाः 'बीस ब्राह्मण'। चत्वारिंशत् फलानि। शतं स्त्रियः 'सौ स्त्रियाँ'। परन्तु नियत संख्या के परिमाण के लिए द्वि और बहु० में भी प्रयुक्त होते हैं। जैसे, विंशतयः ब्राह्मणानाम्। द्वे शते स्त्रीणाम्।

(ग) क्रमवाचकों के रूप संज्ञाओं की भाँति होते हैं, परन्तु प्रथम, द्वितीय और तृतीय (४), (५), (६), (७) एक० में सर्वनामों का अनुकरण करते हैं। जैसे, द्वितीयस्मै, द्वितीयस्याः, द्वितीयस्याम्, इत्यादि।

संख्यावाचक क्रियाविशेषण 'Numeral adverbs'.

१००. (क) पौनःपुन्यवाचक (multiplication) क्रियाविशेषण—सकृत् 'once एक बार'। द्विः 'twice दो बार'। त्रिः 'thrice तीन बार'। चतुः 'चार बार'। पञ्चकृत्वः 'पाँच बार'। षट्कृत्वः, इत्यादि।

(ख) रीतिवाचक (manner) क्रियाविशेषण—एकधा 'in one

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
way एक प्रकार'। द्विधा या द्वेधा, त्रेधा, चतुर्धा, पञ्चधा, षोढा, सप्तधा, इत्यादि ।

(ग) प्रत्येकवाचक (distributive) क्रियाविशेषण—एकशः 'singly, one by one, एक एक करके'। द्विशः 'in pairs, दो दो'। त्रिशः, पञ्चशः।

संख्यावाचकों का अभ्यास ८.

संस्कृत में अनुवाद करो :—

इस श्रेणी में चालीस विद्यार्थी हैं। मैंने सौ सैनिकों को देखा। उंतीस लड़कियों को पुस्तकें दी गई। उसने गोपाल को दो सौ रुपए दिए। हमारे कालेज में ८७५ छात्र पढ़ते हैं। वह अपनी श्रेणी में दूसरी रही। उसका जन्म १९९८ सम्वत् में कार्तिक की २९ वीं तारीख को हुआ। चौथे दिन वह एक छोटे से गाँव में पहुँचा। १४ वीं रात को चाँद विशेष चमकता है। चौथी लड़की ने अन्य तीन लड़कियों को देखा। पहली लड़की ने दूसरी लड़की को तीन पुस्तकें दीं। हरि दिन में तीन बार खाता है और गोपाल पाँच बार। मैं यह काम एक दिन में ही कर सकता हूँ, परन्तु तुम चार दिन में भी न कर सके। तीन तीन सैनिक आगे बढ़े। एक अक्षौहिणी सेना में २१,८७० रथ, २१,८७० हाथी (गज), ६५,६१० घुड़सवार (अश्व) और १०९,३५० पैदल सिपाही (पदातिन्) होते हैं।

अभ्यास ९.

१. सर्वनामस्थान और असर्वनामस्थान विभक्तियों में क्या भेद है? विकृत हलन्त शब्दों के अंगों में इन विभक्तियों के कारण क्या भेद होते हैं? सोदाहरण लिखो।

२. इकारान्त और उकारान्त संज्ञा विशेषणों के सुबन्तों में क्या भेद है? सोदाहरण लिखो।

३. इकारान्त अपवादक शब्दों की विशेषताएँ सोदाहरण लिखो।

४. ईकारान्त और ऊकारान्त एकाच् और अनेकाच् शब्दों के सुबन्तों में क्या भेद है? सोदाहरण लिखो।

५. नीचे लिखे शब्दों के प्रथमा, द्वितीया और सप्तमी के बहु०, चतुर्थी और षष्ठी के द्वि० और तृतीया, पञ्चमी, सप्तमी और प्रथमा के एक० में रूप लिखो :—दृषद्, वाच्, दिश्, गिर्, पथिन्, गरीयस्, पुंस्, विद्वस्, ज्योतिस्, आत्मन्, अहन्, युवन्, मघवन्, लघिमन्, दिव्, द्विष्।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६. नीचे लिखे शब्दों की सब विभक्तियों के एक० में रूपावली लिखो :—
मति, सखि, पति, अक्षि, जरा, पितृ, स्वसृ, युष्मद्, अदस्।

७. नीचे लिखे वाक्यों के रिक्त स्थानों में दिए हुए शब्दों को उचित विभक्तियों में प्रयुक्त करो :—

—तृष्णा न शाम्यति। —नृ।
—त्रायते आतपत्रम्। —आतप।
साधवः— धैर्यं न त्यजन्ति। —विपद्।
भूपतिः—रक्षति। —विद्वस्।
—छात्राः पाठं पठन्ति। —सर्व।
——परा सीमा स्नेहस्य। —तद्, एतद्।
कोऽतिभारः—। —युवन्।
किमधिकं—विद्यायाः। —श्रेयस्।
सूर्यवंशीया राजानः—अध्यूषुः। —अयोध्या।
दक्षिणेन—भारतवर्षः। —हिमवान्।
सत्संगतिः कथय किं न करोति—। —पुंस्।
—ब्राह्मणेभ्योऽन्नं ददाति। —पंचाशत्।
अस्य शृङ्गाणि—। —चतुर्।
—तिथौ देवकी कृष्णं सुषुवे। —अष्टमी।
विद्याश्च—कलाश्च सोऽशिक्षत्। —चतसृ, चतुष्षष्टि।

८. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो:—

१. सर्वान् देवता नमामि। २. किमधिकं गुरोः सेवायात्। ३. चन्द्रमस्य अर्चिं पश्यति। ४. पुरस्य द्वारे तिष्ठति। प्रावृष्षु मण्डूकाः भवन्ति। ५. ब्रह्मचारिः समिधान् आहरति। ६. द्विष् यशं हन्ति। ७. सम्राजस्य सुहृदा आगच्छन्ति। ८. नभसे तमं विद्यते। ९. विद्वान तपसस्य महिमां जानाति। १०. गच्छन्ता मया तद्दृष्टम्। ११. धीमानेन महतं कार्यं कृतम्। १२. पक्षियो नभसे उत्पतन्ति। १३. मनस्विनस्य धी प्रशस्यते। १४. राजस्य सेनानी सुधी अस्ति। १५. पितॄण् मातॄन् पूजयन्तु भवान्तः। १६. स भ्रातारमपश्यत्। १७ मातस्य भ्रातरान् अपश्यम्। १८. दुहितराय धनमयच्छत्। १९. श्वनः पथे तिष्ठति। २०. कृष्णवर्मः सामनं गायति। २१. पञ्चासु अहसु स आगमिष्यति।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थोऽध्यायः ।

लिङ्गानुशासनम् 'Gender'.

१०१. संस्कृत तथा अन्य भाषाओं में भी लिंग का निर्णय अर्थ से नहीं हो सकता। इसके लिए कोई सर्वव्यापी नियम नहीं। शिष्टों के प्रयोग से ही लिंग का निर्णय हो सकता है, इसलिए इसमें कोष ही सहायक है। लिंग प्रायः अविहित ही होता है क्योंकि एक ही अर्थवाचक शब्दों का प्रायः भिन्न भिन्न लिंग होता है। जैसे, दार पुं०, भार्या स्त्री०, और कलत्रम् नपुं० (wife)। शिशु पुं०, सन्तति स्त्री०, और अपत्यम् नपुं० (child)। कायः पुं०, तनु स्त्री०, शरीरम् नपुं० (body).

पाणिनि ने अपने लिंगानुशासन में कुछ नियम दिए हैं, जिनके द्वारा लिंग-निर्णय में सहायता मिलती है। इन में से कुछ नीचे दिए जाते हैं।

१. पुँल्लिग शब्द ।

१०२. नीचे लिखे शब्द पुँल्लिग में होते हैं:—

१. घञ्, अप्, घ, अच्, (अ) कृत् प्रत्यय लगाने से जो शब्द बनते हैं; जैसे, पाकः 'cooking', त्यागः 'leaving', रागः, अवतारः, प्रतिकारः, विस्तारः। करः 'ray', शरः, स्तवः 'praise', गोचरः। चयः 'collecting', जयः, लयः। अपवादक—भय, मुख, वर्ष, पद नपुं० हैं।

२. कि-प्रत्ययान्त, अर्थात् धा, दा आदि धातु पर इ लगाने से। जैसे, आधिः 'anxiety', निधि 'treasure', वारिधिः 'ocean', शरधिः 'quiver',। अपवादक—इषुधि पुं० और स्त्री०।

३. नकारान्त शब्द। जैसे, राजन्, तक्षन्, 'carpenter', श्वन्, उक्षन् 'bull', पूषन्, अर्यमन्।

४. उकारान्त शब्द। जैसे प्रभुः, इक्षुः, भानुः, गुरुः,। अपवादक-धेनु, रज्जु, तनु, रेणु, प्रियङ्गु, स्त्री० हैं। श्मश्रु, जानु, स्वादु, मधु, अश्रु, वसु, त्रपु, जतु नपुं० हैं।

५. रु और तु अन्त वाले शब्द। जैसे, मेरुः, शत्रुः, सेतुः 'bridge', हेतुः। अपवादक—दारु पुं० और स्त्री०। वस्तु, मस्तु 'whey', सक्तु 'barley meal' नपुं० हैं।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६. जो शब्द न लगाने से बनते हैं। जैसे, प्रश्नः, यज्ञः स्वप्नः, यत्नः।

७. जिन शब्दों के उपधा में क्, ट्, ण्, थ्, न्, त्, प्, भ्, म्, र्, स् हों। जैसे,

क्—स्तबक 'bunch', कल्क 'sediment'। अपवादक—चिबुक 'chin', अंशुक 'silk', प्रातिपदिक, उल्मुक fire-brand,, मण्डी' नपुं० हैं। मस्तक, पुस्तक, कण्टक 'thron', अनीक 'army', निष्क 'gold coin', कटक 'fort, पिनाक 'Siva's bow', फलक 'shield', और पुलक horripilation', पुं० और नपुं० दोनों हैं।

ट्—घटः 'pot', पटः 'cloth',। अपवादक—ललाट 'fore-head', किरीट, मुकुट 'crown', वट 'tree', नपुं० हैं। कूट 'peak', कपट 'knave', कपाट 'door', नट, कर्पट 'rug', कीट 'worm', और निकट 'near', पुं० और नपुं० दोनों हैं।

ण्—गुणः 'quality', गुणः 'multitude', पाषाणः 'stone', अपवादक—लवण, ऋण, पर्ण 'leaf', उष्ण नपुं० हैं। स्वर्ण, व्रण 'tumour', चरण, चूर्ण 'powder', तृण 'grass', और विषाण 'horn', पुं० और नपुं० हैं।

थ्—रथः 'chariot'। अपवादक—काष्ठ 'wood', and पृष्ठ 'back', नपुं० हैं। तीर्थ 'holy place', यूथ 'herd', ओष्ठ, पुं० और नपुं० दोनों हैं।

न्—फेनः 'foam', इनः 'sun', अपवादक—जघन 'hip', अजिन 'deerskin', विपिन, कानन, वन 'forest', वृजिन 'sin', वेतन 'wages', शासन 'punishment', रत्न 'gem', चिह्न 'mark', और मिथुन 'couple' नपुं० हैं। मान,'honour', अभिधान 'name', नलिन 'lotus', शयन 'bed', आसन 'seat', स्थान 'place', भवन house', वसन 'cloth', पुलिन 'sandy bank' पुं० और नपुं० दोनों हैं।

भ्—स्तम्भः 'pillar', कुम्भः 'pitcher'। परन्तु जृम्भ 'yaw-ning' पुं० और नपुं० दोनों हैं।

म्—भीमः terrible', सोमः 'moon'। अपवादक—युग्म 'pair', अध्यात्म 'knowledge of soul', रुक्म 'gold', गुल्म 'shrub', कुसुम 'flower', नपुं० है। संग्राम 'fight', आश्रम 'hermi-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
tage', क्षौम 'silk', होम ,'oblation पुं० और नपुं० दोनों हैं ।

य्—हयः 'horse', समयः 'time'। अपवादक—हृदय 'heart', इन्द्रिय 'sense organ', गोमय 'cowdung', उत्तरीय 'upper garment', किसलय 'sprout' नपुं० हैं । मलय 'a mountain', अव्यय 'undying', कषाय 'astringent', अन्वय् 'connection' पुं० और नपुं० दोनों हैं ।

र्—अङ्कुरः 'sprout' and क्षुरः 'razor', मित्र 'sun'। अपवादक—नीर, शरीर, द्वार, तीर shore', उदर 'belly', चत्वर 'courtyard', अम्बर 'sky', शिशिर 'dew', यन्त्र 'machine', क्षेत्र field', मित्र 'friend', कलत्र 'wife', चित्र 'painting', नेत्र 'eye', अस्त्र शस्त्र 'weapon', वस्त्र 'cloth' पत्र 'leaf', छत्र 'umbrella', सूत्र 'thread', नपुं० हैं। चक्र 'wheel', वज्र 'thunderbolt" क्षीर milk', तिमिर 'darkness', शृङ्गार 'love', पुं० और नपुं० दोनों हैं।

ष्—वृषः 'bull', वृक्षः। अपवादक—पुरीष 'excrement', किल्विष, कल्मष 'sin', पीयूष 'nectar' नपुं० हैं। विष 'poison', वर्ष 'year' पुं० और नपुं० दोनों हैं।

स्—वायसः 'crow', वत्सः 'calf', महानसः 'kitchen'। अपवादक—विस 'lotus stalk', साहस 'rashness' नपुं० हैं। उपवास 'fasting', वास 'residence', मास 'month', मांस, कार्पास 'cotton' पुं० और नपुं० दोनों हैं।

८. ण, अथु और इमन् प्रत्ययों से बने शब्द। जैसे, व्याधः, श्वासः, वेपथुः 'tremor', महिमन्, गरिमन्। परन्तु प्रेमन् 'love' पुं० और नपुं दोनों हैं।

९. समास के उत्तर-पद में रात्र, अह्न या अह पुं० होते हैं। जैसे, पूर्वरात्रः, सर्वरात्रः, पूर्वाह्णः 'forenoon', मध्याह्नः 'midday', सायाह्नः 'evening' परमाहः, शुभाहः auspicious day', एकाहः परन्तु रात्रि द्विगु समास में नपुं० होता है। जैसे, द्विरात्रम्, पंचरात्रम्, नवरात्रम् यदि समास में अहन् का पूर्वपद पुण्य हो तो यह नपुं० होता है। जैसे, पुण्याहम् 'auspicious day'.

१०. देव, असुर, आत्मन्, स्वर्ग, गिरि, समुद्र, नख, केश,
CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दन्त, स्तन, भुज, कण्ठ, खड्ग, शर, पङ्क, सूर्य, चन्द्र, वायु, अग्नि, क्रतु, पुरुष, कपोल, गुल्फ, मेघ, दिवस, रश्मि, ऋतु, मान, 'measure of corn' और इनके पर्य्यायवाचक पुं० होते हैं :—

देव 'god' इसके पर्यायवाचक—अमरः, विबुधः, विष्णुः, हरिः, इन्द्रः। परन्तु देवता स्त्री० और दैवत नपुं० हैं।

असुर 'demon'—दैत्यः, दानवः।

आत्मन् 'soul'—देही, क्षेत्रज्ञः।

स्वर्ग 'heaven'—त्रिदिवः, नाकः। परन्तु द्यौ और त्रिविष्टप नपुं० हैं।

गिरि 'mountain'—शैलः, पर्वतः, अद्रिः, अचलः।

समुद्र 'sea'—सागरः, सिन्धुः, अर्णवः, अब्धिः।

नख 'nail'—कररुहः, पुनर्भवः।

केश 'hair'—कचः, कुन्तलः, चिकुरः, शिरोरुहः।

दन्त 'tooth'—दशनः, रदः, रदनः।

स्तन 'breast'—कुचः, पयोधरः।

भुज 'arm'—करः, हस्तः, दोः।

कण्ठ 'throat'—गलः, कण्ठः,।

खड्ग 'sword'—असिः, करवालः, कृपाणः।

शरः 'arrow'—बाणः, विशिखः, मार्गणः, सायकः, पत्री। परन्तु इषुः पुं० और स्त्री० दोनों हैं।

सूर्य 'sun'—दिवाकरः आदित्यः, भास्करः, रविः।

चन्द्रः 'moon'—इन्दुः, शशी, सोमः, विधुः।

वायुः 'air'—पवनः, अनिलः, मारुतः, मरुत्।

अग्निः 'fire'—पावकः, अनलः, वह्निः।

क्रतुः 'sacrifice'—अध्वरः, यज्ञः, यागः।

पुरुषः 'person'—नरः, मनुष्यः, लोकः, मानवः, जनः, मनुजः।

मेघः 'cloud'—वारिदः, घनः, बलाहकः, जलधरः। परन्तु अभ्र नपुं० है।

रश्मिः 'ray'—किरणः, करः। परन्तु मरीचि पुं० और स्त्री० और दीधिति स्त्री० हैं।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋतुः 'season',—ग्रीष्मः, वसन्तः, शिशिरः। परन्तु शरद् और वर्षा स्त्री० हैं।

११. दाराः 'wife' अक्षताः 'whole grain', लाजाः, 'friedgrain', असवः 'life', गृहाः 'house' आदि शब्द सदा पुं० और बहुवचनान्त होते हैं।

१२. नीचे लिखे शब्द पुंल्लिंग हैं :—

गरुत् 'wing', ऋत्विक्, मुनि, यति, ऋषि 'sage', राशि 'heap', ग्रन्थि 'joint', क्रिमि 'worm', ध्वनि, शब्द, नाद 'sound', बलि 'offering', कपि, ध्वज 'flag', गज, मुञ्ज 'a kind of grass', कुन्त 'lance', वात 'air'' दूत, चूत 'mango', मुण्ड 'head', शिखण्ड 'tail of a peacock', वंश 'family', अंश 'share', ह्रद 'lake', पथिन् 'road', पल्लव 'twig', कटाह 'kettle', मठ 'temple', मणि 'gem', तरङ्ग 'wave', गन्ध 'smell', मृदंग 'drum', अतिथि guest', कुक्षि 'belly', अञ्जलि 'folded palms'.

अभ्यास १०.

१. नीचे लिखे शब्दों का सप्रमाण लिंग निर्णय करो :—

प्राण, पुण्याह, तरु, भय, वर्ष, अभ्र, त्रिरात्र, प्रभव, यज्ञ, मरीचि, विस, दिन, वसु, पूर्वरात्र, शत्रु, पुष्प, स्वप्न, उदर and वर्षा।

नीचे लिखे वाक्यों को प्रमाण देकर शुद्ध करो :—

मम मित्रः अत्यन्तं साधुः। अयं दारुः कठिनः। तस्मिन् किम् गुणम् अस्ति। इदम शरम् कस्य विद्यते। आकाशे मेघम् दृश्यते। अयं कुसुमः सुन्दरः। शरद् मनोरमः भवति। पाषाणे कर्दमं नास्ति। तस्य दारायाः रूपः न विद्यते। यतो धर्म्मम् ततो जयम्।

३. संस्कृत में अनुवाद करो :—

इस वृक्ष के कैसे सुन्दर फूल हैं। मैंने उससे कई प्रश्न पूछे। उसने मुझे चार रत्न दिए। उसकी बाँहें और बाल लंबे हैं पर नाखुन छोटे हैं। इस तालाब का पानी गंदा है, पर इसमें बहुत से कमल उगे हैं। जो ईश्वर को जान लेता है उसे किसी का डर नहीं रहता। महात्माओं में सभी गुण रहते हैं। अब क्या समय होगा। उसने हाथ जोड़ कर (बद्धाञ्जलि) अतिथि को प्रणाम किया। उस सड़क पर एक मठ है। रात को चाँद चमकता है। बसन्त में फूल खिलते हैं

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(वि-कस्) गंगा पहाड़ से निकल कर समुद्र में जा गिरती है। अपने मित्र का चित्र मैंने अपनी आँखों से देखा है। यन्त्र द्वारा दूध से मक्खन निकालते हैं।

२. स्त्रीलिङ्गम् ।

नीचे लिखे शब्द स्त्रीलिंग होते हैं :—

१. ति (क्तिन्) कृत् प्रत्यय से बने शब्द। जैसे, मतिः, गतिः, कृतिः, भक्तिः, नतिः, शान्तिः, श्रुतिः, स्थितिः, स्तुतिः।

२. अनि, ऊ, मि, नि और ई प्रत्ययों से बने शब्द। जैसे, अनि—अवनिः। परन्तु अशनि 'thunder bolt', अरणि 'wood' पुं० और स्त्री० दोनों हैं। ऊ—चमूः 'army'। मि, नि—भूमिः, ग्लानिः, हानिः। परन्तु वह्निः और अग्निः पुं० हैं। योनिः, श्रेणिः 'line', ऊर्म्मिः 'wave' पुं० और स्त्री० हैं। ई—लक्ष्मीः, तरीः, तन्त्रीः।

३. ईकारान्त और ऊकारान्त एकाच् शब्द। जैसे, धीः, भीः, श्रीः, भूः।

४. ता (तल्) प्रत्यय से बने शब्द। जैसे, मृदुता, लघुता, नम्रता।

५. आ और ई स्त्री प्रत्ययों वाले शब्द। जैसे, शोभा, जरा, नदी, ब्राह्मणी।

६. विंशति 'twenty' से नवनवति 'ninety-nine' तक सब गणनावाचक शब्द। जैसे, विंशतिः, त्रिंशत्, षष्टिः, नवतिः।

७. अप् 'water', सुमनस् 'flower', समा 'year', सिकता 'sand', वर्षा 'rainy season' आदि शब्द सदा स्त्री० और बहुवचनान्त होते हैं।

८. तिथि 'lunar day' को बताने वाले शब्द। जैसे, प्रतिपत्, तृतीया, षष्ठी, एकादशी, पूर्णिमा, अमावस्या।

९. विद्युत् 'lightning', निशा 'night', वल्ली 'creeper', वीणा 'lute', दिक् 'quarter', भू 'earth', नदी 'river', ह्री 'shyness', वनिता 'woman' और इनके पर्य्यायवाचक शब्द स्त्री० होते हैं :—

विद्युत्—तडित्, सौदामिनी, चंचला।
निशा—रजनी, यामिनी, रात्रिः, शर्वरी, क्षपा, विभावरी।
वल्ली—लता, व्रततिः।
वीणा—वल्लकी, विपंची।
दिक्—आशा, काष्ठा।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भू—भूमिः, पृथिवी, अचला, धरा, धरित्री, मेदिनी, वसुधा।

नदी—सरित्, तरङ्गिणी, आपगा, तटिनी। परन्तु स्रोतस् और यादस् नपुं० हैं।

ह्री—लज्जा, व्रीडा, त्रपा। वनिता—योषित्।

१०. संबन्धवाचक ऋकारान्त शब्द। जैसे, मातृ, दुहितृ, स्वसृ 'sister' पोतृ 'priest'. नान्दृ 'husband' sister'.

११. नीचे लिखे शब्द स्त्रीं० हैं :—

स्रज् 'garland', त्वच् 'skin', वाच् 'word', वेणि 'braided hair', तारा 'star', ज्योत्स्ना 'moonlight', भास् 'light', उपानह् 'shoe', वेदि 'altar', खनि 'mine', रुचि 'lustre', प्रावृष् 'rainy season', अङ्गुलि-ली 'finger', कटि-टी 'waist', धूलि 'dust', केलि 'sport', छवि, सम्पद्, विपद्, आपद्, संसद्, 'assembly', क्षुध् 'hunger', समिध्, भ्रुकुटि, frown', उषस् 'dawn'.

अभ्यास ११.

१. नीचे लिखे शब्दों का सप्रमाण लिंग-निर्णय करो :—

पूर्णिमा, चत्वारिंशत्, शान्ति, आशा, त्रिलोकी, भी, वह्नि, स्रोतस्, योषित्, गिर्, अप्, त्वच्, तडित्, ननान्दृ, त्रपा।

२. नीचे लिखे वाक्यों को प्रमाण दे कर शुद्ध करो :—

वर्षायां भेकाः शब्दायन्ते। अयं स्रोतः वेगेन प्रवहति। निशा प्रभातम् भवति। रामः अनेन दिशा वनं गतः। विद्या कदापि न सुलभम्। का एते कन्यकाः। अन्यदेतत् नदी। अयं पाण्डवानां चमू वर्तते। उत्तरस्मिन् दिशि हिमालयं वर्तते। शीतलं अभी सिक्तम्। अस्य वाचो महान् महिमाः श्रूयते।

३. संस्कृत में अनुवाद करोः—

२० लड़कियां और ३० लड़के उस सभा में उपस्थित थे। रात चली गई और ऊषा आ गई। रात को नदी पर मत जाओ। पूर्णिमा की रात को मैं अपनी माता के साथ बाग में गई। भलों का यह स्वभाव है कि वे सब से मित्रता रखते हैं। शरद् ऋतु में आकाश (व्योमन्) साफ होता है। रात को आसमान (नभस्) पर तारे चमकते हैं। सीता ने अपने पति के लिए कुन्द-माला गूथी। वह भूख से व्याकुल था। सोना खान (खनि) से निकलता है। वर्षा ऋतु में रेत नहीं तपता। विपत्ति में शान्ति दुर्लभ है। उसके जूतों पर धूली पड़ी है। उसकी कटी पर सुन्दर छाल बंधी है।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३. क्लीबलिङ्गम् ।

१०४. नीचे लिखे शब्द नपुं० हैं:—

१. अन् (ल्युट्) और त (क्त) से भाववाच्य के अर्थ में बने शब्द। जैसे,

अन्—गमनम्, दर्शनम्, हसनम्, पानम्।

त—गतम्, हसितम्, गीतम्, भाषितम्।

२. तद्धित प्रत्यय त्व, ष्यञ्, यत्, य, ढक्, अञ्, अण् और छ से बने शब्द। जैसे, बन्धुत्वम्, मृदुत्वम्, धावल्यम्, स्तेयम्, 'theft' सख्यम्, आधिपत्यम्, लाघवम्, यौवनम्, सौन्दर्यम्।

३. इस् और उस् अन्तवाले शब्द। जैसे, हविस्, सर्पिस्, ज्योतिष्, धनुष्, वपुष, चक्षुष्, आयुष् परन्तु अर्चिस् 'light' नपुं० और स्त्री० दोनों हैं।

४. अस् और मन् अन्तवाले द्व्यच् शब्द। जैसे, अस्—पयस्, यशस्, मनस्, तमस्, वक्षस्। मन्—कर्मन्, चर्मन्, वर्मन् 'armour'। परन्तु ब्रह्मन् नपुं० और पुं० दोनों हैं।

५. इत्र और त्र अन्त वाले शब्द। जैसे, इत्र—चरित्रम्, खनित्रम्, वहित्रम्। त्र—छत्रम्, पत्रम्। अपवादक—छात्रः, पुत्रः, मन्त्रः, वृत्रः, उष्ट्रः 'camel' पुं० हैं।

६. ल उपधा वाले शब्द। जैसे, कुलम् 'family', कूलम् 'bank', स्थलम्। अपवादक—तूल 'cotton', उपल 'stone', ताल, तरल, कम्बल, वृषल 'a Sudra', पुं० हैं। शील, मूल, मङ्गल, कमल, तल, मुसल, शूल नपुं० और पुं० दोनों हैं।

७. शत और इससे ऊपर के गणनावाचक शब्द। जैसे, शतम्, सहस्रम् इत्यादि। परन्तु शंकु पुं० है। लक्ष नपुं० और स्त्री० दोनों हैं। कोटि स्त्री० है।

८. फल और पुष्पों के नाम। जैसे, आमलकम्, आम्रम् 'mango', पनसम् 'jack-fruit'। परन्तु जब ये वृक्षों के नाम हों तो पुं० होते हैं। जैसे, आम्रः 'mango tree', पनसः 'jack tree'। परन्तु द्राक्षा 'grapes', हरीतकी स्त्री० हैं। जाती, मालती, यूथी पुष्पों के नाम स्त्री० हैं।

९. मुख 'mouth', नयन 'eye', लोह 'iron', वन 'wood',

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मांस 'flesh', रुधिर 'blood', कार्म्मुक 'bow', विवर 'hole', जल 'water', हल 'plough', धन 'wealth', अन्न 'food', बल 'strength', पत्तन 'town', रण 'battle', कुसुम 'flower', शुल्व 'copper', और इनके पर्य्यायवाचक शब्द नपुं० हैं:—

मुख—आस्यम्, आननम्, वदनम्। परन्तु वक्त्र पुं० और नपुं० है।

नयन—अक्षि, लोचनम्, अम्बकम्। परन्तु नेत्र पुं० और नपुं० है।

वन—विपिनम्, अरण्यम्, काननम्। परन्तु अटवी स्त्री० है।

मांस—पिशितम्, पलम्, आमिषम्।

रुधिर—रक्तम्, शोणितम्, क्षतजम्।

कार्मुक—धनुः, शरासनम्।

विवर—बिलम्, गर्त्तम्।

जल—सलिलम्, वारि। परन्तु अप् स्त्री० है।

धन—वित्तम्, द्रविणम्। परन्तु अर्थ पुं० है।

अन्न—अशनम्, भोजनम्। परन्तु ओदन पुं० है।

कुसुम—पुष्पम्, प्रसूनम्।

१०. नीचे लिखे शब्द नपुं० हैं:—

(क) वियत् 'sky', जगत्, शकृत् 'excrement', पृषत् 'drop of water' (प्रायः बहु०), यकृत् 'liver'.

(ख) नवनीत 'butter', अनृत, अमृत, निर्मित, वित्त, चित्त, पित्त 'bile', व्रत, रजत, वृत्त 'circle', पलित 'grey-hair'.

(ग) श्राद्ध, कुलिश, पीठ 'seat', कुण्ड 'pit', अङ्क 'lap', अङ्ग, दधि, सक्थि, अक्षि, आस्य, आस्पद 'place', आकाश।

(घ) बीज, धान्य 'paddy', आज्य 'ghee', शस्य, रूप्य 'silver', काव्य, पण्य, सत्य, अपत्य, मूल्य, मद्य, हर्म्य 'building', सैन्य।

(ङ) द्वन्द्व 'pair', बर्ह 'peacock's tail', दुःख बिम्ब 'shadow, image', कुटुम्ब relations', कवच 'armour'.

१०५, नीचे लिखे शब्द पुं० और स्त्री० दोनों हैं।

गो 'cow', मणि, यष्टि 'stick', मुष्टि 'handle', शाल्मलि

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
'silk cotton', त्रुटि 'defect', मसि 'ink', मरीचि 'ray', मृत्यु 'death', कण्डु 'itches' रेणु, रज्जु, (समास के अन्त में) नाभि 'navel', अशनि, अरणि 'wood', योनि, ऊर्मि 'wave', श्रोणि, दृति 'a leather strap, bellow'.

१०६. नीचे लिखे शब्द पुं० और नपुं० दोनों हैं :—

घृत, भूत 'being', ऐरावत 'elephant', पुस्तक, लोहित 'blood', शृङ्ग 'horn', अर्घ 'price', निदाघ 'summer', उद्यम 'exertion', शल्य, कुञ्ज 'grove', कवच, दर्प, दर्भ, पुच्छ, कबन्ध, औषध, दण्ड, खण्ड, सैन्धव, आकाश, कुश, अङ्कुश, कुलिश, देह, पट्ट, दैव, मधु, सीधु, सानु, कमण्डलु, कण्टक, मोदक, पिनाक, कपाट, कीट, रण, तोरण, स्वर्ण, चरण, तृण, विषाण, यूथ, नलिन, शयन, आसन, भवन, वसन, विमान, वितान, 'canopy', द्वीप, कुसुम, आश्रम, चक्र, वज्र, क्षेम, सार, शिशिर, कन्दर, मास, कुण्डल, उत्पल, पात्र, सूत्र ।

अभ्यास १२.

१. नीचे लिखे शब्दों को सप्रमाण लिंग-निर्णय करो :—

वज्र, आम्र, स्वर्ण, प्रतिदिन, चर्मन्, अयस्, लक्ष, घृत, पुस्तक, गृह, अशनि, पात्र, छत्र, आजि, कम्बल, बीज, मसि, मृत्यु, मधु, देह, कुसुम, उत्पल, वितान, पीठ, शस्य, त्रुटि, अन्न, ओदन, नेत्र, स्तेयम् , यौवन, अनृत, नाभि, लक्ष, इत्यादि ।

२. नीचे दिए वाक्यों को प्रमाण देकर शुद्ध करो :—

रावणः रामस्य अमित्रम् आसीत् । सूर्याचन्द्रमसौ ब्रह्मणो द्वौ चक्षुषौ । तस्य वक्षः अतीव विशालः । मधुरां दधि, मधुरान् द्राक्षान् च भुङ्क्ष्व । नायम् कर्म्मः तव योग्यः । रमणीयः यौवनः कस्य न प्रियः । मम मित्रः शीतलः पयः न पिबति । तडागस्य वारि अतीव निर्म्मला । ह्रदे पद्मः जायते । मधुरः आम्रः कस्मै न रोचते । अयं कुसुमः अतीव सुन्दरः । तस्य द्रविणः विद्यते मम तु अन्नः ।

३. संस्कृत में अनुवाद करो :—

इस पेटिका में कितने फूल और फल हैं । इस बगीचे में अनेक आम के पेड़ हैं । इन्द्र के सहस्रों आँखें थीं । उसने सौ यज्ञ किए । चाँद और सूरज ब्रह्म की मानो दो आँख हैं । रघु का यश सारे जगत में फैल गया । उसने तीर कमान लिया और सीधा जंगल को गया । बनिये की देह बहुत मोटी थी, अतः वह अपने

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थान से हिल भी न सका। उसकी अंगुली चाकू से कट गई और उसमें से लहू बह निकला। इस खेत में धान्य का बीज बोया गया है। कवि यश के लिए काव्य लिखता है। इस आसन का क्या मूल्य है? वह अपने कुटुंब की रक्षा करता है। भीम की गदा ने दुर्योधन के कवच को तोड़ डाला।

स्त्रीप्रत्ययाः 'Feminine affixes'.

१०७. आ (टाप्, डाप्, चाप्), ई (ङीप्, ङीष्, ङीन्), ऊ (ऊङ्) और ति स्त्रीप्रत्यय कहलाते हैं। इन्हें पुँल्लिंग शब्दों पर लगाने से स्त्री० बनते हैं।

(क) ई स्त्रीप्रत्यय से पूर्व—

(१) हलन्त शब्दों का वह अंग रहता है जो द्वितीया बहु० में होता है, जैसे, उदच्—उदीच्—उदीची। राजन्—राज्ञ्—राज्ञी। श्वन्—शुन्—शुनी। विद्वस्—विदुष्—विदुषी।

(२) अकारान्त शब्दों के अन्त्य स्वर का लोप हो जाता है। जैसे, हंस—हंसी। पुत्र—पुत्री। परन्तु मृदु—मृद्वी।

(३) यदि तद्धित प्रत्यय का य किसी शब्द के अन्त में हो तो इस का लोप हो जाता है। जैसे, गार्ग्य—गार्गी।

(४) सभी स्यत्रन्तों में और कुछ शत्रन्तों में न् का आगम होता है। (देखो ८५ क, ख)

१०८. अजादि-गण-पठित तथा अकारान्त प्रातिपदिकों से परे आ स्त्री-प्रत्यय लगता है।[1] जैसे, (१) अजः—अजा। अश्वः—अश्वा। कोकिलः—कोकिला। बालः—बाला। (२) चतुरः—चतुरा। चपलः—चपला।

परन्तु जाति के अर्थ में और जब इसके पूर्व महत् न हो तो शूद्र को आ स्त्री प्रत्यय लगता है।[2] जैसे, शूद्रा 'शूद्र जाति की स्त्री'। परन्तु शूद्री 'शूद्र की पत्नी'। महाशूद्री।

---

१. अजाद्यतष्टाप्। ४. १. ४। अजादि गण के कुछ प्रसिद्ध शब्दः—अज, एडक, अश्व, चटक, मूषिक, बाल, वत्स, पाक, मन्द, ज्येष्ठा, कनिष्ठा, मध्यमा (पुंयोगेभ्योऽपि), कोकिला (जातौ), दंष्ट्रा।

२. शूद्रा चामहत्पूर्वा जातिः। वा०।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) यदि किसी प्रातिपदिक के अन्त में प्रत्यय का क हो तो स्त्री-लिंग में इस क के पूर्ववर्ती अ को इ आदेश होता है।[1] जैसे, कारकः—कारिका। पाचकः—पाचिका। नायिका, गायिका, परिव्राजिका। अपवादक—अधित्यका 'table-land', उपत्यका, कन्यका। पुत्रका या पुत्रिका, वर्त्तका या वर्तिका।

१०९. ऋकारान्त और नकारान्त प्रातिपदिकों पर ई स्त्रीप्रत्यय लगता है।[2] जैसे, कर्तृ—कर्त्री। धातृ—धात्री। हन्तृ—हन्त्री। मनस्विन्—मनस्विनी। युवन्+इ=यून्+इ (१०७ क)=यूनी। राज्ञी, नाम्नी।

११०. टित्, ढ, अण्, अञ्, द्वयसच्, दघ्नच्, मात्रच्, तयप्, ठक्, ठञ्, कञ्, क्वरप् आदि प्रत्ययों से बने अकारान्त शब्दों को ई स्त्रीप्रत्यय लगता है।[3] जैसे टित्—वनेचरः—वनेचरी, सेनाचरी। ढ—वैनतेयः 'गरुड़'—वैनतेयी, गाङ्गेयी, सारमेयी। अण्—कुम्भकारः—कुम्भकारी। अञ्—तापसः—तापसी। द्वयसच्—जानुद्वयसी। दघ्नच्—जानुदघ्नी। मात्रच्—जानुमात्री 'knee-deep'। तयप्—चतुष्टयी, दशतयी। ठक्—धार्मिकी। ठञ्—मासिकी, लावणिकी। कञ्—यादृशी, तादृशी। क्वरप्—नश्वरी, गत्वरी।

१११. अजादि-गण के अतिरिक्त अकारान्त जाति-वाचक शब्दों को ई स्त्रीप्रत्यय लगता है[4]। जैसे, सिंहः—सिंही। मृगी, हरिणी, हंसी, काकी।

परन्तु हय, गवय, मुकय, मनुष्य, मत्स्य इन पांच शब्दों को छोड़ कर जिन अकारान्त जातिवाचक शब्दों की उपधा में य हो, उन्हें आ स्त्रीप्रत्यय लगता है। जैसे, वैश्यः—वैश्या। क्षत्रियः—क्षत्रिया। परन्तु हयी, गवयी, मुकयी, मनुषी, मत्सी।

११३. ऐसे प्रत्ययों से बने शब्दों को जिनमें षकार इत् हो (indicatory ष्) तथा गौरादि गण पठित शब्दों को ई स्त्रीप्रत्यय लगता है।[5]

---

१. प्रत्ययस्थात्कात्पूर्वस्यात् इदाप्यसुपः। ७. ३. ४४।

२. ऋन्नेभ्यो ङीप्। ४. १०. ५।

३. टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः। ४. १. १५।

४. जातेरस्त्रीविषयादयोपधात् ४. १. ६३। योपधाप्रतिषेधे हयगवयमुकयमनुष्यमत्स्यानामप्रतिषेधः। हलस्तद्धितस्येति यलोपः मनुषी। मत्स्यस्य ड्यानम्। सि० कौ०।

५. षिद्गौरादिभ्यश्च। ४. १. ४१। गौरादि गण के कुछ प्रसिद्ध शब्द नीचे दिए जाते हैं:—गौर, मत्स्य, मनुष्य, शृङ्ग, हय, गवय, तूण 'quiver'

CC-0. In Public Domain. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसे, नर्त्तकः—नर्त्तकी, रजकी, खनकी। गौरी, सुन्दरी, सूरी, अगस्ती, पितामही, अनडुही।

११३. अकारान्त आयुवाचक (वृद्धत्व के अतिरिक्त) शब्दों को ई स्त्रीप्रत्यय लगता है[1]। जैसे, कुमारी, किशोरी, बधूटी। परन्तु वृद्धा, स्थविरा, और शिशु (उकारान्त)।

११४. पुंयोग से अर्थात् मनुष्य से विवाह-संबन्ध के कारण अकारान्त शब्दों को ई स्त्रीप्रत्यय पत्नीत्व की विवक्षा में लगता है।[2] जैसे, गोपस्य स्त्री गोपी, (गोपा तु गोपकन्यका) ब्राह्मणी, शूद्री, नापिती, क्षत्रियी। परन्तु देवदत्ता, गोपालिका, अश्वपालिका (पालकान्त शब्दों में आ होता है)।

(क) इन्द्र, वरुण, भव, शर्व, रुद्र, मृड, हिम, अरण्य, यव, यवन, मातुल, आचार्य इन शब्दों में पत्नीत्व की विवक्षा में ई स्त्रीप्रत्यय से पूर्व आन् का आगम होता है।[3] जैसे, इन्द्राणी, वरुणानी, भवानी, रुद्राणी, हिमानी (महद् हिमं), अरण्यानी (महद् अरण्यं), यवानी (दुष्टो यवः), यवनानी (लिपिः Greek script), मातुलानी, आचार्यानी 'wife of a teacher', but आचार्या 'a woman teacher'.

(ख) मातुल और उपाध्याय में आन् का आगम विकल्प से होता है।[4] जैसे, मातुलानी या मातुली। उपाध्यायानी या उपाध्यायी 'wife of a preceptor,' परन्तु उपाध्यायी या उपाध्याया "a female preceptor.'

(ग) अर्य और क्षत्रिय को अपत्नीत्व विवक्षा में विकल्प से अन् का आगम होता है। ब्रह्मन् के न् का अन् से पूर्व लोप हो जाता है। जैसे,

---

हरिण, आमलक, बिम्ब, बदर 'बेर', पुष्कर, शिखण्ड, अलिन्द, आढक, आनन्द, आश्वत्थ, शूर्प 'winnow', सूर्य, सूच, यूथ, सूप, वेतस, वृष 'bull', उभय, भृङ्ग, मठ, श्वन्, तक्षन्, अनडुह्, देह, देहल, लवण, यान, नट, आस्तरण, सेचन, सुन्दर, मङ्गल, मन्थर, मण्डल, ह्रद, कदल, कन्दर, तरुण, बृहत्, महत्, सोम, इत्यादि।

१. वयसि प्रथमे। ४. १. २०।

२. पुंयोगादाख्यायाम्। ४. १. ४८।

३. इन्द्र-वरुण-भव-शर्व रुद्र-मृड-हिमा-रण्य-यव-यवन-मातुलाचार्याणाम् आनुक्। ४. १. ४९।

४. मातुलोपाध्याययोरानुग्वा। वा०। या तु स्वयमेवाध्यापिका तत्र वा ङीष् वाच्यः। ८ यक्षत्रियाभ्यां वा स्वार्थे। वा०।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आर्याणी या आर्या 'woman of Vaishya class' क्षत्रियाणी या क्षत्रिया 'a kṣatriya lady', परन्तु अर्यी 'wife of a Vaishya,' क्षत्रियी wife of a kṣatriya', ब्रह्माणी (ब्रह्मणो जाया)।

११५. **यज्ञ के संबंध** में **पति** शब्द को ई स्त्रीप्रत्यय से पूर्व न् का **आगम** होता है।[1] जैसे, पति—पत्नी (यज्ञफलभोक्त्री)। वशिष्ठस्य पत्नी (वशिष्ठानुष्ठितयज्ञफलभोक्त्री। **परन्तु** ग्रामस्य **पतिः** (स्त्री०) इयं ब्राह्मणी।

(क) यदि **पति समास में उत्तरपद** हो तो **विकल्प** से **न्** का आगम होता है।[2] परन्तु यदि समान, एक, वीर, भ्रातृ, पुत्र, आदि समास के पूर्वपद हों तो न् का आगम नित्य होता है[3]। जैसे, गृहपतिः या गृहपत्नी। **परन्तु** सपत्नी, एकपत्नी, वीरपत्नी, पुत्रपत्नी, इत्यादि।

(ख) **अन्तर्वत्** और **पतिवत्** शब्दों को भी ई स्त्रीप्रत्यय से पूर्व न् का आगम होता है।[4] जैसे, अन्तर्वत्नी 'pregnant woman', पतिवत्नी।

११६. **मत्, वत्, तवत्, वस्, इयस्** प्रत्ययान्त शब्दों को ई स्त्रीप्रत्यय लगता है।[5] जैसे, बुद्धिमत्—बुद्धिमती, लज्जावती, दृष्टवती। विद्वस्—विदुषी, प्रेयसी, इत्यादि।

(क) भ्वादि, दिवादि, तुदादि तथा चुरादि गणों के शत्रन्तों का स्त्री० **अन्त्**वाले **अंग** (strong) पर और शेष का **अत्** वाले **अंग** (weak) पर ई लगाने से बनता है। जैसे, भवत्—भवन्ती, तुदन्ती, दीव्यन्ती, चोरयन्ती। **परन्तु** जुह्वती, युञ्जती, सुवती, कुर्वती, क्रीणती (देखो ८५ क)।

(ख) सब स्यत्रन्तों का स्त्री० **अन्त्** वाले **अंग** (strong) पर ई स्त्रीप्रत्यय लगाने से बनता है। जैसे, भविष्यन्ती, करिष्यन्ती, इत्यादि।

११७. **वन्** प्रत्ययान्त शब्दों तथा उन समासों में, जहाँ ऐसे शब्द उत्तरपद हों, ई स्त्री प्रत्यय लगता है और न् के स्थान में र् हो जाता है। जैसे, पीवन्—पीवरी, धीवन्—धीवरी। अतिधीवरी, पारदृश्वरी।

११८. **इकारान्त** शब्दों को **विकल्प** से ई स्त्रीप्रत्यय लगता है। जैसे, श्रेणिः या श्रेणी, रात्रिः या रात्री, रजनिः या रजनी। **परन्तु** सखि से केवल **सखी**।

(क) परन्तु **क्ति अन्त वाले** शब्दों को ई नहीं लगता, केवल शक्ति

---

१. पत्युर्नो यज्ञसंयोगे। ४. १. ३३। २. विभाषा पूर्वस्य। ४. १. ३४। ३. नित्य सपत्न्यादिषु। ४. १. ३५। ४. अन्तर्वत्पतिवतोर्नुक्। ४. १. ३२। ५. उगितश्च। ४. १. ६। ...

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और पद्धति को विकल्प से लगता है। जैसे, गतिः, मतिः, बुद्धिः। परन्तु शक्ति या शक्ती, पद्धति या पद्धती।

११९. गुणवाची उकारान्त विशेषणों को विकल्प से ई स्त्रीप्रत्यय लगता है।[1] परन्तु खरु और जिन की उपधा में संयोग (conjunt consonant) हो उन्हें कुछ नहीं लगता।[2] जैसे, मृदुः या मृद्वी, साधुः या साध्वी, पटुः या पट्वी, लघुः या लघ्वी। परन्तु खरुः, पाण्डुः।

१२०. मनुष्यवाचक उकारान्त शब्दों को, जिनकी उपधा में य न हो, ऊ स्त्रीप्रत्यय लगता है।[3] जैसे, कुरुः—कुरूः, ब्रह्मबन्धूः। परन्तु अध्वर्युः (योपधा)।

(क) रज्जु, हनु, आदि शब्दों में ऊ स्त्रीप्रत्यय नहीं लगता।[4] जैसे रज्जुः, हनुः, कमण्डलुः।

(ख) तनु आदि शब्दों को विकल्प से ऊ लगता है। जैसे, तनुः या तनूः, चञ्चुः या चञ्चूः।

१२१. युवन को ति स्त्रीप्रत्यय लगता है और इससे पूर्व न का लोप हो जाता है[5]। जैसे युवतिः।

अभ्यास १३.

१. नीचे लिखे शब्दों के स्त्रीलिंग बनाओ :—

ब्राह्मण, कर्तृ, वत्स, मत्स्यः, नश्वरः, महाराज, सम्राज्, युवराज, श्वा, पितामहः, मानुषः, मनुष्यः, पौत्रः, अनुजः, सहचरः, कोकिलः, हरिणः, सुन्दर, मलिन, मृदु, लघु, कृष्ण, हरित, तरुण, यवनः, महान्, अश्वः, शूद्रः, नायकः, गाङ्गेयः, रजकः, कुमारः, गोपः, मातुलः, आचार्यः, क्षत्रियः, अन्तर्वत्, बुद्धिमत्, इच्छन्, कुर्वन्, शासत्, करिष्यत्, विद्वान्, शुश्रुवान्, पीवन्, उपाध्यायः, धीवन्, युवन्, रज्जु, पतिः।

२. नीचे लिखे शब्दों में अर्थ-भेद बताओ :—

पति और पत्नी। आचार्या और आचार्यानी। यवनी और यवनानी। उपाध्यायी, उपाध्यायानी और उपाध्याया। क्षत्रियी, क्षत्रियाणी और क्षत्रिया। नागी और नागा। शूद्री और शूद्रा। गोपी और गोपा।

३. नीचे लिखे शब्द-समूहों के लिए एक शब्द प्रयुक्त करो:—

---

१. वोतो गुणवचनात्। ४. १. ४४। २. खरुसंयोगोपधान्न। वा०।
३. ऊङुतः। ४. १. ६६। ४. अप्राणिजातेश्चरज्ज्वादीनामुपसंख्यानम्। वा०। ५. यूनस्तिः। ४. १. ७७।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुचरति या सा। एकः पतिः यस्याः सा। गर्भिणी नारी। परिणयेन पाणिः गृहीतः यस्याः सा। समानः पतिर्यस्याः सा। गंगाया अपत्यं स्त्री। उपाध्यायस्य स्त्री। गृहस्य पतिः या। यूनो जाया। आचार्यस्य स्त्री। ब्राह्मणस्य जाया। पञ्च पतयः यस्या सा। अस्ति पतिर्यस्याः सा। क्षत्रियवर्णे जाता स्त्री। स्वयंमध्यापयति या सा। लज्जा अस्या विद्यते सा। विदुषो जाया।

४. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करोः—

कुमारि इन्दुमती सखिं सुनन्दामाह। एकपतीनां नारीणां कीदृशं दिव्यं प्रीतिः विद्यते। नगरी चेयं बहुधीवरा। सर्वाः एता वीरपतयः। नाहं आचार्यानी परं आचार्या एव, तत् कथं ते पाठयामि। वत्स! कथं अजीं नयसे हरिणां, महिषां वा नय। गौरां नाहं कामये, विद्वांसं, विनीतं भार्यां प्रार्थये। नैषा इन्द्री इव रूपवान् नवा कामपत्नी इव भुवनमोहनम् अस्ति। तस्य पतिः अतिपीवरा। सा कुमारी अतिकिशोरा दृश्यते। क्षत्रियी कन्या शूद्रं नोद्वहेत। शूद्री कन्या क्षत्रियं न कामयत। लज्जावन्ती स्त्री सर्वैः प्रशस्यते। इयं स्त्री सुकुमारा परं सा तु स्थविरी। तस्य पुत्रपतिरस्य ग्रामस्य पत्नी अस्ति। इयं राजान्याः पाचिकी। सा गायिकी मधुस्वरी। सा तापसी अतिधार्मिका।

५. संस्कृत में अनुवाद करो :—

वह छोटी-सी कन्या सब को प्यारी थी। वह तरुण स्त्री बुद्धि में बड़ी चतुर है। रानी यह बात सुन कर बड़ी प्रसन्न हुई। उस लड़की की भाभी बीमार है। इस श्रेणि में ४० लड़कियाँ हैं। यह नौजवान स्त्री प्रातःकाल से यहाँ बैठी है। बुढ़िया सड़क पर अकेली खड़ी थी। कौशल्या अपनी सौतनों से प्रेम का बर्ताव करती थी। धोबिन कपड़े घाट पर ले जा रही है। यह शूद्र स्त्री अन्य शूद्रों की स्त्रियों से अधिक बुद्धिमान् है। संसार की ख्याति नाश होने वाली (नश्वर) है। यह नाइन इस घर की मालिका है। क्या आपकी नौकरानी खत्रानी है। क्या आपकी लड़कियों को मास्टरिन पढ़ाती है? इस गौ की बछिया बड़ी सुन्दर है। पंडितानी को पुस्तक दो। इस कुतिया के चार बच्चे हैं। आपकी बेटी के पास एक मोरनी है। यह बनियाइन बड़ी चतुराई से व्यापार करती है। कुम्हारिन घड़ा बनाती है। मछली पानी में रहती है। नचनी नाच करती है। हमारी मामी आज लाहौर जाएगी। आपकी पतोहू बड़ी शरमीली है। यह सुहागिन बड़ी बुद्धिमती है।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पञ्चमोऽध्यायः ।

धातु-प्रकरण 'Conjugation of Verbs'.

१२२. क्रियावाचक शब्दों को धातु कहते हैं। इन धातुओं पर प्रत्यय लगाने से जो रूप बनते हैं उन्हें आख्यात (verbs) कहते हैं। प्रत्यय दो प्रकार के हैं, (१) परस्मैपद और (२) आत्मनेपद। जैसे,

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
	एक०	द्वि०	बहु०	एक०	द्वि०	बहु०
प्रथमपुरुष	तिप्	तस्	झि	त	आताम्	झ
मध्यमपुरुष	सिप्	थस्	थ	थास्	आथाम्	ध्वम्
उत्तमपुरुष	मिप्	वस्	मस्	इट्	वहि	महिङ्

तिप् से महिङ् तक तिङ् प्रत्याहार बनता है। इन ही विभक्तियों से अन्य विभक्तियाँ भी बनती हैं। इस लिए आख्यात को तिङन्त भी कहते हैं। कुछ धातुओं को परस्मैपद, कुछ को आत्मनेपद और कुछ को दोनों[1] उभयपद प्रत्यय लगते हैं। उपसर्गों के योग में कुछ धातुओं का पद बदल भी जाता है।

(क) तिङ् प्रत्ययों से पूर्व धातु में विकार होने के हेतु, संस्कृत भाषा की समस्त धातुओं को दस गणों में विभक्त किया गया है :—१. भ्वादि-गण, २. अदादि, ३. जुहोत्यादि, ४. दिवादि, ५. स्वादि, ६. तुदादि, ७. रुधादि, ८. तनादि, ९. क्र्यादि और १०. चुरादि गण।

(ख) जो धातु आरंभ से स्वतः सिद्ध हैं उन्हें अव्युत्पन्न (primitive) और जो अन्य धातु और नामों पर प्रत्यय लगाने से बनती हैं उन्हें प्रत्ययान्त (derived) धातु कहते हैं। जैसे, भू, कृ। भावय, पण्डिताय।

(ग) संस्कृत में आख्यात के ६ काल (tenses) और ४ प्रकार (moods) हैं। इन्हें लकार कहते हैं। वे नीचे लिखे हैं:—कालः—(१) लट् वर्तमान 'Present', (२) लङ् अनद्यतन भूत 'Imperfect', (३)

---

१. जब क्रिया का फल कर्तृ-गामी हो तो आत्मनेपद और जब परगामी हो तो परस्मैपद प्रयुक्त होता है।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिट् परोक्षभूत 'Perfect', (४) **लुङ्** भूत 'Aorist', (५) **लुट्** अनद्यतनभविष्यत् 'First future', (६) **लृट्** भविष्यत् 'Second future', और प्रकार:—(१) **लोट्** आज्ञा 'Imperative', (२) **विधिलिङ्** विधि 'Potential', (३) **आशीर्लिङ्** आशीः 'Benedictive', **लृङ्** संकेत 'Conditional'. ।

(घ) प्रत्येक लकार में तीन **वचन** होते हैं:—(१) **एकवचन**, (२) **द्विवचन** और (३) **बहुवचन** ।

पुरुष (persons) भी तीन ही होते हैं:—(१) **उत्तमपुरुष**, (२) **मध्यमपुरुष** और **प्रथमपुरुष** । (१) जब क्रिया का **अस्मद्** (पुरुषवाचक सर्वनाम) के साथ मेल होता है तो **उत्तमपुरुष** (first person), (२) जब **युष्मद्** से समता हो तो **मध्यमपुरुष** (second person) और (३) जब अस्मद् और युष्मद् से भिन्न किसी भी शब्द से समता हो तो **प्रथमपुरुष** (third person) होता है ।

१२३. जिस क्रिया का व्यापार और फल कर्ता ही पर पड़े और कर्म की विवक्षा न हो उसे **अकर्मक** (Intransitive) क्रिया कहते हैं । जैसे, अश्वो धावति । जिस क्रिया के व्यापार का फल कर्ता को छोड़ कर्म पर पड़े उसे **सकर्मक** (Transitive) क्रिया कहते हैं । जैसे, शिष्यो गुरुं पृच्छति ।

(क) क्रियाओं के तीन **वाच्य** (voices) होते हैं:—(१) **कर्तृवाच्य**, (२) **कर्मवाच्य** और (३) **भाववाच्य** ।

(१) **कर्तृवाच्य** (Active voice) में वाक्य का उद्देश्य क्रिया का **कर्ता** होता है, अर्थात् **कर्त्ता प्रथमान्त** और **कर्म द्वितीयान्त** होता है और क्रिया की समता कर्ता से होती है । यह वाच्य अकर्मक और सकर्मक दोनों क्रियाओं में होता है । जैसे, स गच्छति । त्वं पुस्तकं पठसि । वयं पुस्तकं पठामः ।

(२) **कर्मवाच्य** (Passive voice) में वाक्य का उद्देश्य क्रिया का **कर्म** होता है, अर्थात् **कर्ता तृतीयान्त** और **कर्म प्रथमान्त** होता है और क्रिया की समता प्रथमान्त कर्म से होती है । यह वाच्य **सकर्मक** धातुओं में होता है और सब धातुओं को केवल **आत्मनेपद** प्रत्यय लगते हैं । जैसे, शिष्येण गुरुः पृच्छयते । तेन त्वं पृच्छयसे । तेन पुस्तकं पठ्यते ।

(३) **भाववाच्य** (Impersonal voice) में वाक्य का उद्देश्य क्रिया का **भाव** होता है, अर्थात् **कर्ता तृतीयान्त** होता है, कर्म का अभाव होता है और क्रिया **प्रथम** पुरुष में **एकवचनान्त** होती है । यह वाच्य **अकर्मक** क्रियाओं

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में होता है और सब धातुओं को केवल आत्मनेपद प्रत्यय लगते हैं। जैसे, तेन स्थीयते। युवाभ्यां स्थीयते। अस्माभिः स्थीयते।

१२४. लट्, लङ्, लोट्, और विधिलिङ् इन चार लकारों में तिङ् प्रत्ययों से पूर्व धातुओं पर कुछ विकरण (conjugational signs) लगते हैं। इन विशेष विकारों के कारण इनकी सार्वधातुक (conjugational tenses or moods) संज्ञा है।

शेष लकारों में प्रत्ययों से पूर्व कोई विकरण नहीं लगता, अर्थात् प्रत्यय सीधे धातुओं पर लगते हैं। अतः इनकी आर्धधातुक (Non-conjugational or special tenses or moods) संज्ञा है।

(क) सार्वधातुकों में भी धातुओं के दस गणों के दो विभाग हैं, (१) अविकृतांग धातु और (२) विकृतांग धातु।

(१) अविकृतांग (unchangeable base) धातु में (१) भ्वादि, (४) दिवादि, (६) तुदादि और (१०) चुरादि. इन चार गणों के धातु शामिल हैं। इनमें अंग सदा अकारान्त रहता है और इसमें कोई विकार नहीं होता।

(२) विकृतांग (changeable base) धातुओं में शेष अदादि, जुहोत्यादि, स्वादि, रुधादि, तनादि और क्र्यादि शामिल हैं। यहाँ अंग अकारान्त नहीं होता प्रत्युत बदलता रहता है।

कर्तृ-वाच्य।

१. सार्वधातुक गण।

(लट्, लङ्, लोट्, विधिलिङ्)

(क) अविकृतांग-धातु।

(भ्वादि, दिवादि, तुदादि, चुरादि)

१२५. ऊपर लिखे तिङ् प्रत्याहार से समस्त प्रत्यय बने हैं। सार्वधातुकों के अविकृतांग धातुओं पर नीचे लिखे प्रत्यय लगाने से तिङन्त बनते हैंः—

लट् (वर्तमान्) 'Present'

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
	एक०	द्वि०	बहु०	एक०	द्वि०	बहु०
प्रथमपु०	ति	तस्	अन्ति	ते	इते	अन्ते

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्यमपु०	सि	थस्	थ	से	इथे	ध्वे
उत्तमपु०	मि	वस्	मस्	ई	वहे	महे

लङ् (भूत) 'Imperfect'

प्र०	त्	ताम्	अन्	त	इताम्	अन्त
म०	स्	तम्	त	थास्	इथाम्	ध्वम्
उ०	अम्	व	म	इ	वहि	महि

लोट् (प्रेरणा) 'Imperative'.

प्र०	तु	ताम्	अन्तु	ताम्	इताम्	अन्ताम्
म०	—	तम्	त	स्व	इथाम्	ध्वम्
उ०	आनि	आव	आम	ऐ	आवहै	आमहै

विधिलिङ् (आज्ञा) 'Potential'

प्र०	ईत	ईताम्	ईयुः	ईत	ईयाताम्	ईरन्
म०	ईः	ईतम्	ईत	ईथाः	ईयाथाम्	ईध्वम्
उ०	ईयम्	ईव	ईम	ईय	ईवहि	ईमहि

अङ्ग-विधान 'Formation of Base'.

१२६. (१) भ्वादि गण के धातुओं को विभक्ति-प्रत्यय से पूर्व अ विकरण लगता है।[1] इस अ से पूर्व धातु के अन्त्य अच् (ह्रस्व और दीर्घ) तथा ह्रस्व उपधा स्वर को गुण हो जाता है। जैसे, भू + अ = भो + अ = भव् + अ = भव, भवति। जि + अ = जे + अ = जय, जयति। बुध् + अ = बोध् + अ = बोध, बोधति। मुद्+अ = मोद, मोदते। वृध् + अ = वर्ध, वर्धते।

(२) दिवादि गण के धातुओं को य विकरण लगता है।[2] धातु के स्वर में कोई तबदीली नहीं होती। जैसे, कुप + य = कुप्य, कुप्यति। दिव् + य = दीव्य, दीव्यति।

(३) तुदादि गण के धातुओं को अ विकरण लगता है।[3] इस अ से पूर्व धातु के उपधा में कोई विकार नहीं होता, परन्तु अन्त्य इ, ई को इय्; उ, ऊ को उव्; ऋ को रिय्; और ॠ को इर् हो जाता है। जैसे, तुद् + अ = तुद, तुदति। रि 'go' + अ = रिय् + अ = रिय, रियति। धु + अ = धुव् + अ = धुव, धुवति। मृ + अ = म्रिय, म्रियते। गॄ + अ = गिर् + अ = गिर, गिरति।

---

१. कर्तरि शप्। ३. १. ६८। २. दिवादिभ्यः श्यन्। ३. १. ६९।
३. तुदादिभ्यः शः। ३. १. ७७।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४) चुरादि गण के धातुओं को अय विकरण लगता है।[1] अय से पूर्व धातु के अन्त्य स्वर को वृद्धि और उपधा (अ से भिन्न) स्वर को गुण हो जाता है। जैसे, चुर् + अय = चोर् + अय = चोरय, चोरयति। तड् + अय = ताड् + अय = ताडयति। भू (णिजन्त) + अय = भौ + अय = भाव् + अय = भावय, भावयति।

१२७. (क) प्रत्यय के व और म से पूर्व अ को आ हो जाता है। जैसे, भव + वः = भवावः। भव + मः = भवामः।

(ख) प्रत्यय के अ से पूर्व अ का लोप हो जाता है। जैसे, भव + अन्ति = भवन्ति।

१२८. लङ् (Imperfect) में धातु से पूर्व अ का आगम होता है। परन्तु जिन धातुओं के आदि में स्वर हो उन्हें आ लगता है और वृद्धि आदेश होता है। जैसे, अभवत्। ईक्ष्—ऐक्षत। उक्ष्—औक्षत्। ऋच्छ—आर्च्छत्।

(क) यदि धातु से पूर्व उपसर्ग का प्रयोग हो तो धातु को पहले अ का आगम होता है और फिर उपसर्ग लगता है। जैसे, प्र–भू—प्राभवत्। वि–जि—व्यजयत।

१२९.

धातु-रूपावली

भ्वादि-गण

भू 'be, होना', परस्मैपद

लट् 'Present'.

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	भवति	भवतः	भवन्ति
म०	भवसि	भवथः	भवथ
उ०	भवामि	भवावः	भवामः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
म०	अभवः	अभवतम्	अभवत
उ०	अभवम्	अभवाव	अभवाम

लोट् 'Imperative.'

प्र०	भवतु	भवताम्	भवन्तु
म०	भव	भवतम्	भवत

१. चुरादिभ्यः णिच्। ३. १. २५।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उ०	भवानि	भवाव	भवाम

विधिलिङ् 'Potential.

प्र०	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
म०	भवेः	भवेतम्	भवेत
उ०	भवेयम्	भवेव	भवेम

जि 'conquer जीतना' परस्मैपद।

लट् 'Present'.

प्र०	जयति	जयतः	जयन्ति
म०	जयसि	जयथः	जयथ
उ०	जयामि	जयावः	जयामः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अजयत्	अजयताम्	अजयन्
म०	अजयः	अजयतम्	अजयत
उ०	अजयम्	अजयाव	अजयाम

लोट् Imperative'.

प्र०	जयतु	जयताम्	जयन्तु
म०	जय	जयतम्	जयत
उ०	जयानि	जयाव	जयाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	जयेत्	जयेताम्	जयेयुः
म०	जयेः	जयेतम्	जयेत
उ०	जयेयम्	जयेव	जयेम

स्मृ 'remember याद करना', परस्मैपद।

लट् 'Present'.

प्र०	स्मरति	स्मरतः	स्मरन्ति
म०	स्मरसि	स्मरथः	स्मरथ
उ०	स्मरामि	स्मरावः	स्मरामः

लङ् 'Imperfect.'

प्र०	अस्मरत्	अस्मरताम्	अस्मरन्
म०	अस्मरः	अस्मरतम्	अस्मरत
उ०	अस्मरम्	अस्मराव	अस्मराम

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोट् 'Imperative'.

प्र०	स्मरतु	स्मरताम्	स्मरन्तु
म०	स्मर	स्मरतम्	स्मरत
उ०	स्मराणि	स्मराव	स्मराम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	स्मरेत्	स्मरेताम्	स्मरेयुः
म०	स्मरेः	स्मरेतम्	स्मरेत
उ०	स्मरेयम्	स्मरेव	स्मरेम

ईक्ष् 'see देखना', आत्मनेपद ।

लट् 'Present'.

प्र०	ईक्षते	ईक्षेते	ईक्षन्ते
म०	ईक्षसे	ईक्षेथे	ईक्षध्वे
उ०	ईक्षे	ईक्षावहे	ईक्षामहे

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	ऐक्षत	ऐक्षेताम्	ऐक्षन्त
म०	ऐक्षथाः	ऐक्षेथाम्	ऐक्षध्वम्
उ०	ऐक्षे	ऐक्षावहि	ऐक्षामहि

लोट् 'Imperative'.

प्र०	ईक्षताम्	ईक्षेताम्	ईक्षन्ताम्
म०	ईक्षस्व	ईक्षेथाम्	ईक्षध्वम्
उ०	ईक्षै	ईक्षावहै	ईक्षामहै

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	ईक्षेत	ईक्षेयाताम्	ईक्षेरन्
म०	ईक्षेथाः	ईक्षेयाथाम्	ईक्षेध्वम्
उ०	ईक्षेय	ईक्षेवहि	ईक्षेमहि

बुध् 'know जानना,' परस्मैपद ।

लट् 'Present'.

प्र०	बोधति	बोधतः	बोधन्ति
म०	बोधसि	बोधथः	बोधथ
उ०	बोधामि	बोधावः	बोधामः

CC-0. In Public Domain. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अबोधत्	अबोधताम्	अबोधन्
म०	अबोधः	अबोधतम्	अबोधत
उ०	अबोधम्	अबोधाव	अबोधाम

लोट् 'Imperative'.

प्र०	बोधतु	बोधताम्	बोधन्तु
म०	बोध	बोधतम्	बोधत
उ०	बोधानि	बोधाव	बोधाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	बोधेत्	बोधेताम्	बोधेयुः
म०	बोधेः	बोधेतम्	बोधेत
उ०	बोधेयम्	बोधेव	बोधेम

वृत् 'exist, be होना', आत्मने०

लट् 'Present'.

प्र०	वर्तते	वर्तेते	वर्तन्ते
म०	वर्तसे	वर्तेथे	वर्तध्वे
उ०	वर्ते	वर्तावहे	वर्तामहे

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अवर्तत	अवर्तेताम्	अवर्तन्त
म०	अवर्तथाः	अवर्तेथाम्	अवर्तध्वम्
उ०	अवर्ते	अवर्तावहि	अवर्तामहि

लोट् 'Imperative'.

प्र०	वर्तताम्	वर्तेताम्	वर्तन्ताम्
म०	वर्तस्व	वर्तेथाम्	वर्तध्वम्
उ०	वर्तै	वर्तावहै	वर्तामहै

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	वर्तेत	वर्तेयाताम्	वर्तेरन्
म०	वर्तेथाः	वर्तेयाथाम्	वर्तेध्वम्
उ०	वर्तेय	वर्तेवहि	वर्तेमहि

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुद् 'rejoice खुश होना', आत्मने० ।

लट् 'Present'.

प्र०	मोदते	मोदेते	मोदन्ते
म०	मोदसे	मोदेथे	मोदध्वे
उ०	मोदे	मोदावहे	मोदामहे

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अमोदत	अमोदेताम्	अमोदन्त
म०	अमोदथाः	अमोदेथाम्	अमोदध्वम्
उ०	अमोदे	अमोदावहि	अमोदामहि

लोट् 'Imperative'.

प्र०	मोदताम्	मोदेताम्	मोदन्ताम्
म०	मोदस्व	मोदेथाम्	मोदध्वम्
उ०	मोदै	मोदावहै	मोदामहै

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	मोदेत	मोदेयाताम्	मोदेरन्
म०	मोदेथाः	मोदेयाथाम्	मोदेध्वम्
उ०	मोदेय	मोदेवहि	मोदेमहि

दिवादि-गण ।

दिव्[1] 'shine, play चमकना, खेलना' परस्मैपदी ।

लट् 'Present'.

प्र०	दीव्यति	दीव्यतः	दीव्यन्ति
म०	दीव्यसि	दीव्यथः	दीव्यथ
उ०	दीव्यामि	दीव्यावः	दीव्यामः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अदीव्यत्	अदीव्यताम्	अदीव्यन्
म०	अदीव्यः	अदीव्यतम्	अदीव्यत
उ०	अदीव्यम्	अदीव्याव	अदीव्याम

१. रकारान्त और वकारान्त धातुओं की उपधा को व्यंजन से पूर्व दीर्घ हो जाता है । हलि च । ८. २. ७७ ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोट् 'Imperative'.

प्र०	दीव्यतु	दीव्यताम्	दीव्यन्तु
म०	दीव्य	दीव्यतम्	दीव्यत
उ०	दीव्यानि	दीव्याव	दीव्याम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	दीव्येत्	दीव्येताम्	दीव्येयुः
म०	दीव्येः	दीव्येतम्	दीव्येत
उ०	दीव्येयम्	दीव्येव	दीव्येम

नश् 'Perish नष्ट होना', परस्मै०

लट् 'Present'.

प्र०	नश्यति	नश्यतः	नश्यन्ति
म०	नश्यसि	नश्यथः	नश्यथ
उ०	नश्यामि	नश्यावः	नश्यामः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अनश्यत्	अनश्यताम्	अनश्यन्
म०	अनश्यः	अनश्यतम्	अनश्यत
उ०	अनश्यम्	अनश्याव	अनश्याम

लोट् Imperative'.

प्र०	नश्यतु	नश्यताम्	नश्यन्तु
म०	नश्य	नश्यतम्	नश्यत
उ०	नश्यानि	नश्याव	नश्याम

विधिलिङ् 'Potential'

प्र०	नश्येत्	नश्येताम्	नश्येयुः
म०	नश्येः	नश्येतम्	नश्येत
उ०	नश्येयम्	नश्येव	नश्येम

विद् 'exist, होना' आत्मने०

लट् 'Present'.

प्र०	विद्यते	विद्येते	विद्यन्ते
म०	विद्यसे	विद्येथे	विद्यध्वे
उ०	विद्ये	विद्यावहे	विद्यामहे

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अविद्यत	अविद्येताम्	अविद्यन्त
म०	अविद्यथाः	अविद्येथाम्	अविद्यध्वम्
उ०	अविद्ये	अविद्यावहि	अविद्यामहि

लोट् 'Imperative'.

प्र०	विद्यताम्	विद्येताम्	विद्यन्ताम्
म०	विद्यस्व	विद्येथाम्	विद्यध्वम्
उ०	विद्यै	विद्यावहै	विद्यामहै

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	विद्येत	विद्येयाताम्	विद्येरन्
म०	विद्येथाः	विद्येयाथाम्	विद्येध्वम्
उ०	विद्येय	विद्येवहि	विद्येमहि

जॄ[1] 'grow old, बूढ़ा होना, परस्मै०

प्र०	जीर्यति	जीर्यतः	जीर्यन्ति
म०	जीर्यसि	जीर्यथः	जीर्यथ
उ०	जीर्यामि	जीर्यावः	जीर्यामः etc.

अजीर्यत् (impf.). जीर्यतु (imp.), जीर्येत् (pot.)

तुदादि-गण ।

तुद् 'pain, पीड़ा देना' उभय०

परस्मै० लट् 'Present'.

प्र०	तुदति	तुदतः	तुदन्ति
म०	तुदसि	तुदथः	तुदथ
उ०	तुदामि	तुदावः	तुदामः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अतुदत्	अतुदताम्	अतुदन्
म०	अतुदः	अतुदतम्	अतुदत
उ०	अतुदम्	अतुदाव	अतुदाम

---

१. यदि धातु के अन्त या उपधा में ॠ या ॠ हो तो इसे ईर् हो जाता है, गुण और वृद्धि के प्रतिषेध में। ॠत इद्धातोः । ७. १. १०० ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोट् 'Imperative'.

प्र०	तुदतु	तुदताम्	तुदन्तु
म०	तुद	तुदतम्	तुदत
उ०	तुदानि	तुदाव	तुदाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	तुदेत्	तुदेताम्	तुदेयुः
म०	तुदेः	तुदेतम्	तुदेत
उ०	तुदेयम्	तुदेव	तुदेम

आत्मने० लट् 'Presetn'.

प्र०	तुदते	तुदेते	तुदन्ते
म०	तुदसे	तुदेथे	तुदध्वे
उ०	तुदे	तुदावहे	तुदामहे

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अतुदत	अतुदेताम्	अतुदन्त
म०	अतुदथाः	अतुदेथाम्	अतुदध्वम्
उ०	अतुदे	अतुदावहि	अतुदामहि

लोट् 'Imperative'.

प्र०	तुदताम्	तुदेताम्	तुदन्ताम्
म०	तुदस्व	तुदेथाम्	तुदध्वम्
उ०	तुदै	तुदावहै	तुदामहै

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	तुदेत	तुदेयाताम्	तुदेरन्
म०	तुदेथाः	तुदेयाथाम्	तुदेध्वम्
उ०	तुदेय	तुदेवहि	तुदेमहि

स्पृश् 'touch छूना' परस्मै०

लट् 'Present'.

प्र०	स्पृशति	स्पृशतः	स्पृशन्ति
म०	स्पृशसि	स्पृशथः	स्पृशथ
उ०	स्पृशामि	स्पृशावः	स्पृशामः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अस्पृशत्	अस्पृशताम्	अस्पृशन्

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म०	अस्पृशः	अस्पृशतम्	अस्पृशत
उ०	अस्पृशम्	अस्पृशाव	अस्पृशाम

लोट् 'Imperative'.

प्र०	स्पृशतु	स्पृशताम्	स्पृशन्तु
म०	स्पृश	स्पृशतम्	स्पृशत
उ०	स्पृशानि	स्पृशाव	स्पृशाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	स्पृशेत्	स्पृशेताम्	स्पृशेयुः
म०	स्पृशेः	स्पृशेतम्	स्पृशेत
उ०	स्पृशेयम्	स्पृशेव	स्पृशेम

मृ 'die मरना' आत्मने०

लट् 'Present'.

प्र०	म्रियते	म्रियेते	म्रियन्ते
म०	म्रियसे	म्रियेथे	म्रियध्वे
उ०	म्रिये	म्रियावहे	म्रियामहे

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अम्रियत	अम्रियेताम्	अम्रियन्त
म०	अम्रियथाः	अम्रियेथाम्	अम्रियध्वम्
उ०	अम्रिये	अम्रियावहि	अम्रियामहि

लोट् 'Imperative'.

प्र०	म्रियताम्	म्रियेताम्	म्रियन्ताम्
म०	म्रियस्व	म्रियेथाम्	म्रियध्वम्
उ०	म्रियै	म्रियावहै	म्रियामहै

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	म्रियेत	म्रियेयाताम्	म्रियेरन्
म०	म्रियेथाः	म्रियेयाथाम्	म्रियेध्वम्
उ०	म्रियेय	म्रियेवहि	म्रियेमहि

चुरादि-गण ।

चुर् 'steal चुराना' उभय०

परस्मै० लट् 'Present'.

प्र०	चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म०	चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ
उ०	चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्
म०	अचोरयः	अचोरयतम्	अचोरयत
उ०	अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम

लोट् 'Imperative'.

प्र०	चोरयतु	चोरयताम्	चोरयन्तु
म०	चोरय	चोरयतम्	चोरयत
उ०	चोरयाणि	चोरयाव	चोरयाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयुः
म०	चोरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत
उ०	चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम

आत्मने० लट् 'Present'.

प्र०	चोरयते	चोरयेते	चोरयन्ते
म०	चोरयसे	चोरयेथे	चोरयध्वे
उ०	चोरये	चोरयावहे	चोरयामहे

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अचोरयत	अचोरयेताम्	अचोरयन्त
म०	अचोरयथाः	अचोरयेथाम्	अचोरयध्वम्
उ०	अचोरये	अचोरयावहि	अचोरयामहि

लोट् 'Imperative'.

प्र०	चोरयताम्	चोरयेताम्	चोरयन्ताम्
म०	चोरयस्व	चोरयेथाम्	चोरयध्वम्
उ०	चोरयै	चोरयावहै	चोरयामहै

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	चोरयेत	चोरयेयाताम्	चोरयेरन्
म०	चोरयेथाः	चोरयेयाथाम्	चोरयेध्वम्
उ०	चोरयेय	चोरयेवहि	चोरयेमहि

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथ् 'tell, say कहना' उभय०

लट् 'Present'.

प्र०	कथयति	कथयतः	कथयन्ति
म०	कथयसि	कथयथः	कथयथ
उ०	कथयामि	कथयावः	कथयामः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अकथयत्	अकथयताम्	अकथयन्
म०	अकथयः	अकथयतम्	अकथयत
उ०	अकथयम्	अकथयाव	अकथयाम

लोट् 'Imperative'.

प्र०	कथयतु	कथयताम्	कथयन्तु
म०	कथय	कथयतम्	कथयत
उ०	कथयानि	कथयाव	कथयाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	कथयेत्	कथयेताम्	कथयेयुः
म०	कथयेः	कथयेतम्	कथयेत
उ०	कथयेयम्	कथयेव	कथयेम

आत्मने० कथयते (Pr.), अकथयत (Impf.), कथयताम् (Imp.), कथयेत (Pot.), etc.

अन्य प्रसिद्ध धातु ।

भ्वादि-गण ।

परस्मैपद प्रथम पुरुष एकवचन

धातु	अर्थ	लट्	लङ्	लोट्	वि० लिङ्
अर्च्	'worship, पूजना'	अर्चति	आर्चत्	अर्चतु	अर्चेत्
अर्ह्	'deserve, योग्य होना'	अर्हति	आर्हत्	अर्हतु	अर्हेत्
क्रीड्	'play, खेलना'	क्रीडति	अक्रीडत्	क्रीडतु	क्रीडेत्
खाद्	'eat, खाना'	खादति	अखादत्	खादतु	खादेत्
गै	'sing, गाना'	गायति	अगायत्	गायतु	गायेत्
चर्	'move, चलना'	चरति	अचरत्	चरतु	चरेत्

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीव् 'live, जीना'	जीवति	अजीवत्	जीवतु	जीवेत्
तृ 'cross, तरना'	तरति	अतरत्	तरतु	तरेत्
त्यज् 'leave, छोड़ना'	त्यजति	अत्यजत्	त्यजतु	त्यजेत्
दह् 'burn, जलाना'	दहति	अदहत्	दहतु	दहेत्
नम् 'bend, झुकना	नमति	अनमत्	नमतु	नमेत्
पठ् 'read, पढ़ना'	पठति	अपठत्	पठतु	पठेत्
पत् 'fall,fly, गिरना, उड़ना'	पतति	अपतत्	पततु	पतेत्
पच् 'cook, पकाना'	पचति	अपचत्	पचतु	पचेत्
यज् 'worship, यज्ञ या पूजा करना'	यजति	अयजत्	यजतु	यजेत्
रक्ष् 'protect, रक्षा करना'	रक्षति	अरक्षत्	रक्षतु	रक्षेत्
रुह् 'grow, उगना'	रोहति	अरोहत्	रोहतु	रोहेत्
वद् 'speak, बोलना'	वदति	अवदत्	वदतु	वदेत्
वस् 'dwell, बसना'	वसति	अवसत्	वसतु	वसेत्
वह् 'carry, ले जाना'	वहति	अवहत्	वहतु	वहेत्
व्रज् 'go, जाना'	व्रजति	अव्रजत्	व्रजतु	व्रजेत्
हस् 'laugh, हंसना'	हसति	अहसत्	हसतु	हसेत्

आत्मनेपद

क्षुभ् 'be agitated, संचलित होना'	क्षोभते	अक्षोभत	क्षोभताम्	क्षोभेत
गाह् 'plunge, गोता लगाना'	गाहते	अगाहत	गाहताम्	गाहेत
बाध् 'oppress, दुख देना'	बाधते	अबाधत	बाधताम्	बाधेत
भाष् 'speak, बोलना'	भाषते	अभाषत	भाषताम्	भाषेत
यत् 'try, यत्न करना'	यतते	अयतत	यतताम्	यतेत
रुच् 'like, पसंद करना'	रोचते	अरोचत	रोचताम्	रोचेत
लभ् 'obtain, पाना'	लभते	अलभत	लभताम्	लभेत
वृध् 'increase' बढ़ना	वर्धते	अवर्धत	वर्धताम्	वर्धेत
शुभ् 'shine, चमकना'	शोभते	अशोभत	शोभताम्	शोभेत
श्लाघ् 'praise, बड़ाई करना'	श्लाघते	अश्लाघत	श्लाघताम्	श्लाघेत
सेव् 'serve, सेवा करना'	सेवते	असेवत	सेवताम्	सेवेत
स्मि 'smile, हँसना'	स्मयते	अस्मयत	स्मयताम्	स्मयेत
सह् 'bear, सहना'	सहते	असहत	सहताम्	सहेत

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उभयपद

तप् 'heat, तपाना, जलाना'	तपति-ते	अतपत्-त	तपतु-तां	तपेत्-त
धृ 'hold, धरना'	धरति-ते	अधरत्-त	धरतु-तां	धरेत्-त
नी 'lead, carry, ले जाना'	नयति-ते	अनयत्-त	नयतु-तां	नयेत्-त
भज् 'serve, सेवा करना'	भजति-ते	अभजत्-त	भजतु-तां	भजेत्-त
याच् 'beg, मांगना'	याचति-ते	अयाचत्-त	याचतु-तां	याचेत्-त
राज् 'shine, चमकना'	राजति-ते	अराजत्-त	राजतु-तां	राजेत्-त
शप् 'curse, शाप देना'	शपति-ते	अशपत्-त	शपतु-तां	शपेत्-त
श्रि 'go, depend, जाना आश्रित होना'	श्रयति-ते	अश्रयत्-त	श्रयतु-तां	श्रयेत्-त
हृ 'take, हरना, लेना'	हरति-ते	अहरत्-त	हरतु-तां	हरेत्-त

दिवादि-गण ।

परस्मैपद

अस् 'throw' फैंकना'	अस्यति	आस्यत्	अस्यतु	अस्येत्
क्रुध् 'be angry, गुस्सा होना'	क्रुध्यति	अक्रुध्यत्	क्रुध्यतु	क्रुध्येत्
कुप् 'be angry, गुस्सा होना'	कुप्यति	अकुप्यत्	कुप्यतु	कुप्येत्
क्षिप 'throw, फैंकना'	क्षिप्यति	अक्षिप्यत्	क्षिप्यतु	क्षिप्येत्
तुष् 'be pleased, खुश होना'	तुष्यति	अतुष्यत्	तुष्यतु	तुष्येत्
तृप् 'be satisfied, तृप्त होना'	तृप्यति	अतृप्यत	तृप्यतु	तृप्येत्
द्रुह् 'hate, वैर करना'	द्रुह्यति	अद्रुह्यत्	द्रुह्यतु	द्रुह्येत्
नृत् 'dance, नाचना'	नृत्यति	अनृत्यत्	नृत्यतु	नृत्येत्
पुश् 'nourish, पालना'	पुष्यति	अपुष्यत्	पुष्यतु	पुष्येत्
मुह 'be bewildered, हैरान होना'	मुह्यति,	अमुह्यत्	मुह्यतु	मुह्येत्
शुष् 'dry, सूखना'	शुष्यति,	अशुष्यत्	शुष्यतु	शुष्येत्
सिध् 'succeed, सफल होना'	सिध्यति,	असिध्यत्	सिध्यतु	सिध्येत्
सिव् 'sew, सीना'	सीव्यति	असीव्यत्	सीव्यतु	सीव्येत्

आत्मनेपद

क्लिश् 'suffer, दुख पाना,	क्लिश्यते	अक्लिश्यत	क्लिश्यताम्	क्लिश्येत
पद् 'go, जाना'	पद्यते	अपद्यत	पद्यताम्	पद्येत
मन 'think, सोचना'	मन्यते	अमन्यत	मन्यतां	मन्येत
युध् 'fight, लड़ना,	युध्यते	अयुध्यत	युध्यताम्	युध्येत

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उभयपद

क्षुभ् 'be agitated, बेचैन होना'	क्षुभ्यति-ते	अक्षुभ्यत्-त	क्षुभ्यतु-तां	क्षुभ्येत्-त
मृष् 'forgive, क्षमा करना'	मृष्यति-ते	अमृष्यत्-त	मृष्यतु-तां	मृष्येत्-त

तुदादि-गण।

कृ प० 'scatter, बखेरना'	किरति	अकिरत्	किरतु	किरेत्
क्षिप् उ० 'throw, फेंकना'	क्षिपति ते	अक्षिपत्-त	क्षिपतु-तां	क्षिपेत्-त
मिल् उ० 'be united, मिलना'	मिलति-ते	अमिलत्-त	मिलतु-तां	मिलेत्-त
लिख् प० 'write, लिखना'	लिखति	अलिखत्	लिखतु	लिखेत्
लज् आ० 'be ashamed, लजाना'	लजते	अलजत	लजताम्	लजेत
विश् प० 'enter, दाखिल होना'	विशति	अविशत्	विशतु	विशेत्
सृज् प० 'create, emit, बाहर निकालना, बनाना'	सृजति	असृजत्	सृजतु	सृजेत्

चुरादि-गण।

अर्थ् आ० 'ask, मांगना'	आर्थयते	अर्थयत	अर्थयताम्	अर्थयेत
कृप् 'pity, दया करना'	कृपयति-ते	अकृपयत्	कृपयतु	कृपयेत्
क्षल् 'wash, धोना'	क्षालयति-ते	अक्षालयत्	क्षालयतु	क्षालयेत्
गण् 'count, गिनना'	गणयति-ते	अगणयत्	गणयतु	गणयेत्
तड् 'punish, ताड़ना	ताड़यति-ते	अताडयत्	ताडयतु	ताडयेत्
तुल् 'weigh, तोलना'	तोलयति-ते	अतोलयत्	तोलयतु	तोलयेत्
दण्ड् 'punish, सज़ा देना'	दण्डयति ते	अदण्डयत्	दण्डयतु	दण्डयेत्
ध्वन् 'sound, ध्वनि करना'	ध्वनयति-ते	अध्वनयत्	ध्वनयतु	ध्वनयेत्
चिन्त् 'think, सोचना'	चिन्तयति-ते	अचिन्तयत्	चिन्तयतुं	चिन्तयेत्
पूज् 'worship, पूजना'	पूजयति-ते	अपूजयत्	पूजयतु	पूजयेत्
भक्ष् 'eat, खाना'	भक्षयति-ते	अभक्षयत्	भक्षयतु	भक्षयेत्
मिश्र् 'mix, मिलाना'	मिश्रयति-ते	अमिश्रयत्	मिश्रयतु	मिश्रयेत्
मृग् search, ढूँडना'.a.	मृगयते	अमृगयत	मृगयताम्	मृगयेत्
रच् 'compose, रचना'	रचयति-ते	अरचयत्	रचयतु	रचयेत्
रस् 'taste, स्वाद लेना	रसयति-ते	अरसयत्	रसयतु	रसयेत्

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रह् 'leave, छोड़ना,	रहयति-ते	अरहयत्	रहयतु	रहयेत्
वर् 'choose, वरना,	वरयति-ते	अवरयत्	वरयतु	वरयेत्
व्यय् 'spend, खर्च करना'	व्ययर्यात-ते	अव्यययत्	व्यययतु	व्यययेत्
सूच् 'inform, खबर देना'	सूचयति-ते	असूचयत्	सूचयतु	सूचयेत्
स्तन् 'thunder, गर्जना'	स्तनयति-ते	अस्तनयत्	स्तनयतु	स्तनयेत्
स्पृह 'desire, चाहना'	स्पृहयति-ते	अस्पृहयत्	स्पृहयतु	स्पृहयेत्

अभ्यास १५

संस्कृत में अनुवाद करो :—

(क) भ्वादिगण—भले बालक सारा दिन हँसते नहीं प्रत्युत अपना पाठ भी पढ़ते हैं। मनुष्य सदा सच बोले और अपने गुरुओं को नमस्कार करे (नम्)। पक्षी वृक्षों पर रहते हैं और आकाश में उड़ते हैं। प्रत्येक गृहस्थी धन को पाए और बढ़ाए। सूरज चमकता है और ज़मीन को तपाता है। क्या आग ने जंगल को जला नहीं दिया। दुर्वासा ने शकुन्तला को शाप दिया और वह गुस्से में भरा हुआ आश्रम को छोड़ गया। उस लड़की ने अपनी सखी का पत्र पढ़ा। मूर्ख को देखकर सब हँस पड़े। सिपाहियों ने भात पर गुजारा किया और किले की रक्षा की। ब्रह्मचारी कष्ट को सहन करे और गुरु के समीप रहे। अपने माता पिता की सेवा, मित्रों की प्रशंसा और अनाथों की रक्षा करो। संसार में यश पाने की कोशिश करो। बरसात में घास उगती है। टोकरे में से उसने कुछ फल पाए और वह उन्हें घर ले गया। छोटों को दुख मत दो। आकाश में तारे चमकते हैं। उसने स्कूल छोड़ दिया। अन्न से प्राणी जीते हैं। झूठ मत बोलो। नाव से नदी को पार करो।

(ख) दिवादि—बादल को देखने पर मोर नाचता है। मेरे पास एक घोड़ा है (विद्)। जब सूरज चमकता है तो अन्धेरा नष्ट हो जाता है। योधा लड़ाई में लड़ते हैं और अपने शत्रुओं पर तीर चलाते हैं। कौरव पाण्डवों से द्रोह करते थे। आफ़त में मत घबराओ। वे सब हम से खुश थे। अपने मित्रों को पाओ (पद्)। बच्चों पर गुस्सा मत करो। अब तो समुद्र का जल क्षुब्ध हो चला है। प्रत्येक मनुष्य शनैः शनैः बूढ़ा होता है। अब आप प्रसन्न हों और मेरे शत्रुओं से लड़ें। माताएँ अपने बच्चों को प्यार से पालें। गरमी में तालाबों का पानी सूख जाता है। मेहनत से ही मनुष्य के काम सिद्ध

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होते हैं। मैंने उस देश में बड़ा दुख पाया। क्या आप इसे सच मानते हैं। दरज़ी (सूचिक) कपड़े सीता है। भगवन्! मेरे पापों को क्षमा करो (मृष्)।

(ग) तुदादि—ईश्वर ने इस संसार को बनाया है। शत्रु की सेना किले में दाखिल हो गई। उन्होंने अपने मित्रों को पत्र लिखे। भले लोग दुराचार से सदा लजाते हैं। यमुना प्रयाग में गंगा से मिलती है। लोगों ने अपने नेता पर फूल बरसाए (कृ) बुढ़िया ज्वर से मर गई। पशुओं को कष्ट मत दो (तुद्) पुस्तकों को ज़मीन पर मत फैंको। संन्यासी लोग सोने को नहीं छूते। ईश्वर ने इस जगत को बनाया। घर पहुँच कर हमें पत्र जरूर लिख देना।

(घ) चुरादि—जज अपराधी को सज़ा देता है। मैंने सारे मेले में आप को तलाश किया। दमयन्ती ने नल को पति वरा। विपत्ति में मित्र भी छोड़ जाते हैं। गरीबों की भी चिन्ता करो। हमें दीनों पर दया करनी चाहिए। कालिदास ने रघुवंश काव्य रचा। उन्होंने आप की बीमारी की सूचना मुझे नहीं दी। आपने अपना सारा दिन व्यर्थ गँवा दिया। ब्राह्मण यश की इच्छा न करे। धोबी ने सब कपड़ों को गिना और धोया। महात्माओं की सदा पूजा करनी चाहिए। आओ, इन आमों को चखें। बाबूजी, ज़रा मेरा सामान तो तोल दीजिए। जब बादल गर्जते हैं तो हम वर्षा की चिन्ता करते हैं। दुष्टों से प्रार्थना मत करो। राजा लोग दुष्टों को दंड दें। अजी साहिब, दूध में पानी न मिलाइए। पापियों की संगत को छोड़िये। सच को ढूँडिये और बड़ाई की चाह कीजिए। इसे आज से अपना मित्र मत गिनो। जो अकेला खाता है वह पाप खाता है। जो सच की तलाश नहीं करता वह चोरी करता है। जैसा सोचो वैसा कहो।

अपवादक धातु 'Irregalar bases'.

१३०. (क) भ्वादिगण के नीचे लिखे धातु अपवादक हैं :—

१. क्रम् 'step, जाना', आचम् 'sip, आचमन करना', गुह् 'conceal, छुपाना', ष्ठिव् 'spit, थूकना' के स्वर को दीर्घ हो जाता है। जैसे,

		लट्	लङ्	लोट्	विधिलिङ्
क्रम्	प० —	क्रामति	अक्रामत्	क्रामतु	क्रामेत्
आ-चम्	प० —	आचामति	आचामत्	आचामतु	आचामेत्
गुह्	उ० —	गूहति-ते	अगूहत्-त	गूहतु-ताम्	गूहेत्-त
ष्ठिव्	प० —	ष्ठीवति	अष्ठीवत्	ष्ठीवतु	ष्ठीवेत्

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२. **गम्** 'go, जाना' और **यम्** 'restrain, हरना' के **म्** को **च्छ्**, होकर **गच्छ्** और **यच्छ्** हो जाता है। जैसे,

गम् प० —	गच्छति	अगच्छत्	गच्छतु	गच्छेत्
यम् प० —	यच्छति	अयच्छत्	यच्छतु	यच्छेत्

३. **स्था** 'stand, खड़ा होना', **पा** 'drink, पीना', **घ्रा** 'smell, सूंघना', को इ के साथ द्वित्व (reduplication) होकर क्रमशः **तिष्ठ्**, **पिव्** और **जिघ्र्** हो जाता है। जैसे,

स्था प० —	तिष्ठति	अतिष्ठत्	तिष्ठतु	तिष्ठेत्
पा प० —	पिवति	अपिवत्	पिवतु	पिवेत्
घ्रा प० —	जिघ्रति	अजिघ्रत्	जिघ्रतु	जिघ्रेत्

४. **दंश्** 'bite, काटना', **रञ्ज्** 'dye, रंगना', **सञ्ज्** 'adhere, चिपकना' के अनुनासिक का लोप हो जाता है। जैसे,

दंश् प० —	दशति	अदशत्	दशतु	दशेत्
रञ्ज् उ० —	रजति-ते	अरजत्-त	रजतु-ताम्	रजेत्-त
सञ्ज् प० —	सजति	असजत्	सजतु	सजेत्

५. **दृश्** 'see, देखना', **ध्मा** 'blow, धौंकना', **म्ना** 'think, सोचना', **दा** 'give, देना', को क्रमशः **पश्य, धम, मन, यच्छ** हो जाता है। जैसे,

दृश् प० —	पश्यति	अपश्यत्	पश्यतु	पश्येत्
ध्मा प० —	धमति	अधमत्	धमतु	धमेत्
म्ना प० —	मनति	अमनत्	मनतु	मनेत्
दा प० —	यच्छति	अयच्छत्	यच्छतु	यच्छेत्

६. **मृज्** 'clean, साफ़ करना', **सद्** 'sit, बैठना', **गुप्** 'protect, रक्षा करना', **धूप** 'heat, तपना', **ऋ** 'go, जाना', **सृ** 'run, दौड़ना', को क्रमशः **मार्ज, सीद, गोपाय, धूपाय, ऋच्छ, धाव** हो जाता है। जैसे,

मृज् प० —	मार्जति	अमार्जत्	मार्जतु	मार्जेत्
सद् प० —	सीदति	असीदत्	सीदतु	सीदेत्
गुप् प० —	गोपायति	अगोपायत्	गोपायतु	गोपायेत्
धूप् प० —	धूपायति	अधूपायत्	धूपायतु	धूपायेत्
ऋ प० —	ऋच्छति	आर्च्छत्	ऋच्छतु	ऋच्छेत्
सृ प० —	धावति	अधावत्	धावतु	धावेत्

(ख) दिवादिगण के नीचे लिखे धातु अपवादक हैं :—

CC-0. In Public Domain. Satya Vrat Shastri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. दम् 'pacify, शान्ति करना, रोकना', श्रम् 'be weary, थकना', क्षम् 'endure, सहना, क्षमा करना', शम् 'cease, शान्त होना', भ्रम् 'roam, भ्रमण करना', तम् desire, or languish, चाहना, थकना', मद् 'rejoice, खुश होना' के स्वर को दीर्घ हो जाता है। जैसे,

दम् प० —	दाम्यति	अदाम्यत्	दाम्यतु	दाम्येत्
क्षम् प० —	क्षाम्यति	अक्षाम्यत्	क्षाम्यतु	क्षाम्येत्
शम् प० —	शाम्यति	अशाम्यत्	शाम्यतु	शाम्येत्
श्रम् प० —	श्राम्यति	अश्राम्यत्	श्राम्यतु	श्राम्येत्
भ्रम् प० —	भ्राम्यति	अभ्राम्यत्	भ्राम्यतु	भ्राम्येत्
तम् प० —	ताम्यति	अताम्यत्	ताम्यतु	ताम्येत्

२. दो, सो, छो, शो ,cut' आदि ओकारान्त धातुओं के ओ का य से पूर्व लोप हो जाता है। जैसे, द्यति, स्यति, छ्यति, श्यति।

दो प०—	द्यति	अद्यत्	द्यतु	द्येत्

३. जन् 'be born, पैदा होना' को जा, और व्यध् 'pierce, बींधना' को सम्प्रसारण द्वारा विध् हो जाता है। भ्रंश् 'fall' के अनुनासिक का लोप हो जाता है। जैसे,

जन् आ० —	जायते	अजायत	जायताम्	जायेत
व्यध् प० —	विध्यति	अविध्यत्	विध्यतु	विध्येत्
भ्रंश् प० —	भ्रश्यति	अभ्रश्यत्	भ्रश्यतु	भ्रश्येत्

(ग) तुदादि गण के नीचे लिखे अपवादक हैं :—

१. कृत् 'cut, काटना', मुच् 'loosen, छोड़ना', लुप् 'cut, काटना', लिप् 'paint, लीपना', विद् 'find, पाना', सिच् 'sprinkle, छिड़कना', पिश् 'form, बनाना' को अनुनासिक का आगम होता है। जैसे,

कृत् प० —	कृन्तति	अकृन्तत्	कृन्ततु	कृन्तेत्
मुच् उ० —	मुञ्चति-ते	अमुञ्चत्-त	मुञ्चतु-ताम्	मुञ्चेत्-त
लुप् उ० —	लुम्पति-ते	अलुम्पत् त	लुम्पतु-ताम्	लुम्पेत्-त
लिप् उ० —	लिम्पति-ते	अलिम्पत्-त	लिम्पतु-ताम्	लिम्पेत्-त
विद् उ०—	विन्दति-ते	अविन्दत्-त	विन्दतु-ताम्	विन्देत् त
सिच् उ०—	सिञ्चति-ते	असिञ्चत्-त	सिञ्चतु-ताम्	सिञ्चेत्-त
पिश् उ०—	पिंशत ते	अपिंशति-ते	पिंशतु-ताम्	पिंशेत्-त

२. प्रच्छ् 'ask पूछना', व्रश्च् 'cut काटना', को सम्प्रसारण हो

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता है। और भ्रस्ज् 'fry पकाना, तलना', मस्ज् bathe नहाना', सस्ज् 'go जाना', के स् को ज् हो जाता है। जैसे, पृच्छति, वृश्चति, भृज्जति-ते सज्जति,

प्रच्छ् प० —	पृच्छति	अपृच्छत्	पृच्छतु	पृच्छेत्
व्रश्च् प० —	वृश्चति	अवृश्चत्	वृश्चतु	वृश्चेत्
मस्ज् प० —	मज्जति	अमज्जत्	मज्जतु	मज्जेत्
सस्ज् उ० —	सज्जति-ते	असज्जत्-त	सज्जतु-ताम्	सज्जेत्-त
भ्रस्ज् उ० —	भृज्जति ते	अभृज्जत्-त	भृज्जतु-तां	भृज्जेत्-त
लस्ज् आ० —	लज्जते	अलज्जत	लज्जतां	लज्जेत

३. इष् 'wish, को इच्छ् हो जाता है। जैसे,

इष् प०—	इच्छति	ऐच्छत्	इच्छतु	इच्छेत्

अपवादक-धातु-रूपावली।

भ्वादि-गण।

क्रम् (क्राम्) 'step, जाना, चलना' परस्मै०

लट् 'Present'.

प्र०	क्रामति	क्रामतः	क्रामन्ति
म०	क्रामसि	क्रामथः	क्रामथ
उ०	क्रामामि	क्रामावः	क्रामामः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अक्रामत्	अक्रामताम्	अक्रामन्
म०	अक्रामः	अक्रामतम्	अक्रामत
उ०	अक्रामम्	अक्रामाव	अक्रामाम

लोट् 'Imperative'.

प्र०	क्रामतु	क्रामताम्	क्रामन्तु
म०	क्राम	क्रामतम्	क्रामत
उ०	क्रामाणि	क्रामाव	क्रामाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	क्रामेत्	क्रामेताम्	क्रामेयुः
म०	क्रामेः	क्रामेतम्	क्रामेत
उ०	क्रामेयम्	क्रामेव	क्रामेम

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गम् (गच्छ्) 'go, जाना' परस्मै०

लट् 'Present'.

प्र०	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
म०	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उ०	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
म०	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
उ०	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

लोट् 'Imperative'.

प्र०	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
म०	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
उ०	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
म०	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत
उ०	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

स्था० (तिष्ठ्) 'stand, खड़ा होना' परस्मै०

लट् 'Present'.

प्र०	तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति
म०	तिष्ठसि	तिष्ठथः	तिष्ठथ
उ०	तिष्ठामि	तिष्ठावः	तिष्ठामः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्
म०	अतिष्ठः	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
उ०	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम

लोट् 'Imperative'.

प्र०	तिष्ठतु	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु
म०	तिष्ठ	तिष्ठतम्	तिष्ठत
उ०	तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाम

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	तिष्ठेत्	तिष्ठेताम्	तिष्ठेयुः
म०	तिष्ठेः	तिष्ठेतम्	तिष्ठेत
उ०	तिष्ठेयम्	तिष्ठेव	तिष्ठेम

पा (पिव्) 'drink, पीना' परस्मै०

लट् 'Present'.

प्र०	पिवति	पिवतः	पिवन्ति
म०	पिवसि	पिवथः	पिवथ
उ०	पिवामि	पिवावः	पिवामः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अपिवत्	अपिवताम्	अपिवन्
म०	अपिवः	अपिवतम्	अपिवत
उ०	अपिवम्	अपिवाव	अपिवाम

लोट् 'Imperative.'

प्र०	पिवतु	पिवताम्	पिवन्तु
म०	पिव	पिवतम्	पिवत
उ०	पिवानि	पिवाव	पिवाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	पिवेत्	पिवेताम्	पिवेयुः
म०	पिवेः	पिवेतम्	पिवेत
उ०	पिवेयम्	पिवेव	पिवेम

सद् (सीद्) 'sit, बैठना' परस्मै०

लट् 'Present'.

प्र०	सीदति	सीदतः	सीदन्ति
म०	सीदसि	सीदथः	सीदथ
उ०	सीदामि	सीदावः	सीदामः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	असीदत्	असीदताम्	असीदन्
म०	असीदः	असीदतम्	असीदत
उ०	असीदम्	असीदाव	असीदाम

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोट् 'Imperative'.

प्र०	सीदतु	सीदताम्	सीदन्तु
म०	सीद	सीदतम्	सीदत
उ०	सीदानि	सीदाव	सीदाम

विधिलिङ् 'potential'.

प्र०	सीदेत्	सीदेताम्	सीदेयुः
म०	सीदेः	सीदेतम्	सीदेत
उ०	सीदेयम्	सीदेव	सीदेम

दृश् (पश्य्) 'see, देखना परस्मै०

लट् 'present'.

प्र०	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
म०	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उ०	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
म०	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत
उ०	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

लोट् 'Imperative'.

प्र०	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
म०	पश्य	पश्यतम्	पश्यत
उ०	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

विधिलिङ् 'potential'.

प्र०	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः
म०	पश्येः	पश्येतम्	पश्येत
उ०	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम

दिवादि गण।

भ्रम् (भ्राम्) 'roam, भ्रमण करना' परस्मै०

लट् 'Present'.

प्र०	भ्राम्यति	भ्राम्यतः	भ्राम्यन्ति
म०	भ्राम्यसि	भ्राम्यथः	भ्राम्यथ
उ०	भ्राम्यामि	भ्राम्यावः	भ्राम्यामः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अभ्राम्यत्	अभ्राम्यताम्	अभ्राम्यन्
म०	अभ्राम्यः	अभ्राम्यतम्	अभ्राम्यत
उ०	अभ्राम्यम्	अभ्राम्याव	अभ्राम्याम

लोट् 'Imperative'.

प्र०	भ्राम्यतु	भ्राम्यताम्	भ्राम्यन्तु
म०	भ्राम्य	भ्राम्यतम्	भ्राम्यत
उ०	भ्राम्याणि	भ्राम्याव	भ्राम्याम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	भ्राम्येत्	भ्राम्येताम्	भ्राम्येयुः
म०	भ्राम्येः	भ्राम्येतम्	भ्राम्येत
उ०	भ्राम्येयम्	भ्राम्येव	भ्राम्येम

जन् (जा) 'be born, पैदा होना' आत्मने०

लट् 'Present'.

प्र०	जायते	जायेते	जायन्ते
म०	जायसे	जायेथे	जायध्वे
उ०	जाये	जायावहे	जायामहे

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अजायत	अजायेताम्	अजायन्त
म०	अजायथाः	अजायेथाम्	अजायध्वम्
उ०	अजाये	अजायावहि	अजायामहि

लोट् 'Imperative'.

प्र०	जायताम्	जायेताम्	जायन्ताम्
म०	जायस्व	जायेथाम्	जायध्वम्
उ०	जायै	जायावहै	जायामहै

विधिलिङ् Potential'.

प्र०	जायेत	जायेयाताम्	जायेरन्
म०	जायेथाः	जायेयाथाम्	जायेध्वम्
उ०	जायेय	जायेवहि	जायेमहि

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यध् (विध्) 'pierce, बींधना' परस्मै०

लट् Present'.

प्र०	विध्यति	विध्यतः	विध्यन्ति
म०	विध्यसि	विध्यथः	विध्यथ
उ०	विध्यामि	विध्यावः	विध्यामः

लङ् Imperfect'.

प्र०	अविध्यत्	अविध्यताम्	अविध्यन्
म०	अविध्यः	अविध्यतम्	अविध्यत
उ०	अविध्यम्	अविध्याव	अविध्याम्

लोट् Imperative'.

प्र०	विध्यतु	विध्यताम्	विध्यन्तु
म०	विध्य	विध्यतम्	विध्यत
उ०	विध्यानि	विध्याव	विध्याम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	विध्येत्	विध्येताम्	विध्येयुः
म०	विध्येः	विध्येतम्	विध्येत
उ०	विध्येयम्	विध्येव	विध्येम

तुदादि-गण

मुच् (मुञ्च्) 'loosen, छोड़ना' उभय०

परस्मैपद

लट् present'.

प्र०	मुञ्चति	मुञ्चतः	मुञ्चन्ति
म०	मुञ्चसि	मुञ्चथः	मुञ्चथ
उ०	मुञ्चामि	मुञ्चावः	मुञ्चामः

लङ् Imperfect'.

प्र०	अमुञ्चत्	अमुञ्चताम्	अमुञ्चन्
म०	अमुञ्चः	अमुञ्चतम्	अमुञ्चत
उ०	अमुञ्चम्	अमुञ्चाव	अमुञ्चाम

लोट् 'Imperative'.

प्र०	मुञ्चतु	मुञ्चताम्	मुञ्चन्तु
म०	मुञ्च	मुञ्चतम्	मुञ्चत

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उ०	मुञ्चानि	मुञ्चाव	मुञ्चाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	मुञ्चेत्	मुञ्चेताम्	मुञ्चेयुः
म०	मुञ्चेः	मुञ्चेतम्	मुञ्चेत
उ०	मुञ्चेयम्	मुञ्चेव	मुञ्चेम

आत्मनेपद

लट् 'Present'.

प्र०	मुञ्चते	मुञ्चेते	मुञ्चन्ते
म०	मुञ्चसे	मुञ्चेथे	मुञ्चध्वे
उ०	मुञ्चे	मुञ्चावहे	मुञ्चामहे

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अमुञ्चत	अमुञ्चेताम्	अमुञ्चन्त
म०	अमुञ्चथाः	अमुञ्चेथाम्	अमुञ्चध्वम्
उ०	अमुञ्चे	अमुञ्चावहि	अमुञ्चामहि

लोट् 'Imperative'.

प्र०	मुञ्चताम्	मुञ्चेताम्	मुञ्चन्ताम्
म०	मुञ्चस्व	मुञ्चेथाम्	मुञ्चध्वम्
उ०	मुञ्चै	मुञ्चावहै	मुञ्चामहै

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	मुञ्चेत	मुञ्चेयाताम्	मुञ्चेरन्
म०	मुञ्चेथाः	मुञ्चेयाथाम्	मुञ्चेध्वम्
उ०	मुञ्चेय	मुञ्चेवहि	मुञ्चेमहि

विद् (विन्द्) 'find, पाना' उभय०

आत्मने० लट् 'Present'.

प्र०	विन्दते	विन्देते	विन्दन्ते
म०	विन्दसे	विन्देथे	विन्दध्वे
उ०	विन्दे	विन्दावहे	विन्दामहे

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अविन्दत	अविन्देताम्	अविन्दन्त
म०	अविन्दथाः	अविन्देथाम्	अविन्दध्वम्
उ०	अविन्दे	अविन्दावहि	अविन्दामहि

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोट् 'Imperative'.

प्र०	विन्दताम्	विन्देताम्	विन्दन्ताम्
म०	विन्दस्व	विन्देथाम्	विन्दध्वम्
उ०	विन्दै	विन्दावहै	विन्दामहै

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	विन्देत	विन्देयाताम्	विन्देरन्
म०	विन्देथाः	विन्देयाथाम्	विन्देध्वम्
उ०	विन्देय	विन्देवहि	विन्देमहि

परस्मैपद

लट् 'Present'.

प्र०	विन्दति	विन्दतः	विन्दन्ति
म०	विन्दसि	विन्दथः	विन्दथ
उ०	विन्दामि	विन्दावः	विन्दामः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अविन्दत्	अविन्दताम्	अविन्दन्
म०	अविन्दः	अविन्दतम्	अविन्दत
उ०	अविन्दम्	अविन्दाव	अविन्दाम

लोट् 'Imperative'.

प्र०	विन्दतु	विन्दताम्	विन्दन्तु
म०	विन्द	विन्दतम्	विन्दत
उ०	विन्दानि	विन्दाव	विन्दाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	विन्देत्	विन्देताम्	विन्देयुः
म०	विन्देः	विन्देतम्	विन्देत
उ०	विन्देयम्	विन्देव	विन्देम

प्रच्छ् (पृच्छ्) 'ask, पूछना' परस्मै०

लट् 'Present'.

प्र०	पृच्छति	पृच्छतः	पृच्छन्ति
म०	पृच्छसि	पृच्छथः	पृच्छथ
उ०	पृच्छामि	पृच्छावः	पृच्छामः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्
म०	अपृच्छः	अपृच्छतम्	अपृच्छत
उ०	अपृच्छम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम

लोट् 'Imperative'.

प्र०	पृच्छतु	पृच्छताम्	पृच्छन्तु
म०	पृच्छ	पृच्छतम्	पृच्छत
उ०	पृच्छानि	पृच्छाव	पृच्छाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयुः
म०	पृच्छेः	पृच्छेतम्	पृच्छेत
उ०	पृच्छेयम्	पृच्छेव	पृच्छेम

इष् (इच्छ्) 'wish, इच्छा करना, चाहना' परस्मै०

लट् 'Present'.

प्र०	इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति
म०	इच्छसि	इच्छथः	इच्छथ
उ०	इच्छामि	इच्छावः	इच्छामः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	ऐच्छत्	ऐच्छताम्	ऐच्छन्
म०	ऐच्छः	ऐच्छतम्	ऐच्छत
उ०	ऐच्छम्	ऐच्छाव	ऐच्छाम

लोट् 'Imperative'.

प्र०	इच्छतु	इच्छताम्	इच्छन्तु
म०	इच्छ	इच्छतम्	इच्छत
उ०	इच्छानि	इच्छाव	इच्छाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	इच्छेत्	इच्छेताम्	इच्छेयुः
म०	इच्छेः	इच्छेतम्	इच्छेत
उ०	इच्छेयम्	इच्छेव	इच्छेम

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभ्यास १५.

१. संस्कृत में कितने वाच्य हैं और उनके क्या लक्षण हैं? सोदाहरण लिखो।

२. सार्वधातुकों (conjugational) में कौन कौन से गण और लकार हैं?

३. सार्वधातुकों के अविकृत अंग (unchangeable bases) बनाने की विधि लिखो। प्रत्येक का एक उदाहरण दो।

४. नीचे लिखे धातुओं के लट्, लङ्, लोट् और विधिलिङ् में रूप लिखो :—

क्रम्, यम्, घ्रा, स्था, पा, दंश्, सद्, शम्, दिव्, मद्, जन्, तम्, मुच्, विद् (तुदादि), सिच्, प्रच्छ, मस्ज्, इष्, तड्, गण्, रच्, इत्यादि।

५. नीचे लिखे वाक्यों में रिक्त पदों (blanks) को पूरा करो। इनमें प्रत्येक वाक्य के साथ दिए गए धातु का दिए हुए लकार में उचित प्रयोग करो :—

अपि भवतां तपः —। वृध्, लट्।
दरिद्रान् — कौन्तेय। भृ, लोट्।
मा — ईश्वरे धनम्। प्र-दा, लोट्।
चकोराश्चन्द्रिकां —। पा, लट्।
स्वैरं स्वैरं — भवान्। गम्, लोट्।
जलं —, घृतं —। त्यज्, पा, लोट्।
पाणिर्दानेन — न तु कंकणेन। शुभ्, लट्।
भो नराः, कृच्छ्रेषु धर्मं न —। परि-त्यज्, विधिलिङ्।
— इदं पद्मं मे मानसं —। दृश्, लोट्; हृ, लट्।
प्रकृतिं — ते प्रियसखी। आ-पद्, लट्।
उद्यमेन हि — कार्याणि। सिध्, लट्।
आर्ये — अहन्ते भूतार्थम्। कथ्, लङ्।
चक्रवर्तिनं पुत्रं —। प्रति-पद्, लोट्।
भ्रुवोर्भङ्गः क्रोधं —। सूच्, लट्।
नृपतय आज्ञाभङ्गं न —। सह्, विधिलिङ्।
सन्तः स्वभावं नैव —। मुच्, लट्।
पण्डिता अतिक्रान्तं न —। शुच्, विधिलिङ्।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूढः दुःखे दुःखं — । लभ्, लट्।
शत्रूणां कुलं — राजाग्निः । दह्, लट्।
भोश्छात्राः, लोके धनानि — । अर्ज्, विधिलिङ्।

६. संस्कृत में अनुवाद करो :—

बीमार ने दवाई नहीं पी। सूरज ने शर्म के मारे अपना मुँह बादलों में छुपा लिया। उस सुगन्ध को मैंने सूंघा और मैं वहां खड़ा हो गया। इस कपड़े को रंगिए और मुझे दीजिए। कुत्ता बालक को देखता तो है पर काटता नहीं। शत्रुओं ने अपने अपने शंख बजाए (ध्मा)। ब्राह्मण सदा दूसरों की भलाई को सोचे (म्ना)। योधाओं ने अपनी तलवारें साफ कीं। बटोही थक कर सड़क के किनारे बैठ गया। मैंने जंगल में एक भेड़िया देखा। प्रत्येक देशवासी को अपने देश की रक्षा करनी चाहिए (गुप्)। बिजली वस्तुओं को तपा भी देती है। मैं एक मील दौड़ा और थक गया। छोटों की भूलों को क्षमा करो। लोग धन पाकर खुश होते हैं (मुद्)। आपने वहां देर तक भ्रमण किया। अभी आग नहीं बुझी थी। पं० जवाहिरलाल १८९५ में पैदा हुए। अर्जुन ने क्षण में निशाने (लक्ष्य) को बींध डाला। उसकी पाओं पर पत्थर फिसल गया (भ्रंश्)। इस पौदे की व्यर्थ शाखाओं को काट डालिए। अंधेरा अंगों को मानो लीपे देता है। चोर को मत छोड़ो। जो बात भूलो मुझे पूछ लो। वेलों पर पानी छिड़काइए। हमें प्रातः ही नहाना चाहिए और फिर कालेज जाना चाहिए (सृज्)। सब प्राणी सुख की इच्छा करते हैं। इस देश में अच्छे नेता पैदा हों।

(ख) विकृतांग धातु।

(अदादि, जुहोत्यादि, स्वादि, रुधादि, तनादि, क्र्यादि)

१३१. विकृतांगों में **परस्मैपद** के प्रत्यय **लट्**, **लङ्** और **लोट्** में वे ही हैं जो अविकृतांग धातुओं के लिए हैं (१२५), केवल **लोट्** के **मध्यम पु० एक०** का प्रत्यय हि भिन्न है। शेष प्रत्यय नीचे दिए गए हैं :—

परस्मैपद विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	यात्	याताम्	युस्
म०	यास्	यातम्	यात
उ०	याम्	याव	याम

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मनेपद

	लट् 'Present'.			लङ् 'Imperfect'.		
प्र०	ते	आते	अते	त	आताम्	अत
म०	से	आथे	ध्वे	थास्	आथाम्	ध्वम्
उ०	ए	वहे	महे	इ	वहि	महि

	लोट् 'Imperative'.			विधिलिङ् 'Potential'.
प्र०	ताम्	आताम्	अताम्	
म०	स्व	आथाम्	ध्वम्	अविकृतांग वत् ।
उ०	ऐ	आवहै	आमहै	

(क) विकृतांग धातुओं के प्रत्यय दो भागों में विभक्त हैं, (१) पित् (strong) और (२) अपित् या ङित् (weak)। पित् प्रत्ययों से पूर्व धातु को गुण या वृद्धि आदेश होता है, अपित् में नहीं होता।

१. नीचे लिखे पित्-प्रत्यय (strong terminations) हैं :—

परस्मैपद:—

लट् और लङ् के तीनों पुरुषों के एकवचन।
लोट् के प्रथम पुरुष का एकवचन,
और उत्तम पुरुष के तीनों वचन।

आत्मनेपद:—

लोट् के उत्तम पुरुष के तीनों वचन।

(२) शेष सब अपित्-प्रत्यय (weak terminations) हैं।

(ख) पित्-प्रत्ययों से पूर्व धातु के अंग के उपधा (penultimate) और अन्त्य (find) स्वर को गुण आदेश होता है। ऐसे अंग को पित्-प्रत्ययांग (strong base) कहते हैं और अपित् या ङित् से पूर्व अंग को अपित्-प्रत्ययांग (weak base) कहते हैं।

स्वादि और तनादि गण।

१३२. स्वादि गण के धातुओं को नु[1] और तनादि गण के धातुओं को उ[2] विकरण लगते हैं। इन दोनों गणों में अंग के अन्त में उ रहता है।

(क) वकारादि और मकारादि प्रत्ययों से पूर्व अंग के असंयोग-पूर्वक (not preceded by a conjunct consonant) अन्त्य

१. स्वादिभ्यः श्नुः । ३. १. ७५ । २. तनादिकृञ्भ्य उः । ३. १. ७९ ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उ का विकल्प से लोप हो जाता है।[1] जैसे, सुनुवः या सुन्वः। सुनुमः या सुन्मः।

(ख) अंग के असंयोगपूर्वक अन्त्य उ से परे हि (म० एक० लोट्) प्रत्यय का लोप हो जाता है।[2] जैसे, सुनु, कुरु।

(ग) स्वादि गण के अनेकाच् अंग के उ को व् (यण्) होता है। यदि परे अजादि (weak) प्रत्यय हों और उ से पूर्व संयोग (conjunct consonant) न हो।[3] जैसे, सुन्वन्ति, शृण्वन्ति।

(घ) परन्तु यदि ऊपर लिखे उ से पूर्व संयोग हो तो उ को उव् होता है।[4] जैसे, आप्नुवन्ति, शक्नुवन्ति।

धातुरूपावली।

स्वादिगण।

सु 'press out' उभय०

परस्मै०—लट् 'Present'.

प्र०	सुनोति	सुनुतः	सुन्वन्ति
म०	सुनोषि	सुनुथः	सुनुथ
उ०	सुनोमि	सुनुवः, सुन्वः	सुनुमः, सुन्मः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	असुनोत्	असुनुताम्	असुन्वन्
म०	असुनोः	असुनुतम्	असुनुत
उ०	असुनवम्	असुनुव, असुन्व	असुनुम, असुन्म

लोट् 'Imperative'.

प्र०	सुनोतु	सुनुताम्	सुन्वन्तु
म०	सुनु	सुनुतम्	सुनुत
उ०	सुनवानि	सुनवाव	सुनवाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	सुनुयात्	सुनुयाताम्	सुनुयुः
म०	सुनुयाः	सुनुयातम्	सुनुयात
उ०	सुनुयाम्	सुनुयाव	सुनुयाम

---

१. लोपश्चान्यतरस्यां म्वोः। ६. ४. १०७। २. उतश्च प्रत्ययादसंयोगपूर्वात्। ६. ४. १०६। ३. हुश्नुवोः सार्वधातुके। ६. ४. ८०। ४. अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ। ६. ४. ७७।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मनेपद लट् 'Present'.

प्र०	सुनुते	सुन्वाते	सुन्वते
म०	सुनुषे	सुन्वाथे	सुनुध्वे
उ०	सुन्वे	सुनुवहे, सुन्वहे	सुनुमहे, सुन्महे

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	असुनुत	असुन्वाताम्	असुन्वत
म०	असुनुथाः	असुन्वाथाम्	असुनुध्वम्
उ०	असुन्वि	असुनुवहि	असुनुमहि
		असुन्वहि	असुन्महि

लोट् 'Imperative'.

प्र०	सुनुताम्	सुन्वाताम्	सुन्वताम्
म०	सुनुष्व	सुन्वाथाम्	सुनुध्वम्
उ०	सुनवै	सुनवावहै	सुनवामहै

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	सुन्वीत	सुन्वीयाताम्	सुन्वीरन्
म०	सुन्वीथाः	सुन्वीयाथाम्	सुन्वीध्वम्
उ०	सुन्वीय	सुन्वीवहि	सुन्वीमहि

धु 'shake, हिलाना' उभय०

परस्मै० लट् 'Present'.

प्र०	धुनोति	धुनुतः	धुन्वन्ति
म०	धुनोषि	धुनुथः	धुनुथ
उ०	धुनोमि	धुनुवः, धुन्वः	धुनुमः, धुन्मः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अधुनोत्	अधुनुताम्	अधुन्वन्
म०	अधुनोः	अधुनुतम्	अधुनुत
उ०	अधुनवम्	अधुनुव, अधुन्व	अधुनुम, अधुन्म

लोट् 'Imperative'.

प्र०	धुनोतु	धुनुताम्	धुन्वन्तु
म०	धुनु	धुनुतम्	धुनुत
उ०	धुनवानि	धुनवाव	धुनवाम

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	धुनुयात्	धुनुयाताम्	धुनुयुः
म०	धुनुयाः	धुनुयातम्	धुनुयात
उ०	धुनुयाम्	धुनुयाव	धुनुयाम

आत्मने० लट् 'Present'.

प्र०	धुनुते	धुन्वाते	धुन्वते
म०	धुनुषे	धुन्वाथे	धुनुध्वे
उ०	धुन्वे	धुनुवहे, धुन्वहे	धुनुमहे, धुन्महे

इत्यादि सु आ० की भाँति ।

आप् 'obtain, पाना' परस्मै०

लट् 'Present'.

प्र०	आप्नोति	आप्नुतः	आप्नुवन्ति
म०	आप्नोषि	आप्नुथः	आप्नुथ
उ०	आप्नोमि	आप्नुवः	आप्नुमः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	आप्नोत्	आप्नुताम्	आप्नुवन्
म०	आप्नोः	आप्नुतम्	आप्नुत
उ०	आप्नवम्	आप्नुव	आप्नुम

लोट् 'Imperative'.

प्र०	आप्नोतु	आप्नुताम्	आप्नुवन्तु
म०	आप्नुहि[1]	आप्नुतम्	आप्नुत
उ०	आप्नवानि	आप्नवाव	आप्नवाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	आप्नुयात्	आप्नुयाताम्	आप्नुयुः
म०	आप्नुयाः	आप्नुयातम्	आप्नुयात
उ०	आप्नुयाम्	आप्नुयाव	आप्नुयाम

शक् 'be able' सकना' परस्मै०

लट् 'Present'.

प्र०	शक्नोति	शक्नुतः	शक्नुवन्ति

१. यहाँ उ से पूर्व संयोग है ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म०	शक्नोषि	शक्नुथः	शक्नुथ
उ०	शक्नोमि	शक्नुवः	शक्नुमः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अशक्नोत्	अशक्नुताम्	अशक्नुवन्
म०	अशक्नोः	अशक्नुतम्	अशक्नुत
उ०	अशक्नवम्	अशक्नुव	अशक्नुम

लोट् 'Imperative'.

प्र०	शक्नोतु	शक्नुताम्	शक्नुवन्तु
म०	शक्नुहि	शक्नुतम्	शक्नुत
उ०	शक्नवानि	शक्नवाव	शक्नवाम

विधिलिङ् 'potential'.

प्र०	शक्नुयात्	शक्नुयाताम्	शक्नुयुः
म०	शक्नुयाः	शक्नुयातम्	शक्नुयात
उ०	शक्नुयाम्	शक्नुयाव	शक्नुयाम

श्रु (शृ) 'hear, सुनना' परस्मै०

लट् 'present'.

प्र०	शृणोति	शृणुतः	शृण्वन्ति
म०	शृणोषि	शृणुथः	शृणुथ
उ०	शृणोमि	शृणुवः, शृण्वः	शृणुमः, शृण्मः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अशृणोत्	अशृणुताम्	अशृण्वन्
म०	अशृणोः	अशृणुतम्	अशृणुत
उ०	अशृणवम्	अशृण्व, अशृणुव	अशृण्म, अशृणुम

लोट् 'Imperative'.

प्र०	शृणोतु	शृणुताम्	शृण्वन्तु
म०	शृणु	शृणुतम्	शृणुत
उ०	शृणवानि	शृणवाव	शृणवाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	शृणुयात्	शृणुयाताम्	शृणुयुः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म०	शृणुयाः	शृणुयातम्	शृणुयात
उ०	शृणुयाम्	शृणुयाव	शृणुयाम

तनादिगण ।

तन् 'spread' फैलाना, उभयपदी०

परस्मैपद लट् 'Present'.

प्र०	तनोति	तनुतः	तन्वन्ति
म०	तनोषि	तनुथः	तनुथ
उ०	तनोमि	तनुवः, तन्वः	तनुमः, तन्मः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अतनोत्	अतनुताम्	अतन्वन्
म०	अतनोः	अतनुतम्	अतनुत
उ०	अतनवम्	अतनुव, अतन्व	अतनुम,अतन्म

लोट् 'Imperative'.

प्र०	तनोतु	तनुताम्	तन्वन्तु
म०	तनु	तनुतम्	तनुत
उ०	तनवानि	तनवाव	तनवाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	तनुयात्	तनुयाताम्	तनुयुः
म०	तनुयाः	तनुयातम्	तनुयात
उ०	तनुयाम्	तनुयाव	तनुयाम

आत्मने० लट् 'Present'.

प्र०	तनुते	तन्वाते	तन्वते
म०	तनुषे	तन्वाथे	तनुध्वे
उ०	तन्वे	तनुवहे, तन्वहे	तनुमहे, तन्महे

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अतनुत	अतन्वाताम्	अतन्वत
म०	अतनुथाः	अतन्वाथाम्	अतनुध्वम्
उ०	अतन्वि	अतनुवहि, अतन्वहि	अतनुमहि, अतन्महि

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोट् 'Imperative'.

प्र०	तनुताम्	तन्वाताम्	तन्वताम्
म०	तनुष्व	तन्वाथाम्	तनुध्वम्
उ०	तनवै	तनवावहै	तनवामहै

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	तन्वीत	तन्वीयाताम्	तन्वीरन्
म०	तन्वीथाः	तन्वीयाथाम्	तन्वीध्वम्
उ०	तन्वीय	तन्वीवहि	तन्वीमहि

कृ[1] 'do, करना' उभय०

परस्मै० लट् 'Present'.

प्र०	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
म०	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उ०	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
म०	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उ०	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

लोट् 'Imperative'.

प्र०	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
म०	कुरु	कुरुतम्	कुरुत
उ०	करवाणि	करवाव	करवाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
म०	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
उ०	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

आत्मने० लट् 'Present'.

प्र०	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते

---

१. कृ को पित् प्रत्यय से पूर्व कर् आदेश होता है (ये च) और अपित् प्रत्ययों से पूर्व कुर् होता है (अत उत्सार्वधातुके)।

वकारादि और मकारादि प्रत्ययों से पूर्व उ का नित्य ही लोप होता है (नित्यं करोतेः ६. ४. १०८)।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म०	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
उ०	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत
म०	अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्
उ०	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि

लोट् 'Imperative'.

प्र०	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्
म०	कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्
उ०	करवै	करवावहै	करवामहै

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्
म०	कुर्वीथाः	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्
उ०	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि

मन् 'think, सोचना, जानना' आत्मने०

लट् 'Present'.

प्र०	मनुते	मन्वाते	मन्वते
म०	मनुषे	मन्वाथे	मनुध्वे
उ०	मन्वे	मनुवहे, मन्वहे	मनुमहे, मन्महे

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अमनुत	अमन्वाताम्	अमन्वत
म०	अमनुथाः	अमन्वाथाम्	अमनुध्वम्
उ०	अमन्वि	अमनुवहि, अमन्वहि	अमनुमहि, अमन्महि

लोट् 'Imperative'.

प्र०	मनुताम्	मन्वाताम्	मन्वताम्
म०	मनुष्व	मन्वाथाम्	मनुध्वम्
उ०	मनवै	मनवावहै	मनवामहै

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	मन्वीत	मन्वीयाताम्	मन्वीरन्

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म०	मन्वीथाः	मन्वीयाथाम्	मन्वीध्वम्
उ०	मन्वीय	मन्वीवहि	मन्वीमहि

स्वादि गण के कुछ अन्य प्रसिद्ध धातु

अश् आ०	'pervade, व्यापना'	अश्नुते	
क्षि प०	'destroy, हिंसा या नाश करना'	क्षिणोति	
चि उ०	'collect, चुनना'	चिनोति,	चिनुते
तृप् प०	'be pleased, तृप्त होना'	तृप्नोति	
दु प०	'give pain, दुःख देना'	दुनोति	
वृ उ०	'cover, ढकना'	वृणोति,	वृणुते
साध् प०	'accomplish, सिद्ध करना'	साध्नोति	
स्तृ उ०	'cover, ढकना'	स्तृणोति	स्तृणुते

तनादि गण के कुछ अन्य प्रसिद्ध धातु ।

क्षण् उ०	'kill, मारना, हिंसा करना'	क्षणोति,	क्षणुते
क्षिण् उ०	'kill, मारना, हिंसा करना'	क्षिणोति,	क्षिणुते
वन् आ०	'beg, मांगना	वनुते	
सन् उ०	'give, देना'	सनोति,	सनुते
तृण् उ०	'eat, खाना'	तृणोति,	तृणुते

अभ्यास १६.

संस्कृत में अनुवाद करो :—

(क) अध्वर्यु लोग सोम का रस निकालते हैं (सु)। भँवरे बेलों को हिलाते हैं (धु)। शकुन्तला और उसकी सखियों ने फूल बीने (चि)। मैंने व्याकरण के नियमों का संचय किया (सं-चि)। हमने पीछे दरवाज़ा बन्द कर लिया (सं-वृ)। बुद्ध महात्मा ने अपने शिष्यों के लिये अपने धर्म का विवरण किया (वि-वृ)। हमें शीघ्र ही विद्या प्राप्त करनी चाहिए (आप्)। बुद्धिमानों को कठिन काम भी आसानी से सिद्ध कर लेने चाहिएं (सिध्)। ईश्वर ही सबके दिल की बात जान सकता है (शक्)। आप सब सावधानी से इनका लेक्चर सुनिए (श्रु)। दुष्टों का नाश करो (क्षि)।दुःखितों को न दुखाइए (दु)। गवरनर महोदय ने महात्मा गांधी के पास अपना दूत भेजा (प्र-हि)। बहादुर सिपाहियों ने ज़मीन को शत्रुओं को लाशों से ढांप दिया (स्तृ)। विद्या-प्राप्ति से ब्रह्मचारियों को तृप्त होना चाहिए (तृप्)।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ख) वे अभी अपना काम करते हैं। दुष्ट लोग बिना लाभ भी दूसरों का अपकार करते हैं (अप कृ), परन्तु भले लोग अपनी जान पर खेल कर भी (प्राणव्ययेनापि) दूसरों का उपकार करते हैं (उप-कृ)। स्त्रियों पर बलात्कार मत करो (उत्-कृ)। उन्होंने अपनी मूर्खता को धृष्टता से ज़ाहिर किया (आविस्-कृ)। शत्रु का भी कभी तिरस्कार न कीजिए (तिरस्-कृ)। पांडवों ने द्रौपदी के अपमान का बदला लिया (प्रति-कृ)। आपको व्याकरण पर अधिकार होना चाहिए (अधि-कृ)। बालको, अपने कड़वे शब्दों से दूसरों का दिल मत दुखाओ (क्षिण्)। दूसरों के भावों का भी विचार कीजिए (मन्)। कंजूस से धन न मांगिए (वन्)। घोड़ा घास खाता है (तृण्)। गोपाल पक्षियों को मत मारो (क्षण्)।

—:०:—

क्र्यादि गण।

१३३. क्र्यादि गण के धातुओं पर ना विकरण लगता है।[१] इस ना को हलादि अपित् प्रत्यय (weak) से पूर्व नी[२] और अजादि अपित् प्रत्यय से पूर्व न्[३] हो जाता है। जैसे, क्रीणामि, क्रीणीवः, क्रीणन्ति।

(क) इस ना से पूर्व धातु के उपधा नकार का लोप हो जाता है।[४] जैसे, ग्रन्थ्—ग्रथ्नाति। स्तम्भ्—स्तभ्नाति।

(ख) हलन्त धातु से परे ना को आन आदेश होता है यदि हि (लोट् म० एक०) प्रत्यय परे हो।[५] हि का लोप हो जाता है। जैसे, मुष्—मुषाण। स्तम्भ्—स्तभान। गृह्—गृहाण। परन्तु क्रीणीहि।

धातुरूपावली।

क्री 'buy, खरीदना' उभय०

परस्मै० लट् 'present'.

प्र०	क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति
म०	क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ
उ०	क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः

१. क्र्यादिभ्यः श्ना। ३. १. ८१। २. ई हल्यघोः। ६. ४. ११३।

३. श्नाभ्यस्तयोरातः। ६. ४. ११२।

४. अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति। ६. ४. २४। ५. हलः श्नः शानज्झौ। ३. १. ८३।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अक्रीणात्	अक्रीणीताम्	अक्रीणन्
म०	अक्रीणाः	अक्रीणीतम्	अक्रीणीत
उ०	अक्रीणाम्	अक्रीणीव	अक्रीणीम

लोट् 'Imperative'.

प्र०	क्रीणातु	क्रीणीताम्	क्रीणन्तु
म०	क्रीणीहि	क्रीणीतम्	क्रीणीत
उ०	क्रीणानि	क्रीणाव	क्रीणाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	क्रीणीयात्	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयुः
म०	क्रीणीयाः	क्रीणीयातम्	क्रीणीयात
उ०	क्रीणीयाम्	क्रीणीयाव	क्रीणीयाम

आत्मने० लट् 'Present'.

प्र०	क्रीणीते	क्रीणाते	क्रीणते
म०	क्रीणीषे	क्रीणाथे	क्रीणीध्वे
उ०	क्रीणे	क्रीणीवहे	क्रीणीमहे

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अक्रीणीत	अक्रीणाताम्	अक्रीणत
म०	अक्रीणीथाः	अक्रीणाथाम्	अक्रीणीध्वम्
उ०	अक्रीणि	अक्रीणीवहि	अक्रीणीमहि

लोट् 'Imperative'.

प्र०	क्रीणीताम्	क्रीणाताम्	क्रीणताम्
म०	क्रीणीष्व	क्रीणाथाम्	क्रीणीध्वम्
उ०	क्रीणै	क्रीणावहै	क्रीणामहै

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	क्रीणीत	क्रीणीयाताम्	क्रीणीरन्
म०	क्रीणीथाः	क्रीणीयाथाम्	क्रीणीध्वम्
उ०	क्रीणीय	क्रीणीवहि	क्रीणीमही

ऐसे ही प्री उ० 'please, प्रसन्न होना' (प्रीणाति, प्रीणीते), यु उ० 'join, mix, मिलाना' (युनाति, युनीते) के रूप जानो।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन्ध् 'bind, बांधना' परस्मै०

लट् 'Present'.

प्र०	बध्नाति	बध्नीतः	बध्नन्ति
म०	बध्नासि	बध्नीथः	बध्नीथ
उ०	बध्नामि	बध्नीवः	बध्नीमः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अबध्नात्	अबध्नीताम्	अबध्नन्
म०	अबध्नाः	अबध्नीतम्	अबध्नीत
उ०	अबध्नाम्	अबध्नीव	अबध्नीम

लोट् 'Imperative'.

प्र०	बध्नातु	बध्नीताम्	बध्नन्तु
म०	बधान	बध्नीतम्	बध्नीत
उ०	बध्नानि	बध्नाव	बध्नाम

विधिलिङ् 'potentail'.

प्र०	बध्नीयात्	बध्नीयाताम्	बध्नीयुः
म०	बध्नीयाः	बध्नीयातम्	बध्नीयात
उ०	बध्नीयाम्	बध्नीयाव	बध्नीयाम

ऐसे ही स्तम्भ् प० obstruct, रोकना' (स्तभ्नाति), ग्रन्थ् प० 'string, इकठ्ठा करना' (ग्रथ्नाति), मन्थ् प० 'churm, मथना' (मथ्नाति), आदि के रूप जानो।

मुष् 'steal, चुराना' परस्मै०

लट् 'present'.

प्र०	मुष्णाति	मुष्णीतः	मुष्णन्ति
म०	मुष्णासि	मुष्णीथः	मुष्णीथ
उ०	मुष्णामि	मुष्णीवः	मुष्णीमः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अमुष्णात्	अमुष्णीताम्	अमुष्णन्
म०	अमुष्णाः	अमुष्णीतम्	अमुष्णीत
उ०	अमुष्णाम्	अमुष्णीव	अमुष्णीम

लोट् 'Imperative'.

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

प्र०	मुष्णातु	मुष्णीताम्	मुष्णन्तु

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म०	मुषाण	मुष्णीतम्	मुष्णीत
उ०	मुष्णानि	मुष्णाव	मुष्णाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	मुष्णीयात्	मुष्णीयाताम्	मुष्णीयुः
म०	मुष्णीयाः	मुष्णीयातम्	मुष्णीयात
उ०	मुष्णीयाम्	मुष्णीयाव	मुष्णीयाम

ऐसे ही पुष् प० 'nourish, पोषण करना, पालना' (पुष्णाति), अश् प० 'eat, खाना' (अश्नाति), क्लिश् प० 'torture, क्लेश देना' (क्लिश्नाति,) प्लुष् प० 'sprinkle, be wet, छिड़कना, भीगना' (प्लुष्णाति), मृद् प० 'crush, rub दलन करना, मलना' (मृद्नाति), इत्यादि के रूप जानो ।

अपवादक धातु ।

१३४. ज्ञा उ० 'know, जानना' को जा आदेश होता है ।[१] ग्रह् उ० 'seize, 'पकड़ना' के र् को सम्प्रसारण होकर ऋ हो जाता है ।

ज्ञा (जा) 'know, जानना' उभय०

परस्मै० लट् 'Present.'

प्र०	जानाति	जानीतः	जानन्ति
म०	जानासि	जानीथः	जानीथ
उ०	जानामि	जानीवः	जानीमः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अजानात्	अजानीताम्	अजानन्
म०	अजानाः	अजानीतम्	अजानीत
उ०	अजानाम्	अजानीव	अजानीम

लोट् 'Imperative'.

प्र०	जानातु	जानीताम्	जानन्तु
म०	जानीहि	जानीतम्	जानीत
उ०	जानानि	जानाव	जानाम

विधिलिङ् 'potential'.

प्र०	जानीयात्	जानीयाताम्	जानीयुः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

१. ज्ञाजनोर्जा । ७. ३. ७९ ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म०	जानीयाः	जानीयातम्	जानीयात
उ०	जानीयाम्	जानीयाव	जानीयाम

आत्मने० लट् 'Present'.

प्र०	जानीते	जानाते	जानते
म०	जानीषे	जानाथे	जानीध्वे
उ०	जाने	जानीवहे	जानीमहे

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अजानीत	अजानाताम्	अजानत
म०	अजानीथाः	अजानाथाम्	अजानीध्वम्
उ०	अजानि	अजानीवहि	अजानीमहि

लोट् 'Imperative'.

प्र०	जानीताम्	जानाताम्	जानताम्
म०	जानीष्व	जानाथाम्	जानीध्वम्
उ०	जानै	जानावहै	जानामहै

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	जानीत	जानीयाताम्	जानीरन्
म०	जानीथाः	जानीयाथाम्	जानीध्वम्
उ०	जानीय	जानीवहि	जानीमहि

ग्रह् (गृह्) 'seize, पकड़ना' उभय०

परस्मै० लट् 'Present'.

प्र०	गृह्णाति	गृह्णीतः	गृह्णन्ति
म०	गृह्णासि	गृह्णीथः	गृह्णीथ
उ०	गृह्णामि	गृह्णीवः	गृह्णीमः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अगृह्णात्	अगृह्णीताम्	अगृह्णन्
म०	अगृह्णाः	अगृह्णीतम्	अगृह्णीत
उ०	अगृह्णाम्	अगृह्णीव	अगृह्णीम

लोट् 'Imperative'.

प्र०	गृह्णातु	गृह्णीताम्	गृह्णन्तु
म०	गृहाण	गृह्णीतम्	गृह्णीत

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उ०	गृह्णानि	गृह्णाव	गृह्णाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	गृह्णीयात्	गृह्णीयाताम्	गृह्णीयुः
म०	गृह्णीयाः	गृह्णीयातम्	गृह्णीयात
उ०	गृह्णीयाम	गृह्णीयाव	गृह्णीयाम

आत्मने० लट् 'Present'.

प्र०	गृह्णीते	गृह्णाते	गृह्णते
म०	गृह्णीषे	गृह्णाथे	गृह्णीध्वे
उ०	गृह्णे	गृह्णीवहे	गृह्णीमहे

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अगृह्णीत	अगृह्णाताम्	अगृह्णत
म०	अगृह्णीथाः	अगृह्णाथाम्	अगृह्णीध्वम्
उ०	अगृह्णि	अगृह्णीवहि	अगृह्णीमहि

लोट् 'Imperative'.

प्र०	गृह्णीताम्	गृह्णाताम्	गृह्णताम्
म०	गृह्णीष्व	गृह्णाथाम्	गृह्णीध्वम्
उ०	गृह्णै	गृह्णावहै	गृह्णामहै

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	गृह्णीत	गृह्णीयाताम्	गृह्णीरन्
म०	गृह्णीथाः	गृह्णीयाथाम्	गृह्णीध्वम्
उ०	गृह्णीय	गृह्णीवहि	गृह्णीमहि

(क) पू उ० 'Purify, पवित्र करना', लू उ० 'cut, काटना', धू उ० 'shake, हिलाना,' ली प० 'melt, पिघलना', पॄ प० 'fill, पूरा करना, भरना', वॄ, उ० choose, वरना, पसंद करना,' दॄ प० 'tear, फाड़ना,' गॄ प० 'speak, बोलना,' इत्यादि धातुओं के स्वर को ह्रस्व हो जाता है। इनके रूप क्री के समान होते हैं। जैसे, पुनाति, पुनीते। लुनाति, लुनीते। धुनाति, धुनीते। लिनाति। पृणाति। वृणाति, वृणीते। दृणाति। गृणाति।

अभ्यास १७.

संस्कृत में अनुवाद करो:—

उन्होंने मुझ से रुपया देने की प्रतिज्ञा की (प्रति-ज्ञा)। हम ने अपनी गाड़ी तीन सौ रुपये को बेच दी (वि-क्री)। आज-कल गेहूँ खरीद लीजिए

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क्री)। तुमने मेरे सौ रुपये से इनकार कर दिया (अप-ज्ञा)। हम आपको विदेश जाने की अनुमिति देते हैं (अनु ज्ञा)। ज्ञान बड़े से बड़े पापी को भी पवित्र कर देता है (पू)। इस बालक का शरीर दूध से पुष्ट कर (पुष्)। किसी का धन मत चुरा (मुष्) हमें आवश्यकता से अधिक खाना नहीं चाहिए (अश्)। माता अपने बच्चे को प्यार करे (प्री)। इन फूलों की एक सुन्दर माला बना (ग्रन्थ्)। महाराज, शकुन्तला को पहचानिए (अभि ज्ञा), और इसे अपने महलों में लीजिए (ग्रह्)। इन पुस्तकों को ले (ग्रह्) और इनके विचारों को इकट्ठा कर (ग्रन्थ्)। धूप से घी पिघल गया (ली)। पेड़ को न हिलाइए (धु) अन्यथा सब फल झड़ जाएँगे। इन पुस्तकों में से एक पसंद कर लो (वृ)। छोटी छोटी बूँदें भी घड़े को भर देती हैं (पृ)। वृक्ष की जड़ों ने चट्टान को फाड़ डाला (दृ)। जेठ के महीने की धूप शरीर को क्लेश देती है (क्लिश्)। चन्द्रगुप्त की सेना ने यूनानियों का दलन किया (मृद्)। दूध में पानी मत मिलाओ (यु)। इस घाव पर पट्टी बाँधिए (बन्ध्)।

रुधादि-गण

१३५, रुधादि गण की धातुओं के अन्त्य अच् (radical vowel) से परे और अन्त्य व्यंजन से पूर्व न् विकरण लगता है।[1] पित् (strong) प्रत्ययों से पूर्व इस न् को न हो जाता है और अपित् (weak) प्रत्ययों से पूर्व न् ही बना रहता है। जैसे, रुध्—रुणद्धि, रुन्धः। भुज्—भुनक्ति, भुङ्क्ते।

(क) धातु के अनुनासिक का लोप हो जाता है। जैसे, अञ्ज्—अनक्ति। हिंस्—हिनस्ति।

(ख) हलन्त (अनुनासिक और अन्तस्थों के बिना) धातुओं को लोट् मध्यमपु० एक० परस्मैपद में धि प्रत्यय लगता है। जैसे, रुध—रुन्द्धि। हिंस्—हिन्धि।

(ग) चौथे वर्गीय वर्ण से परे प्रत्यय के आदि त्, थ् को ध् हो जाता है। जैसे, रुन्द्धः, रुन्द्धाम्।

धातुरूपावली।

रुध् 'obstruct, रोकना' उभयपदी।

परस्मै० लट् 'Present'.

प्र०	रुणद्धि	रुन्द्धः, रुन्धः	रुन्धन्ति
म०	रुणत्सि	रुन्द्धः, रुन्धः	रुन्द्ध

१. रुधादिभ्यः श्नम्। ३. १. ७८।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उ०	रुणध्मि	रुन्ध्वः	रुन्ध्मः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अरुणत्-द्	अरुन्धाम्	अरुन्धन्
म०	अरुणत्-द्, अरुणः	अरुन्धम्	अरुन्ध
उ०	अरुणधम्	अरुन्ध्व	अरुन्ध्म

लोट् 'Imperative'.

प्र०	रुणद्धु	रुन्द्धाम्	रुन्धन्तु
म०	रुन्द्धि	रुन्द्धम्	रुन्द्ध
उ०	रुणधानि	रुणधाव	रुणधाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	रुन्ध्यात्	रुन्ध्याताम्	रुन्ध्युः
म०	रुन्ध्याः	रुन्ध्यातम्	रुन्ध्यात
उ०	रुन्ध्याम्	रुन्ध्याव	रुन्ध्याम

आत्मनेपद लट् 'Present'.

प्र०	रुन्द्धे	रुन्धाते	रुन्धते
म०	रुन्त्से	रुन्धाथे	रुन्ध्वे
उ०	रुन्धे	रुन्ध्वहे	रुन्ध्महे

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अरुन्द्ध	अरुन्धाताम्	अरुन्धत
म०	अरुन्द्धः	अरुन्धाथाम्	अरुन्ध्वम्
उ०	अरुन्धि	अरुन्ध्वहि	अरुन्ध्महि

लोट् 'Imperative'.

प्र०	रुन्द्धाम्	रुन्धाताम्	रुन्धताम्
म०	रुन्त्स्व	रुन्धाथाम्	रुन्ध्वम्
उ०	रुणधै	रुणधावहै	रुणधामहै

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	रुन्धीत	रुन्धीयाताम्	रुन्धीरन्
म०	रुन्धीथाः	रुन्धीयाथाम्	रुन्धीध्वम्
उ०	रुन्धीय	रुन्धीवहि	रुन्धीमहि

ऐसे ही भिद् उ० 'tear, separate, फाड़ना, जुदा करना' (भिनत्ति, भिन्ते), छिद् उ० 'cut, काटना' (छिनत्ति, छिन्ते), क्षुद्

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'pound, पीस' डालना' (क्षुणति, क्षुन्ते), पिष् प० 'grind, पीसना' (पिनष्टि), शिष् प० 'distinguish, leave, प्रसिद्ध होना, छोड़ना' (शिनष्टि), इत्यादि के रूप जानो ।

युज् 'join, मिलना' उभयपदी

परस्मैपद लट् 'present'.

प्र०	युनक्ति	युङ्क्तः	युञ्जन्ति
म०	युनक्षि	युङ्क्थः	युङ्क्थ
उ०	युनज्मि	युञ्ज्वः	युञ्ज्मः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अयुनक्-ग्	अयुङ्क्ताम्	अयुञ्जन्
म०	अयुनक्-ग्	अयुङ्क्तम्	अयुङ्क्त
उ०	अयुनजम्	अयुञ्ज्व	अयुञ्ज्म

लोट् 'Imperative'.

प्र०	युनक्तु	युङ्क्ताम्	युञ्जन्तु
म०	युङ्ग्धि	युङ्क्तम्	युङ्क्त
उ०	युनजानि	युनजाव	युनजाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	युञ्ज्यात्	युञ्ज्याताम्	युञ्ज्युः
म०	युञ्ज्याः	युञ्ज्यातम्	युञ्ज्यात
म०	युञ्ज्याम्	युञ्ज्याव	युञ्ज्याम

आत्मनेपद लट् 'Present'.

प्र०	युङ्क्ते	युञ्जाते	युञ्जते
म०	युङ्क्षे	युञ्जाथे	युङ्ग्ध्वे
उ०	युञ्जे	युञ्ज्वहे	युञ्ज्महे

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अयुङ्क्त	अयुञ्जाताम्	अयुञ्जत
म०	अयुङ्क्थाः	अयुञ्जाथाम्	अयुङ्ग्ध्वम्
उ०	अयुञ्जि	अयुञ्ज्वहि	अयुञ्ज्महि

लोट् 'Imperative'.

प्र०	युङ्क्ताम्	युञ्जाताम्	युञ्जताम्

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म०	युङ्ग्ध्व	युञ्जाथाम्	युङ्ग्ध्वम्
उ०	युनजै	युनजावहै	युनजामहै

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	युञ्जीत	युञ्जीयाताम्	युञ्जीरन्
म०	युञ्जीथाः	युञ्जीयाथाम्	युञ्जीध्वम्
उ०	युञ्जीय	युञ्जीवहि	युञ्जीमहि

भुज् 'enjoy, eat, भोगना, खाना' उभय०

आत्मने० लट् 'Present.

प्र०	भुङ्क्ते	भुञ्जाते	भुञ्जते
म०	भुङ्क्षे	भुञ्जाथे	भुङ्ग्ध्वे
उ०	भुञ्जे	भुञ्ज्वहे	भुञ्ज्महे

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अभुङ्क्त	अभुञ्जाताम्	अभुञ्जत
म०	अभुङ्क्थाः	अभुञ्जाथाम्	अभुङ्ग्ध्वम्
उ०	अभुञ्जि	अभुञ्ज्वहि	अभुञ्ज्महि

लोट् 'Imperative'.

प्र०	भुङ्क्ताम्	भुञ्जाताम्	भुञ्जताम्
म०	भुङ्क्ष्व	भुञ्जाथाम्	भुङ्ग्ध्वम्
उ०	भुनजै	भुनजावहै	भुनजामहै

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	भुञ्जीत	भुञ्जीयाताम्	भुञ्जीरन्
म०	भुञ्जीथाः	भुञ्जीयाथाम्	भुञ्जीध्वम्
उ०	भुञ्जीय	भुञ्जीवहि	भुञ्जीमहि

परस्मैपद लट् 'Present'.

प्र०	भुनक्ति	भुङ्क्तः	भुञ्जन्ति
म०	भुनक्षि	भुङ्क्थः	भुङ्क्थ
उ०	भुनज्मि	भुञ्ज्वः	भुञ्ज्मः

इत्यादि युज् प० की भाँति।

ऐसे ही रिच् उ० 'empty, खाली करना' (रिणक्ति, रिङ्क्ते), पृच् प० 'unite, मिलना' (पृणक्ति), विज् प० 'tremble, fear,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांपना, डरना' (विनक्ति), वृज् प० 'avoid, वर्जना' (वृणक्ति), इत्यादि के रूप जानो ।

अञ्ज् 'anoint, मालिश करना, अभिषेक करना' परस्मै०

लट् 'Present'.

प्र०	अनक्ति	अङ्क्तः	अञ्जन्ति
म०	अनङ्क्षि	अङ्क्थः	अङ्क्थ
उ०	अनज्मि	अञ्ज्वः	अञ्ज्मः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	आनक्-ग्	आङ्क्ताम्	आञ्जन्
म०	आनक्-ग्	आङ्क्तम्	आङ्क्त
उ०	आनजम्	आञ्ज्व	आञ्ज्म

लोट् 'Imperative'.

प्र०	अनक्तु	अङ्क्ताम्	अञ्जन्तु
म०	अङ्ग्धि	अङ्क्तम्	अङ्क्त
उ०	अनजानि	अनजाव	अनजाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	अञ्ज्यात्	अञ्ज्याताम्	अञ्ज्युः
म०	अञ्ज्याः	अञ्ज्यातम्	अञ्ज्यात
उ०	अञ्ज्याम्	अञ्ज्याव	अञ्ज्याम

हिंस् 'kill, मारना' परस्मै०

लट् 'Present'.

प्र०	हिनस्ति	हिंस्तः	हिंसन्ति
म०	हिनस्सि	हिंस्थः	हिंस्थ
उ०	हिनस्मि	हिंस्वः	हिंस्मः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अहिनत्-द्	अहिंस्ताम्	अहिंसन्
म०	अहिनत्-द् अहिनः	अहिंस्तम्	अहिंस्त
उ०	अहिनसम्	अहिंस्व	अहिंस्म

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोट् 'Imperative'.

प्र०	हिनस्तु	हिंस्ताम्	हिंसन्तु
म०	हिन्धि	हिंस्तम्	हिंस्त
उ०	हिनसानि	हिनसाव	हिनसाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	हिंस्यात्	हिंस्याताम्	हिंस्युः
म०	हिंस्याः	हिंस्यातम्	हिंस्यात
उ०	हिंस्याम्	हिंस्याव	हिंस्याम

ऐसे ही भञ्ज् प० 'split, तोड़ना' (भनक्ति), इन्ध् आ० 'kindle, जलाना' (इन्धे), उन्द् प० 'wet, गीला करना' (उनत्ति), इत्यादि के रूप जानो।

अभ्यास १८.

संस्कृत में अनुवाद करो :—

दशरथ ने राम का युवराज-पद पर अभिषेक किया (अञ्ज्)। इस आदमी को किसी काम पर लगा दीजिए (नि-युज्)। आप के अपने काम ही आपकी मूर्खता को ज़ाहिर करते हैं (वि-अञ्ज्)। कन्नौज का राजा जयचंद मुहम्मद गौरी से जा मिला (युज्)। ब्रह्मचारी प्रातःकाल ही हवन के लिए आग जलाए (इन्ध्)। थोड़े ही काल में वह वेदान्त-विद्या में प्रसिद्ध हो गया (वि-शिष्)। पोरस ने सिकंदर को सेना को बहादुरी से रोका (रुध्)। इन पत्थर के टुकड़ों का चूरा कर डालो (पिष्)। पशुओं की हिंसा मत कर (हिंस्)। हमें सदा सच के लिए यत्न करना चाहिए (उद्-युज्)। मछुए ने मछली के टुकड़े कर दिए (छिद्)। दुष्ट लोग मित्रों को भी फाड़ देते हैं (भिद्)। भीम ने टुकड़े से दुर्योधन की जंघाओं को तोड़ डाला (भिद्)। आज हमारे घर भोजन कीजिए (भुज्)। अंगरेजों ने बड़ी सावधानी से डनकर्क (Dunkirk) को खाली कर दिया (रिच्)। अच्छी शक्ल का अच्छे स्वभाव से भेद नहीं होता (भिद्)। उसका शरीर भय से कांप रहा था (विज्)। हमें दुष्टों की संगति छोड़ देनी चाहिए। (वृज्)। पिसन्हारी आटा पीस रही है (पिष्)। यह आम खा (भुज्)। लोहार लोहे के दो टुकड़ों को मिलाता है (युज्, पृच्)

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अदादि-गण।

१३६. अदादि गण की धातुओं को कोई विकरण नहीं लगता। प्रत्यय सीधे धातुओं पर लगते हैं।[1] पित् (strong) प्रत्ययों से पूर्व धातु को गुण होता है। जैसे, अद्—अत्ति, इ—एति, लिह्—लेढि।

(क) आकारान्त धातुओं को लङ् के प्रथमपु० बहु० में अन् के स्थान में उस् विकल्प से लगता है। जैसे, या—अयुः या अयान्।

धातुरूपावली

अद् 'eat, खाना' परस्मैपदी।

लट् 'Present'.

प्र०	अत्ति	अत्तः	अदन्ति
म०	अत्सि	अत्थः	अत्थ
उ०	अद्मि	अद्वः	अद्मः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	आदत्[2]	आत्ताम्	आदन्
म०	आदः[2]	आत्तम्	आत्त
उ०	आदम्	आद्व	आद्म

लोट् 'Imperative'.

प्र०	अत्तु	अत्ताम्	अदन्तु
म०	अद्धि	अत्तम्	अत्त
उ०	अदानि	अदाव	अदाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	अद्यात्	अद्याताम्	अद्युः
म०	अद्याः	अद्यातम्	अद्यात
उ०	अद्याम	अद्याव	अद्याम

या 'go, जाना' परस्मै०

लट् 'Present'.

प्र०	याति	यातः	यान्ति

---

१. अदिप्रभृतिभ्यः शपः। २. ४. ७२।

२. अद् धातु को प्रत्यय के 'त्, स्' से पूर्व 'अ' का आगम होता है। (अदः सर्वेषाम्)।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म०	यासि	याथः	याथ
उ०	यामि	यावः	यामः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अयात्	अयाताम्	अयान्, अयुः
म०	अयाः	अयातम्	अयात
उ०	अयाम्	अयाव	अयाम

लोट् 'Imperative'.

प्र०	यातु	याताम्	यान्तु
म०	याहि	यातम्	यात
उ०	यानि	याव	याम

विधिलिङ् 'potential'.

प्र०	यायात्	यायाताम्	यायुः
म०	यायाः	यायातम्	यायात
उ०	यायाम्	यायाव	यायाम

पा 'protect, रक्षा करना', भा 'shine, चमकना', मा० 'measure, नापना', प्रा० 'fill, भरना', स्ना 'bathe, नहाना', वा 'blow, चलना', ला 'take, लेना', रा 'give, देना', श्रा 'cook, पकाना', इत्यादि परस्मैपदी धातुओं के रूप या की भांति जानो।

इ[1] 'go, जाना' परस्मैपद

लट् 'Present'.

प्र०	एति	इतः	यन्ति
म०	एषि	इथः	इथ
उ०	एमि	इवः	इमः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	ऐत्	ऐताम्	आयन्
म०	ऐः	ऐतम्	ऐत
उ०	आयम्	ऐव	ऐम

लोट् 'Imperative'.

प्र०	एतु	इताम्	यन्तु

१. अजादि प्रत्ययों से पूर्व इ को य् हो जाता है (इणो यण्)।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म०	इहि	इतम्	इत
उ०	अयानि	अयाव	अयाम

विधिलिङ् 'potential'.

प्र०	इयात्	इयाताम्	इयुः
म०	इयाः	इयातम्	इयात
उ०	इयाम्	इयाव	इयाम

दुह् 'milk, दुहना' उभय०

परस्मै० लट् 'Present'.

प्र०	दोग्धि	दुग्धः	दुहन्ति
म०	धोक्षि	दुग्धः	दुग्ध
उ०	दोह्मि	दुह्वः	दुह्मः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अधोक्-ग्	अदुग्धाम्	अदुहन्
म०	अधोक्-ग्	अदुग्धम्	अदुग्ध
उ०	अदोहम्	अदुह्व	अदुह्म

लोट् 'Imperative'.

प्र०	दोग्धु	दुग्धाम्	दुहन्तु
म०	दुग्धि	दुग्धम्	दुग्ध
उ०	दोहानि	दोहाव	दोहाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	दुह्यात्	दुह्याताम्	दुह्युः
म०	दुह्याः	दुह्यातम्	दुह्यात
उ०	दुह्याम्	दुह्याव	दुह्याम

आत्मने०

लट् 'Present'.

प्र०	दुग्धे	दुहाते	दुहते
म०	धुक्षे	दुहाथे	दुग्ध्वे
उ०	दुहे	दुह्वहे	दुह्महे

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अदुग्ध	अदुहाताम्	अदुहत
म०	अदुग्धाः	अदुहाथाम्	अदुग्ध्वम्

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उ०	अदुहि	अदुह्वहि	अदुह्महि

लोट् 'Imperative'.

प्र०	दुग्धाम्	दुहाताम्	दुहताम्
म०	धुक्ष्व	दुहाथाम्	धुग्ध्वम्
उ०	दोहै	दोहावहै	दोहामहै

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	दुहीत	दुहीयाताम्	दुहीरन्
म०	दुहीथाः	दुहीयाथाम्	दुहीध्वम्
उ०	दुहीय	दुहीवहि	दुहीमहि

लिह् 'lick, चाटना' उभय०

परस्मै० लट् 'Present'.

प्र०	लेढि	लीढः	लिहन्ति
म०	लेक्षि	लीढः	लीढ
उ०	लेह्मि	लिह्वः	लिह्मः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अलेट्-ड्	अलीढाम्	अलिहन्
म०	अलेट्-ड्	अलीढम्	अलीढ
उ०	अलेहम्	अलिह्व	अलिह्म

लोट् 'Imperative'.

प्र०	लेढु	लीढाम्	लिहन्तु
म०	लीढि	लीढम्	लीढ
उ०	लेहानि	लेहाव	लेहाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	लिह्यात्	लिह्याताम्	लिह्युः
म०	लिह्याः	लिह्यातम्	लिह्यात
उ०	लिह्याम्	लिह्याव	लिह्याम

आत्मने० लट् 'Present'.

प्र०	लीढे	लिहाते	लिहते
म०	लिक्षे	लिहाथे	लीढ्वे
उ०	लिहे	लिह्वहे	लिह्महे

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अलीढ	अलिह्वाताम्	अलिह्त
म०	अलीढाः	अलिह्वाथाम्	अलीढ्वम्
उ०	अलिह्वि	अलिह्वहि	अलिह्महि

लोट् 'Imperative.'

प्र०	लीढाम्	लिह्वाताम्	लिह्ताम्
म०	लिक्ष्व	लिह्वाथाम्	लीढ्वम्
उ०	लेहै	लेह्वावहै	लेह्वामहै

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	लिहीत	लिहीयाताम्	लिहीरन्
म०	लिहीथाः	लिहीयाथाम्	लिहीध्वम्
उ०	लिहीय	लिहीवहि	लिहीमहि

१३७. (१) रुद् , स्वप् , श्वस् , अन् और जक्ष इन पांच धातुओं में हलादि प्रत्ययों (त्, स्) से पूर्व इ का आगम होता है, परन्तु **यकारादि** प्रत्ययों (विधिलिङ्) में नहीं ।

परन्तु लङ् के त् और स् (म० प्र० एक० परस्मै०) से पूर्व ई य अ का आगम होता है ।

रुद् 'weep, रोना' परस्मैपद

लट् 'Present'.

प्र०	रोदिति	रुदितः	रुदन्ति
म०	रोदिषि	रुदिथः	रुदिथ
उ०	रोदिमि	रुदिवः	रुदिमः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अरोदीत् अरोदत्	अरुदिताम्	अरुदन्
म०	अरोदीः, अरोदः	अरुदितम्	अरुदित
उ०	अरोदम्	अरुदिव	अरुदिम

लोट् 'Imperative'.

प्र०	रोदितु	रुदिताम्	रुदन्तु
म०	रुदिहि	रुदितम्	रुदित

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उ०	रोदानि	रोदाव	रोदाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	रुद्यात्	रुद्याताम्	रुद्युः
म०	रुद्याः	रुद्यातम्	रुद्यात
उ०	रुद्याम्	रुद्याव	रुद्याम

अन् 'breathe, सांस लेना' परस्मैपद ।

लट् 'Present'.

प्र०	अनिति	अनितः	अनन्ति
म०	अनिषि	अनिथः	अनिथ
उ०	अनिमि	अनिवः	अनिमः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	आनीत्, आनत्	आनिताम्	आनन्
म०	आनीः, आनः	आनितम्	आनित
उ०	आनम्	आनिव	आनिम

लोट् 'Imparative'.

प्र०	अनितु	अनिताम्	अनन्तु
म०	अनिहि	अनितम्	अनित
उ०	अनानि	अनाव	अनाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	अन्यात्	अन्याताम्	अन्युः
म०	अन्याः	अन्यातम्	अन्यात
उ०	अन्याम्	अन्याव	अन्याम

स्वप् 'Sleep, सोना' परस्मैपद ।

लट् 'Present'.

प्र०	स्वपिति	स्वपितः	स्वपन्ति
म०	स्वपिषि	स्वपिथः	स्वपिथ
उ०	स्वपिमि	स्वपिवः	स्वपिमः

लङ् 'Imprefect'.

प्र०	अस्वपीत्-पत्	अस्वपिताम्	अस्वपन्
म०	अस्वपीः-पः	अस्वपितम्	अस्वपित
उ०	अस्वपम्	अस्वपिव	अस्वपिम

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोट् 'Imperative'.

प्र०	स्वपितु	स्वपिताम्	स्वपन्तु
म०	स्वपिहि	स्वपितम्	स्वपित
उ०	स्वपानि	स्वपाव	स्वपाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	स्वप्यात्	स्वप्याताम्	स्वप्युः
म०	स्वप्याः	स्वप्यातम्	स्वप्यात
उ०	स्वप्याम्	स्वप्याव	स्वप्याम

ऐसे ही श्वस् प० 'breathe, सांस लेना' (श्वसिति) और जक्ष् आ० 'speak, बोलना' (चष्टे) के रूप जानो।

(२) ईश् आ० 'rule, शासन करना' और ईड् आ० 'praise, स्तुति करना' को प्रत्यय के स् और ध् से पूर्व इ का आगम होता है, परन्तु लङ् के म० बहुवचन में नहीं होता।

ईश् 'rule' आत्मने०

लट् 'Present'.

प्र०	ईष्टे	ईशाते	ईशते
म०	ईशिषे	ईशाथे	ईशिध्वे
उ०	ईशे	ईश्वहे	ईश्महे

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	ऐष्ट	ऐशाताम्	ऐशत
म०	ऐष्ठाः	ऐशाथाम्	ऐड्ढ्वम्
उ०	ऐशि	ऐश्वहि	ऐश्महि

लोट् 'Imperative'.

प्र०	ईष्टाम्	ईशाताम्	ईशताम्
म०	ईशिष्व	ईशाथाम्	ईशिध्वम्
उ०	ईशै	ईशावहै	ईशामहै

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	ईशीत	ईशीयाताम्	ईशीरन्
म०	ईशीथाः	ईशीयाथाम्	ईशीध्वम्
उ०	ईशीय	ईशीवहि	ईशीमहि

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) ब्रू उ० 'speak, बोलना' को हलादि पित् प्रत्यय परे होने पर ई का आगम होता है ।

परस्मै० लट् 'Present'.

प्र०	ब्रवीति	ब्रूतः	ब्रुवन्ति
म०	ब्रवीषि	ब्रूथः	ब्रूथ
उ०	ब्रवीमि	ब्रूवः	ब्रूमः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अब्रवीत्	अब्रूताम्	अब्रुवन्
म०	अब्रवीः	अब्रूतम्	अब्रूत
उ०	अब्रवम्	अब्रूव	अब्रूम

लोट् 'Imperative'.

प्र०	ब्रवीतु	ब्रूताम्	ब्रुवन्तु
म०	ब्रूहि	ब्रूतम्	ब्रूत
उ०	ब्रवाणि	ब्रवाव	ब्रवाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	ब्रूयात्	ब्रूयाताम्	ब्रूयुः
म०	ब्रूयाः	ब्रूयातम्	ब्रूयात
उ०	ब्रूयाम्	ब्रूयाव	ब्रूयाम

आत्मने० लट् 'Present'.

प्र०	ब्रूते	ब्रुवाते	ब्रुवते
म०	ब्रूषे	ब्रूवाथे	ब्रूध्वे
उ०	ब्रुवे	ब्रूवहे	ब्रूमहे

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अब्रूत	अब्रुवाताम्	अब्रुवत
म०	अब्रूथाः	अब्रुवाथाम्	अब्रूध्वम्
उ०	अब्रुवि	अब्रूवहि	अब्रूमहि

लोट् 'Imperative'.

प्र०	ब्रूताम्	ब्रुवाताम्	ब्रुवताम्
म०	ब्रूष्व	ब्रुवाथाम्	ब्रूध्वम्
उ०	ब्रवै	ब्रवावहै	ब्रवामहै

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	ब्रुवीत	ब्रुवीयाताम्	ब्रुवीरन्
म०	ब्रुवीथाः	ब्रुवीयाथाम्	ब्रुवीध्वम्
उ०	ब्रुवीय	ब्रुवीवहि	ब्रुवीमहि

अधि–इ (अधी) 'read, पढ़ना' आत्मने० के ई को लट् और लङ् में ईय और ऐय हो जाता है यदि अजादि प्रत्यय परे हों।

लट् 'Present'.

प्र०	अधीते	अधीयाते	अधीयते
म०	अधीषे	अधीयाथे	अधीध्वे
उ०	अधीये	अधीवहे	अधीमहे

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अध्यैत	अध्यैयाताम्	अध्यैयत
म०	अध्यैथाः	अध्यैयाथाम्	अध्यैध्वम्
उ०	अध्यैयि	अध्यैवहि	अध्यैमहि

लोट् 'Imperative'.

प्र०	अधीताम्	अधीयाताम्	अधीयताम्
म०	अधीष्व	अधीयाथाम्	अधीध्वम्
उ०	अध्ययै	अध्ययावहै	अध्ययामहै

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	अधीयीत	अधीयीयाताम्	अधीयीरन्
म०	अधीयीथाः	अधीयीयाथाम्	अधीयीध्वम्
उ०	अधीयीय	अधीयीवहि	अधीयीमहि

१३८. नीचे लिखे धातुओं में विशेष वृद्धि होती है:—

(१) उकारान्त धातुओं को हलादि पित् प्रत्ययों से पूर्व गुण के स्थान पर वृद्धि होती है। जैसे,

नु 'Praise, स्तुति करना' परस्मै०

लट् 'present'.

प्र०	नौति	नुतः	नुवन्ति
म०	नौषि	नुथः	नुथ
उ०	नौमि	नुवः	नुमः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अनौत्	अनुताम्	अनुवन्
म०	अनौः	अनुतम्	अनुत
उ०	अनवम्	अनुव	अनुम इत्यादि

(२) मृज् प० 'cleanse, साफ़ करना' को गुण के स्थान पर वृद्धि होती है। जैसे,

लट् 'Present'. परस्मै०

प्र०	मार्ष्टि	मृष्टः	मार्जन्ति, मृजन्ति
म०	मार्क्षि	मृष्ठः	मृष्ठ
उ०	मार्ज्मि	मृज्वः	मृज्मः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अमार्ट्–ड्	अमृष्टाम्	अमार्जन्, अमृजन्
म०	अमार्ट्-ड्	अमृष्टम्	अमृष्ट
उ०	अमार्जम्	अमृज्व	अमृज्म

लोट् 'Imperative'.

प्र०	मार्ष्टु	मृष्टाम्	मार्जन्तु, मृजन्तु
म०	मृड्ढि	मृष्टम्	मृष्ट
उ०	मार्जानि	मार्जाव	मार्जाम

विधिलिङ् 'potential'.

प्र०	मृज्यात्	मृज्याताम्	मृज्युः
म०	मृज्याः	मृज्यातम्	मृज्यात
उ०	मृज्याम्	मृज्याव	मृज्याम

(३) शी आ० 'sleep, lie down, सोना, लेटना' को सार्वधातुकों में गुण होता है। अपित् (weak) प्रत्ययों से पूर्व भी गुण होता है शी को अते, अताम्, अत (लट्, लङ्, लोट् के प्र० बहु०) प्रत्ययों से पूर्व र् का आगम होता है।

लट् 'present'.

प्र०	शेते	शयाते	शेरते
म०	शेषे	शयाथे	शेध्वे
उ०	शये	शेवहे	शेमहे

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अशेत	अशयाताम्	अशेरत
म०	अशेथाः	अशयाथाम्	अशेध्वम्
उ०	अशयि	अशेवहि	अशेमहि

लोट् 'Imperative'.

प्र०	शेताम्	शयाताम्	शेरताम्
म०	शेष्व	शयाथाम्	शेध्वम्
उ०	शयै	शयावहै	शयामहै

विधिलिङ् 'potential'.

प्र०	शयीत	शयीयाताम्	शयीरन्
म०	शयीथाः	शयीयाथाम्	शयीध्वम्
उ०	शयीय	शयीवहि	शयीमहि

१३८. नीचे लिखी धातुओं में कुछ हानि या लोप (weakened) होता है:—

(१) वश् 'desire चाहना' परस्मै० को अपित प्रत्ययों से पूर्व सम्प्रसारण हो जाता है। जैसे.

लट् 'Present'.

प्र०	वष्टि	उष्टः	उशन्ति
म०	वक्षि	उष्ठः	उष्ठ
उ०	वश्मि	उश्वः	उश्मः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अवट्-ड्	औष्टाम्	औशन्
म०	अवट्-ड्	औष्टम्	औष्ट
उ०	अवशम्	औश्व	औश्म

लोट् 'Imperative'.

प्र०	वष्टु	उष्टाम्	उशन्तु
म०	उड्ढि	उष्टम्	उष्ट
उ०	वशानि	वशाव	वशाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	उश्यात्	उश्याताम्	उश्युः
म०	उश्याः	उश्यातम्	उश्यात
उ०	उश्याम्	उश्याव	उश्याम

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) अस् 'be, होना' परस्मै० (आत्मने० कम) के अ का विधिलिङ् में सर्वत्र, लट् और लोट् में अपित् (weak) प्रत्ययों से पूर्व लोप हो जाता है। लङ् के म० और प्र० के एक० में इसे ई का आगम होता है।

परस्मै० लट् 'Present'. आत्मने०

प्र०	अस्ति	स्तः	सन्ति	स्ते	साते	सते
म०	असि	स्थः	स्थ	से	साथे	ध्वे
उ०	अस्मि	स्वः	स्मः	हे	स्वहे	स्महे

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	आसीत्	आस्ताम्	आसन्	आस्त	आसाताम्	आसत
म०	आसीः	आस्तम्	आस्त	आस्थाः	आसाथाम्	आध्वम्
उ०	आसम्	आस्व	आस्म	आसि	आस्वहि	आस्महि

लोट् 'Imperative'.

प्र०	अस्तु	स्ताम्	सन्तु	स्ताम्	साताम्	सताम्
म०	एधि	स्तम्	स्त	स्व	साथाम्	ध्वम्
उ०	असानि	असाव	असाम	असै	असावहै	असामहै

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	स्यात्	स्याताम्	स्युः	सीत	सीयाताम्	सीरन्
म०	स्याः	स्यातम्	स्यात	सीथाः	सीयाथाम्	सीध्वम्
उ०	स्याम्	स्याव	स्याम	सीय	सीवहि	सीमहि

(क) आस् आ० 'sit, बैठना', के स् का ध्व से पूर्व लोप हो जाता है।

लट् 'Present'. आत्मने०

प्र०	आस्ते	आसाते	आसते
म०	आस्से	आसाथे	आध्वे
उ०	आसे	आस्वहे	आस्महे

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	आस्त	आसाताम्	आसत
म०	आस्थाः	आसाथाम्	आध्वम्
उ०	आसि	आस्वहि	आस्महि

लोट् 'Imperative'.

प्र०	आस्ताम्	आसाताम्	आसताम्

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म०	आस्व	आसाथाम्	आध्वम्
उ०	आसै	आसावहै	आसामहै

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	आसीत	आसीयाताम्	आसीरन्
म०	आसीथाः	आसीयाथाम्	आसीध्वम्
उ०	आसीय	आसीवहि	आसीमहि

ऐसे ही वस् 'dress, पहनना' आत्मने० (वस्ते) के रूप जानो।

(३) हन् परस्मै० 'kill, मारना', के न् का अनुनासिक और अन्तस्थों के अतिरिक्त, हलादि अपित् (weak) प्रत्ययों से पूर्व (अर्थात् त्, थ् से पूर्व) लोप हो जाता है।

अजादि प्रत्ययों (लट्, लङ् और लोट् के प्र० बहु०) से पूर्व इसके अ का लोप हो कर इसके ह् को घ् हो जाता है। लोट् के म० एकवचन में जहि रूप बनता है। जैसे,

लट् 'Present'. परस्मै०

प्र०	हन्ति	हतः	घ्नन्ति
म०	हंसि	हथः	हथ
उ०	हन्मि	हन्वः	हन्मः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अहन्	अहताम्	अघ्नन्
म०	अहन्	अहतम्	अहत
उ०	अहनम्	अहन्व	अहन्म

लोट् 'Imperative'.

प्र०	हन्तु	हताम्	घ्नन्तु
म०	जहि	हतम्	हत
उ०	हनानि	हनाव	हनाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः
म०	हन्याः	हन्यातम्	हन्यात
उ०	हन्याम्	हन्याव	हन्याम

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१४०. (१) जागृ परस्मै० 'wake, जागना', दरिद्रा परस्मै० 'be poor, कंगाल होना', जक्ष् प० 'eat, खाना', चकास् उभय० 'shine, चमकना', और शास् 'rule', को लट् और लोट् के प्र० बहुवचन में क्रमशः अति और अतु (न् के लोप से) और लङ् के प्र० बहु० में उस् (अन् के स्थान में) प्रत्यय लगते हैं ।

जागृ 'wake जगाना' परस्मै०

लट् 'Present'.

प्र०	जागर्ति	जागृतः	जाग्रति
म०	जागर्षि	जागृथः	जागृथ
उ०	जागर्मि	जागृवः	जागृमः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अजागः	अजागृताम्	अजागरुः
म०	अजागः	अजागृतम्	अजागृत
उ०	अजागरम्	अजागृव	अजागृम

लोट् 'Imperative'.

प्र०	जागर्तु	जागृताम्	जाग्रतु
म०	जागृहि	जागृतम्	जागृत
उ०	जागराणि	जागराव	जागराम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	जागृयात्	जागृयाताम्	जागृयुः
म०	जागृयाः	जागृयातम्	जागृयात
उ०	जागृयाम्	जागृयाव	जागृयाम

(२) शास् परस्मै० 'rule, शासन करना' के आ को हलादि अपित् (weak) प्रत्ययों से पूर्व इ (शिष्) होता है और लोट् म० एक० के प्रत्यय धि से पूर्व इसे शा हो जाता है ।

लट् 'Present'. परस्मै०

प्र०	शास्ति	शिष्टः	शासति
म०	शास्सि	शिष्ठः	शिष्ठ
उ०	शास्मि	शिष्वः	शिष्मः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लङ् Imperfect'.

प्र०	अशात्-द्	अशिष्टाम्	अशासुः
म०	अशात्-द्, अशाः	अशिष्टम्	अशिष्ट
उ०	अशासम्	अशिष्व	अशिष्म

लोट् 'Imperative',

प्र०	शास्तु	शिष्टाम्	शासतु
म०	शाधि	शिष्टम्	शिष्ट
उ०	शासानि	शासाव	शासाम

विधिलिङ् 'potential'.

प्र०	शिष्यात्	शिष्याताम्	शिष्युः
म०	शिष्याः	शिष्यातम्	शिष्यात
उ०	शिष्याम्	शिष्याव	शिष्याम

१४१. (१) विद् परस्मै० 'know, जानना' धातु से परे लट् (Present) के अर्थ में विकल्प से लिट् (Perfect) के प्रत्यय आते हैं। लोट् (Impv.) में इसे विकल्प से आम् लगाकर कृ धातु के लोट् के रूप अनुप्रयुक्त होते हैं।

लट् 'Present'. परस्मै०

प्र०	वेत्ति, वेद	वित्तः, विदतुः	विदन्ति, विदुः
म०	वेत्सि, वेत्थ	वित्थः, विदथुः	वित्थ, विद
उ०	वेद्मि, वेद	विद्वः, विद्व	विद्मः, विद्म

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अवेत्-द्	अवित्ताम्	अविदुः
म०	अवेत्-द्, अवेः	अवित्तम्	अवित्त
उ०	अवेदम्	अविद्व	अविद्म

लोट् 'Imperative'.

प्र०	वेत्तु	वित्ताम्	विदन्तु	विदाङ्करोतु	०रुताम्	०र्वन्तु
म०	विद्धि	वित्तम्	वित्त	विदाङ्कुरु	०रुतम्	०रुत
उ०	वेदानि	वेदाव	वेदाम	विदाङ्करवाणि	०रवाव	०रवाम

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	विद्यात्	विद्याताम्	विद्युः
म०	विद्याः	विद्यातम्	विद्यात
उ०	विद्याम्	विद्याव	विद्याम

(२) **वच्** परस्मै० 'speak, बोलना' के लट् का प्रथमपु० बहु० नहीं होता। अन्य आचार्यों के मतानुसार लट् के तीनों पुरुषों के बहु वचन या सभी बहुवचन के रूप नहीं होते।

लट् 'Present'.

प्र०	वक्ति	वक्तः	—
म०	वक्षि	वक्थः	वक्थ
उ०	वच्मि	वच्वः	वच्मः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अवक-ग्	अवक्ताम्	अवचन्
म०	अवक्-ग्	अवक्तम्	अवक्त
उ०	अवचम्	अवच्व	अवच्म

लोट् 'Imperative'.

प्र०	वक्तु	वक्ताम्	वचन्तु
म०	वग्धि	वक्तम्	वक्त
उ०	वचानि	वचाम	वचाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	वच्यात्	वच्याताम्	वच्युः
म०	वच्याः	वच्यातम्	वच्यात
उ०	वच्याम्	वच्याव	वच्याम्

(३) **स्तु** उभय० 'praise, स्तुति करना' के रूप **नु** की भाँति होते हैं, परन्तु हलादि प्रत्ययों से पूर्व विकल्प से ई का आगम होता है। नीचे कुछ वैकल्पिक रूप दिए हैं;—

परस्मै० लट् 'Present'.

प्र०	स्तवीति	स्तुवीतः	स्तुवन्ति
म०	स्तवीषि	स्तुवीथः	स्तुवीथ
उ०	स्तवीमि	स्तुवीवः	स्तुवीमः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोट् 'Imperative'.

प्र०	स्तवीत्	स्तुवीताम्	स्तुवन्तु
म०	स्तुवीहि	स्तुवीतम्	स्तुवीत
उ०	स्तवानि	स्तवाव	स्तवाम इत्यादि

आत्मनेपद लट् 'Present'.

प्र०	स्तुवीते	स्तुवाते	स्तुवते
म०	स्तुवीषे	स्तुवाथे	स्तुध्वे
उ०	स्तुवे	स्तुवीवहे	स्तुवीमहे

लोट् 'Imperative'.

प्र०	स्तुवीताम्	स्तुवाताम्	स्तुवताम्
म०	स्तुवीष्व	स्तुवाथाम्	स्तुवीध्वम्
उ०	स्तवै	स्तवावहै	स्तवामहै

(४) सू आत्मने० 'give birth to, पैदा करना' को पित् प्रत्ययों से पूर्व भी गुण नहीं होता ।

आत्मने० लट् 'Present'.

प्र०	सूते	सुवाते	सुवते
म०	सूषे	सुवाथे	सूध्वे
उ०	सुवे	सूवहे	सूमहे

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	असूत	असुवाताम्	असुवत
म०	असूथाः	असुवाथाम्	असूध्वम्
उ०	असुवि	असूवहि	असूमहि

लोट् 'Imperative'.

प्र०	सूताम्	सुवाताम्	सुवताम्
म०	सूष्व	सुवाथाम्	सूध्वम्
उ०	सुवै	सुवावहै	सुवामहै

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	सुवीत	सुवीयाताम्	सुवीरन्
म०	सुवीथाः	सुवीयाथाम्	सुवीध्वम्
उ०	सुवीय	सुवीवहि	सुवीमहि

CC-0. In Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(५) द्विष् 'hate, द्वेष करना' उभय० को लङ् के प्र० बहु० परस्मै० में उस् प्रत्यय विकल्प से लगता है।

परस्मै० लट् 'Present'.

प्र०	द्वेष्टि	द्विष्टः	द्विषन्ति
म०	द्वेक्षि	द्विष्ठः	द्विष्ठ
उ०	द्वेष्मि	द्विष्वः	द्विष्मः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अद्वेट्-ड्	अद्विष्टाम्	अद्विषन्, अद्विषुः
म०	अद्वेट्-ड्	अद्विष्टम्	अद्विष्ट
उ०	अद्वेषम्	अद्विष्व	अद्विष्म

लोट् 'Imperative'.

प्र०	द्वेष्टु	द्विष्टाम्	द्विषन्तु
म०	द्विड्ढि	द्विष्टम्	द्विष्ट
उ०	द्वेषाणि	द्वेषाव	द्वेषाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	द्विष्यात्	द्विष्याताम्	द्विष्युः
म०	द्विष्याः	द्विष्यातम्	द्विष्यात
उ०	द्विष्याम्	द्विष्याव	द्विष्याम

आत्मने० लट् 'Present'.

प्र०	द्विष्टे	द्विषाते	द्विषते
म०	द्विक्षे	द्विषाथे	द्विड्ढ्वे
उ०	द्विषे	द्विष्वहे	द्विष्महे

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अद्विष्ट	अद्विषाताम्	अद्विषत
म०	अद्विष्ठाः	अद्विषाथाम्	अद्विड्ढ्वम्
उ०	अद्विषि	अद्विष्वहि	अद्विष्महि

लोट् 'Imperative'.

प्र०	द्विष्टाम्	द्विषाताम्	द्विषताम्
म०	द्विक्ष्व	द्विषाथाम्	द्विड्ढ्वम्
उ०	द्वेषै	द्वेषावहै	द्वेषामहै

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	द्विषीत	द्विषीयाताम्	द्विषीरन्
म०	द्विषीथाः	द्विषीयाथाम्	द्विषीध्वम्
उ०	द्विषीय	द्विषीवहि	द्विषीमहि

अभ्यास १९

संस्कृत में अनुवाद करोः—

आपने बड़े परिश्रम से पढ़ाई की (अधि-इ) और आपका परिश्रम सफल हुआ (सफलतां या)। वे मुझे अच्छी तरह जानते हैं (विद्)। जो दूसरों से द्वेष करता है (द्विष्) वह बदनाम होता है (वाच्यतां या) शत्रुओं को मार (हन्) और मित्रों की प्रशंसा कर (ईड्)। अब आप सो जाइए (स्वप्)। नौकर से कह (वच्) कि वह बर्तन साफ करे (मृज्)। कष्ट आने पर भी मत रोओ (रुद्)। वहाँ इतनी भीड़ थी (अस्) कि लोग सांस भी मुश्किल से लेते थे (अन्)। विपत्ति में धीरज धरो (आ-श्वस्)। सुकरात ने विष को चाट लिया (लिह्) और स्वर्ग को सिधार गया (इ)। सीता ने कुश और लव को जन्म दिया (सू)। इस गौ को कितनी बार दूहते हो (दुह्)। हमें गुणों की प्रशंसा करनी चाहिये (स्तु)। आज मैं सवेरे चार बजे जागा (जागृ)। उसके बाप-दादा बड़े अमीर थे (अस्) परन्तु अब वह ग़रीब हो गया है (दरिद्रा)। इस सड़क के किनारे एक कुटिया थी (अस्) जिसमें एक जोगी रहा करता था (वस्)। आओ, अब आम खाएँ (अद्)। मुनि ने कहा—मेरी ओर से राजा को कह (ब्रू) कि वह अपनी प्रजा पर धर्म से हकूमत करे (शास्)। रात को वे सब ज़मीन पर ही सो गए (शी)। शाम तक यहीं बैठे रहो (आस्)। सदा धर्म की इच्छा कर (वश्)। इस देश पर कौन हुकूमत करता है (ईश्)। राजा लोग धर्म से प्रजा का पालन करें (पा)। लड़के तालाब में नहा रहे हैं (स्ना)। इस संसार के बनाने वाले को जान (विद्),

---

जुहोत्यादि-गण।

१४२. जुहोत्यादि गण की धातुओं पर कोई विकरण नहीं लगता। प्रत्यय सीधे धातु पर लगते हैं। इन धातुओं को द्वित्व (reduplication) होता है। पित् (strong) प्रत्ययों से पूर्व इन्हें गुण होता है। जैसे, हु—जुहोमि, जुहुमः।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) इस गण के लिए लट् और लोट् के प्र० बहु० परस्मै० के प्रत्ययों के न् का लोप हो जाता है और लङ् के प्र० बहु० परस्मै० में अन् के स्थान में उस् प्रत्यय लगता है। इस उस् से पूर्व धातु के अोन्त्य आ का लोप और इ, ई, उ, ऊ; ऋ, ॠ; को गुण होता है। जैसे, जुह्वति[1], अजुहवुः।

द्वित्व के नियम (Rules of Reduplication).

१४३. (क) अनेकाच् (polysyllabic) धातु के पूर्व एकाच् (first syllable) को द्वित्व होता है[2], अन्यथा पूरी धातु को। जैसे, बुध्—बु[3]बुध्, पत्—प-पत्। भृ—भृ-भृ।

(ख) द्वित्व होने से जो धातु का दुहरा रूप बनता है उनमें पहले की अभ्यास (reduplicative syllable) संज्ञा है।[4]

(ग) अभ्यास के महाप्राण (aspirate) को अल्पप्राण (unaspirate) हो जाता है।[5] जैसे, भिद्—भिभिद्, बिभिद्।

(घ) दीर्घ स्वर को अभ्यास में ह्रस्व हो जाता है[6]। जैसे, दा-दा, ददा। धा—दधा।

(ङ) ऋ या ॠ को अभ्यास में इ हो जाता है। जैसे, भृ—भृ-भृ, बृ-भृ, बिभृ। पृ—पिपृ।

(च) अभ्यास में कवर्ग को चवर्ग और ह् को ज् हो जाता है[7]। जैसे, हु—हु-हु, जुहु।

धातुरूपावली।

हु 'sacrifice. हवन करना' परस्मै०।

लट् 'Present'.

प्र०	जुहोति	जुहुतः	जुह्वति
म०	जुहोषि	जुहुथः	जहुथ
उ०	जुहोमि	जुहुवः	जुहुमः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अजुहोत्	अजुहुताम्	अजुहवुः

१. यहां उ को व हो गया। देखो १३२ (ग)।

२. एकाचो द्वे प्रथमस्य। ६. १. १।

३. यहां अच् में पूर्ववर्ती व्यंजन भी शामिल है।

४. पूर्वोऽभ्यासः। ६. १. ४। ५. अभ्यासे चर्च। ८. ४. ५४।

६. ह्रस्वः। ७. ४. ५९। ७. कुहोश्चुः। ७. ४. ६२।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म०	अजुहोः	अजुहुतम्	अजुहुत
उ०	अजुहवम्	अजुहुव	अजुहुम

लोट् 'Imperative'.

प्र०	जुहोतु	जुहुताम	जुह्वतु
म०	जुहुधि	जुहुतम्	जुहुत
उ०	जुहवानि	जुहवाव	जुहवाम

विधिलिङ 'Potential'.

प्र०	जुहुयात्	जुहुयाताम्	जुहुयुः
म०	जुहुयाः	जुहुयातम	जुहुयात
उ०	जुहुयाम्	जुहुयाव	जुहुयाम

ह्री 'be ashamed, शरमिंदा होना' परस्मै०

लट् 'Present'.

प्र०	जिह्रेति	जिह्रीतः	जिह्रियति
म०	जिह्रेषि	जिह्रीथः	जिह्रीथ
उ०	जिह्रेमि	जिह्रीवः	जिह्रीमः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अजिह्रेत्	अजिह्रीताम्	अजिह्रयुः
म०	अजिह्रेः	अजिह्रीतम्	अजिह्रीत
उ०	अजिह्रियम्	अजिह्रीव	अजिह्रीम

लोट् 'Imperative'.

प्र०	जिह्रेतु	जिह्रीताम्	जिह्रियतु
म०	जिह्रीहि	जिह्रीतम्	जिह्रीत
उ०	जिह्रियाणि	जिह्रियाव	जिह्रियाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	जिह्रीयात्	जिह्रीयाताम्	जिह्रीयुः
म०	जिह्रीयाः	जिह्रीयातम्	जिह्रीयात
उ०	जिह्रीयाम्	जिह्रीयाव	जिह्रीयाम

पॄ 'fill, protect, भरना, रक्षा करना' परस्मै०

लट् 'Present'.

प्र०	पिपर्ति	पिपृतः	पिप्रति
म०	पिपर्षि	पिपृथः	पिपृथ

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उ०	पिपर्मि	पिपृवः	पिपृमः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अपिपः	अपिपृताम्	अपिपरुः
म०	अपिपः	अपिपृतम्	अपिपृत
उ०	अपिपरम्	अपिपृव	अपिपृम

लोट् 'Imperative'.

प्र०	पिपर्तु	पिपृताम्	पिप्रतु
म०	पिपृहि	पिपृतम्	पिपृत
उ०	पिपराणि	पिपराव	पिपराम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	पिपृयात्	पिपृयाताम्	पिपृयुः
म०	पिपृयाः	पिपृयातम्	पिपृयात
उ०	पिपृयाम्	पिपृयाव	पिपृयाम

भृ 'hold, maintain, पकड़ना, धारण करना' उभय०

आत्मने० लट् Present'.

प्र०	बिभृते	बिभ्राते	बिभ्रते
म०	बिभृषे	बिभ्राथे	बिभृध्वे
उ०	बिभ्रे	बिभृवहे	बिभृमहे

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अबिभृत	अबिभ्राताम्	अबिभ्रत
म०	अबिभृथाः	अबिभ्राथाम्	अबिभृध्वम्
उ०	अबिभ्रि	अबिभृवहि	अबिभृमहि

लोट् 'Imperative'.

प्र०	बिभृताम्	बिभ्राताम्	बिभ्रताम्
म०	बिभृष्व	बिभ्राथाम्	बिभृध्वम्
उ०	बिभरै	बिभरावहै	बिभरामहै

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	बिभ्रीत	बिभ्रीयाताम्	बिभ्रीरन्
म०	बिभ्रीथाः	बिभ्रीयाथाम्	बिभ्रीध्वम्
उ०	बिभ्रीय	बिभ्रीवहि	बिभ्रीमहि

परस्मै० में भृ के रूप पृ की भाँति जानो।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपवादक धातु

१४४. (क) दा और धा को द्वित्व होकर अपित् (weak) प्रत्ययों से पूर्व क्रमशः दद् और दध् होता है। दध् को प्रत्यय के स्, ध्व्, त् और थ् से पूर्व धत् हो जाता है। लोट् के म० एक० परस्मै० में इनके 'देहि' और 'धेहि' रूप बनते हैं।

दा 'give देना' उभय०

परस्मै० लट् 'Present'.

प्र०	ददाति	दत्तः	ददति
म०	ददासि	दत्थः	दत्थ
उ०	ददामि	दद्वः	दद्मः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अददात्	अदत्ताम्	अददुः
म०	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
उ०	अददाम्	अदद्व	अदद्म

लोट् 'Imperative'.

प्र०	ददातु	दत्ताम्	ददतु
म०	देहि	दत्तम्	दत्त
उ०	ददानि	ददाव	ददाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः
म०	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात
उ०	दद्याम्	दद्याव	दद्याम

आत्मनेपद लट् 'Present'.

प्र०	दत्ते	ददाते	ददते
म०	दत्से	ददाथे	दद्ध्वे
उ०	ददे	दद्वहे	दद्महे

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अदत्त	अददाताम्	अददत
म०	अदत्थाः	अददाथाम्	अदद्ध्वम्
उ०	अददि	अदद्वहि	अदद्महि

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोट् 'Imperative'.

प्र०	दत्ताम्	ददाताम्	ददताम्
म०	दत्स्व	ददाथाम्	दद्ध्वम्
उ०	ददै	ददावहै	ददामहै

विधिलिङ् 'potential'.

प्र०	ददीत	ददीयाताम्	ददीरन्
म०	ददीथाः	ददीयाथाम्	ददीध्वम्
उ०	ददीय	ददीवहि	ददीमहि

धा 'place, धरना' उभय०

परस्मैपद लट् 'Present'.

प्र०	दधाति	धत्तः	दधति
म०	दधासि	धत्थः	धत्थ
उ०	दधामि	दध्वः	दध्मः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अदधात्	अधत्ताम्	अदधुः
म०	अदधाः	अधत्तम्	अधत्त
उ०	अदधाम्	अदध्व	अदध्म

लङ् 'Imperative'.

प्र०	दधातु	धत्ताम्	दधतु
म०	धेहि	धत्तम्	धत्त
उ०	दधानि	दधाव	दधाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	दध्यात्	दध्याताम्	दध्युः
म०	दध्याः	दध्यातम्	दध्यात
उ०	दध्याम्	दध्याव	दध्याम

आत्मनेपद लट् 'Present.'

प्र०	धत्ते	दधाते	दधते
प्र०	धत्से	दधाथे	धद्ध्वे
उ०	दधे	दध्वहे	दध्महे

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अधत्त	अदधाताम्	अदधत
म०	अधत्थाः	अदधाथाम्	अधद्ध्वम्
उ०	अदधि	अदध्वहि	अदध्महि

लोट् 'Imperative'.

प्र०	धत्ताम्	दधाताम्	दधताम्
म०	धत्स्व	दधाथाम्	धद्ध्वम्
उ०	दधै	दधावहै	दधामहै

विधिलिङ् 'potential'.

प्र०	दधीत	दधीयाताम्	दधीरन्
म०	दधीथाः	दधीयाथाम्	दधीध्वम्
उ०	दधीय	दधीवहि	दधीमहि

(ख) मा आ० 'measure, नापना' और हा आ० 'go, जाना' को हलादि प्रत्ययों से पूर्व मिमी और जिही तथा अजादि प्रत्ययों से पूर्व मिम् और जिह् (ई के लोप से) आदेश होता है ।

मा 'measure, नापना' आत्मने०

लट् 'Present.'

प्र०	मिमीते	मिमाते	मिमते
म०	मिमीषे	मिमाथे	मिमीध्वे
उ०	मिमे	मिमीवहे	मिमीमहे

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अमिमीत	अमिमाताम्	अमिमत
म०	अमिमीथाः	अमिमाथाम्	अमिमीध्वम्
उ०	अमिमि	अमिमीवहि	अमिमीमहि

लोट् 'Imperative'.

प्र०	मिमीताम्	मिमाताम्	मिमताम्
म०	मिमीष्व	मिमाथाम्	मिमीध्वम्
उ०	मिमै	मिमावहै	मिमामहै

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	मिमीत	मिमीयाताम्	मिमीरन्
म०	मिमीथाः	मिमीयाथाम्	मिमीध्वम्
उ०	मिमीय	मिमीवहि	मिमीमहि

ऐसे ही ऊपर लिखे हा 'go, जाना' आत्मने० के रूप जानो।

(ग) हा परस्मै० 'abandon, छोड़ना' को अपित् (weak) प्रत्ययों से पूर्व जही या जहि आदेश होता है। प्रत्यय के स्वर या य से पूर्व इ या ई का लोप हो जाता है। लोट् के म० एक० में जहाहि, जहिहि या जहीहि रूप बनते हैं।

लट् 'Present'.

प्र०	जहाति	जहीतः,	जहितः	जहति
म०	जहासि	जहीथः,	जहिथः	जहीथ, जहिथ
उ०	जहामि	जहीवः,	जहिवः	जहीमः, जहिमः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अजहात्	अजहीताम्,	अजहिताम्	अजहुः
म०	अजहाः	अजहीतम्,	अजहितम्	अजहीत, अजहित
उ०	अजहाम्	अजहीव,	अजहिव	अजहीम, अजहिम

लोट 'Imperative'.

प्र०	जहातु	जहीताम्,	जहिताम्,	जहतु
म०	जहाहि, जहीहि, जहिहि	जहीतम्,	जहितम्	जहीत, जहित
उ०	जहानि	जहाव		जहाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	जह्यात्	जह्याताम्	जह्युः
म०	जह्याः	जह्यातम्	जह्यात
उ०	जह्याम्	जह्याव	जह्याम

(घ) भी 'fear, डरना' परस्मै० का स्वर हलादि अपित् (weak) प्रत्ययों से पूर्व विकल्प से ह्रस्व होता है।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लट् 'Present'.

प्र०	बिभेति	बिभीतः, बिभितः	बिभ्यति
म०	बिभेषि	बिभीथः, बिभिथः	बिभीथ, बिभिथ
उ०	बिभेमि	बिभीवः, बिभीवः	बिभीमः, बिभिमः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अबिभेत्	अबिभीताम्, अबिभिताम्	अबिभ्युः
म०	अबिभेः	अबिभीतम्, अबिभितम्	अबिभीत, अबिभित
उ०	अबिभयम्	अबिभीव, अबिभिव	अबिभीम, अबिभिम

लोट् 'Imperative'.

प्र०	बिभेतु	बिभीताम्, बिभिताम्	बिभ्यतु
म०	बिभीहि, बिभिहि	बिभीतम्, बिभितम्	बिभीत, बिभित
उ०	बिभयानि	बिभयाव	बिभयाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	बिभीयात्	बिभीयाताम्	बिभीयुः
	बिभियात्	बिभियाताम्	बिभियुः
म०	बिभीयाः	बिभीयातम्	बिभीयात
	बिभियाः	बिभियातम्	बिभियात
उ०	बिभीयाम्	बिभीयाव	बिभीयाम
	बिभियाम्	बिभियाव	बिभियाम

(ङ) विष् उभय० 'pervade, व्यापना', निज् उभय० 'wash, धोना', और विज् उभय० separate, जुदा करना' के अभ्यास की इ को सर्वत्र गुण होता है, परन्तु धातु की इ को पित् (strong) अजादि प्रत्ययों से पूर्व गुण नहीं होता।

विष् 'Pervade'. उभय०

परस्मै० लट् 'Present'.

प्र०	वेवेष्टि	वेविष्टः	वेविषति
म०	वेवेक्षि	वेविष्ठः	वेविष्ठ
उ०	वेवेष्मि	वेविष्वः	वेविष्मः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अवेवेट्-ड्	अवेविष्टाम्	अवेविषुः
म०	अवेवेट्-ड्	अवेविष्टम्	अवेविष्ट
उ०	अवेविषम्	अवेविष्व	अवेविष्म

लोट् 'Imperative'.

प्र०	वेवेष्टु	वेविष्टाम्	वेविषतु
म०	वेविड्ढि	वेविष्टम्	वेविष्ट
उ०	वेविषाणि	वेविषाव	वेविषाम

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	वेविष्यात्	वेविष्याताम्	वेविष्युः
म०	वेविष्याः	वेविष्यातम्	वेविष्यात
उ०	वेविष्याम्	वेविष्याव	वेविष्याम

आत्मने० लट् 'Present'.

प्र०	वेविष्टे	वेविषाते	वेविषते
म०	वेविक्षे	वेविषाथे	वेविड्ढ्वे
उ०	वेविषे	वेविष्वहे	वेविष्महे

ऐसे ही निज् (नेनेक्ति, नेनिक्ते) और विज् (वेवेक्ति, वेविक्ते) के रूप जानो।

अभ्यास २०

१. संस्कृत में अनुवाद करो :—

देश-द्रोहियों के साथ संबंध छोड़ दो (हा)। ईश्वर संसार को बनाता है (वि–धा)। वह प्राणियों को उनके कर्मों का फल देता है (दा)। गरीबों को धन दो (दा)। प्रत्येक गृहस्थी प्रतिदिन घी को अग्नि में हवन करे (हु)। उन्हें अपने दुराचार पर लज्जा न आई (ह्री)। आपने तो मेरा गिलास दूध से भर दिया (पृ)। हमें पाप से तो डरना चाहिए (भी) पर पापियों से नहीं। शीघ्र ही धुँआ सारे घर में व्याप गया (विष्)। यह लोग इस खेत को क्यों नापते हैं (मा)। जरा हाथ-पाँव धो लीजिए (अव-निज्) और साफ कपड़े पहनिए (परि-धा)। जापान ने रूस के साथ संधि कर ली (सं-धा)। अपना रुपया बैंक में जमा करा दीजिए (नि-धा)। यमुना संयुक्त प्रान्त से पंजाब को जुदा करती है (विज्)। अपाहजों का सब को पालन करना चाहिए (भृ)। मेरा बोझ स्टेशन

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तक ले चलो (मृ)। मैं कल बाजार गया था (हा)। ईश्वर हर जगह व्यापक है (विष्)।

२. स्वादि, तनादि, रुधादि और क्र्यादि धातुओं के अंग (bases) कैसे बनते हैं ? सोदाहरण लिखो।

३. जुहोत्यादि गण के धातुओं की क्या विशेषताएँ हैं ? सोदाहरण लिखो।

४. अभ्यास किसे कहते हैं ? इसमें जुहोत्यादि धातुओं में क्या क्या विकार होते हैं ? सोदाहरण लिखो।

५. नीचे लिखी धातुओं के लट् के प्र० एक०, लङ् के प्र० बहु०, लोट् के म० एक० और विधिलिङ् के उ० एक० के रूप लिखो :—

श्रु, आप्, मुष्, ग्रह्, ज्ञा, कृ (आ०), युज्, (आ०), हिंस्, इ, स्वप्, अधि-इ, मृज्, शी, अस्, सू, हन्, शास्, द्विष्, धा, भी, पृ, हा, विष् इत्यादि।

६—नीचे लिखे वाक्यों में रिक्त पदों (blanks) को पूरा करो। इनमें वाक्यों के पीछे दिए गए धातु का दिए हुए लकारों में समुचित प्रयोग करो:—

सर्वथा चक्रवर्तिनं पुत्रं—। आप्, लोट्।
सखि, आगच्छ वयं पुष्पाणि —। चि, लोट्।
अध्वर्यवो यज्ञे सोमं —। सु, लङ्।
पुण्याश्रमदर्शनेन तावदात्मानं — । पु, लट्।
विपद्विपदं —। अनु-बन्ध्, लट्।
आरोग्यकामः पथ्यं —। अश्, विधिलिङ्।
अहमनेन बलिना सार्धं कथं —। वि-ग्रह, विधिलिङ्।
भगवन्, — मे पुत्रकम्। दृप्, लोट्।
आत्मानं त्वं रथिनं —। विद्, लोट्,।
शान्ताः मुनयः सुखं —। शी, लट्।
प्रतिदिनं ब्राह्मणाः वेदं — । अधि-इ, विधिलिङ्।
तान्यहं सर्वाणि — न त्वं — परंतप। विद्, लट्।
महदपि परदुःखं शीतलं सम्यक् —। ब्रू, लट्।
क्षणे क्षणे तन्नवतां —। उप-इ, लट्।
शिष्यस्तेऽहं — मां त्वां प्रपन्नम्। शास्, लोट्।
आम्रान् पृष्टः कोविदारान् —। आ-चक्ष्, लट्।
सूनृता वाक् कामान् —। दुह्, लट्।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुकरेऽरण्ययाने पिता मां — । प्र–युज्, लङ्।
योगी सदात्मानं — । युज्, विधिलिङ्।
सूनृता वाक् दुष्कृतं — । हिंस्, लट्।

---

२. आर्धधातुक ।

General or Non-Conjngational Tenses and Moods.

(लुट्, लृट्, लृङ्, आशीर्लिङ्, लिट्, लुङ्)

१४५. लुट्, लृट्, लृङ्, आशीर्लिङ्, लिट्, लुङ् लकारों में वलादि (वल् प्रत्याहार में 'य' से भिन्न सब व्यंजन शामिल हैं) आर्धधातुक प्रत्यय से पूर्व धातु को इ (इट्) का आगम होता है । कुछ धातुओं को इस इ का आगम नित्य (necessarily) होता है । इन धातुओं को सेट् (स-इट्) कहते हैं । कुछ धातुओं को इ का आगम विकल्प से (optionally) होता है । इन धातुओं को वेट् (वा-इट्) कहते हैं । अन्य धातुओं को इ का आगम नहीं होता । इन्हें अनिट् (अन-इट्) कहते हैं ।

(क) अनेकाच् (polysyllabic) धातु, प्रत्ययान्त (derived) और चुरादि गण के धातु सदा सेट् होते हैं ।

(ख) एकाच् (monosyllabic) अजन्त धातु अनिट् होते हैं । परन्तु उकारान्त और ॠकारान्त धातु तथा यु 'join, मिलना', रु 'cry चिल्लाना,' क्ष्णु 'sharpen, तेज़ करना', स्नु 'drip, टपकना', नु 'praise, प्रशंसा करना', क्षु 'cough, खांसना', शी 'sleep, सोना', श्वी 'go, जाना', डी 'fly, उड़ना', श्रि 'resort, जाना', वृ 'choose, पसंद करना', आदि धातु सेट् हैं ।

(ग) नीचे लिखे कुछ प्रसिद्ध एकाच् हलन्त धातु अनिट् हैं ।

अनिट् धातु :—

शक् 'be able', पच् 'cook', मुच् 'release', वच् 'speak', सिच् 'sprinkle', प्रच्छ् 'ask', त्यज् 'leave', भज् 'serve', भुज् 'protect', मस्ज् 'merge, bathe', यज् 'sacrifice', युज् 'unite', सञ्ज् 'attach', सृज् 'create', अद् 'eat', छिद् 'cut', तुद् 'strike', नुद् 'incite' पद् 'go', भिद् 'break', विद् 'be', शद् 'reduce', सद् 'sink', क्रुध् 'be angry', क्षुध् 'be hungry',

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुध् 'know'; बन्ध् 'bind', युध् 'fight', रुध् 'obstruct', साध् 'accomplish', मन् 'think' हन् 'kill', आप् 'obtain', क्षिप् 'throw', तप् 'heat', तृप् ,be pleased', लिप् 'besmear लुप् 'lop off', स्वप् sleep, सृप् 'creep', रभ् 'begin', लभ् 'obtain', गम् 'go', नम् 'bow', यम् 'restrain', रम् 'enjoy', दंश् 'bite' दृश् 'see', विश् 'enter', स्पृश् 'touch', कृष् 'plough', तुष् 'be satisfied', द्विष् 'hate', पुष् 'nourish', शुष्'dry up', वस् 'dwell', दुह् 'milk', रुह् 'grow', लिह् 'lick', वह् 'carry'.

(घ) नीचे लिखे धातु वेट् हैं :—

धू 'shake', सू 'produce', अञ्ज् 'anoint,' मृज् 'wipe off', क्लिद् 'be wet', स्यन्द् 'flow', क्लृप् 'be fit for', गुप् 'protect', त्रप् 'be ashamed', क्षम् 'be able', अश् 'eat', क्लिश् 'torment', गाह् 'plunge', गुह् 'conceal', द्रुप् 'hate', स्निह् love', इत्यादि ।

१४६. लुट् 'First future, अनद्यतन भविष्यत्' लृट् 'Second future, भविष्यत्', लृङ् 'Conditional, संकेत', आशीर्लिङ्'Benedictive, आशीः', लिट् Perfect, परोक्षभूत'; और लुङ् 'Aorist, भूत' आर्धधातुक लकारों में धातु को कोई विकरण नहीं लगता । सब धातु समान रहते हैं ।

(क) चुरादि गण की धातुओं को आर्धधातुकों (non-conjugational) में भी अय विकरण लगता है । इसके य के अ का लोप हो जाता है (= अय्) । अंग (base) में सर्वधातुकों की भाँति विकार होता है ।

(ग) गुप्, धूप्, विच्छ् , पण् , पन् , कम् , और ऋत् धातुओं को विकल्प से विकरण लगता है ।

१४७ (क) अस् और ब्रू को आर्धधातुक (non-conjugational) लकारों में क्रमशः भू और वच् आदेश होता है ।

(ख) सृज् और दृश् को हलादि पित् (strong) प्रत्ययों से पूर्व स्रज् और द्रश हो जाता है ।

(ग) एकारान्त, ऐकारान्त और ओकारान्त धातुओं को आकारान्त धातुओं के समान जानो ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१ लुट् First or Periphrastic Future'.,

१४८. लुट् लकार के प्रत्यय (terminations) अस् 'be' धातु के लट् के रूपों पर तृ पुं० के प्रथमा० एक०, ता, लगाने से बन सकते हैं। प्रथम पुरुष में अस् का लोप होता है। जैसे,

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
प्र०	ता	तारौ	तारः	ता	तारौ	तारः
म०	तासि	तास्थः	तास्थ	तासे	तासाथे	ताध्वे
उ०	तास्मि	तास्वः	तास्मः	ताहे	तास्वहे	तास्महे

१४९. इन प्रत्ययों से पूर्व सेट् धातुओं को नित्य इ का आगम होता है। वेट् को विकल्प से और अनिट् को इ का आगम नहीं होता।

(क) ये सभी पित् (strong प्रत्यय हैं। इस लिए धातु के अन्त्य तथा उपधा के ह्रस्व स्वर को गुण हो जाता है।

नी, 'lead, लेजाना' उभय०

परस्मै०

प्र०	नेता	नेतारौ	नेतारः
म०	नेतासि	नेतास्थः	नेतास्थ
उ०	नेतास्मि	नेतास्वः	नेतास्मः

आत्मने०

प्र०	नेता	नेतारौ	नेतारः
म०	नेतासे	नेतासाथे	नेताध्वे
उ०	नेताहे	नेतास्वहे	नेतास्महे

भू 'be, होना' परस्मै०

प्र०	भविता	भवितारौ	भवितारः
म०	भवितासि	भवितास्थः	भवितास्थ
उ०	भवितास्मि	भवितास्वः	भवितास्मः

शी 'sleep, सोना' आत्मने०

प्र०	शयिता	शयितारौ	शयितारः
म०	शयितासे	शयितासाथे	शयिताध्वे
उ०	शयिताहे	शयितास्वहे	शयितास्महे

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गम् 'go, जाना' परस्मै०

प्र०	गन्ता	गन्तारौ	गन्तारः
म०	गन्तासि	गन्तास्थः	गन्तास्थ
उ०	गन्तास्मि	गन्तास्वः	गन्तास्मः

अपवादक

१५०. (ख) इष्, सह्, लुभ् प० 'covet', रिष् प० 'kill', रुष् प० 'injure को लुट् में इ का आगम विकल्प से होता है। जैसे, एषितास्मि, एष्टास्मि। सहिताहे, सोढाहे। लोभितास्मि, लोब्धास्मि। रेषितास्मि, रेष्टास्मि। रोषितास्मि. रोष्टास्मि।

(ख) क्लृप् धातु लुट् परस्मै० में अनिट होता है। जैसे, कल्प्तास्मि। परन्तु कल्पिताहे या कल्प्ताहे।

(ग) ग्रह् के आगम इ को लिट् के अतिरिक्त इन सब लकारों में दीर्घ हो जाता है। जैसे, ग्रहीतास्मि।

(च) नश् और मस्ज् को अनुनासिक (न्) का आगम होता है यदि अनुनासिकों और अन्तस्थों के बिना प्रत्यय का कोई व्यंजन परे हो। जैसे, नंष्टा, मङ्क्ता।

२. लृट् 'Second or Simple Future'.

१५१. लृट् लकार के प्रत्यय लट् के प्रत्ययों पर स्य लगाने से बन जाते हैं। व्, म् से पूर्व स्य के अ को दीर्घ और स्वर से पूर्व लोप हो जाता है। लृट् के प्रत्यय नीचे लिखे हैं :—

	परस्मै०			आत्मने०		
प्र०	स्यति	स्यतः	स्यन्ति	स्यते	स्येते	स्यन्ते
म०	स्यसि	स्यथः	स्यथ	स्यसे	स्येथे	स्यध्वे
उ०	स्यामि	स्यावः	स्यामः	स्ये	स्यावहे	स्यामहे

(क) धातु के अन्त्य स्वर तथा उपधा के ह्रस्व को गुण हो जाता है। जैसे, कृ—करिष्यति, भू—भविष्यति, बुध्—भोत्स्यते.

भू 'be' होना'। परस्मै०

प्र०	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
म०	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उ०	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उभयपदी कृ 'do' 'करना'। आत्मने०

प्र०	करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते
म०	करिष्यसे	करिष्येथे	करिष्यध्वे
उ०	करिष्ये	करिष्यावहे	करिष्यामहे

मुद् 'rejoice, खुश होना' आत्मने०

प्र०	मोदिष्यते	मोदिष्येते	मोदिष्यन्ते
म०	मोदिष्यसे	मोदिष्येथे	मोदिष्यध्वे
उ०	मोदिष्ये	मोदिष्यावहे	मोदिष्यामहे

दा "give' देना' परस्मै०

प्र०	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
म०	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
उ०	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः

लभ् 'obtain, पाना' आत्मने०

प्र०	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
म०	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उ०	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

३. लृङ् 'Conditional'

१५२. लृङ् लकार के प्रत्यय लङ् के प्रत्ययों पर स्य लगाने से बन जाते हैं। लृङ् के प्रत्यय नीचे लिखे हैं :—

	परस्मै०			आत्मने०		
प्र०	स्यत्	स्यताम्	स्यन्	स्यत	स्येताम्	स्यन्त
म०	स्यस्	स्यतम्	स्यत	स्यथास्	स्येथाम्	स्यध्वम्
उ०	स्यम्	स्याव	स्याम	स्ये	स्यावहि	स्यामहि

(क) लङ् की भाँति लृङ् में भी धातु के पूर्व अ का आगम होता है।

भू 'be' होना परस्मै०

प्र०	अभविष्यत्	अभविष्यताम्	अभविष्यन्
म०	अभविष्यः	अभविष्यतम्	अभविष्यत
उ०	अभविष्यम्	अभविष्याव	अभविष्याम

लभ् 'obtain' पाना' आत्मने०

प्र०	अलप्स्यत	अलप्स्येताम्	अलप्स्यन्त

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म०	अलप्स्यथाः	अलप्स्येथाम्	अलप्स्यध्वम्
उ०	अलप्स्ये	अलप्स्यावहि	अलप्स्यामहि

अपवादक

१५३. (क) गम्, हन्, तथा ऋकारान्त अनिट् धातुओं को लृट् और लृङ् में इ का आगम होता है। जैसे, गमिष्यामि, हनिष्यामि करिष्यामि, अगमिष्यत् अहनिष्यत् ,अकरिष्यत्।

(ख) दृश्, सृज्, सृप् स्पृश् के ऋ को प्रत्ययों से पूर्व गुण (अर्) के स्थान में र होता है। जैसे, द्रक्ष्यति, स्रक्ष्यति, स्रप्स्यति, स्प्रक्ष्यति अद्रक्ष्यत्।

(ग) नश्, और मस्ज् को अनुनासिक (न्) का आगम होता है (लुट् की भाँति)। जैसे, नंक्ष्यति, मङ्क्ष्यति अनंक्ष्यत्।

(घ) वस् (तथा कुछ अन्य सकारान्त धातुओं) के स् को त् आदेश होता है। जैसे, वत्स्यति, अवत्स्यत्।

(ङ) अधि-इ को लृङ् लकार में विकल्प से 'अधि-गा' आदेश होता है। इस गा से परे सभी प्रत्यय अपित् वत् (weak) होते हैं। जैसे, अध्यैष्यत, अध्यगीष्यत। अध्यैष्यथाः, अध्यगीष्यथाः। अध्यैष्ये, अध्यगीष्ये।

१५४. कुछ प्रसिद्ध धातुओं के लुट्, लृट् और लृङ् के उत्तमपु० एकवचन के रूप नीचे दिए गए हैं:—

धातु		लुट्	लृट्	लृङ्
ज्ञा		ज्ञातास्मि	ज्ञास्यामि	अज्ञास्यम्
घ्रा		घ्रातास्मि	घ्रास्यामि	अघ्रास्यम्
दा	प०	दातास्मि	दास्यामि	अदास्यम्
	आ०	दाताहे	दास्ये	अदास्ये
धा	प०	धातास्मि	धास्यामि	अधास्यम्
	आ०	धाताहे	धास्ये	अधास्ये
पा drink		पातास्मि	पास्यामि	अपास्यम्
म्ना		म्नातास्मि	म्नास्यामि	अम्नास्यम्
स्था		स्थातास्मि	स्थास्यामि	अस्थास्यम्
हा		हातास्मि	हास्यामि	अहास्यम्
चि		चेतास्मि	चेष्यामि	अचेष्यम्
[illegible]		जेतास्मि	[illegible]	अजेष्यम्

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धातु	पद			
श्रि	प०	श्रयितास्मि	श्रयिष्यामि	अश्रयिष्यम्
	आ०	श्रयिताहे	श्रयिष्ये	अश्रयिष्ये
क्री	प०	क्रेतास्मि	क्रेष्यामि	अक्रेष्यम्
	आ०	क्रेताहे	क्रेष्ये	अक्रेष्ये
नी	प०	नेतास्मि	नेष्यामि	अनेष्यम्
	आ०	नेताहे	नेष्ये	अनेष्ये
भी		भेतास्मि	भेष्यामि	अभेष्यम्
शी		शयिताहे	शयिष्ये	अशयिष्ये
ब्रू	प०	वक्तास्मि	वक्ष्यामि	अवक्ष्यम्
	आ०	वक्ताहे	वक्ष्ये	अवक्ष्ये
श्रु		श्रोतास्मि	श्रोष्यामि	अश्रोष्यम्
स्तु		स्तोतास्मि	स्तोष्यामि	अस्तोष्यम्
हु		होतास्मि	होष्यामि	अहोष्यम्
कृ	प०	कर्तास्मि	करिष्यामि	अकरिष्यम्
	आ०	कर्ताहे	करिष्ये	अकरिष्ये
जागृ		जागरितास्मि	जागरिष्यामि	अजागरिष्यम्
मृ		मर्तास्मि	मरिष्यामि	अमरिष्यम्
स्मृ		स्मर्तास्मि	स्मरिष्यामि	अस्मरिष्यम्
हृ	प०	हर्तास्मि	हरिष्यामि	अहरिष्यम्
	आ	हर्ताहे	हरिष्ये	अहरिष्ये
वृ		वारिताहे	वरिष्ये	अवरिष्ये
		वरीताहे	वरीष्ये	अवरीष्ये
कॄ		करितास्मि	करिष्यामि	अकरिष्यम्
		करीतास्मि	करीष्यामि	अकरीष्यम्
दो		दातास्मि	दास्यामि	अदास्यम्
सो		सातास्मि	सास्यामि	असास्यम्
गै		गातास्मि	गास्यामि	अगास्यम्
ध्यै		ध्यातास्मि	ध्यास्यामि	अध्यास्यम्
शक्		शक्तास्मि	शक्ष्यामि	अशक्ष्यम्
ईक्ष्		ईक्षिताहे	ईक्षिष्ये	ऐक्षिष्ये
पच्		पक्तास्मि	पक्ष्यामि	अपक्ष्यम्

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुच्	प०	मोक्तास्मि	मोक्ष्यामि	अमोक्ष्यम्
	आ०	मोक्ताहे	मोक्ष्ये	अमोक्ष्ये
रच्		रचयितास्मि	रचयिष्यामि	अरचयिष्य
सिच्	प०	सेक्तास्मि	सेक्ष्यामि	असेक्ष्यम्
	आ०	सेक्ताहे	सेक्ष्ये	असेक्ष्ये
प्रच्छ्		प्रष्टास्मि	प्रक्ष्यामि	अप्रक्ष्यम्
त्यज्		त्यक्तास्मि	त्यक्ष्यामि	अत्यक्ष्यम्
भुज्	प०	भोक्तास्मि	भोक्ष्यामि	अभोक्ष्यम्
	आ०	भोक्ताहे	भोक्ष्ये	अभोक्ष्ये
मस्ज्		मङ्क्तास्मि	मङ्क्ष्यामि	अमङ्क्ष्यम्
यज्	प०	यष्टास्मि	यक्ष्यामि	अयक्ष्यम्
	आ०	यष्टाहे	यक्ष्ये	अयक्ष्ये
युज्	प०	योक्तास्मि	योक्ष्यामि	अयोक्ष्यम्
	आ०	योक्ताहे	योक्ष्ये	अयोक्ष्ये
सृज्		स्रष्टास्मि	स्रक्ष्यामि	अस्रक्ष्यम्
कथ्		कथयितास्मि	कथयिष्यामि	अकथयिष्यम्
छिद्	प०	छेत्तास्मि	छेत्स्यामि	अछेत्स्यम्
	आ०	छेत्ताहे	छेत्स्ये	अछेत्स्ये
तुद्	प०	तोत्तास्मि	तोत्स्यामि	अतोत्स्यम्
	आ०	तोत्ताहे	तोत्स्ये	अतोत्स्ये
पद्		पत्ताहे	पत्स्ये	अपत्स्ये
भिद्	प०	भेत्तास्मि	भेत्स्यामि	अभेत्स्यम्
	आ०	भेत्ताहे	भेत्स्ये	अभेत्स्ये
विद् know		वेदितास्मि	वेदिष्यामि	अवेदिष्यम्
विद् be		वेत्ताहे	वेत्स्ये	अवेत्स्ये
क्रुध्		क्रोद्धास्मि	क्रोत्स्यामि	अक्रोत्स्यम्
बन्ध्		बन्धास्मि	भन्त्स्यामि	अभन्त्स्यम्
बुध्	IV.	बोद्धाहे	भोत्स्ये	अभोत्स्ये
	I.	बोधितास्मि	बोधिष्यामि	अबोधिष्यम्
युध्		योद्धाहे	योत्स्ये	अयोत्स्ये

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुध्	प० रोद्धास्मि	रोत्स्यामि	अरोत्स्यम्
	आ० रोद्धाहे	रोत्स्ये	अरोत्स्ये
तन्	प० तनितास्मि	तनिष्यामि	अतनिष्यम्
	आ० तनिताहे	तनिष्ये	अतनिष्ये
हन्	हन्तास्मि	हनिष्यामि	अहनिष्यम्
आप्	आप्तास्मि	आप्स्यामि	आप्स्यम्
स्वप्	स्वप्तास्मि	स्वप्स्यामि	अस्वप्स्यम्
रभ्	रब्धाहे	रप्स्ये	अरप्स्ये
लभ्	लब्धाहे	लप्स्ये	अलप्स्ये
लुभ्	लोब्धास्मि	लोभिष्यामि	अलोभिष्यम्
	लोभितास्मि		
क्रम्	क्रमितास्मि	क्रमिष्यामि	अक्रमिष्यम्
गम्	गन्तास्मि	गमिष्यामि	अगमिष्यम्
रम्	रन्ताहे	रंस्ये	अरंस्ये
शम्	शमितास्मि	शमिष्यामि	अशमिष्यम्
श्रम्	श्रमितास्मि	श्रमिष्यामि	अश्रमिष्यम्
दिव्	देवितास्मि	देविष्यामि	अदेविष्यम्
दंश्	दंष्टास्मि	दंक्ष्यामि	अदंक्ष्यम्
दृश्	द्रष्टास्मि	द्रक्ष्यामि	अद्रक्ष्यम्
नश्	नशितास्मि	नशिष्यामि	अनशिष्यम्
	नंष्टास्मि	नङ्क्ष्यामि	अनङ्क्ष्यम्
इष्	एषितास्मि	एषिष्यामि	ऐषिष्यम्
	एष्टास्मि		
तुष्	तोष्टास्मि	तोक्ष्यामि	अतोक्ष्यम्
पुष्	पोष्टास्मि	पोक्ष्यामि	अपोक्ष्यम्
मुष्	मोषितास्मि	मोषिष्यामि	अमोषिष्यम्
रुष्	रोषितास्मि	रोषिष्यामि	अरोषिष्यम्
	रोष्टास्मि		
अस्	भवितास्मि	भविष्यामि	अभविष्यम्
वस्	वस्तास्मि	वत्स्यामि	अवत्स्यम्
शास्	शासितास्मि	शासिष्यामि	अशासिष्यम्

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रह्	प० ग्रहीतास्मि	ग्रहीष्यामि	अग्रहीष्यम्
	आ० ग्रहीताहे	ग्रहीष्ये	अग्रहीष्ये
दह्	दग्धास्मि	धक्ष्यामि	अधक्ष्यम्
रुह्	रोढास्मि	रोक्ष्यामि	अरोक्ष्यम्
वह्	वोढास्मि	वक्ष्यामि	अवक्ष्यम्
सह्	सोढाहे	सहिष्ये	असहिष्ये
	सहिताहे		

अभ्यास २१.

संस्कृत में अनुवाद करो :—

(क) यदि कोई मेरे देश पर हमला करेगा (आ-क्रम्) तो मैं शस्त्र धारण करूँगा (धृ) और उससे युद्ध करूँगा (युध्)। जो कोई मुकाबले (संघर्ष, प्रतियोगिता) में जीतेगा (जी) वही इनाम पाएगा (पा)। इस देश में ऐसे वीर पैदा होंगे (जन्) जो शत्रुओं का नाश करेंगे (हन्)। शीघ्र ही रात गुज़र जाएगी (गम्) सूरज निकलेगा (उद्-इ) और कमल खिल जाएँगे (वि-कस्, हस्)। इस महायुद्ध के पीछे न केवल योरुप का प्रत्युत सारे संसार का नाश हो जाएगा (नश्)। विद्वान् लोग साहित्य कला को भूल जाएँगे (वि-स्मृ)। योधा मर जाएँगे (मृ)। धनवानों का धन नष्ट हो जाएगा (नश्)। बूढ़े और बच्चे दुर्भिक्ष को सह न सकेंगे (शक्)। बलवान् निर्बलों को पीड़ा देंगे (पीड्)। स्त्रियों का कोई आदर न करेगा (आ-दृ)। सारा योरुप दुःख-सागर में डूब जाएगा (नि-मस्ज्)। ये बीज कितने दिनों में उगेंगे (रुह्)। मैं दस दिन यहाँ रहूँगा (वस्)। माता अपने बच्चे का पालेगी (पुष्)। मैं आज नाटक देखूंगा (दृश्)। आप यह काम कब आरंभ करेंगे (आ-रभ्)। मैं एक निबंध लिखूंगा (रच्) और आपको दूँगा (दा)। क्या आप पानी पिएँगे (पा)। मैं अभी नहीं सोऊँगा (स्वप्)।

(ख) यदि तुम दुष्ट का उपकार करोगे (उप-कृ) तो वह तुम्हें पीड़ा देगा (पीड्)। यदि मैं आपकी आवाज़ सुनता (श्रु) तो अवश्य जाग जाता (जागृ)। यदि जयचंद्र पृथ्वीराज को न छोड़ता (त्यज्) तो मुहम्मद गौरी जीत न सकता (शक्)। यदि राजा दंड न दे (दण्ड्) तो राज्य नष्ट हो जाए (नश्)। यदि आप क्रुद्ध न होते (क्रुध्) तो वह आप को सब कुछ कह देता (वच्)। यदि आप खाना पकाते (पच्) तो मैं खा लेता (अश्)। यदि वह

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहता (इष्) तो बंदी के बंधन काट देता (छिद्) । यदि मैं यह जानता (विद्) तो उसका साथ छोड़ देता (त्यज्) ।

२. नीचे लिखे वाक्यों में दिए हुए धातुओं के लट् लकार के समुचित रूपों द्वारा रिक्त पदों की पूर्त्ति करो :—

अहन्त्वत्कृते बहूनि पुस्तकानि—। आ-नी ।
अयं व्याघ्रस्त्वां—। हन् ।
आशा बलवती राजन् शल्य :— पाण्डवान् । जी ।
स्थितोऽस्मि गतसंदेहः—वचनं तव । कृ ।
त्वया सह—वनेषु मधुगन्धिषु (अहं) । नि-वस् ।
शत्रून्— वा — वा (अहम) । वि-जी, मृ ।
अथ वयं धर्मं—। वि-आ-ख्या ।
अनेन वाससाच्छन्नः स्वं रूपं—(त्वं) । प्रति-पद् ।
संग्रामेषु च राजेन्द्र शश्वज्जयं—। अव-आप् ।
राजन्निर्वाननिमित्ता च न ते पीडा — । अस् ।
यद्यत्ते हितकरं तत्सर्वं कर्तुं — (अहं) । यत् ।
हिमाचलञ्च—, स्वकीयञ्च ग्रामं — । दृश् , नि-वृत् ।
भवतो मित्रमस्माकं पाशान् — । छिद् ।
यदि मे बाणपथं (त्वं) — असंशयं — । आ- या, मृ ।
अयं प्रचण्डोऽग्निरखिलं वनं — । दह् ।

---

४. आशीर्लिङ् 'Benedictive or Precative'.

१५५. आशीर्लिङ् के परस्मैपद के प्रत्यय लङ् लकार के परस्मै० प्रत्ययों पर यास् लगाने से बन जाते हैं । म० और प्र० एक० के स् और त् से पूर्व यास् के स् का लोप हो जाता है । आत्मनेपद के प्रत्यय विधिलिङ् के आत्मने० प्रत्ययों पर स् लगाने से (त्, थ् से पूर्व स् बना रहता है) बन जाते हैं । आशीर्लिङ् के प्रत्यय नीचे लिखे हैं :—

	परस्मै०			आत्मने०		
प्र०	यात्	यास्ताम्	यासुः	सीष्ट	सीयास्ताम्	सीरन्
म०	यास्	यास्तम्	यास्त	सीष्ठास्	सीयास्थाम्	सीध्वम्
उ०	यासम्	यास्व	यास्म	सीय	सीवहि	सीमहि

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. परस्मैपद।

१५६. आशीर्लिङ् में परस्मैपद के प्रत्यय अपित् (weak) होते हैं। इस लिए धातु को गुण अथवा वृद्धि नहीं होती। किसी धातु को भी इ का आगम नहीं होता।

(क) धातु के अन्त्य (final) इ या उ को दीर्घ, ऋ को रि और ॠ को ईर्, परन्तु पवर्ग के पीछे ऊर्, हो जाता है। जैसे, जि—जीयात्, स्तु-स्तूयात्, कृ—क्रीयात्, कॄ—कीर्यात्, पॄ—पूर्यात्।

(ख) ऋ धातु तथा संयोगपूर्वक (preceded by conjunct consonant) ऋकारान्त धातुओं को गुण हो जाता है[1]। जैसे, ऋ—अर्यात्, स्मृ–स्मर्यात्।

(ग) वच्, स्वप्, यज्, आदि अन्तस्थ वाले धातुओं को सम्प्रसारण हो जाता है।[2] जैसे उच्यात्, इज्यात्।

(घ) दा, धा, मा, स्था, गै, पा 'drink', हा, सो आदि धातुओं के अन्त्य स्वर को ए हो जाता है।[3] जैसे, देयात्, पेयात्। परन्तु पा 'protect', से पायात्।

(ङ) हन् को वध् आदेश होता है।[4]

(च) उपधा के अनुनासिक का प्रायः लोप हो जाता है।

२. आत्मनेपद।

१५७. (क) आशीर्लिङ् में आत्मने० प्रत्यय पित् (strong) हैं। इन से पूर्व सेट् और वेट् धातुओं में इ का आगम होता है। संयोगपूर्वक ऋकारान्त धातु, वृ और ॠकारान्त धातुओं को इ का आगम विकल्प से होता है।

(ख) धातु के स्वर को गुण होता है। परन्तु जब इ का आगम न हो तो अन्त्य ऋ वैसे ही बना रहता है और ॠ को ईर् या ऊर् (पवर्ग के पीछे) हो जाता है। जैसे, ची—चेषीष्ट, पॄ—परिषीष्ट या पूर्षीष्ट।

(१) परस्मैपद

प्र०	भूयात्	भूयास्ताम्	भूयासुः
म०	भूयाः	भूयास्तम्	भूयास्त
उ०	भूयासम्	भूयास्व	भूयास्म

---

१. गुणोऽर्तिसंयोगाद्योः। ७. ४. २९। २. वचिस्वपियजादीनां किति ६. १. १५। ३. एर्लिङि। ६. ४. ६७। ४. हनो वध लिङि। २. ४. ४२।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेव् 'serve' आत्मने०

प्र०	सेविषीष्ट	सेविषीयास्ताम्	सेविषीरन्
म०	सेविषीष्ठाः	सेविषीयास्थाम्	सेविषीध्वं-ढ्वं
उ०	सेवीषीय	सेविषीवहि	सेविषीमहि

चि 'collect' परस्मैपद

प्र०	चीयात्	चीयास्ताम्	चीयासुः
म०	चीयाः	चीयास्तम्	चीयास्त
उ०	चीयासम्	चीयास्व	चीयास्म

आत्मनेपद

प्र०	चेषीष्ट	चेषीयास्ताम्	चेषीरन्
म०	चेषीष्ठाः	चेषीयास्थाम्	चेषीढ्वम्
उ०	चेषीय	चेषीवहि	चेषीमहि

कृ 'do' परस्मैपद

प्र०	क्रियात्	क्रियास्ताम्	क्रियासुः
म०	क्रियाः	क्रियास्तम्	क्रियास्त
उ०	क्रियासम्	क्रियास्व	क्रियास्म

आत्मनेपद

प्र०	कृषीष्ट	कृषीयास्ताम्	कृषीरन्
म०	कृषीष्ठाः	कृषीयास्थाम्	कृषीढ्वम्
उ०	कृषीय	कृषीवहि	कृषीमहि

स्मृ 'remember' परस्मैपद

प्र०	स्मर्यात्	स्मर्यास्ताम्	स्मर्यासुः
म०	स्मर्याः	स्मर्यास्तम्	स्मर्यास्त
उ०	स्मर्यासम्	स्मर्यास्व	स्मर्यास्म

१५८. कुछ प्रसिद्ध धातुओं के आशीर्लिङ् के प्रथम और उत्तम पु० एक वचन के रूप नीचे दिए गए हैं :—

जि	जीयात्	जीयासम्
श्रु	श्रूयात्	श्रूयासम्
स्तु	स्तूयात्	स्तूयासम्
ऋ	अर्यात्	अर्यासम्
जागृ	जागर्यात्	जागर्यासम्

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दा { प०	देयात्	देयासम्
आ०	दासीष्ट	दासीय
धा { प०	धेयात्	धेयासम्
आ०	धासीष्ट	धासीय
स्था	स्थेयात्	स्थेयासम्
मा	मेयात्	मेयासम्
पा drink	पेयात्	पेयासम्
पा protect	पायात्	पायासम्
गै (गा)	गेयात्	गेयासम्
सो (सा)	सेयात्	सेयासम्
ब्रू (वच्)	उच्यात्	उच्यासम्
स्वप्	सुप्यात्	सुप्यासम्
यज् { प०	इज्यात्	इज्यासम्
आ०	यक्षीष्ट	यक्षीय
वह्	उह्यात्	उह्यासम्
ह्वे	हूयात्	हूयासम्
वस्	उष्यात्	उष्यासम्
वद्	उद्यात्	उद्यासम्
हन्	वध्यात्	वध्यासम्
दिव्	दीव्यात्	दीव्यासम्
शी	शयिषीष्ट	शयिषीय
मृ	मृषीष्ट	मृषीय
हृ	हृषीष्ट	हृषीय
ईक्ष्	ईक्षिषीष्ट	ईक्षिषीय
मुच्	मुक्षीष्ट	मुक्षीय
वच्	वक्षीष्ट	वक्षीय
छिद्	छित्सीष्ट	छित्सीय
भिद्	भित्सीष्ट	भित्सीय
मुद्	मोदिषीष्ट	मोदिषीय
विद् 'be'	वित्सीष्ट	वित्सीय
युध्	युत्सीष्ट	युत्सीय

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋध्	ऋत्सीष्ट	ऋत्सीय
तन्	तनिषीष्ट	तनिषीय

---

५. लिट् 'Perfect'.

१५९. लिट् लकार में दो प्रकार के रूप होते हैं। एक तो धातु को द्वित्व करने से (Reduplicative) और दूसरा आम् प्रत्यय लगाने से (Periphrastic)। एकाच् monosyllabic) धातुओं को द्वित्व होता है और अनेकाच् धातुओं को आम प्रत्यय लगता है। दय्, अय्, कास् और आस् धातुओं को आम् नित्य और उष्, विद्, जागृ, भी, ह्री, भृ, हु और दरिद्रा को विकल्प से लगता है।

१६०. लिट् में धातु को प्रत्ययों से पूर्व द्वित्व होता है। द्वित्व के कुछ नियम १४३ में दिए गए हैं। अन्य विशेष नियम नीचे दिए जाते हैं :—

द्वित्व के विशेष नियम।

(क) ऋ, ॠ और ऌ को अभ्यास (reduplicative syllable) में अ हो जाता है। जैसे, कृ-कृ-कृ, ककृ, चकृ, चकार। तॄ-ततार, क्लृप-चक्लृपे।

(ख) धातु के आदि (initial) अ या आ को आ होता है। जैसे, अद्—आद, आप्—आप।

(ग) धातु के आदि इ को ई होता है। परन्तु यदि धातु की इ को गुण या वृद्धि हो तो अभ्यास और धातु के मध्य में य् का आगम होता है। जैसे, इष्—ईषुः। परन्तु इयेष (इ-एष्, इय् एष् + अ)।

(घ) यदि धातुओं के आदि में या अन्यत्र य् या व् हो, तो य् या व् को सम्प्रसारण द्वारा अभ्यास में इ या उ होता है। जैसे, यज्-य-यज्, इयज्, इयाज, वच्—(व-वच्, उ-वच्), उवाच।

(ङ) अभ्यास में धातु के उपधा के ए या ऐ को इ और ओ या औ को उ होता है। जैसे, सेव्—सिषेव, ढौक्—डुढौक।

(च) यदि धातु के आदि में संयोग (conjunct consonant) हो, तो अभ्यास में केवल पहला व्यंजन रहता है (दूसरे का लोप हो जाता है)। जैसे, प्रच्छ—पप्रच्छ।

(छ) यदि ऊपर लिखे संयोग में पहला व्यंजन ऊष्म (sibilant)

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और दूसरा विवार (hard) हो तो अभ्यास में केवल विवार रहता है। जैसे, स्था—तस्था, स्पृश्—पस्पृश्; परन्तु स्मृ—सस्मृ।

१६१. लिट् लकार में धातुओं पर नीचे लिखे प्रत्यय लगते हैं :—

	परस्मै०			आत्मने०		
प्र०	अ	अतुस्	उस्	ए	आते	इरे
म०	थ	अथुस्	अ	से	आथे	ध्वे
उ०	अ	व	म	ए	वहे	महे

(क) लिट् के प्रत्ययों में परस्मैपद के तीनों पुरुषों के एकवचन के प्रत्यय पित् (strong) और शेष अपित् (weak) हैं।

(ख) लिट् में सेट् और अनिट् सभी धातुओं को हलादि प्रत्ययों से पूर्व इ का आगम होता है। परन्तु कृ, सृ, भृ, वृ, स्तु, द्रु, स्रु और श्रु इन आठ धातुओं को इ का आगम नहीं होता है।

(ग) आत्मनेपद के प्रथम पुरुष के बहुवचन में ऊपर लिखे आठ धातुओं को भी इ का आगम होता है। परस्मै० के मध्यम० एक० में कुछ और धातुओं में भी इ का आगम नहीं होता, तथा आकारान्त और कुछ इ, ई या उ अन्त वाले धातुओं में विकल्प से होता है।

पित्प्रत्ययांग 'Strong base'.

१६२. (क) तीनों पुरुषों के एकवचन में, अर्थात् पित् प्रत्ययों से पूर्व धातु की उपधा (penultimate) के ह्रस्व स्वर को गुण आदेश होता है। जैसे, बुध्—बुबोध, रिच्—रिरेच, इष्—इयेष।

(ख) धातु के अन्त्य (final) स्वर को उत्तमपुरुष के एकवचन में वृद्धि या गुण, मध्यमपुरुष के एक० में गुण और प्रथमपुरुष के एक० में वृद्धि होती है। जैसे, कृ—उ० चकार या चकर, म० चकर्थ, प्र० चकार।

(ग) उपधा के अ को उत्तमपुरुष के एक० में वृद्धि या गुण और प्रथमपुरुष के एक० में वृद्धि होती है। जैसे, हन्—उ० जघान या जघन, प्र० जघान।

(घ) आकारान्त धातुओं को उत्तम और प्रथम पुरुषों के एकवचन में अ के स्थान पर औ प्रत्यय लगता है। और प्रत्यय के थ से पूर्व आ को विकल्प से इ हो जाता है। जैसे, दा—उ०, प्र० ददौ; म० ददाथ या ददिथ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपित्प्रत्ययाग 'Weak base'.

१६३. (क) इ, उ और ऋ वाले धातुओं के स्वर में अपित् प्रत्ययों से पूर्व कोई विकार नहीं होता। जैसे, कृ—चकृम, बुध्—बुबुधिम।

(ख) अजादि अपित् प्रत्ययों से पूर्व धातु के अन्त्य इ, ई और ऋ को क्रमशः य् और र् होता है, परन्तु यदि इनसे पूर्व संयोग हो तो इय् और अर् होता है। उ, ऊ और ॠ का सदा उव् और अर् ही होता है। जैसे, नी—निन्युः, कृ—चक्रुः, श्रि—शिश्रियुः, स्तृ—तस्तरुः, स्तु—तुष्टुवुः, कॄ—चकरुः।

(ग) एकाच् धातुओं के, जिनकी उपधा में अ हो और अभ्यास को आदेश न हुआ (unchanged) हो, असंयुक्त व्यंजनों के मध्य में ह्रस्व अ को ए और अभ्यास का लोप हो जाता है, यदि अपित् प्रत्यय या सेट थ् (=इथ, म० एक०) परे हो। जैसे, पत्—पेतुः, पेतिथ। पच्—पेचुः, पेचिथ, परन्तु पपक्थ। शक्—शेकुः, शेकिथ, परन्तु शशक्थ।

(घ) जन्, खन्, गम्, घस् और हन् इन धातुओं के स्वर का अपित् प्रत्ययों से पूर्व लोप हो जाता है। जैसे, जज्ञे, चख्नुः, जग्मुः, जक्षुः, जघ्नुः।

(ङ) अपित् प्रत्ययों से पूर्व, अन्तस्थ वाले धातुओं को सम्प्रसारण होता है। जैसे, वच्—ऊचुः, यज्—ईजुः, स्वप्—सुषुपुः, ग्रह्—जगृहुः। परन्तु उवाच, इयाज, जग्राह।

(च) आकारान्त धातुओं के आ का अपित् प्रत्ययों से पूर्व लोप होता है। जैसे, दा—ददुः।

धातुरूपावली।

कृ उभय० 'do' strong base चकार्, चकर्; weak चकृ, चक्र।

परस्मैपद

प्र०	चकार	चक्रतुः	चक्रुः
म०	चकर्थ	चक्रथुः	चक्र
उ०	चकार, चकर	चकृव	चकृम

आत्मनेपद

प्र०	चक्रे	चक्राते	चक्रिरे

१. अत एकहल्मध्येऽनादेशादेर्लिटि। ६. ४. १२१।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म०	चकृषे	चक्राथे	चकृढ्वे
उ०	चक्रे	चकृवहे	चकृमहे

स्तु उभय० 'praise' : strong तुष्टो, तुष्टौ; weak तुष्टु ।

परस्मै०

प्र०	तुष्टाव	तुष्टुवतुः	तुष्टुवुः
म०	तुष्टोथ	तुष्टुवथुः	तुष्टुव
उ०	तुष्टाव तुष्टव,	तुष्टुव	तुष्टुम

आत्मने०

प्र०	तुष्टुवे	तुष्टुवाते	तुष्टुविरे
म०	तुष्टुषे	तुष्टुवाथे	तुष्टुढ्वे
उ०	तुष्टुवे	तुष्टुवहे	तुष्टुमहे

श्रु प० 'hear' : strong शुश्रो, शुश्रौ; weak शुश्रु ।

प्र०	शुश्राव	शुश्रुवतुः	शुश्रुवुः
म०	शुश्रोथ	शुश्रुवथुः	शुश्रुव
उ०	शुश्राव, शुश्रव	शुश्रुव	शुश्रुम

इ प० 'go' : strong इये, इयै; weak इय् ।

प्र०	इयाय	ईयतुः	ईयुः
म०	इयेथ, इययिथ	ईयथुः	ईय
उ०	इयाय, इयय	ईयिव	ईयिम

शी आ० 'sleep' : weak शिश्य ।

प्र०	शिश्ये	शिश्याते	शिश्यिरे
म०	शिश्यिषे	शिश्याथे	शिश्यिध्वे-ढ्वे
उ०	शिश्ये	शिश्यिवहे	शिश्यिमहे

श्रि उभय० 'resort' : strong शिश्रे, शिश्रै; weak शिश्रिय् ।

परस्मै०

प्र०	शिश्राय	शिश्रियतुः	शिश्रियुः
म०	शिश्रयिथ	शिश्रियथुः	शिश्रिय
उ०	शिश्राय, शिश्रय	शिश्रियिव	शिश्रियिम

आत्मने०

प्र०	शिश्रिये	शिश्रियाते	शिश्रियिरे

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म०	शिश्रियिषे	शिश्रियाथे	शिश्रियिध्वे-ढ्वे
उ०	शिश्रिये	शिश्रियिवहे	शिश्रियिमहे

नी उभय० 'lead' : strong निने, निनै; weak निनी ।

प्र०	निनाय	निन्यतुः	निन्युः
म०	निनेथ, निनयिथ	निन्यथुः	निन्य
उ०	निनाय, निनय	निन्यिव	निन्यिम

आत्मने०

प्र०	निन्ये	निन्याते	निन्यिरे
म०	निन्यिषे	निन्याथे	निन्यिध्वे-ढ्वे
उ०	निन्ये	निन्यिवहे	निन्यिमहे

दा उभय० 'give' : strong ददा; weak दद् ।

परस्मै०

प्र०	ददौ	ददतुः	ददुः
म०	ददाथ, ददिथ	ददथुः	दद
उ०	ददौ	ददिव	ददिम

आत्मने०

प्र०	ददे	ददाते	ददिरे
म०	ददिषे	ददाथे	ददिध्वे
उ०	ददे	ददिवहे	ददिमहे

स्था प० 'stand': strong तस्था; weak तस्थ् ।

प्र०	तस्थौ	तस्थतुः	तस्थुः
म०	तस्थाथ, तस्थिथ	तस्थथुः	तस्थ
उ०	तस्थौ	तस्थिव	तस्थिम

स्मृ प० 'remember': strong सस्मर् ; weak सस्मृ ।

प्र०	सस्मार	सस्मरतुः	सस्मरुः
म०	सस्मर्थ	सस्मरथुः	सस्मर
उ०	सस्मार, सस्मर	सस्मरिव	सस्मरिम

पद् आ० 'go' : weak पेद् ।

प्र०	पेदे	पेदाते	पेदिरे
म०	पेदिषे	पेदाथे	पेदिध्वे
उ०	पेदे	पेदिवहे	पेदिमहे

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नश् प० 'perish' : strong ननश्, ननाश्, weak नेश्।

प्र०	ननाश	नेशतुः	नेशुः
म०	नेशिथ, ननंष्ठ	नेशथुः	नेश
उ०	ननाश, ननश	नेशिव, नेश्व	नेशिम, नेश्म

शक् प० 'be able' : strong शशाक्, शशक्; weak शेक्।

प्र०	शशाक	शेकतुः	शेकुः
म०	शेकिथ, शशक्थ	शेकथुः	शेक
उ०	शशाक, शशक	शेकिव	शेकिम

पच् उभय० 'cook' : strong पपच्, पपाच्; weak पेच्।

परस्मै०

प्र०	पपाच	पेचतुः	पेचुः
म०	पेचिथ, पपक्थ	पेचथुः	पेच
उ०	पपाच, पपच	पेचिव	पेचिम

आत्मने०

प्र०	पेचे	पेचाते	पेचिरे
म०	पेचिषे	पेचाथे	पेचिध्वे
उ०	पेचे	पेचिवहे	पेचिमहे

मुच् उभय० 'release' : strong मुमोच्; weak मुमुच्।

परस्मै०

प्र०	मुमोच	मुमुचतुः	मुमुचुः
म०	मुमोचिथ	मुमुचथुः	मुमुच
उ०	मुमोच	मुमुचिव	मुमुचिम

आत्मने०

प्र०	मुमुचे	मुमुचाते	मुमुचिरे
म०	मुमुचिषे	मुमुचाथे	मुमुचिध्वे
उ०	मुमुचे	मुमुचिवहे	मुमुचिमहे

त्यज् प० 'abandon' : strong तत्यज्, तत्याज्; weak तत्यज्।

प्र०	तत्याज	तत्यजतुः	तत्यजुः
म०	तत्यजिथ, तत्यक्थ	तत्यजथुः	तत्यज
उ०	तत्याज, तत्यज	तत्यजिव	तत्यजिम

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सृज् प० 'creat' : strong ससर्ज्; weak ससृज्।

प्र०	ससर्ज	ससृजतुः	ससृजुः
म०	ससर्जिथ, सस्रष्ठ	ससृजथुः	ससृज
उ०	ससर्ज	ससृजिव	ससृजिम

दृश् प० 'see' : strong ददर्श्; weak ददृश्।

प्र०	ददर्श	ददृशतुः	ददृशुः
म०	ददर्शिथ, दद्रष्ठ	ददृशथुः	ददृश
उ०	ददर्श	ददृशिव	ददृशिम

इष् प० 'wish' : strong इयेष्; weak ईष्।

प्र०	इयेष	ईषतुः	ईषुः
म०	इयेषिथ	ईषथुः	ईष
उ०	इयेष	ईषिव	ईषिम

सह् आ० 'endure' : weak सह्।

प्र०	सेहे	सेहाते	सेहिरे
म०	सेहिषे	सेहाथे	सेहिध्वे-ढ्वे
उ०	सेहे	सेहिवहे	सेहिमहे

जन् आ० 'be born' : weak जज्ञ्।

प्र०	जज्ञे	जज्ञाते	जज्ञिरे
म०	जज्ञिषे	जज्ञाथे	जज्ञिध्वे
उ०	जज्ञे	जज्ञिवहे	जज्ञिमहे

गम् प० 'go' : strong जगम्, जगाम्; weak जग्म्।

प्र०	जगाम	जग्मतुः	जग्मुः
म०	जगमिथ, जगन्थ	जग्मथुः	जग्म
उ०	जगाम, जगम	जग्मिव	जग्मिम

हन् प० 'kill' : strong जघन्, जघान्; weak जघ्न्।

प्र०	जघान	जघ्नतुः	जघ्नुः
म०	जघनिथ, जघन्थ	जघ्नथुः	जघ्न
उ०	जघान, जघन	जघ्निव	जघ्निम

खन् उभय० 'dig': strong चखन्, चखान्; weak चख्न्।

परस्मै

प्र०	चखान	चख्नतुः	चख्नुः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म०	चखनिथ	चख्नथुः	चख्न
उ०	चखान, चखन	चख्निव	चख्निम

आत्मने०

प्र०	चख्ने	चख्नाते	चख्निरे
म०	चख्निषे	चख्नाथे	चख्निध्वे
उ०	चख्ने	चख्निवहे	चख्निमहे

घस्[1] प० 'eat': strong जघस्, जघास्; weak जक्ष्।

प्र०	जघास	जक्षतुः	जक्षुः
म०	जघसिथ	जक्षथुः	जक्ष
उ०	जघास, जघस	जक्षिव	जक्षिम

वच् उभय० 'speak': strong उवच्, उवाच्; weak ऊच्।

परस्मै०

प्र०	उवाच	ऊचतुः	ऊचुः
म०	उवचिथ, उवक्थ	ऊचथुः	ऊच
उ०	उवाच, उवच	ऊचिव	ऊचिम

आत्मने०

प्र०	ऊचे	ऊचाते	ऊचिरे
म०	ऊचिषे	ऊचाथे	ऊचिध्वे
उ०	ऊचे	ऊचिवहे	ऊचिमहे

यज् उभय० 'worship': strong इयज्, इयाज्; weak ईज्।

परस्मै०

प्र०	इयाज	ईजतुः	ईजुः
म०	इयजिथ, इयष्ठ	ईजथुः	ईज
उ०	इयाज, इयज	ईजिव	ईजिम

आत्मने०

प्र०	ईजे	ईजाते	ईजिरे
म०	ईजिषे	ईजाथे	ईजिध्वे
उ०	ईजे	ईजिवहे	ईजिमहे

---

१ घस् को विकल्प से लिट् में अद् होता है। अद् के रूप आद, आदतुः, आदुः इत्यादि जानो।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वप् प० 'sleep': strong सुष्वप्, सुष्वाप्; weak सुषुप्।

प्र०	सुष्वाप	सुषुपतुः	सुषुपुः
म०	सुष्वपिथ, सुष्वप्थ	सुषुपथुः	सुषुप
उ०	सुष्वाप, सुष्वप	सुषुपिव	सुषुपिम

ग्रह् उभय० take': strong जग्रह्, जग्राह्, weak जगृह्।

परस्मै०

प्र०	जग्राह	जगृहतुः	जगृहुः
म०	जग्रहिथ	जगृहथुः	जगृह
उ०	जग्राह, जग्रह	जगृहिव	जगृहिम

आत्मने०

प्र०	जगृहे	जगृहाते	जगृहिरे
म०	जगृहिषे	जगृहाथे	जगृहिध्वे-ढ्वे
उ०	जगृहे	जगृहिवहे	जगृहिमहे

व्यध् प० 'pierce': strong विव्यध्, विव्याध्; weak विविध्।

प्र०	विव्याध	विविधतुः	विविधुः
म०	विव्यधिथ, विव्यद्ध	विविधथुः	विविध
उ०	विव्याध, विव्यध	विविधिव	विविधिम

वप् उभय० 'sow': strong उवप्, उवाप्; weak ऊप्।

परस्मै०

प्र०	उवाप	ऊपतुः	ऊपुः
म०	उवपिथ, उवप्थ	ऊपथुः	ऊप
उ०	उवाप, उवप	ऊपिव	ऊपिम

आत्मने०

प्र०	ऊपे	ऊपाते	ऊपिरे
म०	ऊपिषे	ऊपाथे	ऊपिध्वे
उ०	ऊपे	ऊपिवहे	ऊपिमहे

वस् उभय० 'dwell' : strong उवस्, उवास्; weak ऊष्।

प्र०	उवास	ऊषतुः	ऊषुः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म०	उवसिथ, उवस्थ	ऊषथुः	ऊष
उ०	उवास, उवस	ऊषिव	ऊषिम

वह् उभय० 'carry': strong उवह्, उवाह्; weak ऊह्।

परस्मै०

प्र०	उवाह	ऊहतुः	ऊहुः
म०	उवहिथ, उवोढ	ऊहथुः	ऊह
उ०	उवाह, उवह	ऊहिव	ऊहिम

आत्मने०

प्र०	ऊहे	ऊहाते	ऊहिरे
म०	ऊहिषे	ऊहाथे	ऊहिध्वे-ढ्वे
उ०	ऊहे	ऊहिवहे	ऊहिमहे

वद् प० 'speak': strong उवद्, उवाद्; weak ऊद्।

प्र०	उवाद	ऊदतुः	ऊदुः
म०	उवदिथ	ऊदथुः	ऊद
उ०	उवाद, उवद	ऊदिव	ऊदिम

बुध् प० 'know': strong बुबोध्, weak बुबुध्।

प्र०	बुबोध	बुबुधतुः	बुबुधुः
म०	बुबोधिथ	बुबुधथुः	बुबुध
उ०	बुबोध	बुबुधिव	बुबुधिम

प्रच्छ् प० 'ask': strong पप्रच्छ्, weak पप्रच्छ्।

प्र०	पप्रच्छ	पप्रच्छतुः	पप्रच्छुः
म०	पप्रच्छिथ, पप्रष्ठ	पप्रच्छथुः	पप्रच्छ
उ०	पप्रच्छ	पप्रच्छिव	पप्रच्छिम

ह्वे[1] उभय० 'call': strong जुहाव्, जुहव्; weak जुहुव्।

परस्मै०

प्र०	जुहाव	जुहुवतुः	जुहुवुः
म०	जुहविथ, जुहोथ	जुहुवथुः	जुहुव
उ०	जुहाव, जुहव	जुहुविव	जुहुविम

---

१ ह्वे को लिट् में हु आदेश होता है।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मने०

प्र०	जुहुवे	जुहुवाते	जुहुविरे
म०	जुहुविषे	जुहुवाथे	जुहुविध्वे-ढ्वे
उ०	जुहुवे	जुहुविवहे	जुहुविमहे

दुह् उभय० 'milk': strong दुदोह्, weak दुदुह्।

परस्मै०

प्र०	दुदोह	दुदुहतुः	दुदुहुः
म०	दुदोहिथ	दुदुहथुः	दुदुह
उ०	दुदोह	दुदुहिव	दुदुहिम

आत्मने०

प्र०	दुदुहे	दुदुहाते	दुदुहिरे
म०	दुदुहिषे	दुदुहाथे	दुदुहिध्वे
उ०	दुदुहे	दुदुहिवहे	दुदुहिमहे

द्रुह् प० 'hate': strong दुद्रोह्; weak दुद्रुह्।

प्र०	दुद्रोह	दुद्रुहतुः	दुद्रुहुः
म०	दुद्रोहिथ, दुद्रोढ, दुद्रोग्ध	दुद्रुहथुः	दुद्रुह
उ०	दुद्रोह	दुद्रुहिव, दुद्रुह्व	दुद्रुहिम, दुद्रुह्म

अपवाद

१६४. (१) तॄ, भज्, फल् आदि धातु नित्य और त्रस्, भ्रम्, राज् आदि धातु विकल्प से १६३ (ग) का अनुकरण करते हैं।

तॄ प० 'cross': strong ततर्, ततार्; weak तेर्।

प्र०	ततार	तेरतुः	तेरुः
म०	तेरिथ	तेरथुः	तेर
उ०	ततार, ततर	तेरिव	तेरिम

भज् P.A. 'serve' : strong बभज्, बभाज् weak भेज्।

आत्मने०

प्र०	बभाज	भेजतुः	भेजुः
म०	बभक्थ, भेजिथ	भेजथुः	भेज
उ०	बभाज, बभज	भेजिव	भेजिम

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परस्मै०

प्र०	भेजे	भेजाते	भेजिरे
म०	भेजिषे	भेजाथे	भेजिध्वे
उ०	भेजे	भेजिवहे	भेजिमहे

राज् उभय० 'shine' : strong रराज्; weak रेज्।

परस्मै०

प्र०	रराज	रराजतुः रेजतुः	रराजुः रेजुः
म०	रराजिथ रेजिथ	रराजथुः रेजथुः	रराज रेज
उ०	रराज	रराजिव रेजिव	रराजिम रेजिम

आत्मने०

प्र०	रराजे रेजे	रराजाते रेजाते	रराजिरे रेजिरे
म०	रराजिषे रेजिषे	रराजाथे रेजाथे	रराजिध्वे रेजिध्वे
उ०	रराजे रेजे	रराजिवहे रेजिवहे	रराजिमहे रेजिमहे

(२) चि, जि, हि आदि धातुओं को मूलधातु में कि, गि और घि आदेश होता है। चि को विकल्प से कि होता है।

जि प० 'conquer' : strong जिगय्, जिगाय्; weak जिग्य्।

प्र०	जिगाय	जिग्यतुः	जिग्युः
म०	जिगयिथ, जिगेथ	जिग्यथुः	जिग्य
उ०	जिगाय, जिगय	जिग्यिव	जिग्यिम

(३) भू के अभ्यास में अ और मूलधातु में निरन्तर ऊ रहता है :—

परस्मै०

प्र०	बभूव	बभूवतुः	बभूवुः
म०	बभूविथ	बभूवथुः	बभूव
उ०	बभूव	बभूविव	बभूविम

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मने०

प्र०	बभूवे	बभूवाते	बभूविरे
म०	बभूविषे	बभूवाथे	बभूविध्वे
उ०	बभूवे	बभूविवहे	बभूविमहे

(४) अधि–इ 'study' को अधिजगा है :—

प्र०	अधिजगे	अधिजगाते	अधिजगिरे
म०	अधिजगिषे	अधिजगाथे	अधिजगिध्वे
उ०	अधिजगे	अधिजगिवहे	अधिजगिमहे

(५) यम् 'restrain' को सम्प्रसारण नहीं होता, और यह १६३ (ग) का अनुसरण करता है। वस् 'wear' और वम् 'vomit' को भी सम्प्रसारण नहीं होता। जैसे, *e. g.* यम्—यमाम, येमतुः, येमुः, ययन्थ इत्यादि। वस्—ववास, ववसतुः ववसुः। वस—ववसे, ववसाते, ववसिरे, इत्यादि।

(६) ग्रन्थ्, श्रन्थ्, दम्भ्, स्वञ्ज्, आदि धातुओं के अनुनासिक का लोप हो जाता है। अनुनासिक के लोप में 'ग्रन्थ्, श्रन्थ्, और दम्भ् पित् प्रत्ययों से पूर्व भी १६३ (ग) का अनुसरण करते हैं। जैसे,

ग्रन्थ्, प० 'put together:' strong जग्रन्थ्, weak ग्रेथ्।

प्र०	जग्रन्थ ग्रेथ	जग्रन्थतुः ग्रेथतुः	जग्रन्थुः ग्रेथुः
म०	जग्रन्थिथ ग्रेथिथ	जग्रन्थथुः ग्रेथथुः	जग्रन्थ ग्रेथ
उ०	जग्रन्थ ग्रेथ	जग्रन्थिव ग्रेथिव	जग्रन्थिम ग्रेथिम

(७) अश् 'pervade', अर्च 'worship', आदि धातुओं को अभ्यास में आन् का आगम होता है :—

अश् परस्मै०—आनश्।

प्र०	आनशे	आनशाते	आनशिरे
म०	आनशिषे, आनक्षे	आनशाथे	आनशिध्वे आनड्ढ्वे
उ०	आनशे	आनशिवहे आनश्वहे	आनशिमहे आनश्महे

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्च् परस्मै०—आनर्च ।

प्र०	आनर्च	आनर्चतुः	आनर्चुः
म०	आनर्चिथ	आनर्चथुः	आनर्च
उ०	आनर्च	आनर्चिव	आनर्चिम

१६५. **अनेकाच्** धातुओं का लिट् बनाने के लिए धातु को **आम्** प्रत्यय लगा कर कृ, अस् या भू के लिट् के रूपों का **अनुप्रयोग** (auxialiary) होता है। अनुप्रयुक्त कृ के परस्मै० रूप परस्मै० धातुओं को और आत्मने० के रूप आत्मने० धातुओं को लगते हैं।

(क) धातु के **अन्त्य स्वर** और **उपधा** के **ह्रस्व स्वर** को **आम्** से पूर्व **गुण** होता है परन्तु विद् धातु को गुण नहीं होता।

चुर् उभय० 'steal' (चोरय) परस्मै० ।

प्र०	चोरयाञ्चकार	चोरयाञ्चक्रतुः	चोरयाञ्चक्रुः
म०	चोरयाञ्चकर्थ	चोरयाञ्चक्रथुः	चोरयाञ्चक्र
उ०	चोरयाञ्चकार चोरयाञ्चकर	चोरयाञ्चकृव	चोरयाञ्चकृम

आत्मने० ।

प्र०	चोरयाञ्चक्रे	चोरयाञ्चक्राते	चोरयाञ्चक्रिरे
म०	चोरयाञ्चकृषे	चोरयाञ्चक्राथे	चोरयाञ्चकृढ्वे
उ०	चोरयाञ्चक्रे	चोरयाञ्चकृवहे	चोरयाञ्चकृमहे

भू[1]—चोरयाम्बभूव चोरयाम्बभूवतुः चोरयाम्बभूवुः इत्यादि।
अस्—चोरयामास, चोरयामासतुः चोरयामासुः इत्यादि।

१६६. चुरादि, णिजन्त, तथा नाम-धातुओं के अतिरिक्त नीचे लिखे धातुओं को भी **आम्** लगता है :—

(क) ईक्ष्, ऊह्, एध् आदि तथा दय्, अय्, and आस् धातुओं को **आम्** नित्य लगता है:—

ईक्ष् 'see' आत्मने०

प्र०	ईक्षाञ्चक्रे	ईक्षाञ्चक्राते	ईक्षाञ्चक्रिरे
म०	ईक्षाञ्चकृषे	ईक्षाञ्चक्राथे	ईक्षाञ्चकृढ्वे
उ०	ईक्षाञ्चक्रे	ईक्षाञ्चकृवहे	ईक्षाञ्चकृमहे

१. यहां कृ के स्थान में अस् और भू के रूप भी दिखाए गए हैं।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एध् 'grow' आत्मने०

प्र०	एधांचक्रे	एधांचक्राते	एधांचक्रिरे
म०	एधांचकृषे	एधांचक्राथे	एधांचकृढ्वे
उ०	एधांचक्रे	एधांचकृवहे	एधांचकृमहे

दय् 'pity' आत्मने०

प्र०	दयाञ्चक्रे	दयाञ्चक्राते	दयाञ्चक्रिरे
म०	दयांचकृषे	दयांचक्राथे	दयांचकृढ्वे
उ०	दयांमास	दयांमासिव	दयामासिम

ऐसे ही आसाञ्चक्रे, आसाम्बभूव आसामास, इत्यादि

(क) विद् 'know' और जागृ 'awake' को 'आम्' विकल्प से लगता है :—

प्र०	विवेद	विविदतुः	विविदुः
	विदामास	विदामासतुः	विदामासुः
म०	विवेदिथ	विविदथुः	विविद
	विदामासिथ	विदामासथुः	विदामास
उ०	विवेद	विविदिव	विविदिम
	विदामास	विदामासिव	विदामासिम

जागृ 'awake' परस्मै०

प्र०	जजागार	जजागरतुः	जजागरुः
	जागरामास	जागरामासतुः	जागरामासुः
म०	जजागरिथ	जजागरथुः	जजागर
	जागरामासिथ	जागरामासथुः	जागरामास
उ०	जजागार, जजागर	जजागरिव	जजागरिम
	जागरामास	जागरामासिव	जागरामासिम

(ख) भी, ह्री, भृ, को द्वित्व के बाद 'आम्' विकल्प से लगता है :—

'भी fear'.

प्र०	बिभाय	बिभ्यतुः	बिभ्युः
	बिभयामास	बिभयामासतुः	बिभयामासुः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म०	बिभयिथ, बिभेथ	बिभ्यथुः	बिभ्य
	बिभयामासिथ	बिभयामासथुः	बिभयामास
उ०	बिभयामास	बिभयामासिव	बिभयामासिम

ऐसे ही ह्री—जिह्राय, जिह्रयामास। भृ—बभार, बिभरामास हु—जुहाव, जुहवामास, इत्यादि।

अभ्यास २२.

संस्कृत में अनुवाद करो:—

(क) भीष्म ने आयु भर का कड़ा ब्रह्मचर्य का व्रत धारण किया (गृह्)। दिलीप ने रघु को राज्य सौंपा (दा) और आप जंगल को चला गया (श्रि)। राम ने लंका-दहन की बात सुनी (श्रु)। राक्षसों को सीता पर ज़रा भी दया न आई (दय्)। परशुराम को लक्ष्मण पर बड़ा क्रोध आया (क्रुध्)। कौरवों ने पांडवों से द्रोह किया (द्रुह्)। ऋषि ने कुत्ते को शेर बना दिया (कृ)। राम और लक्ष्मण लौटे (नि-वृत्) पर उन्होंने सीता को कुटी में न देखा (दृश्)। रावण सीता को हर ले गया (अप-हृ)। भगीरथ गंगा को समुद्र तक ले गए (नी)। राजा ने प्रातःकाल गौ को दुहा (दुह्)। किसानों ने खेतों में बीज बोया (वप्)। जाड़े में आप काशी में रहे थे। (वस्)। राजा दशरथ बूढ़े हो गए (जृ)। राजकुमारों ने कहा (वच्)—'राक्षस को हमने मारा था (हन्)।'

(ख) चन्द्रवंश में विश्वामित्र एक बड़े मशहूर राजा हुए थे (भू) विश्वामित्र ने वसिष्ठ पर हमला किया (आ-क्रम्)। वसिष्ठ ने हजारों यवनों को पैदा कर दिया (सृज्)। उन्होंने वशिष्ठ की स्तुति की (स्तु)। वे विश्वामित्र की सेना को पराजित करने में समर्थ हुए (शक्)। दशरथ और कौशल्या ने यज्ञ किया (यज्)। उनकी रानियों को चार पुत्र पैदा हुए (जन्)। राम वन में रहा (वस्), ज़मीन पर सोया (स्वप्) और वृक्षों की छाल को पहनता रहा (वस्, परि धा)। मुझे परीक्षा पास करने की इच्छा थी (इष्) इसलिए मैं मेहनत से पढ़ा (अधि-इ)। कृष्ण और बलराम मथुरा गए (गम्) और उन्होंने कंस को मारा (हन्)। हमने अपना पाठ याद किया था (स्मृ)। आप उस स्थान को देखते ही रो पडे (रुद्)। राम, लक्ष्मण और सीता ने अयोध्या को छोड़ा (त्यज्), सरयू को पार किया (तॄ) और दंडक बन को गए (इ)। वन-वासियों ने उनकी पूजा की (अर्च्) और अनेक प्रकार से उनकी सेवा की (भज्, सेव)। हम वहां कुछ देर खड़े रहे थे (स्था)। हम वहां से भाग गए

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(धाव्)। उन्होंने धन चुराया था (चुर्)। बटोही प्रातः काल जागे (जागृ) और उन्होंने चावल पकाए (पच्)। अर्जुन ने शत्रु को देखा (ईक्ष्) और तीर से बेंध डाला (व्यध्)। बादलों में बिजलियां चमकती थीं (राज्)। लड़कों ने साधु को बुलाया (ह्वे) और उससे रास्ता पूछा (प्रच्छ्)। उसने उस मार्ग को न जाना (बुध्) जिससे वह किसी और स्थान को चला गया (पद्)। ऋषियों ने इन उपदेशों को ग्रन्थ में इकठा किया था (ग्रन्थ्)।

(२) दिए हुए धातुओं के लिट् लकार के समुचित रूपों द्वारा नीचे लिखे वाक्यों में रिक्त पदों को पूरा करो :—

— गां स यज्ञाय सस्याय मघवा दिवम्। दुह्।
ऊनं न सत्त्वेष्वधिको —। वध्।
जनको हि बहुदक्षिणेन यज्ञेन —। यज्।
ते कपीन्द्रा मन्युं रोद्धुं न —। शक्।
राज्ञोस्तयोस्तुमुलं युद्धं —। सम्-आ-पद्।
निशम्य देवानुचरस्य वाचं मनुष्यदेवोऽपि —। वच्।
लोमशोऽगस्त्यस्य प्रभावं —। कथ्।
दानवाः स्वर्गलोकं भृशं —। पीड्।
तमृषिं देवाः — तस्मास्थीनि च —। प्र-नम्, याच्।
रजोभिः सर्वा दिशः —। वि-अश्।
स महात्मा त्रिलोकस्य हिताय प्राणान् —। उत्-सृज्।
सोऽनिश्चयान्नापि — न —। या, स्था।
काश्चिन्न बुद्धं — युवत्यः। दृश्।
स वृत्रस्य वधाय महद्वज्रं —। मुच्।
तेन हतो वृत्रो भूमौ —। स्वप्।

---

६. लुङ् 'Aorist'.

१६७. लुङ् लकार के सात भेद हैं और ये दो वर्गों में विभक्त हैं। एक वर्ग में धातु पर अ के आगम सहित या रहित प्रत्यय लगते हैं और दूसरे में धातु और प्रत्यय के बीच स् लगता है। पहले वर्ग में तीन और दूसरे में चार भेद शामिल हैं। लुङ् में भी धातु से पूर्व लङ् की भाँति अ का आगम होता है।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. लुङ् का प्रथम भेद 'First Form'.

१६८. लुङ् के प्रथम भेद में लङ् लकार के प्रत्यय लगते हैं। केवल प्रथम पुरुष के बहु० में अन् के स्थान में उस् प्रत्यय लगता है।

(क) उस् प्रत्यय से पूर्व धातु के आ का लोप हो जाता है।

(ख) इस भेद में आत्मनेपद नहीं होता।

१६९. कुछ आकारान्त धातु जैसे दा, धा, स्था, पा, आदि तथा भू, इ आदि धातु लुङ् के इस भेद के अन्तर्गत हैं।

(क) भू को प्रथमपुरुष बहु० में अन् प्रत्यय लगता है। इ को गा आदेश होता है।

(ख) दा, धा, स्था, अधि-इ आत्मनेपद में चतुर्थ भेद और भू आत्मने० में पंचम भेद का अनुसरण करते हैं।

धातुरूपावली।

दा 'give', परस्मै०

प्र०	अदात्	अदाताम्	अदुः
म०	अदाः	अदातम्	अदात
उ०	अदाम्	अदाव	अदाम

पा 'brink', परस्मै०

प्र०	अपात्	अपाताम्	अपुः
म०	अपाः	अपातम्	अपात
उ०	अपाम्	अपाव	अपाम

स्था 'stand', परस्मै०

प्र०	अस्थात्	अस्थाताम्	अस्थुः
म०	अस्थाः	अस्थातम्	अस्थात
उ०	अस्थाम्	अस्थाव	अस्थाम

भू 'be', परस्मै०

प्र०	अभूत्	अभूताम्	अभूवन्
म०	अभूः	अभूतम्	अभूत
उ०	अभूवम्	अभूव	अभूम

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इ go', परस्मै०

प्र०	अगात्	अगाताम्	अगुः
म०	अगाः	अगातम्	अगात
उ०	अगाम्	अगाव	अगाम

अधि-इ 'study, परस्मै०

प्र०	अध्यगात्	अध्यगाताम्	अध्यगुः
म०	अध्यगाः	अध्यगातम्	अध्यगात
उ०	अध्यगाम्	अध्यगाव	अध्यगाम

---

२. द्वितीयो भेदः Second Form'.

१७०. लुङ् के द्वितीय भेद में धातु को प्रत्ययों से पूर्व अ का आगम होता है। लङ् के प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं, और इसमें तुदादिगण के समान रूप बनते हैं।

सिच् 'sprinkle', परस्मै०

प्र०	असिचत्	असिचताम्	असिचन्
म०	असिचः	असिचतम्	असिचत
उ०	असिचम्	असिचाव	असिचाम

आत्मनेपद

प्र०	असिचत	असिचेताम्	असिचन्त
म०	असिचथाः	असिचेथाम्	असिचध्वम्
उ०	असिचे	असिचावहि	असिचामहि

गम् 'go', परस्मै०

प्र०	अगमत्	अगमताम्	अगमन्
म०	अगमः	अगमतम्	अगमत
उ०	अगमम्	अगमाव	अगमाम

कुप् 'be angry', परस्मै०

प्र०	अकुपत्	अकुपताम्	अकुपन्
म०	अकुपः	अकुपतम्	अकुपत
उ०	अकुपम्	अकुपाव	अकुपाम

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नश् 'perish' परस्मै०

प्र०	अनशत्	अनशताम्	अनशन्
म०	अनशः	अनशतम्	अनशत
उ०	अनशम्	अनशाव	अनशाम

अपवाद

(क) १. अस् 'throw' को थ् का आगम होता है। २. ख्या 'tell' के आ को अ होता है। जैसे, अख्यत्। ३. पत् 'fall' और वच् 'speak' को पप्त् और वोच् आदेश होता है। जैसे अपप्तत्, अवोचत्। ४. शास् 'rule' ह्वे 'call' को शिष् और ह्व् होता है। जैसे, अशिषत्, अह्वत्। ५. दृश् 'see' को गुण होता है। जैसे, अदर्शत्।

अस् 'throw', परस्मै०

प्र०	आस्थत्	आस्थताम्	आस्थन्
म०	आस्थः	आस्थतम्	आस्थत
उ०	आस्थम्	आस्थाव	आस्थाम

दृश् 'see', परस्मै०

प्र०	अदर्शत्	अदर्शताम्	अदर्शन्
म०	अदर्शः	अदर्शतम्	अदर्शत
उ०	अदर्शम्	अदर्शाव	अदर्शाम

ह्वे 'call, बुलाना' उभय०

परस्मै०

प्र०	अह्वत्	अह्वताम्	अह्वन्
म०	अह्वः	अह्वतम्	अह्वत
उ०	अह्वम्	अह्वाव	अह्वाम

आत्मने०

प्र०	अह्वत	अह्वेताम्	अह्वन्त
म०	अह्वथाः	अह्वेथाम्	अह्वध्वम्
उ०	अह्वे	अह्वावहि	अह्वामहि

वच् 'speak, बोलना' परस्मै०

प्र०	अवोचत्	अवोचताम्	अवोचन्

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म०	अवोचः	अवोचतम्	अवोचत
उ०	अवोचम्	अवोचाव	अवोचाम

आत्मनेपद

प्र०	अवोचत	अवो[illegible]म्	अवोचन्त
म०	अवोचथाः	अवोचेथाम्	अवोचध्वम्
उ०	अवोचे	अवोचावहि	अवोचामहि

(ख) नीचे लिखे अन्य प्रसिद्ध धातुओं के रूप लुङ् के द्वितीय भेद में प्रयुक्त होते हैं:—

शक् 'be able', अशकत्। विद्—अविदत्। क्रुध्—अक्रुधत्। आप्—आपत्। गुप्—अगुपत्। शम्—अशमत्। भ्रंश्—अभ्रशत्। पुष्—अपुषत्। द्रुह्—अद्रुहत्। मुह्—अमुहत्। स्निह्—अस्निहत्। मुच्—अमुचत्। मद्—अमदत्। सद्—असदत्। कुप्—अकुपत्। सृप्—असृपत्। क्षुभ्—अक्षुभत्। तम्—अतमत्। भ्रम्—अभ्रमत्। भ्रंश्—अभ्रशत्। तुष्—अतुषत्। तृष्—अतृषत्। पिष्—अपिषत्। पुष्—अपुषत्। रुष्—अरुषत्।

---

३. तृतीयो (द्वित्व) भेदः Third or Reduplicated Form'.

१७२. एकाच् धातु कम् 'desire', श्रि 'go', द्रु 'run', स्रु 'flow', तथा अनेकाच् चुरादि, णिजन्त और नामधातु लुङ् के इस भेद में प्रयुक्त होते हैं। इसमें धातु को द्वित्व होता है और लङ् के प्रत्यय लगते हैं।

द्वित्व के विशेष नियम

१७२. (१) अ, आ, ऋ, ॠ, और ऌ, अभ्यास में इ आदेश होता है। इस अभ्यास की इ को दीर्घ होता है यदि परे संयोग (conjunct consonant) न हो।

(२) धातु के अन्त्य उ या ऊ को अभ्यास में उ बना रहता है यदि पवर्ग, अन्तस्थ या ज परे न हो। जैसे, नु—अनूनवत्, दू—अदूदवत्। परन्तु पू—अपीपवत्, भू—अबीभवत्, लू—अलीलवत्, जु—अजीजवत्।

। अनूनवत्, अबीभवत्।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४) यदि धातु के आदि में स्वर और अन्त में असंयुक्त व्यंजन हो तो व्यंजन को द्वित्व होता है और अभ्यास में इ का आगम होता है। जैसे, आप्—आपिपत्।

(५) यदि धातु के अन्त में ऐसा संयोग हो जिसके आदि में अनुनासिक, द् या र् हो तो संयोग के दूसरे व्यंजन को द्वित्व होता है। जैसे, अर्ज्—आर्जिजत्, अर्ह—आर्जिहत्। अर्थ्—आर्तथत्, अन्ध्—आन्दधत्। परन्तु ईक्ष्—ऐचिक्षत्।

१७३. चुरादि तथा णिजन्त धातुओं के अंग (base) के अय का लोप हो जाता है (परन्तु अय से पूर्व धातु के स्वर का विकार बना रहता है)। अय रहित अंग की उपधा के स्वर को ह्रस्व हो कर इसे द्वित्व होता है। उपधा के ए, ऐ और ओ, औ को क्रमशः इ और उ हो जाता है। जैसे, चुर्—चोरय, चोर्, चुर्—चुचुर्। भू—भावय, भाव्, भव—बभव्। नी—नायय—नाय्—नय, ननय।

श्रि 'go' उभय० शिश्रि-शिश्रिय्, अशिश्रिय।

परस्मै०

प्र०	अशिश्रियत्	अशिश्रियताम्	अशिश्रियन्
म०	अशिश्रियः	अशिश्रियतम्	अशिश्रियत
उ०	अशिश्रियम्	अशिश्रियाव	अशिश्रियाम

आत्मने०

प्र०	अशिश्रियत	अशिश्रियेताम्	अशिश्रियन्त
म०	अशिश्रियथाः	अशिश्रियेथाम्	अशिश्रियध्वम्
उ०	अशिश्रिये	अशिश्रियावहि	अशिश्रियामहि

कम् 'desire' आत्मने०

प्र०	अचीकमत	अचीकमेताम्	अचीकमन्त
म०	अचीकमथाः	अचीकमेथाम्	अचीकमध्वम्
उ०	अचीकमे	अचीकमावहि	अचीकमामहि

या

प्र०	अचकमत	अचकमेताम्	अचकमन्त
म०	अचकमथाः	अचकमेथाम्	अचकमध्वम्
उ०	अचकमे	अचकमावहि	अचकमामहि

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुच् 'caus' परस्मै० (मोच्—मुच्—मुमुच्) अमूमुच।

प्र०	अमूमुचत्	अमूमुचताम्	अमूमुचन्
म०	अमूमुचः	अमूमुचतम्	अमूमुचत
उ०	अमूमुचम्	अमूमुचाव	अमूमुचाम

आत्मने०

प्र०	अमूमुचत	अमूमुचेताम्	अमूमुचन्त
म०	अमूमुचथाः	अमूमुचेथाम्	अमूमुचध्वम्
उ०	अमूमुचे	अमूमुचावहि	अमूमुचामहि

उभयपदी कृ 'caus' परस्मै०

प्र०	अचीकरत्	अचीकरताम्	अचीकरन्
म०	अचीकरः	अचीकरतम्	अचीकरत
उ०	अचीकरम्	अचीकराव	अचीकराम

आत्मने०

प्र०	अचीकरत	अचीकरेताम्	अचीकरन्त
म०	अचीकरथाः	अचीकरेथाम्	अचीकरध्वम्
उ०	अचीकरे	अचीकरावहि	अचीकरामहि

भू *caus* प० भाव्—भव्—बभव, बिभव, अबीभव।

प्र०	अबीभवत्	अबीभवताम्	अबीभवन्
म०	अबीभवः	अबीभवतम्	अबीभवत
उ०	अबीभवम्	अबीभवाव	अबीभवाम

अपवाद।

१७४. (क) यदि धातु के आदि में पवर्ग, य्, र्, ल् को छोड़ कर कोई व्यंजन हो और अन्त में उ या ऊ हो, तो अभ्यास में अ को उ आदेश होता है। परन्तु द्रु, श्रु और स्नु के णिजन्त लुङ् में अ को इ या उ विकल्प से होता है। जैसे, स्तु णिजन्त—अतुष्टवत्। परन्तु श्रु—अशुश्रवत् या अशिश्रवत्।

(ख) स्मृ, त्वर्, प्रथ्, स्तॄ, स्पृश्, कथ्, रच् आदि धातुओं के अभ्यास में अ को इ नहीं होता। जैसे, कथ्—अचकथत्, रच्—अररचत्-त, त्वर—अतत्वरत्-त, प्रथ्—अपप्रथत् त। णिजन्त—स्मृ—असस्मरत्, स्तॄ—अतस्तरत्, स्पृश्—अपस्पर्शत् या अपिस्पर्शत्।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ग) पीड्, दीप्, जीव्, मील्, भ्राज्, भाष्, भण्, भास्, लुप् आदि धातुओं की उपधा को विकल्प से ह्रस्व होता है। जैसे, पीड्—अपिपीडत् या अपीपिडत्। दीप्-अदिदीपत् या अदीदिपत्। जीव्-अजिजीवत् या अजीजिवत्। लुप्—अलुलोपत् या अलूलुपत्।

(घ) शास्, क्रीड्, खाद्, खेल्, याच्, राध्, राज्, लोक्, वेप्, सेव्, सूच्, आदि धातुओं की उपधा को ह्रस्व नहीं होता। जैसे, शास् णिजन्त—अशशासत्। क्रीड्—अचिक्रीडत्। याच् णिजन्त—अययाचत्.त। सेव् णिजन्त—असिषेवत्.त।

(ङ) ह्वे और स्वप् को नित्य और श्वि को विकल्प से सम्प्रसारण होता है। जैसे ह्वे—अजूहवत्.त (णिज्)। स्वप् (णिज्)—असूषुपत्। श्वि (णिज्)—अशिश्वयत्-त या अशूशवत्.त।

(च) घ्रा, पा, स्था, द्युत् आदि णिजन्त धातुओं के रूप अपवादक हैं। जैसे, घ्रा 'smell', अजिघ्रपत, अजिघ्रिपत। पा 'drink' अपीप्यत्; 'protect'—अपीपलत्। स्था 'stand' अतिष्ठिपत्। द्युत् 'shine' अदिद्युतत्।

---

४. चतुर्थो भेदः 'Fourth Form'.

१७५. लुङ् का चतुर्थ भेद प्रत्ययों से पूर्व धातु पर स् लगाने से बनता है। स्-सहित प्रत्यय निम्न-लिखित हैं :—

	परस्मै०			आत्मने०		
प्र०	सीत्	स्ताम्	सुः	स्त	साताम्	सत
म०	सीः	स्तम्	स्त	स्थाः	साथाम्	ध्वम्
उ०	सम्	स्व	स्म	सि	स्वहि	स्महि

(क) यदि अंग (base) के अन्त में कोई ह्रस्व स्वर या अनुनानासिक और र् के बिना कोई व्यंजन हो तो इसके पीछे स्ताम्, स्तम्, स्त, स्थाः प्रत्ययों के आदि स् का लोप हो जाता है। ध्वम् को ढ्वम् होता है।

१७६. (क) परस्मैपद प्रत्ययों से पूर्व धातु के स्वर को वृद्धि आदेश होता है। जैसे, नी—अनैषीत्। कृ—अकार्षीत्।

परन्तु मस्ज् को वृद्धि के पश्चात् अनुनासिक का आगम होता है। दृश्

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और सृज् को आर् (वृद्धि) के स्थान में रा होता है। परन्तु तृप्, दृश्, मृश्, स्पृश्, कृष् आदि धातुओं को विकल्प से रा होता है। जैसे, मस्ज्— अमाङ्क्षीत्। दृश्—अद्राक्षीत्, सृज्—अस्राक्षीत्। कृष्—अकार्क्षीत् या अक्राक्षीत्।

(ख) आत्मनेपद प्रत्ययों से पूर्व धातु के अन्त्य इ और उ (ह्रस्व और दीर्घ) को गुण आदेश होता है। अन्य सब स्वर अविकृत रहते हैं। ॠ को ईर् या ऊर् होता है। जैसे, नी—अनेष्ट, सू—असोष्ट, कृ—अकृत, वॄ—अवूर्ष्ट।

धातुरूपावली।

नी 'lead', परस्मै०

प्र०	अनैषीत्	अनैष्टाम्	अनैषुः
म०	अनैषीः	अनैष्टम्	अनैष्ट
उ०	अनैषम्	अनैष्व	अनैष्म

आत्मनेपद

प्र०	अनेष्ट	अनेषाताम्	अनेषत
म०	अनेष्ठाः	अनेषाथाम्	अनेढ्वम्
उ०	अनेषि	अनेष्वहि	अनेष्महि

जि, चि, ली, श्रु, यु, आदि के रूप नी की भाँति जानो।

कृ 'do', परस्मै०

प्र०	अकार्षीत्	अकार्ष्टाम्	अकार्षुः
म०	अकार्षीः	अकार्ष्टम्	अकार्ष्ट
उ०	अकार्षम्	अकार्ष्व	अकार्ष्म

आत्मनेपद

प्र०	अकृत	अकृषाताम्	अकृषत
म०	अकृथाः	अकृषाथाम्	अकृढ्वम्
उ०	अकृषि	अकृष्वहि	अकृष्महि

पच् 'cook' परस्मै०

प्र०	अपाक्षीत्	अपाक्ताम्	अपाक्षुः
म०	अपाक्षीः	अपाक्तम्	अपाक्त
उ०	अपाक्षम्	अपाक्ष्व	अपाक्ष्म

CC-0 Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मनेपद

प्र०	अपक्त	अपक्षाताम्	अपक्षत
म०	अपक्थाः	अपक्षाथाम्	अपग्ध्वम्
उ०	अपक्षि	अपक्ष्वहि	अपक्ष्महि

प्रच्छ् 'ask', परस्मै०

प्र०	अप्राक्षीत्	अप्राष्टाम्	अप्राक्षुः
म०	अप्राक्षीः	अप्राष्टम्	अप्राष्ट
उ०	अप्राक्षम्	अप्राक्ष्व	अप्राक्ष्म

छिद् 'cut' परस्मै०

प्र०	अच्छैत्सीत्	अच्छैत्ताम्	अच्छैत्सुः
म०	अच्छैत्सीः	अच्छैत्तम्	अच्छैत्त
उ०	अच्छैत्सम्	अच्छैत्स्व	अच्छैत्स्म

आत्मने०

प्र०	अच्छित्त	अच्छित्साताम्	अच्छित्सत
म०	अच्छित्थाः	अच्छित्साथाम्	अच्छिद्ध्वम्
उ०	अच्छित्सि	अच्छित्स्वहि	अच्छित्स्महि

उभयपदी रुध् hinder परस्मै०

प्र०	अरौत्सीत्	अरौद्धाम्	अरौत्सुः
म०	अरौत्सीः	अरौद्धम्	अरौद्ध
उ०	अरौत्सम्	अरौत्स्व	अरौत्स्म

आत्मनेपद

प्र०	अरुद्ध	अरुत्साताम्	अरुत्सत
म०	अरुद्धाः	अरुत्साथाम्	अरुद्ध्वम्
उ०	अरुत्सि	अरुत्स्वहि	अरुत्स्महि

दह् 'burn', परस्मै०

प्र०	अधाक्षीत्	अदाग्धाम्	अधाक्षुः
म०	अधाक्षीः	अदाग्धम्	अदाग्ध
उ०	अधाक्षम्	अधाक्ष्व	अधाक्ष्म

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह् उभय० 'carry', परस्मै०

प्र०	अवाक्षीत्	अवोढाम्	अवाक्षुः
म०	अवाक्षीः	अवोढम्	अवोढ
उ०	अवाक्षम्	अवाक्ष्व	अवाक्ष्म

आत्मनेपद

प्र०	अवोढ	अवक्षाताम्	अवक्षत
म०	अवोढाः	अवक्षाथाम्	अवोढ्वम्
उ०	अवक्षि	अवक्ष्वहि	अवक्ष्महि

दृश् 'see', परस्मै०

प्र०	अद्राक्षीत्	अद्राष्टाम्	अद्राक्षुः
म०	अद्राक्षीः	अद्राष्टम्	अद्राष्ट
उ०	अद्राक्षम्	अद्राक्ष्व	अद्राक्ष्म

अपवादक।

१७७. (क) दा, धा और स्था आत्मनेपद में चतुर्थ भेद में प्रयुक्त होते हैं। इनके आ को इ हो जाता है। और इस इ को गुण नहीं होता।

दा 'give', आत्मने०

प्र०	अदित	अदिषाताम्	अदिषत
म०	अदिथाः	अदिषाथाम्	अदिढ्वम्
उ०	अदिषि	अदिष्वहि	अदिष्महि

प्र-स्था 'set out', आत्मने०

प्र०	प्रास्थित	प्रास्थिषाताम्	प्रास्थिषत
म०	प्रास्थिथाः	प्रास्थिषाथाम्	प्रास्थिढ्वम्
उ०	प्रास्थिषि	प्रास्थिष्वहि	प्रास्थिष्महि

(ख) गम् (आत्मने०) और उप-यम (आ०) के म् का विकल्प से लोप होता है। जैसे, उपयम्—उपायत या उपायंस्त।

सम्-गम् 'meet', आत्मने०

प्र०	समगंस्त	समगंसाताम्	समगंसत
म०	समगंस्थाः	समगंसाथाम्	समगन्ध्वम्
उ०	समगंसि	समगंस्वहि	समगंस्महि

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या

प्र०	समगत	समगसाताम्	समगसत
म०	समगथाः	समगसाथाम्	समगध्वम्
उ०	समगसि	समगस्वहि	समगस्महि

(ग) वस् 'dwell' परस्मै० के स् को प्रत्यय के स् से पूर्व त् होता है:—

प्र०	अवात्सीत्	अवात्ताम्	अवात्सुः
म०	अवात्सीः	अवात्तम्	अवात्त
उ०	अवात्सम्	अवात्स्व	अवात्स्म

(घ) बुध् आत्मने० 'know' को प्रथम पुरुष के एक० में विकल्प से इ लगता है, और इससे पूर्व उपधा को गुण होता है :—

प्र०	अबुद्ध, अबोधि	अभुत्साताम्	अभुत्सत
म०	अबुद्धाः	अभुत्साथाम्	अभुद्ध्वम्
	अभुत्सि	अभुत्स्वहि	अभुत्स्महि

(ङ) अधि-इ 'study' के इ को विकल्प से गी होता है। आ-हन् आत्मने० के न् का इस रूप में लोप हो जाता है। जैसे, अध्यैष्ट या अध्यगीष्ट। आ-हन्—आहत, आहसातां आहसत।

आ-हन् आत्मने०

प्र०	आहत	आहसाताम्	आहसत
म०	आहथाः	आहसाथाम्	आहध्वम्
उ०	आहसि	आहस्वहि	आहस्महि

पद् आत्मने०

प्र०	अपादि	अपत्साताम्	अपत्सत
म०	अपत्थाः	अपत्साथाम्	अपद्ध्वम्
उ०	अपत्सि	अपत्स्वहि	अपत्स्महि

१७८. कुछ प्रसिद्ध धातुओं के प्रथम० एक के रूप नीचे दिए गए हैं :—

जि—अजैषीत्। क्री 'buy'—अक्रैषीत्। भी—अभैषीत्। हृ—अहार्षीत्। श्रु—अश्रौषीत्। पू—अपावीत्। धा आ०—अधित। स्मृ—अस्मार्षीत्। भञ्ज्—अभाङ्क्षीत्। युज्—अयौक्षीत्। सृज्—अस्राक्षीत्। भिद्—अभैत्सीत्। बन्ध्—अभान्त्सीत्। स्वप्—

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्वाप्सीत्। रुद्—अरोदीत्। विद्—अवेदीत्। इष्—ऐषीत्। मुष्—अमोषीत्। व्रज्—अव्राजीत्। ग्रह्—अग्रहीत्। जागृ—अजागरीत्।

---

५. पञ्चमो भेदः 'Fifth Form.'

१७९. लुङ् के पंचम भेद में चतुर्थ भेद से यह अन्तर है कि इस में स् से पूर्व इ (इष्) लगता है ((स् को ष् हो जाता है)। इस भेद में प्रायः सेट् धातु ही शामिल हैं। जो धातु किसी अन्य भेद में प्रयुक्त नहीं होते वे इस में होते हैं। प्रत्यय अधोलिखित हैं :—

	परस्मै०			आत्मने०		
प्र०	ईत्	इष्टाम्	इषुः	इष्ट	इषाताम्	इषत
म०	ईः	इष्टम्	इष्ट	इष्ठाः	इषाथाम्	इढ्वम्
उ०	इषम्	इष्व	इष्म	इषि	इष्वहि	इष्महि

(क) परस्मै० के प्रत्ययों से पूर्व धातु के अन्त्य इ, ई; उ, ऊ; ऋ, ॠ; और लृ को और रकारान्त, लकारान्त धातुओं तथा वद् और व्रज् धातुओं के उपधा के अ को वृद्धि आदेश होता है। लग्, हस्, क्षण्, श्वस् आदि धातुओं में विकार नहीं होता।

(ख) आत्मनेपद के प्रत्ययों से पूर्व धातु के अन्त्य ह्रस्व और दीर्घ स्वर को और उपधा के ह्रस्व स्वर को गुण होता है। धातु के अन्य किसी स्वर में कोई विकार नहीं होता।

धातुरूपावली।

पू उभय० 'purify', परस्मै०

प्र०	अपावीत्	अपाविष्टाम्	अपाविषुः
म०	अपावीः	अपाविष्टम्	अपाविष्ट
उ०	अपाविषम्	अपाविष्व	अपाविष्म

आत्मनेपद

प्र०	अपविष्ट	अपविषाताम्	अपविषत
म०	अपविष्ठाः	अपविषाथाम्	अपविढ्वम्
उ०	अपविषि	अपविष्वहि	अपविष्महि

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुध्[1] उभय० 'awake' परस्मै०

प्र०	अबोधीत्	अबोधिष्टाम्	अबोधिषुः
म०	अबोधीः	अबोधिष्टम्	अबोधिष्ट
उ०	अबोधिषम्	अबोधिष्व	अबोधिष्म

आत्मनेपद

प्र०	अबोधिष्ट	अबोधिषाताम्	अबोधिषत
म०	अबोधिष्ठाः	अबोधिषाथाम्	अबोधिढ्वम्
उ०	अबोधिषि	अबोधिष्वहि	अबोधिष्महि

पठ् 'read', परस्मै०

प्र०	अपठीत्	अपठिष्टाम्	अपठिषुः
	अपाठीत्	अपाठिष्टाम्	अपाठिषुः
म०	अपठीः	अपठिष्टम्	अपठिष्ट
	अपाठीः	अपाठिष्टम्	अपाठिष्ट
उ०	अपठिषम्	अपठिष्व	अपठिष्म
	अपाठिषम्	अपाठिष्व	अपाठिष्म

वद् 'speak', परस्मै०

प्र०	अवादीत्	अवादिष्टाम्	अवादिषुः
म०	अवादीः	अवादिष्टम्	अवादिष्ट
उ०	अवादिषम्	अवादिष्व	अवादिष्म

ऐसे ही स्तु—अस्तावीत्, अस्ताविषम्। स्तॄ—अस्तरिष्ट, अस्तरिषि। क्रम्—अक्रमित्, अक्रमिषम्। श्वस्—अश्वसीत्, अश्वसिषम्। ग्रह—अग्रहीत्—अग्रहीष्ट, अग्रहीषम्—अग्रहीषि। इत्यादि।

अपवादक

१८०. (क) हन् को परस्मैपद में नित्य और आत्मने० में विकल्प से वध् आदेश होता है। वध् की उपधा में कोई विकार नहीं होता। जैसे. अवधीत, अवधिष्ट; अवधिषम्, अवधिषि।

(ख) जन्, दीप् पूर (आत्मने०) आदि को प्रथम० एक० के इष्ट के स्थान पर विकल्प से इ प्रत्यय लगता है। जैसे, अजनिष्ट, अजनि। अदीपिष्ट, अदीपि। अपूरिष्ट, अपूरि।

---

१. बुध् की उपधा को गुण होता है।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ग) तनादि गण की नकारान्त और णकारान्त धातुओं के अनुनासिक का लोप और प्रत्यय के इष्ठाः (म० एक०) और इष्ट (प्र० एक०) आत्मने० को क्रमशः थास् और त विकल्प से होता है। जैसे, तन्—अतनिष्ठाः, अतथाः; अतनिष्ट, अतत। मन्—अमनिष्ठाः, अमथाः; अमनिष्ट, अमनत। क्षिण्—अक्षेणिष्ठाः, अक्षिथाः; अक्षेणिष्ट, अक्षित।

---

६. षष्ठो भेदः 'Sixth Form'.

१८१. लुङ् के इस भेद में पंचम भेद के प्रत्ययों पर स् (सिष्) लगता है। इस में केवल परस्मैपद रहता है :—

प्र०	सीत्	सिष्टाम्	सिषुः
म०	सीः	सिष्टम्	सिष्ट
उ०	सिषम्	सिष्व	सिष्म

(क) आकारान्त धातु (प्रथम, द्वितीय और तृतीय भेद से भिन्न) तथा यम्, रम् (वि-आ-पूर्वक) और नम् आदि धातु इस भेद में शामिल हैं।

या 'go', परस्मै०

प्र०	अयासीत्	अयासिष्टाम्	अयासिषुः
म०	अयासीः	अयासिष्टम्	अयासिष्ट
उ०	अयासिषम्	अयासिष्व	अयासिष्म

नम् 'bow down', परस्मै०

प्र०	अनंसीत्	अनंसिष्टाम्	अनंसिषुः
म०	अनंसीः	अनंसिष्टम्	अनंसिष्ट
उ०	अनंसिषम्	अनंसिष्व	अनंसिष्म

यम् 'restrain' परस्मै०

प्र०	अयंसीत्	अयंसिष्टाम्	अयंसिषुः
म०	अयंनीः	अयंसिष्टम्	अयंसिष्ट
उ०	अयंसिषम्	अयंसिष्व	अयंसिष्म

ऐसे ही वि-रम्—व्यरंसीत्, व्यरंसिष्टाम्; व्यरंसिषम्। छो—अच्छासीत्, अच्छासिषम्। ली—अलासीत्, अलासिषम्।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

७. सप्तमो भेदः 'Seventh Form'.

१८२. लुङ् के सप्तम भेद के प्रत्यय लङ् के प्रत्ययों पर स लगा कर बनते हैं :—

	परस्मै०			आत्मने०		
प्र०	सत्	सताम्	सन्	सत	साताम्	सन्त
म०	सः	सतम्	सत	सथाः	साथाम्	सध्वम्
उ०	सम्	साव	साम	सि	सावहि	सामहि

(क) ऐसे अनिट् धातु जिनके अन्त में श्, ष्, स् या ह् और उपधा में इ, उ, या ऋ हो इस भेद में शामिल हैं। इनके उपधा में विकार नहीं होता।

दृश् को चतुर्थ भेद और स्पृश् और कृश् को विकल्प से सप्तम भेद के प्रत्यय लगते हैं।

(ख) दुह्, लिह, दिह्, और गुह् धातुओं से परे प्रत्यय के स (प्र० एक०: म० एक०, बहु०) और सा (उ० द्वि, बहु०) का विकल्प से लोप हो जाता है।

दिश् उभय० point' परस्मै०

प्र०	अदिक्षत्	अदिक्षताम्	अदिक्षन्
म०	अदिक्षः	अदिक्षतम्	अदिक्षत
उ०	अदिक्षम्	अदिक्षाव	अदिक्षाम

आत्मनेपद

प्र०	अदिक्षत	अदिक्षाताम्	अदिक्षन्त
म०	अदिक्षथाः	अदिक्षाथाम्	अदिक्षध्वम्
उ०	अदिक्षि	अदिक्षावहि	अदिक्षामहि

दुह् उभय० 'milk' परस्मै०

प्र०	अधुक्षत्	अधुक्षताम्	अधुक्षन्
म०	अधुक्षः	अधुक्षतम्	अधुक्षत
उ०	अधुक्षम्	अधुक्षाव	अधुक्षाम

आत्मनेपद

प्र०	अधुक्षत, अदुग्ध	अधुक्षाताम्	अधुक्षन्त
म०	अधुक्षथाः अदुग्धाः	अधुक्षाथाम्	अधुक्षध्वम् अदुग्ध्वम्

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उ०	अघुक्षि	अघुक्षावहि	अघुक्षामहि
		अदुह्वहि	अदुह्महि

लिह्—आ० अलिक्षत या अलीढ; अलिक्षथाः या अलीढाः।
प० अलिक्षत्, अलिक्षताम्, अलिक्षन्।

गुह्—आ० अघुक्षत या अगूढ; अघुक्षथाः या अगूढ़ा।
प० अघुक्षत्, अघुक्षताम्; अघुक्षम्।

स्पृश्—अस्पृक्षत्, अस्प्राक्षीत्, अस्पार्क्षीत्।

कृष—अकृक्षत्, अक्राक्षीत्, अकार्क्षीत् (अकृक्षत, अकृष्ट)।

गृह्—अघृक्षत्, अगर्हिष्ट। रुह—अरुक्षत् दिह्—अधिक्षत्। अधिक्षत, अदिग्ध।

द्विष्—अद्विक्षत्।

अभ्यास २३.

संस्कृत में अनुवाद करो :—

(क) सड़क पर बहुत से आदमी खड़े थे (स्था)। मैंने आपको पुस्तक दी (दा)। उन दोनों ने दूध पिया (पा)। हम नदी पर गए (इ)। तुम ने वेद पढ़ा (अधि-इ)। उस जंगल में कोई भी जन्तु न था (भू)। शकुन्तला ने आश्रम के पेड़ सींचे (सिच्)। गुरु जी मुझ पर नाराज़ हुए (क्रुध्)। आप वहाँ नहीं गये थे (गम्)। बिजुली की चमक एक दम नष्ट हो गई (नश्)। राम ने राक्षसों पर तीर फैंके। (अस्)। मैंने यह कपड़ा बाज़ार में देखा था (दृश्)। वह कुछ भी न बोला (वच्)। फल वृक्ष के नीचे गिरा (पत्) नल ने बहुत देर तक राज किया (शास्)। उसने मुझे बुलाया (ह्वे)।

(ख) वर्षा में तपस्वी लोग पहाड़ की चोटियों पर चले गये (श्रि)। हमने कभी धन की कामना नहीं की (कम्) राजा ने सब बंदियों को छोड़ दिया (मुच्)। आपने हमारी बात को नहीं सुना (श्रु)। उसने आपकी बहुत प्रसंशा की (स्तु)। लड़कियों ने अपनी मास्टरिन से कुछ नहीं कहा (कथ्)। मैंने सुन्दर काव्य रचा (रच्)। जरासंध ने यादवों को बहुत पीड़ा दी (पीड्)। हम मैदान में खेले (क्रीड्)। उसने मुझे पानी पिलाया (पा णिज्)। हमने लड़की का पालन किया (पा णिज्)। उसने आपको खड़ा किया (स्था णिज्)। कृष्ण ने उनसे आपकी सेवा कराई (सेव् णिज्) उसने मुझे वहाँ भिजवाया (नी णिज्)।

(ग) आपने शोर नहीं सुना (श्रु) मैंने यह काम नहीं किया (कृ)।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने बाग़ में फूल चुने (चि)। तूने चावल नहीं पकाये थे (पच्)। यह प्रश्न मैंने पूछा था (प्रच्छ्)। माली ने ये टहनियां काटी थीं (छिद्) कौरवों ने लाख के घर को जला दिया (दह्)। तुम यह भार वहां ले गये थे (वह्)। हम ने आप को मेले में नहीं देखा (दृश्)। उसने एक घोड़ा खरीदा (क्री)। घोड़े को उसने वृक्ष से बाँधा (बन्ध्)। जयपाल ने यवनों की सेना को रोका (रुध्)। चोर ने धन चुराया (मुष्) सैनिकों ने चोर की ओर प्रस्थान किया (प्र-स्था) तू मुझे उस जंगल में मिला था (सं-गम्)। हम इस घर में रहे थे (वस्)। साधु ने राजा को नहीं जाना (बुध्)।

(घ) आपने मेरी कुटिया को पवित्र किया (पू) मैंने इस बात को नहीं जाना (बुध्)। तुमने यह पुस्तक नहीं पढ़ी (पठ्) वह किसी से नहीं बोला (वद्)। राम ने सीता सहित नदी को पार किया (तृ)। मैंने कुछ भी ग्रहण नहीं किया (ग्रह्)। लड़कों ने पक्षी को मार डाला (हन्) रानी ने पुत्र को जन्म दिया (जन्)। उसने पात्र को पानी से भर दिया (पूर्)। उसने कभी किसी का बुरा (अनिष्ट) नहीं सोचा (मन्)। तू ने कुत्ते को मारा (क्षिण्)।

(ङ) मैं तब काशी गया था (या)। मैंने तपस्वियों को बड़े आदर से प्रणाम किया (प्र-नम्)। सारी रात ऐसे ही खतम हो गई (वि-रम्)। आपने अपना नियन्त्रण नहीं किया (यम्)। मैंने आगन्तुक को उस मकान की ओर इशारा किया (दिश्)। हमने स्वयं उस गौ को दुहा (दुह्)। कुत्ते ने वर्तन को चाटा (लिह्)। शत्रु ने गुफा में अपने आप को छुपा लिया (गुह्)। डाकटरिन ने रोगी के हाथ को छुआ (स्पृश्)। दुर्योधन ने सभा में द्रौपदी के चीर खींचे (कृश्)। पुत्र ने पिता के पाँओं को पकड़ लिया (ग्रह्)। शेर को देखकर वह वृक्ष पर चढ़ गया (रुह्)।

२. दिए हुए धातुओं के लुङ् लकार के समुचित रूपों द्वारा नीचे लिखे वाक्यों में रिक्त पदों को पूरा करो :—

इदमाम्रफलं वृक्षात्—। पत्।
दम्पती क्रीडार्थमुपवनं—। गम्।
तस्मिन् गहने वने वयं महावटवृक्षं—। दृश्।
मण्डपे समाहूतान् ब्राह्मणान्—। गण्।
कथमद्यापि गां न—पयः। दुह्।
न्यांश्च कृषान्—। प्र-णम्।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओदनं शाकांश्च सूदाः—। पच्।
यत्त्वं सत्यं—तत्—अहम्। वद्, श्रु।
तन्महत्कार्यं पारयितुमक्षमा वयं—। उत्-सृज्।
तस्मिन् देशे सुरथो नाम राजा—। भू।
अहम् अन्यत्रमनाः—न—न—। भू, दृश्, श्रु।
स स्वयं सर्वाणि कार्याणि—। कृ।
तत्सर्वमेव कथमपि नाहं—। ज्ञा।
अविदितगतयामा रात्रिरेव—। वि-रम्।

कर्मवाच्य 'Passive'.

१८३. संस्कृत का प्रत्येक धातु कर्मवाच्य में प्रयुक्त हो सकता है। कर्मवाच्य में आत्मनेपद के प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं। कर्मवाच्य के रूप दिवादि गण के आत्मनेपदी धातुओं की भाँति बनते हैं।

(क) सार्वधातुक।

१८४. सार्वधातुक (लट्, लङ्, लोट्, विधिलिङ्) लकारों में (शतृ और शानच् प्रत्ययों में भी) धातु पर य लगता है। इस य से पूर्व धातु में नीचे लिखे विकार होते हैं :—

(१) दा, धा, मा, स्था, पा, हा, ध्या (ध्यै), गा (गै) आदि धातुओं के अन्त्य आ को ई हो जाता है। जैसे, दीयते, पीयते। परन्तु ज्ञायते।

(२) अन्त्य इ और उ को दीर्घ होता है। जैसे, चि—चीयते, श्रु—श्रूयते।

(३) असंयोगपूर्वक अन्त्य ऋ को रि आदेश होता है। जैसे, कृ—क्रियते।

(४) अन्त्य ॠ को ईर् परन्तु पवर्ग से परे ऊर् आदेश होता है। जैसे, कॄ—कीर्यते, पॄ—पूर्यते।

(५) उपधा के अनुनासिक का लोप हो जाता है। जैसे, भञ्ज्—भज्यते।

(६) धातु के अन्तस्थों को सम्प्रसारण होता है। जैसे, यज—इज्यते। वच्—उच्यते।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(७) चुरादि तथा णिजन्त धातुओं के अय का लोप हो जाता है, परन्तु धातु के स्वर का विकार बना रहता है। जैसे चुर—चोरय, चोर चोर्यते। कृ णिज्—कारय, कार, कार्यते।

कृ 'do करना' कर्मवाच्य।

लट् 'Present'.

प्र०	क्रियते	क्रियेते	क्रियन्ते
म०	क्रियसे	क्रियेथे	क्रियध्वे
उ०	क्रिये	क्रियावहे	क्रियामहे

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अक्रियत	अक्रियेताम्	अक्रियन्त
म०	अक्रियेथाः	अक्रियेथाम्	अक्रियध्वम्
उ०	अक्रिये	अक्रियावहि	अक्रियामहि

लोट् 'Imperative'.

प्र०	क्रियताम्	क्रियेताम्	क्रियन्ताम्
म०	क्रियस्व	क्रियेथाम्	क्रियध्वम्
उ०	क्रियै	क्रियावहै	क्रियामहै

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	क्रियेत	क्रियेयाताम्	क्रियेरन्
म०	क्रियेथाः	क्रियेयाथाम्	क्रियेध्वम्
उ०	क्रियेय	क्रियेवहि	क्रियेमहि

अपवाद।

१८४. (क) खन्, तन् और जन् के न् का लोप और स्वर को दीर्घ विकल्प से होता है। जैसे, खन्यते, खायते। तन्यते, तायते। जन्यते जायते।

(ख) शी का शय्यते, श्वि का शूयते और शास् के शिस्यते और शास्यते रूप बनते हैं।

(ग) ब्रू को वच् और अस् को भू आदेश होता है। दरिद्रा के आ का लोप हो जाता है। जैसे, दरिद्र्यते।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ख) आर्धधातुकाः ।

१८५. (क) लिट् लकार में कर्मवाच्य के रूप कर्तृवाच्य के समान होते हैं। परन्तु सब धातुओं को आत्मनेपद प्रत्यय लगते हैं। आम् प्रत्ययान्त में अनुप्रयुक्त क्रिया (auxiliary verb) आत्मनेपद में होती है। जैसे, भू—बभूवे, गम्—जग्मे। ईहाञ्चक्रे, कथयामासे।

(ख) लुट्, लृट्, लृङ् और आशीर्लिङ् में भी कर्मवाच्य के रूप कर्तृवाच्य के समान होते हैं। सब धातु आत्मनेपद में ही होते हैं। जैसे, बुध्—बोधिताहे, बोधिष्ये; अबोधिष्ये; बोधिषीय।

(ग) अजन्त धातु तथा हन्, ग्रह्, दृश् के स्वर को विकल्प से वृद्धि और आत्मनेपद० प्रत्ययों से पूर्व इ का आगम होता है (ऊपर कहे चार लकारों में)। जैसे, नी—नायिताहे, नेताहे (लुट्)। नायिष्ये, नेष्ये (लृट्)। अनायिष्ये, अनेष्ये (लृङ्)। नायिषीय, नेषीय (आ० लिङ्)।

लुङ् कर्मवाच्य।

१८६. लुङ् के चतुर्थ, पंचम और सप्तम भेदों में कर्मवाच्य के रूप केवल आत्मनेपद के प्रत्यय लगाने से बनते हैं। जैसे, भू—अभविषि। कृ—अकृषि, धा—अधिषि, पच्—अपक्षि, इत्यादि।

(क) प्रथम, तृतीय और षष्ठ भेदों में प्रयुक्त होने वाले धातु कर्मवाच्य में चतुर्थ, पंचम और सप्तम भेदों में प्रयुक्त होते हैं। जैसे, स्था—अस्थिषि, श्रि—अश्रयिषि, श्रु—अश्रोषि, नम्—अनंसि।

(ख) प्रथमपुरुष-एकवचनान्त कर्मवाच्य लुङ् में धातु से परे इ प्रत्यय लगता है। इस इ से पूर्व धातु में नीचे लिखे विकार होते हैं।

१. धातु की उपधा के ह्रस्व स्वर को गुण होता है, परन्तु उपधा के अ को वृद्धि होती है (जन् और अमन्त सेट् धातु अपवाद हैं)। अन्त्य स्वर को वृद्धि आदेश होता है। जैसे, तुद्—अतोदि, वद्—अवादि (परन्तु जन्—अजनि), गम्—अगामि (परन्तु दम्—अदमि), नी—अनायि, कृ—अकारि।

२. आकारान्त धातुओं को इ से पूर्व य का आगम होता है। जैसे, अदायि, पा—अपायि, गा (गै)—अगायि।

३. चुरादि तथा णिजन्त धातुओं के अय का लोप हो जाता है। जैसे, चुर्—चोरय, चोर्, अचोरि। रुह् णिज्—रोपय, रोप्, अरोपि।

४. रभ् को अनुनासिक का आगम होता है और इसकी उपधा के

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अ को गुण नहीं होता। 'मृज् को वृद्धि आदेश, गुह् के स्वर को दीर्घ और इ को गा आदेश होता है। जैसे आरम्भि, अमार्जि, अगूहि, अगायि।

(ग) लट्, लिट्, लुङ् और लृट् में कुछ प्रसिद्ध धातुओं के प्रथम पुरुष एकवचनान्त कर्मवाच्य के रूप नीचे दिए गए हैं :—

धातु	लट्	लिट्	लुङ्	लृट्
घ्रा 'smell'	घ्रायते	जघ्रे	अघ्रायि	घ्रायिष्यते
दा 'give'	दीयते	ददे	अदायि	दायिष्यते
धा 'place'	धीयते	दधे	अधायि	धायिष्यते
पा 'drink'	पीयते	पपे	अपायि	पायिष्यते
पा 'protect'	पायते			
मा 'measure'	मीयते	ममे	अमायि	मायिष्यते
हा 'abandon'	हीयते	जहे	अहायि	हायिष्यते
चि 'collect'	चीयते	चिक्ये, चिच्ये	अचायि	चायिष्यते
शी 'lie down'	शय्यते	शिश्ये	अशायि	शायिष्यते
कृ 'do'	क्रियते	चक्रे	अकारि	कारिष्यते
जागृ 'awake'	जागर्य्यते	जागराञ्चक्रे	अजागरि	जागरिष्यते
कॄ 'scatter'	कीर्य्यते	चकरे	अकारि	करी (करि)ष्यते
गै 'sing'	गीयते	जगे	अगायि	गायिष्यते
ह्वे 'call'	हूयते	जुहुवे	अह्वायि	ह्वास्यते
ब्रू 'say'	उच्यते	ऊचे	अवाचि	वक्ष्यते
प्रच्छ् 'ask'	पृच्छ्यते	पप्रच्छे	अप्रच्छि	प्रक्ष्यते
यज् 'sacrifice'	इज्यते	ईजे	अयाजि	यक्ष्यते
अद् 'eat'	अद्यते	आदे	आदि	अत्स्यते
वद् 'speak'	उद्यते	ऊदे	अवादि	वदिष्यते
बन्ध् 'bind'	बध्यते	बबन्धे	अबन्धि	भन्त्स्यते
रुध् 'obstruct'	रुध्यते	रुरुधे	अरोधि	रोत्स्यते
खन् 'dig'	खन्यते, खायते	चखने	अखानि	खनिष्यते
जन् 'be born'	जन्यते, जायते	जज्ञे	अजनि	जनिष्यते

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तन् 'spread'	तन्यते तायते	तेने	अतानि तनिष्यते
गुप् 'hide'	गुप्यते गोप्यते गोपायते	जुगुपे	अगोपि गोप्स्यते गोपिष्यते
वप् 'sow'	उप्यते	ऊपे	अवापि वप्स्यते
स्वप् 'sleep'	सुप्यते	स्वेपे	अस्वापि स्वप्स्यते
कम् 'love'	कम्यते काम्यते	चकमे	अकामि कमिष्यते
गम् 'go'	गम्यते	जग्मे	अगामि गंस्यते
चुर् 'steal'	चोर्यते	चोरयाञ्चक्रे	अचोरि चोरयिष्यते
दिव् 'shine'	दीव्यते	दिदिवे	अदेवि देविष्यते
वस् 'dwell'	उष्यते	ऊषे	अवासि वत्स्यते
वस् 'wear'	वस्यते	ववसे	अवासि वसिष्यते
अस् 'be'	भूयते	बभूवे	अभावि भ(भा)-विष्यते
शास 'rule'	शिष्यते	शशासे	अशासि शासिष्यते
वह् 'carry'	उह्यते	ऊहे	अवाहि वक्ष्यते
ग्रह 'take'	गृह्यते	जगृहे	अग्राहि ग्रही(हि)ष्यते
हन् 'kill'	हन्यते	जघ्ने	अघानि घानिष्यते अवधि हनिष्यते
नी 'lead'	नीयते	निन्ये	अनायि नायिष्यते नेष्यते
निन्द् 'censure'	निंद्यते	निनिन्दे	अनिन्दि निन्दिष्यते
अश् 'pervade'	अश्यते	आनशे	आशि अशिष्यते अक्ष्यते
ईक्ष् 'see'	ईक्ष्यते	ईक्षाञ्चक्रे	ऐक्षि ईक्षिष्यते
कथ् 'say'	कथ्यते	कथयाञ्चक्रे	अकथि कथयिष्यते
बुध् 'know'	बुध्यते	बुबुधे	अबोधि बोधिष्यते
दृश् 'see'	दृश्यते	ददृशे	अदर्शि दर्शिष्यते द्रक्ष्यते

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाच्य-परिवर्तन

१८७. कर्तरिप्रयोग को कर्मणि या भावे प्रयोग में बदलने या इसके प्रतिकूल कर्मणि या भावे प्रयोग को कर्तरि प्रयोग में बदलने को **वाच्य-परिवर्तन** कहते हैं। इसके लिए नीचे लिखे नियम आवश्यक हैं:—

(क) कर्तृवाच्य को **कर्मवाच्य** में बदलने के लिए कर्तृवाच्य का **प्रथमान्त कर्ता तृतीयान्त और द्वितीयान्त कर्म प्रथमान्त** हो जाता है। क्रिया की समता **प्रथमान्त कर्म** से होती है। जैसे, यज्ञदत्तः पुस्तकं पठति (कर्तृवा०), यज्ञदत्तेन पुस्तकं (१मा) पठ्यते। सज्जनाः असत्यं न वदन्ति (कर्तृ०), सज्जनैः असत्यं (१ मा) नोद्यते (कर्मवा०)।

(ख) कर्तृवाच्य के कर्ता का **विशेषण** कर्मवाच्य में तृतीयान्त और कर्म का विशेषण **प्रथमान्त** होता है। जैसे, हिमाद्रेः **प्रयता** तनूजा तपस्यतं शिवम् अन्वास्ते (कर्तृ०) हिमाद्रेः **प्रयतया** तनूजया तपस्यन् शिवः अन्वास्यते (कर्मवा०)।

(ग) **अपूर्ण सकर्मक** क्रिया का **कर्मपूरक** कर्मवाच्य में **कर्तृपूरक** हो जाता है। जैसे, स कुमारं **नेतारं** करोति (कर्तृ०), तेन कुमारो नेता क्रियते। ते त्वां **पुरुषार्थप्रवर्तिनीं** प्रकृतिम् आमनन्ति (कर्तृवा०) तैः त्वं **पुरुषार्थ-प्रवर्तिनी** प्रकृतिः आम्नायसे (कर्मवा०)।

(घ) अन्य कारकों तथा क्रिया विशेषण आदि में कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे, सज्जनाः **सभायां** सत्यं **चारु** वदन्ति' (कर्तृ०) 'सज्जनैः **सभायां** सत्यं **चारु** उद्यते' (कर्मवा०)।

(ङ) **दुह्, याच्, पच्**, आदि **द्विकर्मक** धातुओं का **गौण** (indirect) और नी, हृ, कृष् वह् द्विकर्मक धातुओं का **प्रधान** (direct) कर्म कर्मवाच्य में **प्रथमान्त** होता है। **दूसरा कर्म द्वितीयान्त** ही बना रहता है। (देखो २६६) जैसे 'स बलिं (ind) याचते वसुधाम्' (d.)' से 'तेन बलिः याच्यते वसुधाम्' (कर्मवा०)। 'स ग्राममजां (d) नयति से 'तेन **अजा** ग्रामं नीयते' (कर्मवा०) ऐसे ही णिजन्तों के कर्मवाच्य में जानो।

(च) कर्तृवाच्य को **भाववाच्य** में बदलने के लिए कर्तृवाच्य का प्रथमान्त **कर्त्ता** तृतीयान्त हो जाता है और **क्रिया** की समता **प्रथमपुरुष** के **एक-वचन** से होती है। भाववाच्य अकर्मक क्रियाओं में होता है। जैसे, 'स तिष्ठति' से 'तेन स्थीयते'। 'अहमधुना गच्छामि' से 'मया अधुना गम्यते'।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(छ) कर्मवाच्य को कर्तृवाच्य में बदलने में (क) का उलट होता है। अर्थात् कर्मवाच्य का तृतीयान्त **कर्ता प्रथमान्त** और प्रथमान्त **कर्म द्वितीयान्त** हो जाता है। क्रिया की समता **प्रथमान्त कर्ता** से होती है। जैसे, 'वनदेवताभिः नृपाणां कीर्तिः गीयते' (कर्मवा०) से 'वनदेवताः नृपाणां कीर्तिं गायन्ति (कर्तृवा०)।

(ज) भाववाच्य का कर्तृवाच्य में बदलने में (च) का उलट होता है। अर्थात् भाववाच्य का तृतीयान्त **कर्ता प्रथमान्त** हो जाता है और क्रिया की समता **प्रथमान्त कर्ता** से होती है। जैसे, 'तूष्णीं स्थीयतां भवता' से 'तूष्णीं तिष्ठतु भवान्' (कर्तृवा०)।

(झ) कर्ता और कर्म के विशेषणों आदि में भी यथावत् परिवर्तन होता है। देखो (ख), (ग), (घ) का उलट।

अभ्यास ७४.

१. नीचे लिखे वाक्यों में वाच्यपरिवर्तन करो :—

(क) १. रामो भरतं ब्रूते। २. सूनृता वाक् कामान् दुग्धे, अलक्ष्मीं विप्रकर्षति, कीर्तिं सूते, दुष्कृतं हिनस्ति च। ३. तातपादा लवस्य बालिशतां मृष्यन्तु। ४. तां गतिं योगिनो गच्छन्ति। ५. पापी नरकं व्रजेत्। ६. अयं पुत्रकृतको मृगस्ते पदवीं न जहाति। ७. रघुर्धनुष्य-मोघं सायकं समधत्त। ८. सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः। ९. जठरं को न बिभर्ति केवलम्। १०. किं सत्त्वानि विप्रकरोषि। ११. सुखं नौ ददात्वीशः। १२. किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या। १३. कुबेरस्य बाहुः मनःशल्यं पराभवं शंसतीव। १४. क्लेशः फलेन हि पुनर्नवतां विधत्ते। १५. इयं मानिनी पिनाकपाणिं पतिमाप्तुमिच्छति। १६. द्विषन्ति मन्दाश्चरितं महात्मनाम्। १७ गोपालो वृक्षमवचिनोति फलानि। १८. पिता पुत्रं धर्ममनुशास्ति। १९. शतं मुष्णाति देवदत्तं चौरः। २० राजा भृत्यं ग्रामं गमयति।

(ख) १. विजयतां देवः। २. मधु तिष्ठति जिह्वाग्रे हृदये तु हलाहलम्। ३. न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः। ४. काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम्। ५. भर्तुः शासने तिष्ठ। ६. सतां सद्भिः संगः कथमपि हि पुण्येन भवति। ७. लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्। ८. विभावरी यद्यरुणाय कल्पते। ९. न सन्ति याथार्थ्यविदः पिनाकिनः। १०. महाजनः स्मेरमुखो

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भविष्यति । ११. मनोरथानामगतिर्न विद्यते । १२. भविष्यति प्रार्थितदुर्लभः कथम् (ते)। १३. मुख्यः पुष्यरथो युक्तः किं न गच्छति तेऽग्रतः । १४. युक्तः प्रजानामनुरञ्जने स्याः । १५. विकसति हि पतङ्गस्योदये पुण्डरीकं द्रवति च हिमरश्मावुद्गते चन्द्रकान्तः ।

(ग) १. ईश्वरेण भूयते । २. भो नृपते, किमिति जोषमास्यते । ३. तेन राज्ञा क्रतुरश्वमेध आरभ्यत । ४. पदं हि सर्वत्र गुणैर्निधीयते । ५. त्यज्यतां शोकानुबन्धः । ६. वत्स लव, संह्रियन्तामस्त्राणि । ७. सेनापतिराहूयते राज्ञा । ८. न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत् । ९. न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते । १० सतां संगतं मनीषिभिः साप्तपदीनमुच्यते । ११. रविपीतजला तपात्यये पुनरोघेन हि युज्यते नदी । १२. व्यादिश्यते भूधरतामवेद्य कृष्णेन देहोद्वहनाय शेषः । १३. हरिचक्रेण तेनास्य कण्ठे निष्कमिवार्पितम् । १४. स हि संसुप्तश्रमरैर्वीज्यते । १५. अभिज्ञाश्छेदपातानां क्रियन्ते नन्दनद्रुमाः । १६. कनकवलयं स्रस्तं स्रस्तं मया प्रतिसार्यते । १७. कुमार तथा प्रयतथा यथा नोपालभ्यसे मित्रैर्नाक्षिप्यसे विषयैर्न विकृष्यसे रागेण नापह्रियसे सुखेन । १८. मरणं प्रकृतिः शरीराणां विकृतिर्जीवितमुच्यते बुधैः । १९. आत्मज्ञानविहीना मूढास्ते पच्यन्ते नरकनिगूढाः । २०. असंमूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते । २१. किं तया क्रियते धेन्वा या न सूते न दुग्धदा । २१. एवं क्रियते युष्मदादेशः ।

२. नीचे दिए गए धातुओं के कर्मवाच्य के उचित प्रयोगों द्वारा अधोलिखित वाक्यों में रिक्त पदों को पूरा करो :—

भद्रे, — अधुना मया । गम् , लट् ।
वत्स, इह — आसने च — त्वया । आ-गम् , उप-विश् , लट् ।
यद्भवता — तत्सर्वं — मया । इष् , कृ, लट् ।
वशिष्ठेन तौ दम्पती राजधानीं — । प्र-स्था णिज् , लिट् ।
वाल्मीकिना तौ कुशलवौ वेदं — । अधि-इ णिज् , लिट् ।
उद्यानलता वनलताभिः — । दूरी-कृ, लङ् ।
महदपि परदुःखं शीतलं सम्यक् — । ब्रू , लट् ।
सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने — । परि-सम्-आप् , लट् ।
इन्द्रियाणि मनो बुद्धिरस्याधिष्ठानम् — । वच् , लट् ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रद्धावन्तोऽनसूयन्तो — तेऽपि कर्मभिः। मुच, लट्।
संभावितस्य चाकीर्त्तिर्मरणाद् —। अति-रिच्, लट्।
संतप्तायसि संस्थितस्य पयसो नामापि न —। श्रु, लृट।
विद्या राजसु — सर्वत्र च —। पूज्, स्तु, लट्।
तेन संस्कृता वाणी — सर्वे च तस्य पापाः —। धृ, ची, लङ्।
तेन मुनिना किंचित्कालं तत्र —। स्था, लुङ्।
मया तस्मिन् वन एको व्याघ्र = दृश्, लुङ्।
राज्ञा यावज्जीवं याचकेभ्योऽन्नम् —। दा, लुङ्।

२. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो :—

१. मया गृहे स्थीये। २. अस्माभिस्तत्र गम्यामहे। ३. युष्माभिरासने उपविश्यध्वे। ४. गरं धर्मः पृच्छ्यते। ५. पुत्रं नीतिः उच्यते। बालकैः पुस्तकं पठ्यन्ते। ६. कामक्रोधौ वशे यस्य स साधुः कथ्यन्ते बुधैः। ७. अभ्यासे न तु कौन्तेयः वैराग्येन च गृह्यते मनः। ८. शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टेनऽभिजनयते। ९. अनेन न हन्यते हन्यमाने शरीरे। १०. सुखिभिः क्षत्रियैः पार्थ लभयन्ते युद्धमीदृशम्। ११. समत्वं योग उच्यन्ते। १२. युक्तेन कर्मफलं त्यक्त्वा शान्तिमाप्यत नैष्ठिकीम्। १३. अयुक्तेन फले सक्तो बध्यते। १४. यज्ञशिष्टाशिनः सन्तैः मुच्यन्ते सर्वकिल्विषैः। १५. भुज्यन्ते तैस्त्वघं पापाः ये पच्यते आत्मकारणात्।

संस्कृत में अनुवाद करो :—

लड़कों से फूल सूंघा गया (घ्रा)। आज इनाम दिए जाएँगे (दा)। बच्चे की खतरे से रक्षा नहीं की जाएगी (पा) मुझ से यह खेत नापा नहीं गया (मा)। गोपाल मित्रों से छोड़ा गया (हा)। धन कंजूसों से जमा किया जाता है। (ची) विद्वानों के मन विषयों से विकृत नहीं किए जाते (वि-कृ)। वायु से सब फूल बिखेर दिए गए। गाने वाली से एक मीठा गीत गाया गया (गै)। कहा जाता है (ब्रू) कि धन की कामना सब से की जाती है (कम्)। क्या आप से कोई भी प्रश्न नहीं पूछा गया (प्रच्छ्)। आज तक यहां कोई भी पशु बांधा नहीं गया (बन्ध्)। इतने फल हम से खाए न जाएँगे (अद्)। मुझ से झूठ बोला न जायगा (वद्)। यदि देश पर बाहर से आक्रमण किया गया (आ-क्रम्) तो वह हमारी फौज से रोका जाएगा (रुध्)। यहां एक कुवां खोदा जाएगा

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(खन्)। समय पर बीज बोया जाना चाहिए (वप्)। झूठे का विश्वास नहीं किया जाना चाहिए (विश्वस्)। नगर का शासन बुद्धिमत्ता से नहीं किया गया (शास्) कल मेरा घोड़ा चुराया गया (चुर्)। नहा कर कपड़े पहने जाने चाहिएँ (वस्)। तुम से यह भार उठा कर न ले जाया जाएगा (वह्)। आप से यह व्रत लिया न जाएगा (ग्रह्)। पापी की निन्दा की जाएगी (निन्द्)। पोलिस मैन से चोर देखा न गया (ईक्ष्)। मुझ से ऐसी बात न कही गई (कथ्)। हम से उनका कष्ट देखा न गया (दृश्)। सत्याग्रहियों को पकड़ लिया गया (ग्रह्)। उन्हें जंजीरों से बांध दिया गया (बन्ध्)। देश भक्तों पर अनेक अत्याचार किए गये (कृ)। हम से आपकी बातें सुनी न जाएंगी (श्रु)। अपने मित्र भी शत्रु समझे गए (अव-गम्)। कल अभियुक्त जज के सामने पेश किया जायगा (कृ)। नगर में घोषणा की गई (उद्-घुष्) कि जो कानून तोड़ेगा (भञ्ज्) सो पकड़ा जाएगा (निरुध् or ग्रह्)। मुझ से पैदल नहीं चला जाता (पद्) और न ही धूप में बैठा जाता है (उप-विश्)। यह मकान बिकता नहीं (वि-क्री)। बाजा बजता है (वद्)। पुस्तक छपती है (मुद्रा)। खेत सिंच रहा है (सिंच्)। लड़ाई में हजारों योधा मरे (मृ)।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

षष्ठोऽध्यायः ।

प्रत्ययान्त धातवः

DERIVATIVE VERBS.'

१८८. जो धातु गणपठित (मूल) धातुओं या नामों पर प्रत्यय लगा कर बनाए जाते हैं उन्हें प्रत्ययान्त-धातु कहते हैं। इनके चार भेद हैं:—(१) णिजन्त 'Causatives', (२) सन्नन्त 'Desideratives'. (३) यङन्त Frequentatives', और (४) नाम-धातु 'Denominatives'.

१. णिजन्त CAUSATIVES'.

१८९. णिजन्त क्रिया में किसी प्रेरक की ओर से कर्ता को कर्म करने में प्रेरणा पाई जाती है। इसलिए मूल (गणपठित) धातु के जिस विकृत रूप से क्रिया के व्यापार में कर्ता पर किसी की प्रेरणा समझी जाए उसे णिजन्त धातु कहते हैं। इसे प्रेरणार्थक धातु भी कहते हैं। दसों गणों की मूल धातुओं पर अय प्रत्यय लगाने से णिजन्त धातु बनता है। गम्—गमय, गमयति।

(क) णिजन्त धातुओं का अंग चुरादि गण की भाँति बनता है। चुरादि गण के धातुओं और णिजन्त धातुओं के रूप समान ही होते हैं। बुध्—बोधयति, चुर्—चोरयति।

(ख) अकारान्त धातुओं को अय से पूर्व प (पय) का आगम होता है। जैसे, दा—दापयति। गै—गा, गापयति।

(ग) णिजन्त क्रियाएँ परस्मैपद और आत्मनेपद दोनों में ही प्रयुक्त होती हैं। परन्तु बुध्, युध् आदि णिजन्त परस्मै० में प्रयुक्त होती हैं।

(घ) लुङ् और आशीर्लिंग के अतिरिक्त अन्य आर्धधातुक लकारों में अय के अन्त्य अ का लोप (अय्) हो जाता है। कर्मवाच्य के य से पूर्व अय का लोप हो जाता है।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

(ङ) बुध् 'know' के णिजन्त परस्मै रूप नीचे दिए गए हैं:—

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुध्-कर्तृवाच्य णिजन्त-परस्मै०

लट् 'Present'.

प्र०	बोधयति	बोधयतः	बोधयन्ति
म०	बोधयसि	बोधयथः	बोधयथ
उ०	बोधयामि	बोधयावः	बोधयामः

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अबोधयत्	अबोधयताम्	अबोधयन्
म०	अबोधयः	अबोधयतम्	अबोधयत
उ०	अबोधयम्	अबोधयाव	अबोधयाम

लोट् 'Imperative'.

प्र०	बोधयतु	बोधयताम्	बोधयन्तु
०	बोधय	बोधयतम्	बोधयत
उ०	बोधयानि	बोधयाव	बोधयाम

विधिलिङ् Potential'.

प्र०	बोधयेत्	बोधयेताम्	बोधयेयुः
म०	बोधयेः	बोधयेतम्	बोधयेत
उ०	बोधयेयम्	बोधयेव	बोधयेम

लिट् 'Perfect'.

प्र०	बोधयांचकार	बोधयांचक्रतुः	बोधयांचक्रुः
म०	बोधयांचकर्थ	बोधयांचक्रथुः	बोधयांचक्र
उ०	बोधयांचकार, बोधयांचकर	बोधयांचकृव	बोधयांचकृम

लुट् 'First Future'.

प्र०	बोधयिता	बोधयितारौ	बोधयितारः
म०	बोधयितासि	बोधयितास्थः	बोधयितास्थ
उ०	बोधयितास्मि	बोधयितास्वः	बोधयितास्मः

लृट् 'Second Future'.

प्र०	बोधयिष्यति	बोधयिष्यतः	बोधयिष्यन्ति
म०	बोधयिष्यसि	बोधयिष्यथः	बोधयिष्यथ
उ०	बोधयिष्यामि	बोधयिष्यावः	बोधयिष्यामः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लृङ् 'Conditional'.

प्र०	अबोधयिष्यत्	अबोधयिष्यताम्	अबोधयिष्यन्

इत्यादि

लुङ् 'Aorist'.

प्र०	अबूबुधत्	अबूबुधताम्	अबूबुधन्
म०	अबूबुधः	अबूबुधतम्	अबूबुधत
उ०	अबूबुधम्	अबूबुधाव	अबूबुधाम

आशीर्लिङ् 'Benedictive'.

प्र०	बोध्यात्	बोध्यास्ताम्	बोध्यासुः
म०	बोध्याः	बोध्यास्तम्	बोध्यास्त
उ०	बोध्यासम्	बोध्यास्व	बोध्यास्म

बुध्—कर्मवाच्य णिजन्त (passive caus.)

लट् 'Present'.

प्र०	बोध्यते	बोध्येते	बोध्यन्ते
म०	बोध्यसे	बोध्येथे	बोध्यध्वे
उ०	बोध्ये	बोध्यावहे	बोध्यामहे

लङ् 'Imperfect'.

प्र०	अबोध्यत	अबोध्येताम्	अबोध्यन्त
म०	अबोध्यथाः	अबोध्येथाम्	अबोध्यध्वम्
उ०	अबोध्ये	अबोध्यावहि	अबोध्यामहि

लोट् 'Imperative'.

प्र०	बोध्यताम्	बोध्येताम्	बोध्यन्ताम्
म०	बोध्यस्व	बोध्येथाम्	बोध्यध्वम्
उ०	बोध्यै	बोध्यावहै	बोध्यामहै

विधिलिङ् 'Potential'.

प्र०	बोध्येत	बोध्येयाताम्	बोध्येरन्
म०	बोध्येथाः	बोध्येयाथाम्	बोध्येध्वम्
उ०	बोध्येय	बोध्येवहि	बोध्येमहि

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिट् 'Perfect'.

प्र०	बोधयांचक्रे	बोधयांचक्राते	बोधयांचक्रिरे
म०	बोधयांचकृषे	बोधयांचक्राथे	बोधयांचकृढ्वे
उ०	बोधयांचक्रे	बोधयांचकृवहे	बोधयांचकृमहे

लुट् 'First Future'.

प्र०	बोधयिता	बोधयितारौ	बोधयितारः
	बोधिता	बोधितारौ	बोधितारः
म०	बोधयितासे	बोधयितासाथे	बोधयिताध्वे
	बोधितासे	बोधितासाथे	बोधिताध्वे
उ०	बोधयिष्ये	बोधयिष्यावहे	बोधयिष्यामहे
	बोधिष्ये	बोधिष्यावहे	बोधिष्यामहे

लृट् 'Second Future'.

प्र०	बोधयिष्यते	बोधयिष्येते	बोधयिष्यन्ते
	बोधिष्यते	बोधिष्येते	बोधिष्यन्ते
म०	बोधयिष्यसे	बोधयिष्येथे	बोधयिष्यध्वे
	बोधिष्यसे	बोधिष्येथे	बोधिष्यध्वे
उ०	बोधयिष्ये	बोधयिष्यावहे	बोधयिष्यामहे
	बोधिष्ये	बोधिष्यावहे	बोधिष्यामहे

लृङ् 'Conditional'.

प्र०	अबोधयिष्यत	अबोधयिष्येताम्	अबोधयिष्यन्त
	अबोधिष्यत	अबोधिष्येताम्	अबोधिष्यन्त
म०	अबोधयिष्यथाः	अबोधयिष्येथाम्	अबोधयिष्यध्वम्
	अबोधिष्यथाः	अबोधिष्येथाम्	अबोधिष्यध्वम्
उ०	अबोधयिष्ये	अबोधयिष्यावहि	अबोधयिष्यामहि
	अबोधिष्ये	अबोधिष्यावहि	अबोधिष्यामहि

आशीर्लिङ् 'Benedictive'.

प्र०	बोधयिषीष्ट	बोधयिषीयास्ताम्	बोधयिषीरन्
	बोधिषीष्ट	बोधिषीयास्ताम्	बोधिषीरन्
म०	बोधयिषीष्ठाः	बोधयिषीयास्थाम्	बोधयिषीध्वं-ढ्वम्

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	बोधिषीष्ठाः	बोधिषीयास्थाम्	बोधिषीध्वम्
उ०	बोधयिषीय	बोधिषीवहि	बोधिषीमहि

लुङ् 'Aorist'.

प्र०	अबोधि	अबोधयिषाताम्	अबोधयिषत
		अबोधिषाताम्	अबोधिषत्
म०	अबोधयिष्ठाः	अबोधयिषाथाम्	अबोधयिध्वं-ढ्वम्
	अबोधिष्ठाः	अबोधिषाथाम्	अबोधिध्वं-ढ्वम्
उ०	अबोधयिषि	अबोधयिष्वहि	अबोधयिष्महि
	अबोधिषि	अबोधिष्वहि	अबोधिष्महि

अपवाद 'Irregularities'

१८०. (क) ज्ञा 'know', ग्ला (ग्लै) 'languish', म्ला (म्लै) 'fade' स्ना 'bathe', के आ को पय प्रत्यय से पूर्व विकल्प से ह्रस्व हो जाता है। जैसे, ज्ञापयति, ज्ञपयति। ग्लापयति, ग्लपयति। म्लापयति, म्लपयति। स्नापयति, स्नपयति।

(ख) आकारान्त धातुओं के अतिरिक्त ऋ 'go' और ह्री 'be-ashamed' के णिजन्त में पय प्रत्यय लगता है और इनके स्वर को गुण आदेश होता है। जि 'conquer' क्री 'buy' और अधि-इ को भी पय णिजन्त प्रत्यय लगता है और इनके स्वर को आ आदेश होता है। जैसे, ऋ अर्पयति। ह्री—ह्रेपयति। जि—जापयति। क्री—क्रापयति। अध्यापयति।

(ग) शो, छो, सो और ह्वे और वे 'weave' तथा पा 'drink' को प के स्थान में य णिजन्त प्रत्यय से पूर्व लगता है। जैसे, शाययति, छाययति, साययति, ह्वाययति, वाययति, पाययति।

(घ) पा 'protect' और 'shake' को क्रमशः ल् और ज् णिजन्त प्रत्यय से पूर्व लगता है। जैसे पालयति, वाजयति।

(ङ) भी 'fear' का णिजन्त भीषयते और भाययति, धू 'shake' का धूनयति तथा प्री 'love' का प्रीणयति णिजन्त में रूप बनते हैं।

(च) रभ् 'begin' और लभ् 'obtain' को अन्त्य वर्ण से पूर्व अनुनासिक का आगम होता है। जैसे, रम्भयति, लम्भयति।

परन्तु दंश् का दंशयति और हन् का घातयति आदि णिजन्त रूप बनते हैं।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(छ) रुह् 'grow' के ह् को विकल्प से प् हो जाता है। जैसे, रोहयति या रोपयति।

(ज) जो धातु अम् में अन्त होते हैं (कम्, चम्, अम्, के अतिरिक्त), तथा जन्, जॄ; दल्, वल्, त्रप्, वन्, ज्वल् आदि धातुओं के अ को वृद्धि नहीं होती। जैसे, गम्—गमयति, क्रम्—क्रमयति, क्षम्—क्षमयति, जन्—जनयति, जॄ—जरयति। दलयति, वलयति, त्रपयति, वनयति, ज्वलयति। परन्तु कम्—कामयते, चम्—चामयति।

परन्तु वम्, नम्, वन् और ज्वल् के अ को दीर्घ विकल्प से होता है यदि इस से उपसर्ग पूर्व न हो। जैसे, नमयति या नामयति, परन्तु प्रणमयति, प्रज्वलयति।

अभ्यास २५.

१. नीचे लिखे धातुओं के लट्, लङ्, लोट्, और विधिलिङ् में कर्तृ-वाच्य और कर्मवाच्य के रूप लिखो :—

पा 'drink', पा 'protect', लभ्, जी, ज्ञा, ह्वे, क्री, भी, हन्, रुह्, जन्, क्षम्, प्र-नम्, कम्।

२. गण्, भू, हु, कृ, क्री, ऋ, अधि-इ, वे, दृश्, रभ्, प्री, ह्री, आदि धातुओं के णिजन्त अंग बनाओ।

३. नीचे लिखे वाक्यों में मोटे छपे शब्दों के लिए एक पद प्रयुक्त करके फिर से इन्हें शुद्ध रूप में लिखो :—

मम पुण्यस्य फलं बोधनं करोति। सा बालकं सुप्तम् अकरोत्। श्वा रात्रौ स्वामिनः जागरणं करोति। गुणैः वैरस्य विनाशं कुर्य्यात्। भानुः पङ्कजानां विकासनं करोति। इन्दीवराणां च निमीलनं करोति। रामः गुणैः दशरथस्य प्रजया विस्मरणमकरोत्। पुरोधा वरेण वध्वाः संगमनं कुर्य्यात्। गुरुः छात्रस्य अध्यापनमकरोत्। नरो दीनानां पालनं कुर्यात्। स किन्नरान् गातुं चकार। स उद्याने वृक्षकानां रोपनं चकार। स याचकेभ्योऽन्नस्य अर्पणं करोति। स पुत्रस्य गुर्वे प्रणाममकारयत।

४. नीचे लिखे वाक्यों के रिक्त पदों को दिए धातुओं के उचित णिजन्त रूपों द्वारा पूरा करो:—

अनुष्ठितो धर्मो नरं स्वर्गं —। प्र-आप्, लट्।

ग्रीष्मकाले घर्मोऽङ्गानि—, स्वेदं—, तृष्णां—च। ग्लै, प्र-वृत्, परि-वृध, लट्।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वीयं यशः धर्मज्ञो न—। प्र-काश्, विधिलिङ्।
न चैनं—आपो न—मारुतः। क्लिद्, शु ्; लट्।
लक्ष्मणो जानकी रथं—। आ-रुह्, लिट्।
वाल्मीकिः कुशलवौ वेदम्—। अधि-इ, लिट्।
एवं भगवान् स्वीयं रूपं न—। दृश्, लृट्।
विद्या नरं दुर्धर्षं नृपमपि—। सं-युज्, लृट्।
यदि सत्यसंधस्त्वं राजन् रामं वने—। प्र-वस्, लोट्।
हे कृष्ण तत्सर्वं—त्वामहमप्रमेयम्। क्षम्, लट्।
प्रभुप्रसादो दासजनस्य प्रागल्भ्यं—जन्, लिट्।
महाराजस्तेन सभामद्भुतदर्शना—। कृ, लुङ्।

५. संस्कृत में अनुवाद करो :—

कृपया मुझे अपनी पुस्तक दिखाइए (दृश् c.) जब आप आज्ञा देंगे (आ–ज्ञा c.) तब आपका काम करादिया जाएगा (कृ c.)। उसने अपनी चिट्ठी मुझ से पढ़वाई (वच् c.)। मैंने अपनी सीटी यहां रक्खी थी (नि-विश् c.)। आपने ये आम वापिस क्यों कर दिए (नि–वृत् c.)। हवा आत्मा को सुखा नहीं सकती (शुष् c.) और अग्नि इसे तपा नहीं सकती (तप् c.)। उन्हें आशा दिलाइए (आ-श्वस् c.) कि उन्हें विलायत भिजवा दिया जाएगा (प्र-इष् c.)। रूप तो पशुओं को भी मोह लेता है (मुह् c.)। विश्वामित्र ने राम का सीता से विवाह कराया (उद्-वह् c.)। सूर्य फसलों को पकाता है (परि-णम् c.)। ब्राह्मण सब को वेद पढ़ाएँ (अधि-इ c.)। मां बच्चे को नौकर से खाना खिलवाएगी (अश् c.)। राजा ने अनाथ बच्चों का पालन कराया (पा c.)। अध्यापिका ने लड़कियों से गाना आरंभ कराया (आ रभ् c.)। मैंने राम से फकीर को अन्न दिलवाया (दा c.)। अब अपराधियों को सजा दिलवाई गई (दण्ड् c. pass.)। यात्रियों को गाडी में बिठाया गया (आ-रुह् c. pass.)। अभियुक्त को हुकुम सुनाया गया (श्रु c. pass.)। हिंसक जन्तु को तुरन्त मरवाया गया (हन् c. pass.)। लोगों को पानी पिलवाया गया (पा c. pass.)। यह गेहूँ अब बिकवाया न जाएगा (क्री c. pass.)।

२. सन्नन्त 'DESIDERATIVES'.

१९१. सन्नन्त क्रिया से जान पड़ता है कि कर्ता किसी क्रिया क करना चाहता है या करने को तैयार है। उस चाहने का कर्त्ता और जो

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
क्रिया चाही जाए उसका कर्त्ता एक ही हो तो सन्नन्त क्रिया प्रयुक्त होती है। गन्तुम् इच्छति में गन्तुम् और इच्छति का कर्त्ता एक ही होने से यहां सन्नन्त जिगमिषति का प्रयोग हो सकता है। सन्नन्त क्रियाएँ सब गणपठित और णिजन्त धातुओं से बन सकती हैं।

(क) अभ्यस्त (Reduplicated) धातु पर स् प्रत्यय लगाने से सन्नन्त धातु का अंग बनता है। सेट् और वेट् धातुओं को स् से पूर्व इ का आगम होता है। जैसे, भू—बुभूष्, जीव—जिजीविष्।

(ख) धातु में प्रायः कोई विकार नहीं होता, परन्तु

(१) स् से पूर्व अन्त्य इ और उ को दीर्घ और ऋ और ॠ को ईर् या पवर्ग से परे ऊर् होता है। जैसे, चि—चिचीषति, स्तु—तुष्टूषति, तॄ—तितीर्षति, मृ—मुमूर्षति।

(२) इष् (इ + स्) से पूर्व धातु के अन्त्य स्वर को गुण और उपधा (medial) के ऋ को सदा गुण, उ को कभी कभी और इ को कभी नहीं गुण होता। जैसे, शी—शिशयिषते, शॄ—शिशरिषति, नृत्—निनर्तिषति शुभ्—शुशोभिषते, शुशुभिषते, विद् 'know' विविदिषति, परन्तु विवित्सति ते (find, be)।

द्वित्व के विशेष नियम।

१९२. (क) अभ्यास में अ, आ और ऋ को इ आदेश होता है। परन्तु ऋ के आदेश ऊर् के अभ्यास में उ रहता है। जैसे, पठ्-पिपठिषति स्था—तिष्ठासति, सृज्—सिसृक्षति, भृ—बुभूर्षति। स्मृ—सुस्मूर्षते।

परन्तु इ और उ उपधा वाले धातुओं के अभ्यास में इ और उ बने रहते हैं। जैसे, विश्—विविक्षति, बुध्—बुभुत्सते।

(ख) जिन धातुओं के आदि में स्वर हो उनका द्वित्व इ के साथ होता है। जैसे, अश्—अशिशिषति, ईक्ष्—ईचिक्षिषते, आप् 'obtain' ईप्सति (by contraction).

१९३. सन्नन्त धातुओं का वही पद रहता है जो मूल धातु का पद हो। सन्नन्त धातुओं के रूप भ्वादि गण की भाँति बनते हैं।

(२) सार्वधातुक लकारों में सन्नन्त धातु को अ लगा कर तुदादि गण धातुओं की भाँति इनके रूप बनते हैं। जैसे, भू—बुभूष् + अ + ति × बुभूषति।

(२) लिट् लकार में सन्नन्त के रूप णिजन्त तथा चुरादि धातुओं की
CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भाँति आम् प्रत्यय लगा कर कृ, अस् या भू के अनुप्रयोग से बनते हैं। जैसे, बुबोधिषांचकार।

(३) लुङ् लकार में सन्नन्त धातुओं के रूप पंचम भेद के अनुसार बनते हैं। जैसे, अबोधिषीत्, अबोधिषिष्ट।

(४) आशीर्लिङ् में सन्नत धातुओं आत्मनेपद में इ लगती है और परस्मैपद में नहीं लगती जैसे, बुबोधिष्या, बुबोधिषिषीष्ट।

(क) बुध् सन्नन्त के प्रथमपुरुष एकवचनान्त रूप नीचे दिए गए हैं:—

	परस्मै०	आत्मने०	कर्मवाच्य
लट्—	बुबोधिषति	बुबोधिषते	बुबोधिष्यते
लङ्—	अबुबोधिषत्	अबुबोधिषत	अबुबोधिष्यत
लोट्—	बुबोधिषतु	बुबोधिषताम्	बुबोधिष्यताम्
विधिलिङ्—	बुबोधिषेत्	बुबोधिषेत	बुबोधिष्येत
लिट्—	बुबोधिषांचकार -मास-बभूव	बुबोधिषांचक्रे -मासे-बभूवे	बुबोधिषांचक्रे मासे, बभूवे
लुट्—	बुबोधिषिता	बुबोधिषिता	बुबोधिषिता
लृट्—	बुबोधिषिष्यति	बुबोधिषिष्यते	बुबोधिषिष्यते
लुङ्—	अबुबोधिषीत्	अबुबोधिषीष्ट	अबुबोधिषि
आशीर्लिङ्	बुबोधिष्यात्	बुबोधिषिषीष्ट	बुबोधिषिषीष्ट

अपवाद।

१९४. (क) गम् और हन् के धातु-स्वर को और मन् 'think' के धातु-स्वर तथा अभ्यास-स्वर दोनों को दीर्घ हो जाता है। जैसे, गम्— संजिगांसते (या जिगमिषति), हन्—जिघांसति, मन्— मीमांसते।

(ख) ग्रह्; प्रच्छ्, स्वप् को सम्प्रसारण होता है। जैसे, जिघृक्षति, पिपृच्छिषति, सुषुप्सति।

(ग) दा, धा, मा 'measure' रभ्, लभ्, शक्, पत्, पद्, आदि धातुओं के स्वर को इ हो जाता है और इन्हें द्वित्व नहीं होता। आकारान्त धातुओं को त् का आगम् भी होता है। जैसे, दित्सति, धित्सति, मित्सति, रिप्सते, लिप्सते, शिक्षति, पित्सति (या पिपतिषति), पित्सते।

(घ) चि (विकल्प से), जि, और हन् के चवर्ग और ह् को क्रमशः कवर्ग और घ् का आदेश होता है। जैसे, चिकीषति (या चिचीषति,)
CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिगीषति, जिघांसति ।

(ङ) ऋ 'go' को अर् , इ 'go' को गम् और अद् 'eat' को घस् आदेश होता है । घस् के स् को त् होजाता है । जैसे, ऋ—अरिरिषति, इ—जिगमिषति, अद्—जिघत्सति ।

(च) तन् और पत् को विकल्प से इ का आगम होता है । तन् की उपधा को विकल्प से दी [illegible] है ; [illegible] तितनिषति, तितंसति तितांसति । पिपतिषति ।

अभ्यास २६.

१. नीचे लिखे धातुओं के लट् , लङ् , लोट् , और विधिलिङ् , सन्नन्त में कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य के रूप में लिखो :—

मन् , दा, स्वप् , जि, ऋ, हन् , तन् , ईक्ष, इत्यादि ।

२. नीचे लिखे धातुओं के सन्नन्त अंग बनाओ :—

धा, चि, इ, ज्ञा, पा, श्रु, ग्रह , मुच् , पच् , दृश् , भू, अश् , लभ् , शक् , पत् , गम् , प्रच्छ् , था, इत्यादि ।

३. नीचे लिखे वाक्यों में मोटे छपे पदों के लिए सन्नन्त रूपों का प्रयोग करके उन्हें फिर शुद्धरूप में लिखो :—

तव पुस्तकं **द्रष्टुम् इच्छामि** । वैदेही रामेण सह वनं **गन्तुमैच्छत्** । लक्ष्मणः रामेण सह **वस्तुम् ऐच्छत्** । सैनिकाः **युद्धमकामयन्त** । ते मीमांसां **कर्तुम् इच्छन्ति** । मुनिं **द्रष्टुम् इयेष** । पिनाकपाणिं पतिम् **आप्तुम् इच्छति** । न कोपि **मर्त्तुम् एषिष्यति** । दुर्योधनः पाण्डवान् **हन्तुम् इयेष** । ते याचकेभ्योऽन्नं **दातुम् अकामयन्त** । श्रान्तो भूत्वा पथिकः **स्वप्तुमैच्छत्** । गुरोर्वेदं **पठितुमकामयत** । मनुष्या धनं **चेतुमिच्छन्ति** । सभायां मेव **वक्तुमैच्छन्** । बुभुक्षिता सर्वमेव **अत्तुम् इच्छन्ति** ।

४. नीचे लिखे वाक्यों में रिक्त पदों को दिये धातुओं के उचित सन्नन्त रूपों द्वारा पूरा करो ।

अस्मिन् संसारे सर्वो धनम्— । आप् , लट् ।

स्वयंवरकाले बहवो राजानः सीताम्— । लभ् , लङ् ।

ब्रह्मचारिण आचार्याद् ब्रह्मतत्त्वं— । ज्ञा, लट् ।

भीमसेनः सभायामेव गदाघातेन दुर्योधनं— । हन्—लिट् ।

सोपानपंक्तिषु पदं निधाय ते प्रासादतलं— । आ-रुह् , लङ् ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तत्र गत्वा वनशोभां वयं—। दृश्, लृट्।
तपस्तप्त्वा विश्वामित्रः ब्राह्मणः—। भू, लङ्।
प्रभूतवर्षणादस्या नद्यः कूलं—। पत्, लट्।
सूर्यवंशसंभवानां राज्ञां यशः कालिदासः — ।गा, लङ्।
उडुपेन दुस्तरं सागरमहं—। तॄ, लट्।
आश्रमादागता ऋषिकुमारका राजगृहं —। प्र-विश्, लट्।
पाण्डवा युद्धक्षेत्र आत्मनः कौशलं —दृश्, लङ्।

५. संस्कृत में अनुवाद करो :—

मैं वहाँ देर तक रहना चाहता हूँ (वस् D)। हम भी आप की बात जानना चाहते हैं (ज्ञा D)। रघु अपने शत्रुओं को जीतना चाहता था (जि D) व्यापारी लोग धन जोड़ना चाहते हैं (चि D)। गृहस्थी यज्ञ करने की इच्छा करे (यज् D)। किसी को मारने की कामना मत करो (हन् D)। बालक भोजन करने का इच्छुक था (अद् D)। इस संसार में कोई मरना नहीं चाहता (मृ D.)। क्या आप मुझे अपनी गाड़ी देना चाहते हैं (दा D.)। मैं आपकी सेवा में उपस्थित होना चाहता हूँ (उप-स्था D.)। क्या आप नदी में स्नान करना पसंद करेंगे (स्नान D.)। हम सब यश पाना चाहते हैं (लभ् D.)। वह इस कठिन काम को आरंभ करना नहीं चाहेगा (रभ् D.)। मैं आपके साथ जाना पसंद नहीं करता (गम् D.)। ब्रह्मचारी दिन में सोना पसंद नहीं करेंगे (स्वप् D.)। मैं आप से एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ (प्रच्छ D.)। क्या आप इस विषय का विचार करना चाहते हैं (मन् D.)। भले लोग दूसरों की दौलत लेना नहीं चाहते (ग्रह् D.

३. यङन्त Frequentatives or Intensives.

१९५. क्रियासमभिहार अर्थात् क्रिया के बार बार करने (repetition) या अतिशय (intensity) के अर्थ में यङन्त क्रिया का प्रयोग होता है। एकाच हलादि धातुओं से ही यङन्त बनते हैं।

(क) यङन्त अंग धातु को द्वित्व होने से बनता है और इसके दो रूप होते हैं :—

(१) एक रूप (यङन्त) धातु पर य प्रत्यय (यङ्) लगाने से बनता है। यङन्त में कर्मवाच्य की भाँति केवल आत्मनेपद प्रत्यय लगते हैं। जैसे, भू—बोभूयते।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) दूसरे रूप (यङ्लुगन्त) में य का लोप (यङ् लुक्) होता है और केवल परस्मैपद प्रत्यय लगते हैं। यङ्लुगन्त के रूप जुहोत्यादि गण की भाँति बनते हैं। जैसे, भू—बोभोति।

(ख) आत्मनेपद यङन्त में य प्रत्यय से पूर्व धातु में वही विकार होते हैं जो कर्मवाच्य के प्रत्यय य से पूर्व होते हैं।

(ग) परस्मैपद यङन्त या यङ्लुगन्त में हलादि पित् (strong) प्रत्ययों से पूर्व विकल्प से ई का आगम होता है (लट् के सब पुरुषों के एक०, लङ् के प्र० और म० के एक०, लोट् के प्र० एक० में)। इस ई औ अजादि प्रत्ययों से पूर्व उपधा के ह्रस्व स्वर को गुण नहीं होता। जैसे, दा—दादाति, दादेति। कृ—चर्कर्ति, चर्करीति, चरिकर्ति, चरिकरीति, इत्यादि। भू—बोभोमि, बोभवीमि; बोभवानि।

द्वित्व के विशेष नियम।

१९६. (क) अभ्यास के स्वर को गुण आदेश और अ को दीर्घ होता है। जैसे, विद्—वेवेत्ति, नी—नेनीयते, बुध्—बोबुधीति, रुद्—रोरुद्यते, रुध्—रोरुध्यते, दीप्—देदीप्यते। तप्—तातप्यते, पच—पापच्यते, यज्—यायज्यते, ज्वल—जाज्वल्यते।

(ख) अमन्त धातुओं के अभ्यास के अ को दीर्घ नहीं होता, परन्तु अभ्यास के अन्त में अनुस्वार या अनुनासिक (नुक्) का आगम होता है (अन्य अनुनासिकान्त धातुओं में भी)। जैसे, क्रम्—चंक्रम्यते, चङ्क्रम्यते। भ्रम्—बंभ्रम्यते, बम्भ्रम्यते। गम्—जङ्गम्यते। नम्—नंनम्यते। यम्—यंयम्यते। रम्—रंरम्यते। तन्—तन्तन्यते। हन्—जङ्घन्यते।

(ग) ऋकारान्त धातुओं के ऋ को री आदेश हो कर द्वित्व होता है। जैसे, कृ—क्री, कीक्री, चीक्री, चेक्रीयते। वृ—वेव्रीयते। हृ—जेह्रीयते।

(घ) जिन धातुओं की उपधा में ऋ हो उनके अभ्यास के अन्त में री का आगम होता है। जैसे, दृश्—दद्दृश्, दरीदृश्, दरीदृश्यते। नृत्—नरीनृत्यते। वृत्—वरीवृत्यते। वृध्—वरीवृध्यते।

१९७. यङन्त धातुओं (आत्मने०) के रूप सार्वधातुक लकारों में दिवादि गण के आत्मनेपद धातुओं के समान बनते हैं। आर्धधातुकों और कर्मवाच्य में अंग के अन्त्य अ का लोप हो जाता है यदि अन्त्य य से पूर्व कोई स्वर हो, परन्तु यदि इस (य) से पूर्व कोई व्यंजन हो तो इस (य)

CC-0. From Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का ही लोप हो जाता है। लिट् में यङन्तों को आम् प्रत्यय लगता है। लुङ् में इसके रूप पंचम भेद के अनुसार होते हैं।

(ख) यङलुगन्त धातुओं (परस्मै०) के रूप सार्वधातुक लकारों में जुहोत्यादि गण की भाँति बनते हैं। कहीं कहीं इ का आगम (१६५ ग) होता है। लिट् में आम् प्रत्यय भी लगता है और द्वित्व भी होता है।

(ग) बुध् और दा के यङन्त आत्मने० प्रथमपुरुष एकवचनान्त रूप भिन्न भिन्न लकारों में नीचे दिए गए हैं:—

लकार	कर्तृवाच्य	कर्तृवा०	कर्मवा०
लट्	बोबुध्यते	देदीयते	देदीय्यते
लङ्	अबोबुध्यत	अदेदीयत	अदेदीय्यत
लोट्	बोबुध्यताम्	देदीयताम्	देदीय्यताम्
विधिलिङ्	बोबुध्येत	देदीयेत	देदीय्येत
लिट्	बोधांचक्रे	देदीयांचक्रे	देदीयांचक्रे
लुङ्	अबोबुधिष्ट	अदेदीयिष्ट	अदेदीयि
लुट्	बोबुधिता	देदीयिता	कर्तृ० वत्
लृट्	बोबुधिष्यते	देदीयिष्यते	”
लृङ्	अबोबुधिष्यत	अदेदीयिष्यत	”
आशीर्लि	बोबुधिषीष्ट	देदीयिषीष्ट	”

(घ) भू यङ्लुगन्त (परस्मै०) के प्रसिद्ध रूप भिन्न भिन्न लकारों में नीचे दिए गए हैं:—

लट् 'Present.'

प्र०	बोभोति, बोभवीति	बोभूतः	बोभुवति
म०	बोभोषि, बोभवीषि	बोभूथः	बोभूथ
उ०	बोभोमि, बोभवीमि	बोभूवः	बोभूमः

लङ् 'Imperfect.'

प्र०	अबोभोत्, अबोभवीत्	अबोभूताम्	अबोभवुः
म०	अबोभोः, अबोभवीः	अबोभूतम्	अबोभूत
म०	अबोभवम्	अबोभूव	अबोभूम

लोट् 'Imperative.'

प्र०	बोभोतु, बोभवीतु	बोभूताम्	बोभवतु

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म०	बोभूहि	बोभूतम्	बोभूत
उ०	बोभवानि	बोभवाव	बोभवाम

विधिलिङ् 'Potential.'

प्र०	बोभूयात्	बोभूयाताम्	बोभूयुः
म०	बोभूयाः	बोभूयातम्	बोभूयात
उ०	बोभूयाम्	बोभूयाव	बोभूयाम

लिट् 'Perfect.'

प्र०	बोभवांचकार	बोभवांचक्रतुः	बोभवांचक्रुः
	बोभाव	बोभुवतुः बोभूवतुः	बोभुवुः-भूवुः
म०	बोभवांचकर्थ	भवांचक्रथुः	बोभवांचक्र
	बोभविथ	बोभुवथुः	बोभुव
	बोभूविथ	बोभूवथुः	बोभूव
उ०	बोभवांचकार चकर	बोभवांचकृव	बोभवांचकृम
	बोभाव, बोभव	बोभविव	बोभविम
	बोभूव	बोभूविव	बोभूविम

लुङ् 'Aorist.'

प्र०	अबोभोत्	अबोभूताम्	अबोभूवुः
	अबोभूत्		अबोभुवुः
	अबोभवीत्	अबोभाविष्टाम्	अबोभाविषुः
	अबोभूवीत्		
	अबोभावीत्		
म०	अबोभोः, अबोभूः	अबोभूतम्	अबोभूव
	अबोभवीः	अबोभाविष्टम्	अबोभाविष्ट
	अबोभूवीः		
	अबोभावीः		
उ०	अबोभूवम्	अबोभूव	अबोभूम
	अबोभाविषम्	अबोभाविष्व	अबोभाविष्म
लुट्—	अबोभविता	अबोभवितारौ	अबोभवितारः
लृट्—	बोभविष्यति	बोभविष्यतः	बोभविष्यन्ति

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लृङ्—	अबोभविष्यत्	अबोभविष्यताम्	अबोभविष्यन्
आशीर्लिङ्—	बोभूयास्त	बोभूयास्ताम्	बोभूयासुः

अपवाद ।

१९८. (क) चर्, फल्, जप्, जभ्, दह, दृ, भज्, आदि धातुओं के अभ्यास को अनुनासिक (नुक्) का आगम होता। चर् और फल् के अ को उ होता है। जैसे, चर्—चचर्य; चंचर्य, चंचुर्य, चंचुर्यते, चञ्चुर्यते। फल्—पंफुल्यते, पम्फुल्यते। जप्—जंजप्यये, जञ्जप्यते। दह्—दंदह्यते, दन्दह्यते। दंश्—दंदश्यते, दन्दश्यते।

(ख) पत्, पद्, वञ्च्, ध्वंस् स्रंस्, भ्रंस् आदि धातुओं के अभ्यास को नी (न्+ई) का आगम होता है। पत्—पत्+य, पनीपत्य पनीपत्यते। पनीपद्यते। वनीवञ्च्यते। ध्वंस्—दनीध्वंस्यते। स्रंस्—सनीस्रस्यते। भ्रंस्—बनीभ्रस्यते।

(ग) गत्यर्थक धातुओं के यङन्त से कुटिलता का अर्थ पाया जाता है। गम्—जङ्गम्यते (कुटिलं गच्छति) 'टेढ़ा चलता है'।

(घ) शी धातु की इ को अय आदेश होता है। जैसे, शाशय्यते।

(ङ) लुप्, सद्, चर्, जप्, जभ्, दह् और गॄ के यङन्तों से भावगर्हा (bad action) का अर्थ पाया जाता है। जैसे, लोलुप्यते (गर्हितं लुम्पति) 'बुरी तरह से काटता है'। सासद्यते (गर्हितं सीदति) 'बुरी तरह से गिरता है।' इत्यादि।

१९९. कुछ प्रसिद्ध धातुओं के णिजन्त, सन्नत और यङन्त प्रथम पुरुष एकवचनान्त रूप नीचे दिये गये हैं :—

दा 'givo'	दापयति-ते	दित्सति	देदीयते
धा 'hold'	धापयति	धित्सति	देधीयते
पा 'drink'	पाययति	पिपासति	पेपीयते
ज्ञा 'know'	ज्ञापयति-ते	जिज्ञासते	जाज्ञायते
स्था 'stand'	स्थापयति	तिष्ठासति	तेष्ठीयते
मा 'measure'	मापयति	मित्सति	मेमीयते
हा 'abandon'	हापयति	जिहासति	जेहीयते
घ्रा 'smell'	घ्रापयति		जेघ्रीयते
इ 'go'	गमयति	जिगमिषति	

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधि-इ 'study'	अध्यापयति	अधिजिगांसते	
जि 'conquer'	जापयति	जिगीषति	जेजीयते
चि 'collect'	चापयति चाययति	चिचीषति-ते चिकीषति-ते	चेचीयते
नि 'lead'	नाययति	निनीषति	नेनीयते
हु 'sacrifice'	हावयति	जुहूषति	जोहवीति
श्रु 'hear'	श्रावयति	शुश्रूषते	शोश्रूयते
ब्रू 'speak'	वाचयति	विवक्षति-ते	वावच्यते
भू 'be'	भावयति-ते	बुभूषति	बोभवीति
ऋ 'go'	अर्पयति	अरिरिषति	अराय्र्यते
कृ 'do'	कारयति	चिकीर्षति-ते	चेक्रीयते
स्मृ 'remember'	स्मारयति	सुस्मूर्षते	सास्मर्यते
कॄ 'scatter'	कारयति-ते	चिकीर्षति	चेक्रीयते
गै 'sing'	गापयति	जिगासति	जेगीयते
भुज् 'eat'	भोजयति	बुभुक्षते	बोभुजीति बोभुज्यते
सिच् 'sprinkle'	सेचयति-ते	सिसिक्षति-ते	सेसिच्यते
यज् 'sacrifice'	याजयति	यियक्षति-ते	यायज्यते
पत् 'fall'	पातयति	पिपतिषति पित्सति	पनीपत्यते
अद् 'eat'	आदयति	जिघत्सति	
रुद् 'weap'	रोदयति	रुरुदिषति	रोरुद्यते
विद् 'know'	वेदयति	विविदिषति विवित्सति	वेविद्यते
भिद् 'break'	भेदयति	बिभित्सति	बेभिद्यते
बुध् 'know'	बोधयति	बुबोधिषति-ते बुभुत्सते	बोबुध्यते
तन् 'stretch'	तानयति	तितनिषति-ते तितांसति-ते तितंसति-ते	तन्तन्यते

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हन् 'kill'	घातयति	जिघांसति	जेघीयते, जङ्घन्यते
पठ् 'read'	पाठयति	पिपठिषति	पापठ्यते
आप् 'obtain'	आपयति	ईप्सति	
स्वप् 'sleep'	स्वापयति	सुषुप्सति	सोषुप्यते
लभ् 'grasp'	लम्भयति	लिप्सते	
क्रम् 'stride'	क्रमयति, क्रामयति	चिक्रमिषति	चङ्क्रमीति, चङ्क्रम्यते
गम् 'go'	गमयति	जिगमिषति	जङ्गन्ति, जङ्गमीति, जङ्गम्यते
रम् 'sport'	रमयति	रिरंसते	रंरम्यते
अश् 'eat'	आशयति	अशिशिषति	अशाश्यते
दृश् 'see'	दर्शयति	दिदृक्षते	दरीदृश्यते
नश् 'perish'	नाशयति	निनशिषति, निनंक्षति	
इष् 'wish'	एषयति	एषिषिषति	
वस् 'dwell'	वासयति	विवत्सति	वावस्यते
वह् 'carry'	वाहयति	विवक्षति-ते	वावहीति, वावह्यते

अभ्यास २७

१. नीचे लिखे वाक्यों में मोटे छपे शब्दों के लिए एक शब्द (यङन्त) का प्रयोग करो :—

ईश्वरः संसारं **पुनः पुनः करोति** । अध्येतुम् इच्छन् स तत्र **पुनः पुनः गच्छति** । तत् स्मृत्वा स **पुनः पुनः गायति भृशं रोदिति च** । ज्ञातुम् इच्छन् स **पुनः पुनः पश्यति** । स बलेन हीनः अतः **पुनः पुनः पतति** । कथं भवान् **कुटिलं गच्छति** । वृक्षशाखाः **गर्हितं लुम्पति** बालः । बालो **गर्हितमसीदत्** । तां वार्तां **पौनःपुन्येन सूचयति** सः ।

२. संस्कृत में अनुवाद करो:—

ईश्वर इस संसार को बार बार बनाता (कृ) और बार बार मनुष्यों को मारता है (हन्) । मनुष्य बार बार पैदा होता (जन्) और मरता है (मृ) । अकबर

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने बार बार राजपूताने पर चढ़ाई की (आ-क्रम्)। आप वहां बार बार क्यों जाते हैं (गम्)। वह लड़की अत्यन्त रोती है (रुद्)। मूर्ख सभा में बुरी तरह से बैठता है (सद्)। यह मनुष्य अत्यन्त टेढ़ा चलता है (गम्)। आग वृक्षों को बुरी तरह से जलाती है (दह)। बिल्ली चूहे को बार बार देखती है (दृश्)।

४. नाम-धातु 'Denominatives'.

२०० क्रिया के अतिरिक्त अन्य नामों में प्रत्यय लगाने से जो धातु बनते हैं उन्हें नाम-धातु कहते हैं। ये किसी नाम (संज्ञा या विशेषण आदि) पर क्यच् (य), काम्यच् (काम्य), क्विप् (nothing) क्यङ् (य) और णिच् (इ) प्रत्यय लगाने से बनते हैं। क्यच्, काम्यच् और क्विप् प्रत्यय द्वारा बने नाम-धातु परस्मैपदी, क्यङ् प्रत्यय द्वारा बने आत्मनेपदी और णिच् प्रत्यय द्वारा बने उभयपदी होते हैं।

परस्मैपद नाम-धातु।

२०१ क्यच् (य) प्रत्यय सुबन्त पर लगा कर इच्छा (wish) अर्थ में नाम धातु बनाए जाते हैं। इस य से पूर्व—

(क) अन्त्य अ और आ को ई आदेश होता है। जैसे, पुत्र + य + ति = पुत्रीयति (पुत्रमात्मनः इच्छति) 'बेटे की इच्छा करता है।'

(ख) अन्त्य इ और उ को दीर्घ होता है। जैसे, कवि—कवीयति (आत्मनः कविमिच्छति) 'कवि की इच्छा करता है'।

(ग) अन्त्य ऋ को री और ओ तथा औ को क्रमशः अव् तथा आव् आदेश होता है। जैसे, कर्तृ—कर्त्रीयति। गो—गव्यति। नौ—नाव्यति।

(घ) अन्त्य अनुनासिक का लोप हो जाता है और इसके पूर्ववर्ती स्वर में अन्त्य स्वर के समान विकार होता है। जैसे, राजन्—राज, राजीयति। 'राजा की इच्छा करता है।'

(ङ) अन्य किसी हल (व्यंजन) का लोप नहीं होता। जैसे, वाच्—वाच्यति 'वाणी की इच्छा करता है'। समिध—समिध्यति 'समिधा की इच्छा करता है'।

(च) अपत्यार्थ तद्धित प्रत्यय का लोप होकर फिर ऊपर लिखे विकार होते हैं। जैसे, गार्ग्य—गार्ग्य + य + ति, गार्ग + य + ति, गार्गीयति (गार्ग्यमात्मनः इच्छति)।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

२०२ आचार (treating like) अर्थ में क्रिया के कर्मभूत

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपमानवाची सुबन्त को **क्यच् (य)** प्रत्यय लगता है। जैसे, **पुत्रीयति छात्रम्** (छात्रं पुत्रमिवाचरति) 'छात्र में पुत्र सा आचरण करता है' (यहां इव उपमावाचक और **पुत्रम्** उपमानवाची कर्म है)। **विष्णूयति द्विजम्** (द्विजं विष्णुमिवाचरति) 'द्विज में विष्णु सा आचरण करता है।' **प्रासादीयति कुट्यां भिक्षुः** (कुट्यां प्रासाद इवाचरति) 'भिक्षु कुटी में महल का सा आचरण करता है' (यहां उपमानवाची प्रासाद अधिकरण में है)। **पर्यङ्कीयति मञ्चके** (मञ्चके पर्यङ्क इवाचरति) 'मंजे में पलंग का सा आचरण करता है।'

(क) **नमस्, तपस्, चित्र** आदि को भी **क्यच् (य)** प्रत्यय लगता है। जैसे, **नमस्यति** 'नमस्कार करता है।' **तपस्यति** 'तप करता है।' **चित्रीयते** 'चकित करता है।'

२०३. इच्छा (wish) अर्थ में **काम्यच् (काम्य)** प्रत्यय लगा कर नाम-धातु बनाए जाते हैं। जैसे, **पुत्रकाम्यति** 'पुत्र की कामना करता है। **यशस्काम्यति** 'यश की कामना करता है।' **सर्पिष्काम्यति** 'घी की कामना करता है।'

(क) **काम्यच् (काम्य)** मकारान्त नाम और निपातों पर भी लगता है परन्तु **क्यच् (य)** नहीं। जैसे **किंकाम्यति, स्वःकाम्यति**।

२०४. सब प्रातिपदिकों पर **क्विप्** प्रत्यय लगा कर **आचार** (behaviour expressed by the noun) अर्थ में नाम-धातु बनते हैं। **क्विप्** (nothing) का सर्वथा लोप होता है। इन नाम-धातुओं के रूप **भ्वादि गण** के समान होते हैं। जैसे, **कृष्ण—कृष्णति** (कृष्ण इवाचरति) 'कृष्ण का सा आचरण करता है।' **कवि—कवयति** (कविरिवाचरति) 'कवि का सा आचरण करता है।' **गर्दभ—गर्दभति** 'गधे का सा आचरण करता है।' **राजन्—राजानति** (राजा इवाचरति) 'राजा का सा आचरण करता है।' **पथिन्—पथीनति** 'सड़क का काम देता है।' **माला—मालाति** (मालेवाचरति) 'माला मालूम होता है। **पितृ—पितरति** (पितेवाचरति) 'पिता का सा आचरण करता है।'

आत्मनेपद नाम—धातु।

२०५. **आचार** अर्थ में कर्तृ-भूत **उपमानवाची** सुबन्तों पर **क्यङ् (य)** प्रत्यय लगा कर नाम-धातु बनते हैं। इन धातुओं को **आत्मनेपद** प्रत्यय लगते हैं। इस **क्यङ् (य)** से पूर्व—

(१) **अन्त्य अ** को **दीर्घ** होता है। (२) **अन्त्य आ** को कोई विचार नहीं

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता। (३) अन्यत्र वही विकार होते हैं जो क्यच् में होते हैं, और (४) स् को विकल्प से आ होता है, परन्तु अप्सरस् और ओजस् के स् को नित्य आ होता है। जैसे, कृष्ण—कृष्णायते (कृष्ण इवाचरति) 'कृष्ण सा आचरण करता है या काला करता है।' विद्वस्—विद्वायते, विद्वस्यते, 'विद्वान् सा आचरण करता है।' यशस—यशायते, यशस्यते 'यश का आचरण करता है। परन्तु अप्सरायते 'अप्सरा का आचरण करती है।' ओजायते 'बल का आचरण करता है।'

(क) मन्द 'slow', पण्डित 'learned', उन्मनस् 'agitated', सुमनस् 'generous-minded', भृश 'much' आदि शब्दों पर अभूत-तद्भाव विषय में (becoming what it was not before) क्यङ् (य) प्रत्यय लगता है[1]। जैसे, मन्दायते (अमन्दो मन्दो भवति इवाचरति वा) 'मंद होता है।' पण्डितायते (अपण्डितः पण्डित इवाचरति) 'पंडित बनता है।' उन्मनस्—(उन्मन, उन्मना) उन्मनायते (अनुन्मना उन्मना भवति) 'पागल होता है।' सुमनायते 'उदारचित्त होता है।' भृश—भृशायते (अभृशो भृशो भवति) 'बहुत होता है।'

(ख) वाष्प 'tears', ऊष्मन् 'heat', पर (फेन 'foam' पर भी) क्यङ् (य) प्रत्यय उद्वमन (sending forth, vomiting) अर्थ में लगता है। जैसे वाष्पायते (वाष्पमुद्वमति) 'आँसू गिराता है।' ऊष्मायते (ऊष्माणमुद्वमति) 'गरमी देता है।' फेनायते 'झाग देता है।'

(ग) शब्द, वैर, कलह, अभ्र और कण्व (sin) मेघ, तथा सुदिन, दुर्दिन, नीहार (fog) आदि प्रातिपदिकों पर करण (making) अर्थ में क्यङ् (य) प्रत्यय लगता है। जैसे, (शब्दायते (शब्दं करोति) 'शोर करता है।' वैरायते (वैरं करोति) 'वैर करता है।' कलहायते (कलहं करोति) 'झगड़ा करता है।' अभ्रायते, कण्वायते, 'पाप करता है।' मेघायते, सुदिनायते, दुर्दिनायते नीहारायते।

---

१. भृशादि गण में नीचे लिखे शब्द शामिल हैं :—

भृश, शीघ्र, चपल, मन्द, पण्डित, उत्सुक, सुमनस्, दुर्मनस्, अभिमनस्, उन्मनस्, रहस्, रोहत्, तृपत्, शश्वत्, भ्रमत्, शुचिस्, शुचिवर्चस् वर्चस् ओजस्, सुरजस्, अरजस्, इत्यादि।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

स्त्री के अर्थ में क्यङ् प्रत्यय होता है। यहाँ अन्त्य हल का लोप हो जाता है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(घ) जिन स्त्रीलिंग प्रातिपदिकों की उपधा में क न हो उनके स्त्रीप्रत्यय का क्यङ् (य) से पूर्व लोप हो जाता है। जैसे, कुमारी—कुमार, कुमारायते (कुमारीवाचरति) 'कँवारी का सा आचरण करती है।' हरिणी—हरिण, हरिणायते (हरिणीवाचरति) 'हिरनी का सा आचरण करती है।' गुर्वी—गुरु, गुरूयते (गुर्वीवाचरति) 'मोटी स्त्री का सा आचरण करती है।' परन्तु पाचिका—पाचिकायते (पाचिका इवाचरति) 'रोटी पकाने वाली का सा आचरण करती है।' (नतु पाचकायते)।

(ङ) सपत्नी से क्यङ् (य) द्वारा सपत्नायते, सपत्नीयते, और सपतीयते 'सौतन का सा आचरण करती है।' तथा युवति से युवायते 'युवति का सा आचरण करती है।' रूप बनते हैं।

२०६ णिच् (इ) प्रत्यय लगा कर भिन्न भिन्न अर्थों में नाम-धातु बनाए जाते हैं। इन में परस्मैपद और आत्मने० दोनों पदों में ही रूप बनते हैं। जैसे, प्रश्न—प्रश्नयति 'प्रश्न पूछता है।' व्रत्—व्रतयति 'व्रत लेता है।' व्रतयति पयः 'पानी पर रहने का व्रत लेता है।' व्रतयति शूद्रान्नम् 'शूद्र के अन्न से बचने का व्रत लेता है। रूप—रूपयति (रूपं पश्यति) 'रूप को देखता है।'

(क) सत्य, अर्थ और वेद प्रातिपदिकों से परे इ के स्थान में आपि लगता है। जैसे, सत्यापयति (सत्यं करोति आचष्टे वा), अर्थापयति (अर्थमाचष्टे), वेदापयति (वेदमाचष्टे)।[1]

अभ्यास २८

१. नीचे लिखे प्रातिपदिकों से नाम-धातु बनाओ :—

कवि, नौ, पुत्र, तपस्, गर्दभ, राजन्, अप्सरस्, पण्डित, बाष्प, शब्द, सत्य, व्रत, वेद, हरिणी, सपत्नी, गार्ग्य, कर्तृ, माला, मन्द, कण्डू, कुमारी, पाचिका, विद्वस्, ओजस्।

२. अधोलिखित के अर्थ लिखो :—

विद्वायते, पुत्रीयते, राजीयति, राजानति, धनीनति, धनीयति, कृष्णायते, कृष्णति, बाष्पायते, तपस्यति, चित्रीयते, वैरायते, कुमारायते, भृशायते, पण्डितायते, युवायते, इत्यादि।

३. नीचे दिए वाक्यों में मोटे छपे शब्दों के लिए एक शब्द (नाम-धातु) प्रयुक्त करो :—

---

१. कण्डू आदि शब्दों पर यक् प्रत्यय लगाने से भी नाम-धातु बनते हैं। जैसे, कण्डूयते।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्णमिवाचरति अर्जुनः । पुत्रम् आत्मनः इच्छति वासुदेवः । पुत्रम् इव आचरति शिष्यम् उपाध्यायः । राजानम् इव आचरति विप्रम् । राजा इव आचरति धूर्तः । कुट्यां इव आचरति प्रासादे राजा । पिता इव आचरति राजा । अप्सरा इव प्रतीयते सा स्त्री । वाष्पम् उद्वमति पयः । धूमम् उद्वमति नभः । कुमारी इव आचरति इयं नवोढा स्त्री । सोऽपण्डितः पण्डितः इव आचरति अज्ञेषु । मूर्खः निष्प्रयोजनमेव कलहं करोति ।

४. नीचे लिखे वाक्यों में रिक्त पदों को दिए गए प्रातिपदिकों से नाम-धातु बनाकर उनके उचित रूपों द्वारा पूरा करो :—

निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपि—। द्रुम्, लट् ।
—दोषाः सुजनवदने । गुण, लट् ।
गुणाः—दुर्जनमुखे । दोष, लट् ।
सैनिकानां प्रमाथेन सत्यं—भवान् । ओजस्, लट् ।
सैनिकानां घोषणामुपश्रुत्य लवः—। वीर, लङ् ।
दिशि—तेजो दक्षिणस्यां रवेरपि । मन्द, लट् ।
शुक्लरुचापि हंसः—चारु गतेन कान्ता—। चन्द्र, हंस; लट् ।
—स्पर्शसुखेन वारिं—स्वच्छतया विहायः ॥ कान्ता वारि, लट् ।
—त्वं पौरं जनं, तव सदा—श्रीः । सुत, रमणी; ल_ ।
सदाचारी पुरुषः प्रेत्य स्वर्गे लोके—। महद्, लट् ।
प्रोत्साहिता दृप्ता भटाः—। रण (काम्यच), लट् ।
—जरठहरिणाः स्वाङ्गमङ्गे मदीये । कण्डू, लट् ।
दिष्ट्या—खल्वार्यपुत्रः । स्वप्न, लट् ।
बलीवर्द इव आर्यगौतम आसीन एव—। निद्रा, लट् ।

५. संस्कृत में अनुवाद करो :—

धनवान् सदा अपने आपको पंडित दिखाते हैं (पण्डित)। ब्रह्मचारी तप करते हैं (तपस्) । बहुत से लोग सोते हुए बड़-बड़ाते हैं । (स्वप्न) । दुष्ट लोग सदा दूसरों से कलह करते हैं (कलह) । आगन्तुक ने हम से कई प्रश्न किए (प्रश्न) । मूर्ख राजा की नकल (आचरण) करता है (राजन्) । वह अप्सरा का सा आचरण करती है (अप्सरस्) । जाड़े में सूरज मन्द पड़ जाता है (मन्द) । आप धन की कामना करते हैं (धन) और मैं यश की (यशस्) ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा अपनी प्रजा को पुत्र समान जाने (पुत्र)। चन्द्रगुप्त सारे देश का राजा बनना चाहता था (राजन्)। वे ब्राह्मण को नमस्कार करते हैं (नमस्)। भिखारी अपनी कुटिया को ही महल समझता है (प्रासाद)। जमीन में से भाँप निकल रही है (वाष्प)। आग पानी को गरम कर देती है (ऊष्मन्)। यह लड़की मोटी स्त्री का सा आचरण करती है (गुर्वी)। वह लड़की अपनी सहेलियों से सौतन का सा बर्ताव करती है (सपत्नी)। उसने पानी पर रहने का व्रत लिया (व्रत)। ब्राह्मण सदा सच कहता है (सत्य) और वेद का व्याख्यान करता है (वेद)। दही बिलोने से झाग देता है (फेन)। क्षत्रिय शत्रु को पाकर अपना बल दिखाता है (ओजस्)। यह पगडंडी (पदवी, मार्ग) सड़क का काम देती है (पथिन्)।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सप्तमोऽध्यायः ।

परस्मैपद और आत्मनेपद ।

२०७. पहले कहा गया है कि संस्कृत में दो पद होते हैं। **परस्मैपद** (Voice for another) में क्रिया का फल **अन्य** को होता है और **आत्मनेपद** (Voice for the self) में कर्तृगामी होता है। जैसे, **करोति** अन्य के लिए करता है।' **कुरुते** 'अपने लिए करता है।' वस्तुतः इनमें यही भेद है, परन्तु व्यवहार में इस पर प्रायः कभी ध्यान नहीं दिया जाता। **बाण और दण्डी** जैसे प्रसिद्ध लेखकों ने भी इसका यथोचित ध्यान नहीं रक्खा।

(क) संस्कृत में प्रत्येक धातु का पद नियत होता है। कुछ धातु **परस्मैपद,** कुछ आत्मनेपद और कुछ **उभयपद** में होते हैं। परन्तु जब उनके पूर्व उपसर्ग (Prepositions) प्रयुक्त होते हैं तो अर्थ-भेद में उनका पद भी बदल जाता है। जैसे, **गच्छति** 'जाता है।' परन्तु **संगच्छते** 'मिलता है।'

परस्मैपद-विधानम् ।

२०८. नीचे लिखे धातु **परस्मैपदी** (कर्तृवाच्य में) होते हैं :—

(१) **कृ** उभय० (do) **अनु** और **परा** उपसर्गों के योग में। जैसे, **छात्रो गुरुमनुकरोति** 'विद्यार्थी गुरु का अनुकरण करता है। **आचार्यः शिष्यस्य प्रार्थनां पराकरोति** 'आचार्य शिष्य की प्रार्थना को नामंजूर करता है।'

(२) **रम्** आत्मने० 'sport' **वि, आ** या **परि** उपसर्गों के योग में। जैसे, **पापाद् विरमति** 'पाप से बचता है।' **उद्याने आरमति** बाग़ में आराम करता है।' **पुत्रं दृष्ट्वा परिरमति** 'बेटे को देखकर प्रसन्न होता है।'

(३) **रम्** धातु (अकर्मक) **उप** उपसर्ग के योग में **विकल्प** से। जैसे, **अध्ययनाद् उपरमति** या **उपरमते** 'पढ़ने से बचता है।'

(४) **क्षिप्** उभय० 'throw' **अभि, प्रति** और **अति** उपसर्गों के योग में। जैसे, **भीमो बलेन दुर्योधनम् अभिक्षिपति** 'भीम बल में दुर्योधन से बढ़

---

१. अनुपराभ्यां कृञः। २. व्याङ्परिभ्यो रमः। १. ३. ८३। ३. उपाच्च। १. ३. ८४। ४. अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः। १. ३. ८०।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर है' प्रतिक्षिपति 'rejects', अतिक्षिपति 'throws beyond'.

(५) वह उभय० 'carry' प्र उपसर्ग के योग में। जैसे, नदी प्रवहति 'नदी बहती है।'

(६) मृ 'die' लिट्, लृट्, लुट् और लृङ् में परस्मैपदी और शेष लकारों में आत्मने० है। जैसे ममार, मरिष्यति, मर्ता, अमरिष्यत, परन्तु म्रियते।

(७) बुध्, युध्, नश्, जन्, अधि-इ, प्रु, द्रु, और स्रु धातु णिजन्त में परस्मै० होते हैं। जैसे, बोधयति, योधयति, नाशयति, जनयति, प्रावयति, द्रावयति, स्रावयति।

(८) निगरण (eating) और चलन (moving) अर्थ वाले धातु णिजन्त में परस्मै० होते हैं। जैसे, माता शिशुं भोजयति 'मां बच्चे को खिलाती है।' पवनः वृक्षं कम्पयति 'हवा पेड़ को हिलाती है।'

परन्तु अद् (eat) णिजन्त में उभयपदी है। जैसे, माता शिशुना अन्नम् आदयति या आदयते।

आत्मनेपद-विधानम्।

२०९. नीचे लिखे धातु आत्मनेपदी होते हैं।

(१) कर्मवाच्य और भाववाच्य में सब धातु। जैसे, तेन पुस्तकं पठ्यते। तेन स्थीयते।

(२) कर्तृवाच्य में कर्मव्यतिहार (reciprocal action) के अर्थ में। जैसे, ब्राह्मणः शस्यं व्यतिलुनीते 'ब्राह्मण खेती काटता है (शूद्र का काम)।' संप्रहरन्ते राजानः 'राजा एक दूसरे पर प्रहार करते हैं।'

परन्तु गति और हिंसा अर्थ वाले धातु कर्मव्यतिहार में आत्मने० नहीं होते। जैसे, ते व्यतिगच्छन्ति 'वे एक दूसरे के विरुद्ध जाते हैं।' व्यतिहिंसन्ति, व्यतिघ्नन्ति।

(३) विश् प० 'enter' नि उपसर्ग के योग में। जैसे, नृपः

---

५. प्राद्वहः। १. ३. ८१ ६. लिट्लुटा म्रङः। ७. बुध्-युध्-नश्-जनेङ्-प्रु-द्रु-स्रुभ्यो णेः। १. ३. ८६। सभी णिजन्त उभयपदी होते हैं। ८. निगरण-चलनार्थेभ्यश्च। १. ३. ८७.। अदेः प्रतिषेधो वक्तव्यः।

१. भावकर्मणोः। १. ३. १३.। २. कर्त्तरि कर्मव्यतिहारे। १. ३. १४। न गतिहिंसार्थेभ्यः ३. नेर्विशः। १. ३. १७।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नगरं निविशते 'राजा नगर में प्रविष्ट होता है।' अभिनिविशते सन्मार्गम्।

(४) क्री 'buy' परि, वि और अव के योग में। जैसे, गोपो दुग्धं विक्रीणीते (sells), परिक्रीणीते, अवक्रीणीते (buys)।

(५) जि प० 'conquer' वि और परा के योग में। जैसे, विजयतां महाराजः। राजा शत्रुं पराजयते (defeats), बालकोऽध्ययनात्पराजयते।

(६) दा 'give, आ उपसर्ग के योग में यदि मुँह खोलने का अर्थ न पाया जाय (अनास्यविहरण)। जैसे, स विद्याम् आदत्ते, धनम् आदत्ते, आदत्ते हि रसं रविः। परन्तु विडालः मुखंव्याददाति 'बिल्ली मुँह खोलती है।' नदी कूलं व्याददाति 'नदी किनारे को तोडती है।' परन्तु, पक्षी पतंगस्य मुखं व्यादत्ते 'पक्षी कीड़े के मुँह को (तोड़कर) खोलता है।' यहां अन्य का मुख है।

(७) भुज् 'enjoy, eat' यदि रक्षा का अर्थ न हो (अनवने)। जैसे, बालोऽन्नं भुङ्क्ते(खाता है),राजा महीं भुङ्क्ते (भोग करता है), वृद्धो जनः दुःखशतानि भुङ्क्ते (भोगता है)। परन्तु नृपः प्रजाः भुनक्ति (रक्षा करता है)।

(८) क्रीड् 'play' अनु, सम्, परि और आ के योग में। जैसे, बालकः अनुक्रीडते, संक्रीडते, परि-आ-क्रीडते। परन्तु सं-क्रीड कूजन (inarticulate sound) के अर्थ में परस्मैपदी है। संक्रीडन्ति शकटानि, संक्रीडति चक्रम् 'पहिया चूंचूं करता है।'

(९) नु और प्रच्छ् धातु आ के योग में। जैसे, आनुते शृगालः 'गीदड़ भौंकते हैं।' आपृच्छस्व प्रियसखम् 'अपने प्यारे मित्र से विदा लो।'

(१०) हृ धातु अनु के योग में शील-ग्रहण (follow or acquire the habit or nature of) के अर्थ में। जैसे, मातरं गावः अनुहरन्ते, पैतृकमश्वा अनुहरन्ते (स्वभाव का अनुकरण करते हैं)। परन्तु, बालकः पितरम् अनुहरति (मिलता-जुलता है)

(११) स्था 'stand' सम्, अव, प्र और वि के योग में। जैसे, न कोऽपि निर्धनस्य वाक्ये सन्तिष्ठते 'कंगाल के कहने पर कोई काम नहीं करता'। सखे, क्षणम् अव-वि तिष्ठस्व (ठहरिए)। ततो राजा नगरं प्रतस्थे (गया)।

---

४. परिव्यवेभ्यः क्रियः। १. ३. १८। ५. विपराभ्यां जेः १. ३. १९। ६. आङो-दोऽनास्यविहरणे। १. ३. २०। ७. भुजोऽनवने। १. ३. ६६. ८. क्रीडोऽनुसंपरिभ्यश्च। १. ३. २१। ९. आङि नुप्रच्छयोरुपसंख्यानम्। वा०। १०. हरतेर्गतताच्छील्ये। वा० ११. समवप्रविभ्यः स्थः। १. ३. २२।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१२) स्था धातु आ के योग में प्रतिज्ञा (laying down a proposition) के अर्थ में। जैसे, मीमांसकाः शब्दं नित्यम् आतिष्ठन्ते (affirm) 'मीमांसकों की प्रतिज्ञा है कि शब्द नित्य है।'

(१३) स्था धातु उद् के योग में आत्मने० है, परन्तु उत्थान (rising) के अर्थ में परस्मै० होता है। जैसे, मुनिः मोक्षाय उत्तिष्ठते 'मुनि मोक्ष की उत्कंठा करता है = यत्न करता है।' परन्तु गुरुरासनाद् उत्तिष्ठति 'गुरु आसन से उठता है।' ग्रामात् शतम् उत्तिष्ठति 'गाँव से सौ रुपया उठता है (कर)।'

(१४) स्था धातु उप के योग में देवपूजा (worshipping a deity) संगतिकरण (uniting or joining), मित्रकरण (making friends), और पथ (leading to as a path) के अर्थ में आत्मने० होता है। जैसे, आदित्यम् उपतिष्ठते 'सूरज की पूजा करता है।' पतिम् उपतिष्ठते नारी 'स्त्री पति को मिलती है।' यमुना गङ्गाम् उपतिष्ठते 'यमुना गंगा में मिलती है।' साधुः साधून् उपतिष्ठते 'साधु साधुओं से मिलता है।' अयं पन्थाः लवपुरम् उपतिष्ठते 'यह सड़क लाहौर को जाती है।'

(१५) अकर्मक (intransitive) स्था धातु उप के योग में आत्मने० होता है। जैसे, भिक्षुको भोजनकाले उपतिष्ठते 'भिखारी भोजन के समय आता है।' परन्तु स माम् उपतिष्ठति (सकर्मक)।

(१६) अकर्मक तप् (heat, shine) उत् और वि के योग में आत्मने० होता है। जैसे, रविः उत्तपते वितपते वा 'सूरज चमकता है।' परन्तु रविः पृथिवीम् उत्तपति वितपति वा 'सूरज पृथिवी को तपाता है (सकर्मक)। यदि कर्म अपना ही अंग हो तो आत्मने० होता है। जैसे, स हस्तौ उत्तपते वितपते वा 'अपने हाथ गरम करता है।'

यदि तप् धातु का कर्म तपस् (penance) हो तो यह आत्मने० होता है। जैसे, स तपोऽतप्यत 'उसने तप किया।'

(१७) अकर्मक यम् और हन् धातु आ के योग में आत्मने० होते हैं या जब कर्ता का अंग इन का कर्म हो। जैसे आयच्छते तरुः 'वृक्ष फैलता है। आयच्छते पाणिम् हाथ फैलाता है।' परन्तु आयच्छति कूपाद्रज्जुम् 'कुँवे

---

१२. आङः स्थः प्रतिज्ञायाम्। १३. उदोऽनूर्ध्वकर्मणि। १. ३. २४। १४. उपाद्देवपूजासंगतिकरणमित्रकरणपथिष्विति वाच्यम्। १५. अकर्मकाच्च। १. ३. २६। १६. उद्विभ्यां तपः। १.३. २७। स्वाङ्गकर्मकाच्चेति वक्तव्यम्। तपस्तपः कर्मकस्यैव। १७. आङो यमहनः १. ३. २८।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से रस्सी निकालता है।' आहते (मारता है) स्वशिरः आहते परन्तु परस्य शिरः आहन्ति।

(१८) यम् धातु उप के योग में स्वकरण (accepting, marrying) के अर्थ में। जैसे, रामः सीताम् उपयेमे 'राम ने सीता से विवाह किया।' स दानम् उपयच्छते 'वह दान स्वीकार करता है।'

(१९) अकर्मक गम् और ऋच्छ् (go) धातु सम् के योग में। जैसे, गङ्गा यमुनया संगच्छते 'गंगा यमुना से मिलती है।' अयमर्थः न संगच्छते 'यह अर्थ ठीक नहीं बैठता।' संगच्छध्वम्, समृच्छते। परन्तु ग्रामं संगच्छति, मित्रं संगच्छति। (सकर्मक)।

विद्, प्रच्छ्, स्वर्, और ऋ, श्रु, दृश् धातु सम् के योग में जैसे, संविते, सपृच्छते, संस्वरते। हिताच्च संशृणुते स किं प्रभुः 'जो हितैषी की नहीं सुनता वह क्या (बुरा) स्वामी है।' संपश्यते। परन्तु अहं शास्त्रं संशृणोमि (सकर्मक)।

(२०) ह्वे धातु आ के योग में स्पर्द्धा (challenge) के अर्थ में। जैसे, आह्वयते मल्लो मल्लम्। भीमः जरासन्धम् आह्वयते, 'भीम जरासंध को ललकारता है।' परन्तु, पिता पुत्रम् आह्वयति (बुलाता है)।

(२१) कृ धातु अधि के योग में प्रसहन अर्थात् क्षमा (forgiving) या अभिभव (overcoming) के अर्थ में। जैसे, शत्रुम् अधिकुरुते 'शत्रु को क्षमा करता है या शत्रु पर काबू पाता है।' परन्तु अर्थम् अधिकरोति' मनुष्यान् अधिकरोति शास्त्रम् 'शास्त्र मनुष्यों को अधिकारी बनाता है।'

(२२) कृ धातु वि के योग में शब्दकर्म (making sound or having sound for its object) के अर्थ में। जैसे, शृगालः स्वरान् विकुरुते 'गीदड़ शोर करता है।' गायकः स्वरान् विकुरुते गवय्या स्वरों को बदलता है।' परन्तु चित्तं विकरोति कामः। परन्तु अकर्मक वि कृ आत्म० होता है। छात्राः विकुरुते, सैंधवाः विकुर्वते।

(२३) नीचे लिखे अर्थों में कृ धातु उपसर्गों के योग में आत्मने० है।

---

१८. उपाद्यमः स्वकरणे। १. ३. ५६। १९. समो गम्यृच्छिभ्याम्। १. ३. २९। विदिप्रच्छिस्वरतीनामुपसंख्यानम्। अर्तिश्रुदृशिभ्यश्च इति वक्तव्यम्। २०. स्पर्द्धायामाङः। १. ३. ३१। २१. अधेः प्रसहने। १. ३. ३३। २२. वेः शब्दकर्मणः। १. ३. ३४। २३ गन्धनावक्षेपणसेवनसाहसिक्यप्रतियत्नप्रकथनोपयोगेषु कृञः। १. ३. ३२।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. गन्धन (hurting, killing) जैसे, उत्कुरुते 'विरुद्ध कहता है (हानि करता है)।'

२. अवक्षेपण (censuring, overcoming), जैसे, श्येनो वर्त्तिकाम् उदाकुरुते 'बाज बटेर को बस में करता है।'

३. सेवन (serving, attending), जैसे, हरिम् उपकुरुते 'हरि की सेवा करता है।'

४. साहसिक्य (using violence), जैसे, परदारान् प्रकुरुते, 'दूसरे की स्त्री पर बलात्कार करता है।'

५. प्रतियत्न (imparting additional quality), जैसे, एधः उदकस्य उपस्कुरुते 'ईंधन पानी का गर्मी देता है।'

६. प्रकथन (reciting), जैसे, गाथाः प्रकुरुते 'गाथा वर्णन करता है।'

७. उपयोग (applying to use), जैसे, शतं प्रकुरुते (धर्मार्थे विनियुङ्क्ते)।

(२४) नीचे लिखे अर्थों में नी आत्मने० है (उत्, उप, या वि के योग में):—

१. सम्मानन (showing regard for), जैसे, शास्त्रे नयते 'शास्त्र की शिक्षा देता है (तेन च शिष्यसम्माननं फलितम्)।' (२) उत्सञ्जन (lifting up), जैसे, दण्डम् उन्नयते 'डंडा उठाता है।' (३) आचार्य-करण (initiating into sacred rites, making one a spiritual guide), जैसे, माणवकम् उपनयते 'बालक का उपनयन संस्कार करता है (अनेन उपनेतरि आचार्यत्वं क्रियते)।' (४) ज्ञान (determining the sense of), तत्त्वं नयते 'सत्य का निश्चय करता है।' (५) भृति (employing on wages), जैसे, कर्मकारान् उपनयते 'मजदूरों को वेतन पर नौकर रखता है।' (६) विगणन (paying off as a debt, taxes, etc.), जैसे, करं विनयते 'कर देता है।' (७) व्यय (spending, giving in charity) जैसे, शतं विनयते 'सौ रुपये धर्मार्थ में खर्च करता है।'

(२५) नी आत्मने० होता है यदि इसका कर्म कर्तृस्थ (existing

---

२४. सम्माननोत्सञ्जनाचार्यकरणज्ञानभृतिविगणनव्ययेषु नियः। १. ३. ३६।
२५. कर्तृस्थे चाशरीरे कर्मणि। १. ३. ३७।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

in the agent) **अशरीर** वस्तु (having no material body i.e. abstract noun) हो। जैसे, **क्रोधं विनयते** 'अपने क्रोध को मारता है।' **श्रमं विनयते** 'थकावट दूर करता है।' **विनयन्ते स्म तद्योधा मधुभिर्विजयश्रमम्** (रघुवंशे)। परन्तु **विनिन्युरेनं गुरवो गुरुप्रियम्** (रघु०)।

(२६) **क्रम्** धातु वृत्ति (continuity), सर्ग, (energy) और तायन (development) के अर्थ में आत्मने० होता है। जैसे, **अस्य बुद्धिः ऋचि क्रमते** 'उसकी बुद्धि ऋग्वेद में चलती है।' **अध्ययनाय क्रमते बालः** 'बालक पढ़ने के लिए उत्साह रखता है।' **अस्मिन् शास्त्राणि क्रमन्ते** 'उसमें शास्त्र वृद्धि को प्राप्त होते हैं।'

उप और परा के योग में भी ऊपर लिखे अर्थों में **क्रम्** आत्मने० होता है। जैसे, **वक्तुम् उपक्रमते बालः। पराक्रमते बालवीरः।** इत्यादि।

(२७) **क्रम्** धातु **आ** के योग में **उद्गमन** (rising of a luminary) के अर्थ में आत्मने० होता है। जैसे, **आक्रमते सूर्यः** 'सूरज निकलता है।' परन्तु **आक्रामति धूमो हर्म्यतलात्** 'छत के ऊपर से धुवाँ उठता है।' **बालः श्वानम् आक्रामति** 'बालक कुत्ते पर हमला करता है।'

(२८) **क्रम्** धातु वि के योग में **पादविहरण** (pacing, walking) के अर्थ में आत्मने० होता है। जैसे, **साधु आक्रमते अश्वः** 'घोड़ा अच्छा चलता है।' **विष्णुस्त्रेधा विचक्रमे** 'विष्णु ने तीन बार कदम रक्खा।' परन्तु **विक्रामति राजा। विक्रामति सन्धिः** (द्विधा भवति)।

(२९) **क्रम्** धातु **प्र** और उप के योग में **आरंभ** (beginning) के अर्थ में आत्मने० होता है। जैसे, **अध्येतुं प्रक्रमते उपक्रमते** वा 'पढ़ना आरंभ करता है।'

(३०) **ज्ञा** धातु **अपह्नव** (denial) के अर्थ में आत्मने० होता है। जैसे, **शतम् अपजानीते** 'सौ रुपये से इनकार करता है।'

(३१) **ज्ञा** धातु **सम्** और प्रति के योग में **अनाध्यान** (not remembering with regret) के अर्थ में आत्मने० होता है। जैसे,

---

२६. वृत्तिसर्गतायनेषु क्रमः। १. ३. ३८। उपपराभ्याम्। १. ३. ३९। २७. आङ उद्गमने। १. ३. ४०। २८. वेः पादविहरणे। १. ३. ४१। २९. प्रोपाभ्यां समर्थाभ्याम्। १. ३. ४२। ३०. अपह्नवे ज्ञः। १. ३. ४३। ३१. सम्प्रतिभ्यामनाध्याने। १. ३. ४६।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शतं संजानीते 'सौ रुपये की आशा करता है।' शतं प्रतिजानीते 'सौ रुपये देने का इकरार (प्रतिज्ञा) करता है।' परन्तु मातरं संजानाति 'माता को दुःख से याद करता है।'

(३२) वद् धातु नीचे लिखे अर्थों में आत्मने० होता है:—

१. भासन (showing brilliance, proficiency in), जैसे, शास्त्रे वदते 'शास्त्र में कौशल दिखाता है।' २. उपसंभाषा (pacifying, persuading), जैसे, प्रभुः भृत्यान् उपवदते 'स्वामी नौकरों को खुश करता है।' ३. ज्ञान (perfect knowledge) जैसे, शास्त्रे वदते 'शास्त्र में पूरा ज्ञान रखता है।' ४. यत्न (effort) जैसे, कृषीवलः क्षेत्रे वदते 'किसान खेत में परिश्रम करता है।' ५. विमति (quarrel, difference of opinion) जैसे, क्षेत्रे विवदते 'खेत पर झगड़ता है।' ६. उपमन्त्रण (flattery in secret, enticing), जैसे, दातारम् उपवदते 'दाता की खुशामद करता है।' कुलनारीम् उपवदते 'कुलीन स्त्री को बहकाता है।'

(३३) वद् धातु सं-प्र के योग में व्यक्त वाणी (speaking articulately and loudly) के समुच्चारण (by several men together) के अर्थ में आत्मने० होता है। जैसे, ब्राह्मणाः संप्रवदन्ते 'ब्राह्मण इकट्ठा उच्चारण करते हैं।' परन्तु कुक्कुटाः संप्रवदन्ति (अव्यक्त)।

(३४) सकर्मक चर् धातु उत् के योग में आत्मने० होता है। जैसे, धर्मम् उच्चरते 'धर्म से भ्रष्ट होता है। गुरुवचनम् उच्चरते 'गुरु के वचन को छोड़ता है' परन्तु वाष्प उच्चरति (अकर्मक)।

(३५) यम् धातु उप के योग में स्वकरण (marrying, espousing), के अर्थ में आत्मने० होता है। जैसे, रामः सीताम् उपयेमे 'राम ने सीता को व्याहा।'

(३६) ज्ञा, श्रु स्मृ और दृश् धातु सन्नन्त में आत्मने० होते हैं। जैसे, जिज्ञासते, शुश्रूषते, सुस्मूर्षते, दिदृक्षते।

(३७) मृ धातु लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लुङ्, और आशी-

---

३२. भासनोपसम्भाषाज्ञानयत्नविमत्युपमन्त्रणेषु वदः । १. ३. ४७।
३३. व्यक्तवाचां समुच्चारणे । १.३.४८ । ३४. उदश्चरः सकर्मकात् । १.३.५३ ।
३५. उपाद्यमः स्वकरणे । १.३.५६ । ३६. ज्ञाश्रुस्मृदृशां सनः । १. ३. ५७ ।
३७. म्रियतेर्लुङ्लिङोश्च । १. ३. ६१ ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिङ् में आत्मने० और शेष लकारों में परस्मै० होता है।

(३८) मन्त्र् धातु आ के योग में आत्मने० होता है। जैसे, आमन्त्रयस्व सहचरम् 'अपने साथी से विदा ले।'

(३९) शास् धातु आ और प्र के योग में आत्मने० होता है। जैसे, ऋषिः शकुन्तलाम् आशास्ते 'ऋषि शकुन्तला को आशीर्वाद देता है।' इदं प्रशास्महे 'हम यह प्रार्थना करते हैं।'

अभ्यास २९

१. रम्, कृ, क्षिप्, मृ, वृत्, आदि धातु कब परस्मैपदी होते हैं। सोदाहरण लिखो।

२. वद्, नी, दृश्, स्था, क्रम्, जि, प्रच्छ्, क्रीड्, पत्, हन्, कृ, वद्, ज्ञा, यम्, क्रा, आदि धातु कब आत्मनेपदी होते हैं? सोदाहरण लिखो।

३. नीचे लिखे परस्मै० और आत्मने० रूपों में अर्थ-भेद बताओ और इस अर्थ भेद को दर्शाने के लिए इन्हें वाक्यों में प्रयुक्त करो :—

१.	आह्वयति	और	आह्वयते	११.	विकरोति	और	विकुरुते
२.	आक्रामति	और	आक्रमते	१२.	विनयति	और	विनयते
३.	व्याददाति	और	व्यादत्ते	१३.	संजानाति	और	संजानीते
४.	उत्तिष्ठति	और	उत्तिष्ठते	१४.	संक्रीडति	और	संक्रीडते
५.	उपतिष्ठति	और	उपतिष्ठते	१५.	अधिकरोति	और	अधिकुरुते
६.	उत्तपति	और	उत्तपते	१६.	संगच्छति	और	संगच्छते
७.	करोति	और	कुरुते	१६.	आयच्छति	और	आयच्छते
८.	भुनक्ति	और	भुङ्क्ते	१८.	विक्रामति	और	विक्रमते
९.	उच्चरति	और	उच्चरते	१९.	वदति	और	वदते
१०.	अनुहरति	और	अनुहरते	२०.	संजानाति	और	संजानीते

४. नीचे लिखे वाक्यों में क्रिया को शुद्ध या सिद्ध (justify) करो:—

१. राजा महीं भुङ्क्ते। २. पार्वती तपसे वनं प्रतस्थौ। ३. साधुः साधुं संगच्छते। ४. धूर्तः शतम् अपजानाति। ५. संयमी रिपून् पराजयति। ६. क्रोधं विनयसि। ७. शिक्षकः आसनाद् उत्तिष्ठते। ८. पिता पुत्रम् आह्वयते। ९. पितरम् अनुहरति रूपेण पुत्रः। १०. कुरूपां न उपयच्छेत्। ११. बालकोऽन्नं भुनक्ति। १२. कामो विकुरुते। १३. तौ परस्परं विवदतः। १४. पत्नी पतिं शुश्रूषति। १५. प्रवासं गमिष्यन् रामः मातरम् आपृच्छति।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५. नीचे लिखे वाक्यों में क्रिया के आत्मने० या परस्मै० प्रयोग के लिए हेतु दो:—

१. अनुवदति शुकस्ते मञ्जुवाक् पञ्जरस्थः । रघु० ।
२. मेनां मुनीनामपि माननीयामात्मानुरूपां विधिनोपयेमे । कु० ।
३. रहस्यं साधूनामुपधि विशुद्धं विजयते । उत्तर० ।
४. वागीशं वाग्भिरर्थ्याभिः प्रणिपत्योपतस्थिरे । कुमार० ।
५. शतमखमुपतस्थे प्राञ्जलिः पुष्पधन्वा । कुमार० ।
६. ततः प्रतस्थे कौवेरीं भास्वानिव रघुर्दिशाम् । रघु० ।
७. अये वनदेवतेयं फलकुसुमपल्लवार्घ्येण मामुपतिष्ठते । उत्तर० ।
८. यावत्प्रतापनिधिराक्रमते न भानुः । रघु० ।
९. विनयन्ते स्म तद्योधा मधुभिर्विजयश्रमम् । रघु० ।
१०. सन्ततिविच्छेदनिरवलम्बानां मूलपुरुषावसाने संपदः परमुपतिष्ठन्ति । शकुन्तला ।

६. संस्कृत में अनुवाद करो:—

शत्रु की सेना किले में दाखिल हो गई (नि विश्)। शिव ने पार्वती से ब्याह किया (उप-यम्)। मुझे देख कर शेर ने मुँह खोला (वि-आ-दा)। अब अपने मित्रों से विदा लीजिए (आ-प्रच्छ)। गोपाल ने अपना घोड़ा सौ रुपये में बेच दिया। (वि-क्री)। यात्री हिमालय की चोटी को चल पड़े (प्र-स्था) प्रातःकाल ब्रह्मचारी सूरज का उपस्थान करते हैं (उप-स्था)। उसने मुझे पुस्तक देने की प्रतिज्ञा की (प्रति-ज्ञा)। लड़के रास्ते में आपस में झगड़ते हैं (वि-वद)। भले लोग अपने वचनों का उल्लंघन कभी नहीं करते (उत्-चर)। चोर ने उसके सिर पर डंडा मारा (आ हन्)। यह सड़क कालेज को जाती है (उप-स्था)। भीम ने दुर्योधन को युद्ध के लिए ललकारा (आ-ह्वे) हमने बाज़ार से फल खरीदे (परि-क्री)। नदी ने पानी के बहाव से किनारों को तोड़ डाला (वि-आ-दा)। गरमी में सूरज रसों को खींच लेता है। (आ-दा)। बाग में बालक खेलते हैं (आ-क्रीड्)। यह लड़की अपनी माता से मिलती जुलती है (अनु-हृ)। आप जरा यहाँ ठहरिए (अव-स्था)। जालन्धर से एक लाख रुपया प्रतिवर्ष कर उठता है (उत्-स्था)। प्रयाग में जमना गंगा से मिलती है (उप-स्था)। जाड़े में लोग अपने हाथ तापते हैं। (उत् तप्)। उमा ने देर तक घोर तप किया (तप्)। भिखारी सब के आगे हाथ फैलाता है (आ-यम्)। गोपाल ने हरि की पीठ पर

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डंडा मारा (आ-हन्), परन्तु अपना भी हाथ तोड़ लिया (आ-हन्) । आपका अर्थ यहां ठीक नहीं बैठता (सं-गम्) । इकट्ठे बोलो (सं-वद्) और इकट्ठे चलो (सं-गम्) । ज्ञान मनुष्यों को अधिकारी बनाता है (अधि-कृ) । संयमी अपनी इन्द्रियों पर काबू पाता है (अधि-कृ) लोभ चित्त को बिगाड़ता है (वि-कृ) । मनुष्य हिंसक पशुओं को बस में करता है (उद्-आ-कृ) । गुरु ने शिष्य का उपनयन किया (उप-नी), और उसके लिए सत्य का निश्चय किया (नी) । गुरु ने अपने क्रोध को मारा (वि-नी), और विद्यार्थियों को पढ़ाया (वि-नी) । हरि की बुद्धि गणित में चलती है (क्रम्) । रात को चांद निकलता है (आ-क्रम्) । जरमन सेना ने रूस पर हमला किया (आ-क्रम्) । यह घोड़ा बहुत अच्छा चलता है (वि-क्रम्) । साहूकार ने मुसाफिर का धन देने से इनकार कर दिया (अप-ज्ञा) । मैं तुम्हें पुस्तक देने का इकरार करता हूँ (प्रति-ज्ञा) मैं बचपन के दिनों को दुःख से याद करता हूँ (सं-ज्ञा) हरि धर्मशास्त्र का पूरा ज्ञान रखता है (वद्) मकान पर दोनों भाइयों का झगड़ा हो गया (वि-वद्) । दरबारी लोग राजा की खुशामद करते हैं (उप-वद्) । पिता पुत्र को आशीर्वाद देता है (आ-शास्) । हम आप से यह प्रार्थना करते हैं (प्र-शास्) ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अष्टमोऽध्यायः ।

कृदन्त 'PARTICIPLES'.

१. शत्रन्त '(Present Active Participles).'

(शतृ-शानच्-प्रत्ययान्त)

२१० परस्मैपदी धातुओं पर अत् (शतृ) प्रत्यय लगाने से शत्रन्त (Present active Participles) बनते हैं । इस अत् से पूर्व धातु का वही अंग (base) रहता है जो लट् के प्रथमपुरुष में बहुवचन के प्रत्यय से पूर्व होता है । अकारान्त अंग के अ का लोप हो जाता है । जैसे, भू—भवन्ति-भव-भव्, भवत् । रुन्धत् । कृ—कुर्वन्ति—कुर्वत् । द्विष्—द्विषत् । हु—जुह्वति—जुह्वत् । सु—सुन्वत् । तन्—तन्वत् क्री—क्रीणत् । धा—दधत् । स्था—तिष्ठत् । हन्—घ्नन्ति—घ्नत् । घ्रा—जिघ्रत् । गम्—गच्छत् । यम्—यच्छत् । क्रम-क्रामत्, क्राम्यत् । दिव्—दीव्यत् । इष्—इच्छत् । दृश—पश्यत् । पा—पिबत् । अस—सन्ति-सत् । जागृ—जाग्रत् । आप्—आप्नुवत् । श्रु—शृण्वत् । बन्ध —बध्नत् । चुर्—चोरयत् । बुध् णिजन्त—बोधयत् । दा सन्नन्त—दित्सत् ।

(क) आत्मनेपदी धातुओं पर आन (शानच्) प्रत्यय लगता है आन से पूर्व भी धातु का वह रूप रहता है जो लट् के प्र० बहु० के प्रत्यय से पूर्व होता है । सार्वधातुकों (१, ४, ६, १०) में आन को मान और आस् धातु से पूर्व ईन हो जाता है । जैसे, २. द्विष्—द्विषाण । अधि-इ—अधीयान् । शी—शयान । ब्रू-ब्रुवाण । ३. दा—ददान । धा—दधान । ५. सु—सुन्वान । धु—धुन्वान । ७. रुध्—रुन्धान । भिद्—भिन्दान् । छिद्—छिन्दान । युज्—युञ्जान । ८. कृ—कुर्वाण । तन्—तन्वान । ९. क्री—क्रीणान । ग्रह—गृह्णान । ज्ञा—जानान । १. सेव्—सेवमान । ईक्ष—ईक्षमाण । वृत्—वर्तमान । मुद्—मोदमान । वृध्—वर्धमान । ४. विद्—विद्यमान । जन्—जाय-मान । ६. तुद्—

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मान। ६. तुद्—तुदमान। मृ—म्रियमाण १०. चुर्—चोरयमाण। तड्—ताडयमान। आस्—आसीन।

२. स्यत्रन्त 'Future Active Participles'.

२११. परस्मैपदी धातुओं पर स्यत् (स्यतृ) प्रत्यय लगाने से स्यतन्त्र (future participles) बनते हैं। लृट् लकार के प्रथमपुरुष के एकवचन की इ हटाने से स्यत्रन्त के रूप बन जाते हैं। जैसे, भू—भविष्यति—भविष्यत्। दा—दास्यत्। कृ—करिष्यत्। चुर्—चोरयिष्यति—चोरयिष्यत्। श्रु—श्रोष्यत्। आप्—आप्स्यत्। दृश्—द्रक्ष्यत्। गम्—गमिष्यत्।

(क) आत्मनेपदी धातुओं पर स्यत्रन्त में स्यमान (स्यानच्) प्रत्यय लगता है। लृट् लकार के प्रथमपुरुष एकवचन के ते प्रत्यय के स्थान में मान लगाने से यह रूप बन जाते हैं। जैसे, भू—भविष्यते—भविष्यमाण। दा—दास्यमान। कृ—करिष्यमाण। चुर्—चोरयिष्यमाण। द्रक्ष्यमाण। श्रोष्यमाण।

३. क्तवत्वन्त 'Past Active Participles'.

२१२. क्तवत्वन्त कृदन्त (past active participle) धातु पर तवत् (क्तवतु) लगाने से बनता है। धातु के क्तान्त (past passive participles) पर वत् लगाने से भी यह कृदन्त बन जाता है। प्रायः इस रूप का क्रिया के स्थान पर प्रयोग होता है। जैसे, भू-भूतवत्। कृ—कृतवत्। गम्—गतवत्। श्रु—श्रुतवत्। नी—नीतवत्। वच्—उक्तवत्। प्रच्छ्—पृष्टवत्। स कृतवान्। ते कृतवन्तः। सा कृतवती।

४. क्वस्वन्त और कानजन्त 'Perfect Participles.'

२१३. क्वस्वन्त कृदन्त (Perfect Participles) बनाने के लिए परस्मैपदी धातुओं पर वस् (क्वसु) प्रत्यय लगता है। इससे पूर्व धातु को द्वित्व होता है। लिट् लकार के प्रथमपुरुष के बहुवचन के परस्मै० अंग (base) पर वस् लगाने से ये रूप बन जाते हैं। आकारान्त धातुओं और एकाच् अंगों में वस् से पूर्व इ (इट्) का आगम होता है। जैसे, श्रु—शुश्रु—शुश्रुवस्। विद्—विविद्वस्। अद्—आदिवस्।

(क) आत्मनेपदी धातुओं पर आन (कानच्) प्रत्यय लगता है। इस आन से पूर्व धातु का वही अंग रहता है जो लिट् लकार के प्र० ए०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के आत्मने॰ प्रत्यय (इरे) से पूर्व होता है। जैसे, भू—बभूविरे-बभूव—बभूवान। दा—ददान। कृ—चक्राण।

(ख) कुछ प्रसिद्ध धातुओं के क्वसु और कानच् प्रत्ययान्त कृदन्त (Perfect Participles) नीचे दिए जाते हैं :—

धातु	क्वसु	कानच्
नी 'lead'	निनीवस्	निन्यान
दा 'give'	ददिवस्	ददान
स्था 'stand'	तस्थिवस्	तस्थान
पच् 'cook'	पेचिवस्	पेचान
वच् 'speak'	ऊचिवस्	ऊचान
यज् 'sacrifice'	ईजिवस्	ईजान
कृ 'do'	चकृवस्	चक्राण
गम् 'go'	जग्मिवस्, जगन्वस्	जगन्वान
हन् 'kill'	जघ्निवस्, जघन्वस्	
स्तु 'praise'	तुष्टुवस्	तुष्टुवान
ब्रू 'speak'	ऊचिवस्	ऊचान
मुच् 'release'	मुमुच्वस्	मुमुचान
सिच् 'sprinkle'	सिषिच्वस्	सिषिचान
विद् 'know'	विविद्वस्, विविदिवस्	
दृश् 'see'	ददृशिवस्, ददृश्वस्	
विश् 'enter'	विविशिवस्, विविश्वस्	
सद् 'sit'	सेदिवस्	
वस् dwell	उषिवस्	

५. क्तान्त 'Past Passive Participles'.

२१४. क्तान्त कृदन्त (Past Passive Participles) धातु पर त (क्त) प्रत्यय लगाने से बनते हैं। सेट् वेट् आदि धातुओं में त से पूर्व इ (इट्) का आगम होता है। जैसे, जि-जित। श्रि—श्रित। नी—नीत पा 'protect'-पात। श्रु—श्रुत। भू—भूत। कृ—कृत। हृ—हृत। दृश्—दृष्ट। तृप्—तृप्त। नश्—नष्ट। शक्—शक्त। प्रच्छ्—पृष्ट। मृज्—मृष्ट। भ्रस्ज्—भृष्ट। बुध्—बुद्ध। लभ्—लब्ध। सिध—सिद्ध। पत्—पतित।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) त से पूर्व धातुओं के अन्तस्थों (semivowels) को सम्प्रसारण, आ को ई या इ, और अनुनासिक का लोप हो जाता है। जैसे, यज–इष्ट। वच्–उक्त। स्वप–सुप्त। ह्वे–हूत। व्यध्–विद्ध। वह्–ऊढ। पा 'drink'–पीत। स्था–स्थित। दरिद्रा–दरिद्रित। बन्ध्–बद्ध। दंश्–दष्ट। ध्वंस्–ध्वस्त। स्रंस्–स्रस्त।

(ख) अनुनासिकान्त अनिट् धातुओं तथा वन्, तन् आदि धातुओं के अनुनासिक का त से पूर्व लोप हो जाता है। जैसे, मन्–मत। हन्–हत। रम्–रत। गम्–गत। तन्–तत। क्षण्–क्षत। ऋण्=ऋत। नम्–नत। यम्–यत। वन्–वत। तृण–तृत।

(ग) कुछ अनुनासिकान्त धातुओं के अनुनासिक का लोप न होकर उनके उपधा–स्वर (penultimate vowel) को दीर्घ हो जाता है। जैसे, कम्–कान्त। दम्–दान्त। भ्रम्–भ्रान्त। क्रम्–क्रान्त। श्रम्–श्रान्त। शम्–शान्त।

परन्तु जन् और खन् के न् को आ आदेश होता है। जैसे, जात, खात।

(घ) सेट् धातु (या जिनके अन्त में संयोग या ऐसा व्यंजन हो जिसका त से संयोग कठिन हो) तथा सब प्रत्ययान्त (Derivative) धातुओं को त से पूर्व इ (=इत) का आगम होता है। चुरादि तथा णिजन्त (Caus) धातुओं के अय, यङन्त के य और यङ्लुङन्त (Frequentatives) के अ का लोप हो जाता है। जैसे, शङ्क–शङ्कित। कम्प–कम्पित। मुष्–मुषित। कथ्–कथित। प्रथ्–प्रथित। एध्–एधित। चुर्–चोरित। तड्–ताडित। आप् सन्नन्त—ईप्सित। कृ सन्नन्त–चिकीर्षित। बुध् णिजन्त–बोधित। कृ णिजन्त–कारित। बुध् यङन्त–बोबुधित। भू यङ्लुङन्त–बोभुवित।

(ङ) वद् 'speak' और वस् 'dwell' को इत से पूर्व सम्प्रसारण होता जाता है। ग्रह् को संप्रसारण होकर इत को ईत हो जाता है। जैसे, उदित, उषित, गृहीत।

२१५. धातु के द् और र् के पीछे त (क्त) को न हो जाता है। धातु के द् को भी न् हो जाता है। जैसे, भिद्–भिन्न। छिद्–छिन्न। पद्–पन्न। सद्–सन्न।

(क) आ, ई, ऊ, और ॠ (जिसे ईर् या ऊर् हो जाता है) अन्त-वाले धातुओं को त के स्थान में न लगता है। जैसे, म्ला–म्लान। हा 'go'–

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ह्लान । ज्या 'grow old'-जीन । ली लीन । डी-डीन । री 'move'-रीण । धू-धून । लू-लून । दू-दून । सू-सून । कॄ-कीर्ण । गॄ-गीर्ण । जॄ-जीर्ण । दॄ-दीर्ण । पॄ-पूर्ण । भॄ-भूर्ण । वॄ-वूर्ण । शॄ-शीर्ण । स्तॄ-स्तीर्ण ।

(ख) नुद् 'push', विद् 'find', घ्रा और ह्री को न विकल्प से लगता है । जैसे, नुन्न या नुत, विन्न या वित्त, घ्राण या घ्रात, ह्रीण या ह्रीत ।

(ग) जिन जकारान्त धातुओं के क्तान्त न में बनते हैं उनके ज् को ग् हो जाता है । जैसे, भुज्-भुग्न । रुज-रुग्ण । लज्-लग्न । विज्-विग्न । भञ्ज्-भग्न । मस्ज्-मग्न ।

(घ) नीचे लिखे धातुओं के क्तान्त (Past Passive Participles) अनियमित हैं :—

अद् 'eat'	जग्ध, अन्न	पूय 'purify'	पूत
कृश् 'be lean'	कृश	फल् 'expand'	फुल्ल
क्षै 'waste'	क्षाम	मा 'measure'	मित
गै 'sing'	गीत	मुर्च्छ् 'fade'	मूर्त्त मूर्छित
दो 'cut'	दित	ह्लाद् 'delight	ह्लन्न
धा 'put'	हित	धाव् 'cleanse'	धौत
पच् 'cook'	पक्व	शुष् 'dry'	शुष्क
पा 'drink'	पीत		

६. विधिकृदन्त 'Potential or Future Passive Participles'.

२१६. विधिकृदन्त (Potential Participles) तव्य, अनीय और य प्रत्यय लगाने से बनते हैं । ये कृदन्त कर्मवाच्य क्रिया की भाँति प्रयुक्त होते हैं । इन से भविष्यत्काल (futurity), विधि (command), योग्यता (fitness) आदि अर्थ पाए जाते हैं ।

२१७. तव्य प्रत्यय से पूर्व धातु को गुण होता है और प्रायः वे सभी विकार होते हैं जो लुट् (periphrastic future) के प्रत्यय ता से पूर्व होते हैं (देखो १४८–९) । जैसे, दा-दातव्य । धा-धातव्य । ज्ञा-ज्ञातव्य । पा-पातव्य । या-यातव्य । स्था-स्थातव्य । इ-एतव्य । चि-चेतव्य । जि-जेतव्य । श्रि-श्रयितव्य । क्री-क्रेतव्य । नी-नेतव्य (शी-शयितव्य । श्रु-श्रोतव्य । स्तु-स्तोतव्य । हु-होतव्य । ब्रू-वक्तव्य । भू-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भवितव्य। पू–पवितव्य। लू–लवितव्य। कृ–कर्तव्य। जागृ–जागरितव्य। मृ–मर्तव्य। वृ–वरितव्य, वरीतव्य। स्मृ–स्मर्तव्य। हृ–हर्तव्य। तृ–तरितव्य, तरीतव्य। ह्वे–ह्वातव्य। गै–गातव्य। त्रै–त्रातव्य। दो 'cut' दातव्य। ईक्ष–ईक्षितव्य। पच–पक्तव्य। सिच्–सेक्तव्य। प्रच्छ–प्रष्टव्य। भुज्–भोक्तव्य। मस्ज्–मङ्क्तव्य। यज्–यष्टव्य। युज्–योक्तव्य। सृज्–स्रष्टव्य। पठ्–पठितव्य। वृत्–वर्तितव्य। अद्–अत्तव्य। छिद्–छेत्तव्य। भिद्–भेत्तव्य। मुद्–मोदितव्य। रुद्–रोदितव्य। वद्–वदितव्य। विद् 'know'–वेदितव्य। विद् 'be' वेत्तव्य। बन्ध्–बन्द्धव्य। युध्–योद्धव्य। रुध रोद्धव्य। मन्–मन्तव्य। हन्–हन्तव्य। आप्–आप्तव्य। क्षिप्–क्षेप्तव्य। स्वप् स्वप्तव्य। रभ्–रब्धव्य। लभ्-लब्धव्य। क्रम्–क्रमितव्य गम्–गन्तव्य। नम्–नन्तव्य। भ्रम्–भ्रमितव्य। शम्-शमितव्य। श्रम्–श्रमितव्य। यम्–यन्तव्य। रम्–रन्तव्य। चुर–चोरयितव्य। भक्ष–भक्षयितव्य। तड्–ताडयितव्य। दिव–देवितव्य। सेव्-सेवितव्य। दंश दंष्टव्य। दृश्–द्रष्टव्य। नश्–नष्टव्य, नशितव्य। इष्–एषितव्य। भाष्–भाषितव्य। मुष्–मोषितव्य। शुष्–शोष्टव्य। अस् 'be'–भवितव्य। आस्–आसितव्य। वस्-वस्तव्य। ग्रह्–ग्रहीतव्य। रुह्–रोढव्य। लिह्–लेढव्य। वह् वोढव्य। सह्–सोढव्य, सहितव्य।

२१८. अनीय प्रत्यय से पूर्व धातु को गुण होता है। पा–पानीय, दा–दानीय। चि–चयनीय। जि–जयनीय। श्रु–श्रवणीय। भू–भवनीय। कृ–करणीय। गम्–गमनीय रम्–रमणीय। ग्रह्-ग्रहणीय। रभ्–रम्भणीय। लभ्–लम्भनीय। मुच्–मोचनीय

(क) अनीय प्रत्यय से पूर्व णिजन्त और चुरादि धातुओं के अय का लोप हो जाता है। जैसे, भू णिजन्त-भावय–भावनीय। बुध् णिजन्त-बोधय-बोधनीय। चुर–चोरय-चोरणीय। कथ् कथनीय। तड्–ताडनीय।

२१९. य प्रत्यय से पूर्व धातुओं में नीचे लिखे विकार होते हैं :—

(क) अन्त्य आ को (ए, ऐ, ओ को भी) ए हो जाता है। जैसे, दा–देय। ज्ञा–ज्ञेय। हा–हेय। पा–पेय। गै–गेय सो–सेय।

(ख) अन्त्य इ और ई को गुण, उ और ऊ को गुण या वृद्धि,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और ऋ और ॠ को वृद्धि आदेश होता है। जैसे, जि–जेय। चि–चेय। नी–नेय। श्रु–श्रव्य, श्राव्य। भू–भव्य, भाव्य। कृ–कार्य। स्मृ–स्मार्य।

(ग) उपधा (Penultimate) के इ और उ को गुण आदेश होता है। ऋ तथा दीर्घ स्वरों में कोई विकार नहीं होता। जैसे, भिद्–भेद्य। छिद्–छेद्य। बुध्–बोध्य। दृश्–दृश्य। पूज्–पूज्य।

(घ) उपधा के अ को वृद्धि आदेश होता है यदि धातु के अन्त में ओष्ठ्य वर्ण न हो। जैसे, वच्–वाच्य। वद्–वाद्य। ग्रह्–ग्राह्य। परन्तु गम्–गम्य। लभ्–लभ्य। परन्तु, चम्–चाम्य।

(ङ) धातु के अन्त्य (final) च् या ज् को कवर्ग हो जाता है। जैसे, सिच्–सेक्य। पच्–पाक्य। युज्–योग्य। मृज्–मार्ग्य। परन्तु वच्, यज्, त्यज् और प्र-नि-युज् अपवाद हैं। जैसे, वाच्य, याज्य, त्याज्य, नियोज्य, इत्यादि।

अव्यय कृदन्त 'Indeclinable Participles'.

७. क्त्वान्त 'Gerunds in त्वा'.

२२०. क्त्वान्त (Gerunds or indeclinable part participles) धातु पर त्वा (क्त्वा) लगाने से बनते हैं। क्तान्त (past passive pt.) के त के स्थान पर क्त्वा लगाने से ये कृदन्त बन जाते हैं। जैसे, ज्ञा–ज्ञात–ज्ञात्वा। दा–दत्त–दत्त्वा। वच्–उक्त उक्त्वा। कृ–कृत्वा। क्री–क्रीत्वा। श्रु–श्रुत्वा। भिद्–भित्त्वा। रुध्–रुद्ध्वा। रुद्–रुदित्वा। ग्रह्–गृहीत्वा। स्वप्–सुप्त्वा। यज्–इष्ट्वा। वस–उषित्वा। वह्–ऊढ्वा। दंश्–दष्ट्वा। बन्ध–बद्ध्वा। मन्–मत्त्वा। गम्–गत्त्वा। पच–पक्त्वा। त्यज्–त्यक्त्वा। लभ–लब्ध्वा। दृश्–दृष्ट्वा। सह्–सोढ्वा, सहित्वा।

(क) सेट धातुओं को क्त्वा से पूर्व गुण आदेश होता है। जैसे, शी-शे-इ–त्वा–शयित्वा। दिव्-देवित्वा। वृत्-वर्तित्वा। रुच्–रोचित्वा, रुचित्वा। मुद्–मोदित्वा, मुदित्वा, इत्यादि

(ख) चुरादि तथा णिजन्त धातुओं का अय त्वा से पूर्व बना रहता है। जैसे, चुर्–चोरित चोरयित्वा। कथ–कथयित्वा तड्-ताडयित्वा। कृ णिजन्त—कारयित्वा। भू णिजन्त—भावयित्वा।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८. ल्यबन्त कृदन्त 'Gerunds in य'

२२१. यदि धातु का उपसर्ग से समास हो तो समस्त धातु पर त्वा के स्थान में य (ल्यप्) प्रत्यय लगता है। जैसे, आ-दा—आदाय। वि-नी—विनीय। प्र-भू—प्रभूय। सं-पृ—संपूर्य। प्र-वच्—प्रोच्य। वि-ग्रह्—विगृह्य। आ-आप्—आआप्य।

(क) यदि धातु का स्वर ह्रस्व हो तो चुरादि तथा णिजन्त धातुओं के अय का य से पूर्व लोप नहीं होता। केवल अय के अन्त्य अ का लोप होता है (अय)। जैसे, प्रचुर—प्रोचोर्य्य। वि-रच्—विरचय्य। प्र-क्षल्—प्रक्षाल्य। सं-गम् णिजन्त—संगमय्य। परन्तु विचारय-विचार्य।

(ख) समस्त धातु के अन्त में यदि ह्रस्व स्वर हो तो य (ल्यप्) से पूर्व त् का आगम होता है। जैसे, वि-जि—विजित्य। अधि-इ—अधीत्य। उत्-प्लु—उत्प्लुत्य। प्रति-श्रु—प्रतिश्रुत्य। प्र-स्तु—प्रस्तुत्य। सं-कृ—संस्कृत्य। वि-हृ—विहृत्य। वि-स्मृ—विस्मृत्य।

(ग) मान्त धातुओं को विकल्प से और नान्त धातुओं को नित्य त् का आगम होता है। क्तान्त में भी इनके अनुनासिक का लोप विकल्प से होता है। जैसे, आगम्—आगत्य या आगम्य। प्र-नम्—प्रणत्य या प्रणम्य। नि-यम्—नियत्य या नियम्य। वि-रम्—विरत्य या विरम्य। अव-मन्—अवमत्य। नि-हन्—निहत्य वि-तन् वितत्य। परन्तु आक्रम्—आक्राम्य। नि-खन्—निखाय। प्र-जन्—प्रजाय।

९. णमुलन्त कृदन्त 'Gerunds in 'अम्'.

२२२. त्वा (क्त्वा) के स्थान पर अम् (णमुल्) प्रत्यय लगाकर भी अव्यय कृदन्त (gerunds) बनते हैं। अम् प्रत्यय से पूर्व धातु का वही अंग रहता है जो कर्मवाच्य में लुङ् (Aorist) के प्रथम पुरुष के एक बचन के प्रत्यय इ से पूर्व होता है। जैसे, श्रु—अश्रावि—श्रावम्। भू-भावम्। ग्रह—ग्राहम्। भिद्—भेदम्। गम्—गमम्। पा—पायम्। स्मृ-स्मारम्। कृ—कारम्। भुज—भोजम्। विद्—वेदम्। पिष्—पेषम्। बन्ध—बन्धम्।

१० तुमुन्नन्त 'Infinitive'.

२२३. तुमुन्नन्त (infinitive) धातु पर तुम् (तुमुन्) प्रत्यय लगाने से बनता है। तुम् से पूर्व धातु में वही विकार होते हैं जो लुट् के प्रत्यय ता से पूर्व होते हैं (देखो १८०)। विधिकृदन्त के प्रत्यय तव्य से पूर्व भी

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यही विकार होते हैं (देखो २१७)। जैसे, ज्ञा–ज्ञातुम्। स्था–स्थातुम्। इ एतुम्। जि–जेतुम्। चि–चेतुम्। श्रि–श्रयितुम्। क्री०क्रेतुम्। नी नेतुम्। शीं–शयितुम्। श्रु–श्रोतुम्। भू–भवितुम्। पू–पवितुम्। कृ–कर्तुम्। मृ–मर्तुम। स्मृ–स्मर्तुम्। वृ–वरितुम्, वरीतुम्। गै–गातुम्। ईक्ष–ईक्षितुम्। पच–पक्तुम्। मुच्–मोक्तुम्। रुच–रोचितुम्। सिच्–सेक्तुम्। प्रच्छ्–प्रष्टुम्। मस्ज्–मङ्क्तुम्। यज्–यष्टुम्। पठ्–पठितुम्। अद्–अत्तुम्। भिद्–भेत्तुम्। रुद्–रोदितुम्। युध्–योद्धुम्। तन्–तनितुम्। मन्–मन्तुम्। हन्–हन्तुम्। लभ्–लब्धुम्। गम्–गन्तुम्। क्षम्–क्षमितुम्। नम्–नन्तुम्। रम्–रन्तुम्। दृश्–द्रष्टुम्। इष्–एष्टुम्, एषितुम्। वस्–वस्तुम्। ग्रह–ग्रहीतुम्। वह्–वोढुम्। सह्–सोढुम्, सहितुम्। चुर्–चोरयितुम्। कथ्–कथयितुम्। तड्–ताडयितुम्।

२२५. कुछ प्रसिद्ध धातुओं के क्तान्त (past passive participles) क्त्वान्त (indeclinable gerunds) और तुमुन्नन्त (infinitives) नीचे दिए जाते हैं :—

Roots.	P. P. Pcle.	Gerund.	Infinitive.
अद् 'eat'	जग्ध अन्न	जग्ध्वा	अत्तुम्
अश् 'eat'	अशित	अशित्वा	अशितुम्
आप् 'obtain'	आप्त	आप्त्वा, ०आप्य	आप्तुम्
आस् 'sit'	आसित } आसीन }	आसित्वा	आसितुम्
इ 'go'	इत	इत्वा ०इत्य	एतुम्
अधि-इ 'study'	अधीत	अधीत्य	अध्येतुम्
इष् 'wish'	इष्ट	इष्ट्वा	एष्टुम्
कृ 'do'	कृत	कृत्वा ०कृत्य	कर्तुम्
कथ् 'tell'	कथित	कथयित्वा ०कथय्य	कथयितुम्
क्रम् 'stride'	क्रान्त	क्रान्त्वा, ०क्रम्य	क्रन्तुम् क्रमितुं
क्री 'buy'	क्रीत	क्रीत्वा, ०क्रीय	क्रेतुम्
क्षिप् 'throw'	क्षिप्त	क्षिप्त्वा, ०क्षिप्य	क्षेप्तुम्

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षुभ् 'agitate'	क्षुब्ध क्षुभित	क्षुभित्वा ०क्षुभ्य	क्षोभितुं
गाह् 'plunge'	गाढ, गाहित	गाढ्वा, ०गाह्य	गाढुं, गाहितुम्
गुह 'hide'	गूढ	गूढ्वा, ० गूह्य	गूहितुम्
ग्रन्थ् 'tie'	ग्रथित	ग्रथित्वा, ०ग्रथ्य,	०ग्रथितुम्
ग्रह 'take'	गृहीत	गृहीत्वा, ०गृह्य	ग्रहीतुम्
चक्ष् 'speak'	चष्ट	चष्ट्वा, ०चक्ष्य	चष्टुम्
चि 'collect'	चित	चित्वा, ०चित्य	चेतुम्
चुर् 'steal'	चोरित	चोरयित्वा, ०चोरय्य	चोरयितुम्
छिद् 'cut'	छिन्न	छित्वा, ०छिद्य	छेत्तुम्
जन् 'be bron'	जात	जनित्वा, ०जन्य	जनितुम्
ज्ञा 'know'	ज्ञात	ज्ञात्वा ०ज्ञाय	ज्ञातुम्
त्यज् 'abandon'	त्यक्त	त्यक्त्वा, ०त्यज्य	त्यक्तुम्
दंश् 'bite'	दष्ट	दष्ट्वा, ०दंश्य	दंष्टुम्
दह् 'burn'	दग्ध	दग्ध्वा ०दह्य	दग्धुम्
दा 'give'	दत्त	दत्त्वा ०दाय	दातुम्
दृश् 'see'	दृष्ट	दृष्ट्वा, ०दृश्य	द्रष्टुम्
नम् 'bend'	नत	नत्वा, ०नम्य	नन्तुम्
नी 'lead'	नीत	नीत्वा, ०नीय	नेतुम्
पच् 'cook'	पक्व	पक्त्या	पक्तुम्
पद् 'go'	पन्न	पत्त्वा, ०पद्य	पत्तुम्
पा 'drink'	पीत	पीत्वा, ०पाय	पातुम्
प्रच्छ् 'ask'	पृष्ट	पृष्ट्वा, ०पृच्छ्य	प्रष्टुम्
बन्ध् 'bind'	बद्ध	बद्ध्वा, ०बध्य	बंद्धुम्
बुध् 'know'	बुद्ध	बुद्ध्वा, ०बुध्य	बोद्धुम्
भिद् 'break'	भिन्न	भित्त्वा, भिद्य	भेत्तुम्
मन् 'think'	मत	मत्वा, ०मन्य	मन्तुम्
मुच् 'release'	मुक्त	मुक्त्वा, ०मुच्य	मोक्तुम्

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृज् 'wipe'	मृष्ट	मृष्ट्वा, ०मार्ज्य ०मृज्य	मार्ष्टुम्, मार्जितुम्
यज् 'sacrifice'	इष्ट	इष्ट्वा	यष्टुम्
युज् 'join'	युक्त	युक्त्वा, ०युज्य	योक्तुम्
रच् 'compose'	रचित	रचयित्वा ०रच्य	रचयितुम्
रुद् 'weap'	रुदित	रुदित्वा, ०रुद्य	रोदितुम्
रुध् 'obstruct'	रुद्ध	रुध्वा ०रुध्य	रोद्धम्
रुह् 'grow'	रूढ	रूढ्वा, ०रुह्य	रोढुम्
वच् 'speak'	उक्त	उक्त्वा, ०उच्य	वक्तुम्
वस् 'dwell'	उषित	उषित्वा, ०उष्य	वस्तुम्
वह् 'carry'	ऊढ	ऊढ्वा, ०उह्य	वोढुम्
विद् 'find'	वित्त, विन्न	वित्त्वा, ०विद्य	वेत्तुम्
,, 'know'	विदित	विदित्वा	वेदितुम्
शक् 'be able'	शक्त	शक्त्वा ०शक्य	शक्तुम्
शास् 'order'	शासित शिष्ट	शासित्वा शिष्ट्वा	शासितुं
शी 'sleep'	शयित	शयित्वा	शयितुम्
श्रु 'hear'	श्रुत	श्रुत्वा, ०श्रुत्य	श्रोतुम्
सद् 'sit'	सन्न	सत्त्वा ०सद्य	सत्तुम्
सह् 'bear'	सोढ	सोढ्वा, सहित्वा ०सह्य	सोढुम्
सिच 'sprinkle'	सिक्त	सिक्त्वा ०सिच्य	सेक्तुम्
स्था 'stand'	स्थित	स्थित्वा ०स्थाय	स्थातुम्
सू 'produce'	सूत, सून	सूत्त्वा ०सूय	सवितुम्
स्पृश् 'touch'	स्पृष्ट	स्पृष्ट्वा, ०स्पृश्य	स्प्रष्टुम्
स्वप् 'sleep'	सुप्त	सुप्त्वा	स्वप्तुम्
हन् 'kill'	हत	हत्वा, ०हत्य	हन्तुम्
हा 'abandon, go'	हीन, हान	हित्वा, ०हाय	हातुम्
हिंस 'kill'	हिंसित	हिंसित्वा ०हिंस्य	हिंसितुम्

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.
—:o:—

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभ्यास ३०

१. शत्रन्त और स्यत्रन्त कृदन्त कैसे बनते हैं ?

२. नीचे लिखे धातुओं से शतृ या शानच् प्रत्यय लगा कर कृदन्त बनाओ:—

भू, गम, दृश्, मुच्, नम्, अर्च्, पच्, यज्, वद्, वस्, वह्, भाष्, सेव, स्मि, सह्, नी, श्रि, तुष्, नश्, पद्, सृज्, स्था, पा, स्तु, जन्, विद्, शम्, प्रच्छ्, रच्, कथ्, ज्ञा, ग्रह्, श्रु, आप्, कृ, भुज्, हिंस्, अद्, अधि इ, शी, दा, धा, इत्यादि।

३. विकारी और अविकारी कृदन्तों का विभाग करो, उदाहरण भी दो।

४. नीचे लिखे वाक्यों में कृदन्तों (participles) के रूप शुद्ध करो:—

राजा यजस्यमानो ब्राह्मणं पुरोदधीत। असुरैः सह योधिष्यमाण इन्द्रो वरुणस्य सहाय्यं याक्तवान्। स वरुणस्य सहाय्यं लब्ध्य असुरैः सह युधवान्। व्यर्थं मे जन्म न मया कारितं करितव्यं, न भुजितं भुजितव्यं न द्रष्टं दृष्टव्यं न श्रोतं श्रुतव्यम्। राजानं दृश्य स भयितः। कथां कथिष्ययन्तः ते गुरुमभिवदन्तः। राजा निषीद्वर्सी राज्ञीं द्रष्टवान्। तेन विद्वांसे ब्राह्मणाय धनं दित्तम्। सोऽत्र आगत्वा भोजनम् आकृत्वा स्वपति। वेदमधीतुं यत्नं करितवान्। मुखं प्रक्षालितुं स जलं याचतवान्

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवमोऽध्यायः ।

शब्द-व्युत्पत्ति 'Derivation of words'.

२२५. धातुओं पर प्रत्यय लगा कर प्रातिपादिक बनाये जाते हैं। इन प्रत्ययों के दो भेद हैं। (१) कृत् प्रत्ययाः और (२) तद्धित प्रत्ययाः। जो प्रत्यय सीधे धातुओं पर लग कर प्रातिपदिक बनाते हैं उन्हें कृत् प्रत्यय (primary suffixes) और जो अन्य प्रातिपदिकों पर लगते हैं उन्हें तद्धित (Secondary) प्रत्यय कहते हैं।

१. कृत् प्रत्ययाः 'Primary suffixes'.

२२६. आठवें अध्याय में कृदन्तों (Participles) के विषय में कुछ कृत् प्रत्ययों का विधान हो चुका है। कुछ और प्रसिद्ध कृत् प्रत्यय नीचे दिए जाते हैं:—

अ (अच्)—१. कर्ता (agent) के अर्थ में पच् आदि धातुओं पर लगता है। जैसे, पच्-पचः (पचतीति) 'पकाने वाला'। चुर्-चोरः 'चुरानेवाला'। भू-भवः। नद्-नदः। चल्-चलः। सृप्-सर्पः। दिव्-देवः। चर्-चरः। धृ-धरः।

२. भाववाचक संज्ञा के अर्थ में। जैसे, जि-जयः 'जीत'। चि-चयः। युज्-योगः। कम्-कामः। भी-भयम्। वृष्-वर्षः 'shower'।

३. हृ, ग्रह्, शी आदि धातुओं पर समास में। जैसे अंशहरः (अंशं हरति), पुष्पहरः (पुष्पाणि हर्तुं शीलमस्य), शक्तिग्रहः। (शक्तिं गृह्णाति) हृच्छयः, उत्तानशयः।

अ (अप्)—भाववाचक संज्ञा या क्रिया के स्थान (place) या साधन (instrument) के अर्थ में उ, ऊ, ऋ, ॠ, अन्त वाले धातुओं पर। जैसे, स्तु-स्तवः 'स्तुति'। पू-पवः। भू-भवः। गृ-गरः। 'विष' दृ-दरः 'भय'। वृ-वरः। वि-स्तृ-विस्तरः।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अ (अण)—कर्म के साथ समस्त धातुओं पर। जैसे, कुम्भकारः। भारहारः।

अ (क)—कर्ता (agent) के अर्थ में। १. इ, उ, ऋ उपधा-वाले धातुओं तथा प्री और कृ पर। जैसे, लिख्-लिखः। क्षिप्-क्षिपः। बुध्-बुधः। प्री-प्रियः। कृ-किरः।

२. समास में आकारान्त धातुओं पर, आ का लोप हो जाता है। जैसे, दा-जलदः (जलं ददाति), अन्नदः, करदः, वारिदः, प्रदः। ज्ञा-धर्मज्ञः, (धर्मं जानाति), रसज्ञः, सर्वज्ञः, विज्ञः, प्रज्ञः, अभिज्ञः, अज्ञः। पा-नृपः (नॄन् पाति) मधुपः, द्विपः। त्रै (त्रा)—आतपत्रम (आतपात् त्रायते), गोत्रः,। स्था-गृहस्थः (गृहे तिष्ठति), मध्यस्थः, सुस्थः, संस्थः, निष्ठः।

अ (घञ्)—अनेक अर्थों में हलन्त धातुओं पर लगता है। इसके पूर्व धातु के अन्त्य च् या ज् को कवर्ग हो जाता है। जैसे, पच्-पाकः। त्यज्-त्यागः। सृज्-सर्गः। रुज्-रोगः। भज्-भागः। कम्-कामः। सृ-सारः। हृ-हारः। पद-पादः। भू-भावः। वश्-वेशः 'house'। स्पृश्-स्पर्शः।

अ (ड)—कर्ता अर्थ में। १. अन्त, अत्यन्त, अध्वन्, दूर, पार, सर्व, अनन्त, सर्वत्र, पन्न, उरस्, विहायस् आदि पूर्वक गम् धातु पर। धातु के अ और म् का लोप हो जाता है। जैसे, अन्तगः (अन्तं गच्छति), अध्वगः, दूरगः, पारगः, सर्वगः पन्नगः, उरोगः, विहायगः। २. धन, क्लेश, शोक, तमस् पूर्वक अप-हन् धातु पर। जैसे, धनापहः (धनमपहन्ति), क्लेशापहः, शोकापहः, तमोऽपहः। ३. जन धातु पर। पङ्कजम् (पंकात् जायते), आत्मजः, अण्डजः, स्वेदजः, अग्रजः, जलजम्, अनुजः, द्विजः, सहजः, मनसिजः, सरसिजम्।

अक—कर्ता अर्थ में। धातु की उपधा को गुण और उपधा के अ और अन्त्य स्वर को वृद्धि आदेश होता है। जैसे, कृ—कारकः। नी—नायकः। पू—पावकः पच्—पाचकः। निन्द्—निन्दकः। हिंस—हिंसकः। दृश—दर्शकः। नृत्—नर्तकः।

अन—भाववाचक नपुं० संज्ञा (neut. action nouns)

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनाने में। जैसे, हस-हसनम्। भुज्-भोजनम्। पा-पानम्। दृश्-दर्शनम्। वह्-वाहनम्। कृ-कारणम्, करणम्। श्रु-श्रवणम्। शी-शयनम्। साध्-साधनम्। भज्-भजनम्। मन-मननम्। सह-सहनम्।

अस् (इष् और उस् भी)—भाव में नपुंसक संज्ञा (action nouns) में। जैसे, वच्-वचस्। मन्-मनस्। (ज्योतिष्, धनुष्)।

आ—सन्नन्त (desid.) धातुओं से स्त्री० भाववाचक संज्ञा में। ज्ञा-जिज्ञासा। पा-पिपासा। भुज—बुभुक्षा। श्रु-शुश्रूषा। जि-जिगीषा। कृ-चिकीर्षा। ब्रू-विवक्षा।

इ—दा, धा आदि धातुओं पर। जैसे जलधिः, शरधिः 'quiver'। ऐसे ही शुचि, पाणि, अस्थि, दधि, इत्यादि।

इन् (णिनि)—कर्तृ (agent) या शील (habit) वाचक। स्था-स्थायिन् 'ठहरने वाला'। ग्रह्-ग्राहिन् (गृह्णातीति)। अप-राध्-अपराधिन्। परि-भू-परिभाविन्। उष्णभोजिन् (उष्णं भोक्तुं शीलमस्य)। ब्रह्मवादिन्, सोमयाजिन्।

इन् (घिनुण्)—कर्तृ-वाचक (agent)। जैसे, त्यज्-त्यागिन् 'abandoner'। रञ्ज-रागिन् 'lover'। भज्-भागिन् 'sharer'। दुष्-दोषिन् 'blamer'। द्विष्-द्वेषिन् 'hater'। द्रुह्-द्रोहिन्। युज्-योगिन्। वद्-वादिन्। प्र-वस्-प्रवासिन्। अप-चर्-अपचारिन्। अनु-रुध्-अनुरोधिन्। शम्-शमिन्। प्र-मद्-प्रमादिन्।

उ—सन्नन्त धातुओं से कर्तृवाचक। जैसे, ज्ञा-जिज्ञासुः। पा-पिपासुः। भुज-बुभुक्षुः। जि-जिगीषुः। कृ-चकीर्षुः। ब्रू-विवक्षुः। पठ-पिपठिषुः। गम्-जिगमिषुः। ऐसे ही—भिक्ष्-भिक्षुः। इष्-इच्छुः। तथा विभुः, प्रभुः, इत्यादि।

उक (उकञ्)—कर्तृवाचक। जैसे भू-भावुकः 'happening'। कम्-कामुकः 'amorous'। हन्-घातुकः 'killing'। लष्-लाषुकः 'greedy'। पत्-पातुकः। 'falling'।

ति (क्तिन्)—स्त्री० भाववाचक। जैसे, गम्-गतिः। कृ-कृतिः। स्तु-स्तुतिः। स्था-स्थितिः। पा-पीतिः। पच्-पक्तिः। यज्-इष्टिः। श्रु-श्रुतिः। रम्-रतिः। नम्-नतिः। गै-गीतिः।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृ (तृच्)—कर्तृवाचक पुं०(agent)। जैसे, कृ–कर्तृ। हृ–हर्तृ। नी–नेतृ। धा–धातृ। अधि-इ–अध्येतृ। पू–पवितृ। गम्–गन्तृ। पच–पक्तृ। सह्–सोढृ।

त्र् (ष्ट्रन्)— क्रिया के साधन (instrument of action) के अर्थ में कुछ धातुओं पर लगता है। जैसे, नी–नेत्रम् 'that guides, eye'। शास्–शास्त्रम्। स्तु–स्तोत्रम्। पत्–पत्रम्। पा–पात्रम्। मन्–मन्त्रम्। सिच्–सेक्त्रम् 'watering pot'। शस्–शस्त्रम्। युज्–योक्त्रम्।

न (नङ्)—यज्, याच्, यत, प्रच्छ, रक्ष् आदि धातुओं से संज्ञा बनाने में। जैसे, यज्ञः, याच्ञा, यत्नः, प्रश्नः, रक्ष्णः इत्यादि।

र—विशेषण-वाचक (adj.)। जैसे, नम्–नम्र। कम्–कम्र। कम्प्–कम्प्र। स्मि–स्मेर। हिंस्–हिंस्र।

वर (करप्)—विशेषणवाचक (adj.) । जैसे, जि–जित्वर। नश्–नश्वर। गम्–गत्वर।

२. तद्धित-प्रत्ययाः 'Secondary suffixes'.

२२७. तद्धित प्रत्यय (secondary suffixes') अनेक कार्यों में प्रयुक्त होते हैं। ये कृत् प्रत्ययों द्वारा बने प्रातिपदिकों पर लगाए जाते हैं। इन से पूर्व प्रातिपदिकों में नीचे लिखे विकार होते हैं :—

(क) अ, य, इक, ईन आदि तद्धित प्रत्ययों से पूर्व प्रातिपदिक के प्रथम स्वर को वृद्धि आदेश होता है। जैसे, पुरुष+अ–पौरुष। वर्षा+इक–वार्षिक। इत्यादि।

(ख) अजादि या य–आदि प्रत्ययों से पूर्व प्रातिपदिक के अन्त्य (१) अ, आ, इ, ई का लोप और (२) उ और ऊ को गुण आदेश होता है। जैसे, बल+इन–बलिन्। मनु+अ–मानव। ग्रीवा+य–ग्रैव्य। नौ+य–नाव्य।

(ग) समस्त प्रातिपदिकों में प्रायः उत्तर–पद के प्रथम स्वर को वृद्धि आदेश होता है, परन्तु कभी दोनों पदों में ही वृद्धि आदेश होता है। जैसे पूर्ववर्ष+इक–पूर्ववार्षिक। परन्तु सुभग+य–सौभाग्य। सुहृद्+अ–सौहार्द।

(घ) यदि किसी प्रातिपदिक के प्रथम स्वर से पूर्व उपसर्ग का य् या

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व् हो तो पहले इस य् या व् को इय् या उव् हो जाता है और फिर समस्त प्रातिपदिक के प्रथम स्वर को वृद्धि आदेश होता है। जैसे, व्याकरण+अ=(वि+आकरण)+अ=(विय्+आकरण)+अ=वियाकरण+अ=वैयाकरण। स्वर+अ=(सु+अर)+अ=(सुव्+अर)+अ=सुवर+अ=सौवर।

(ङ) हलादि प्रत्ययों से पूर्व प्रातिपदिक के अन्त्य न् का लोप होता है। अजादि प्रत्ययों से पूर्व अन्त्य न् और उसका पूर्ववर्ती स्वर प्रायः दोनों का लोप हो जाता है। जैसे, राजन्+क-राजकम्। आत्मन्+ईय=आत्म्+ईय=आत्मीय। परन्तु राजन्+य=राजन्य।

(क) अपत्यार्थ तद्धित 'Suffixes denoting Descendant'.

अ—१. अपत्यार्थ (son of)। जैसे, वसुदेव+अ=वासुदेवः। (वसुदेवस्य अपत्यं पुमान्)। पर्वत+अ(+ई स्त्री०)=पार्वती (पर्वतस्यापत्यं स्त्री)। २. गोत्रापत्यार्थ (descendant of)। उत्स+अ=औत्सः (उत्सस्य गोत्रापत्यं पुमान्)। वशिष्ठ+अ=वाशिष्ठः। विश्वामित्र—वैश्वामित्रः। रघु—राघवः। इला—ऐलः। शिव—शैवः।

इ—son of:—मरुत—मारुतिः। दक्ष—दाक्षिः। असुर—आसुरिः।

एय—son of :—गङ्गा—गाङ्गेयः। (गङ्गायाः अपत्यं पुमान्)। कुन्ती—कौन्तेयः। अत्रि—आत्रेयः। मार्कण्डेयः। कार्त्तिकेयः।

(ख) साधारण तद्धित प्रत्ययाः 'Miscellaneous Suffixes'.

अ—नीचे लिखे अर्थों में लगता है :—(१) संबन्ध (belonging to)। जैसे, देव—दैवः (देवस्य अयम्)। शर्करा—शार्करम् (शर्करायाः इदम्)। ऊर्णा—और्णम्। ग्रीष्म—ग्रैष्मः। निशा—नैशः। संवत्सर—सांवत्सरः। (२) विकार (made of)। जैसे, देवदारु—दैवदारवः (देवदारोर्विकारः)। (३) स्वामी (lord of)। जैसे, पृथिवी—पार्थिवः (पृथिव्याः ईश्वरः)। पञ्चाल—पाञ्चालः (पञ्चालानां स्वामी)। इक्ष्वाकु—ऐक्ष्वाकवः। (४) समूह (Collection of)। जैसे, काक—काकम् (काकानां समूहः)। बक—बाकम् 'a flight of cranes'। मयूर—मायूरम्। कपोत—कापोतम्। भिक्षा—भैक्षम् (भिक्षाणां समूहः)। गर्भिणी—गार्भिणम्। (५) अध्ययन (Studying)। जैसे, व्याकरण—वैयाकरणः (व्याकरणम् अधीते वेद वा)। (६) भाववाचक संज्ञा (abstract

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

nouns) जैसे, कुमार–कौमारः (कुमारस्य भावः)। युवन्–यौवनम्। सुहृद्–सौहार्दम्। मृदु–मार्दवम्। पृथु–पार्थवम्।

इक—अनेक अर्थों में :—(१) समय (duration), जैसे मास–मासिकं (मासेन दीयते—वेतनम्)। वर्ष–वार्षिकम्। संवत्सर–सांवत्सरिकम्। (२) प्रश्न (asking)। जैसे, सुस्नात–सौस्नातिकः (सुस्नातं पृच्छतीति)। सुखशयन–सौखशायनिकः। सौखसुप्तिकः। (३) प्रहरण (using an instrument) जैसे, असि–आसिकः (असिः प्रहरणमस्य)। धनुष्–धानुष्कः 'archer'। (४) संस्कार (mixed with)। जैसे, दधि–दाधिकम् (दध्ना संस्कृतम्)। मरीचि–मारीचिकम्। (५) आचरण, जैसे, धर्म–धार्मिकः (धर्मं चरतीति)। हस्तिन्–हास्तिकः (हस्तिना चरति)। शकट–शाकटिकः। नौ–नाविकः। (६) जीविका (living upon)। जैसे, वेतन–वैतनिकः (वेतनेन जीवति)। वाहन–वाहनिकः। उपदेश–औपदेशिकः। (७) रक्त (dyed with)। जैसे, लाक्षा–लाक्षिकम् (लाक्षया रक्तम्)। रोचना–रौचनिकः। शकल–शाकलिकः। (spotted)। कर्दम–कार्दमिकः। (८) अध्येता (one who studies)। वेद–वैदिकः (वेदमधीते) न्याय–नैयायिकः। वृत्ति–वार्तिकः (one who studies commentary)। इतिहास–ऐतिहासिकः। पुराण–पौराणिकः (९) अस्ति; जैसे, अस्ति–आस्तिकः (अस्ति बुद्धिरस्य)। नास्ति–नास्तिकः।

इमन् (इमनिच्)—भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए पृथु[1] आदि शब्दों पर लगता है। जैसे, पृथु–प्रथिमन् (greatness), मृदु–म्रदिमन् (softness) महत्–महिमन्। तनु–तनिमन् (thinness), पटु–पटिमन् (sharpness), लघु–लघिमन्। बहु–भूमन्। गुरु–गरिमन्। बाल–बालिमन्। वत्स–वत्सिमन्। ह्रस्व–ह्रसिमन्। दीर्घ–द्राघिमन्। क्षुद्र–क्षोदिमन्। दृढ–द्रढिमन्। अणु–अणिमन्। कृश–क्रशिमन्। उष्ण–उष्णिमन्। प्रिय–प्रेमन्।

---

१. पृथ्वादिगण—पृथु, मृदु, महत्, तनु, पटु, लघु, बहु, साधु, आशु, उरु, गुरु, बहुल, खण्ड, दण्ड, चण्ड, अकिंचन, बाल, वत्स, होड, पाक, मन्द, स्वादु, ह्रस्व, दीर्घ, प्रिय, वृष, ऋजु, क्षिप्र, क्षुद्र, अणु, दृढ, वृढ, परिवृढ, कृश, भृश, वक्र, शीत, उष्ण, जड, बधिर, मधुर, पण्डित, मूर्ख, मूक, स्थिर।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईन—विशेषण बनाने में। जैसे, ग्राम-ग्रामीण। नव-नवीन। कुल-कुलीन। प्राच्-प्राचीन। आत्मन्-आत्मीन (आत्मने हितः)। साप्तपदीन (सप्तभिः पदैः अवाप्यते)।

ईय—विशेषण बनाने में जैसे, पर्वत-पर्वतीय। तद्-तदीय। भवत्-भवदीय। पाणिनि-पाणिनीय। माला-मालीय। शाला-शालीय। (शालायाः अयम्)। स्वसृ-स्वस्रीयः (sister's son)। भ्रातृ-भ्रात्रीय (fraternal)। स्व-स्वकीय। परकीय। राजकीय। (यहां ईय से पूर्व क का आगम हुआ है)।

एय—विशेषण बनाने में। जैसे, पुरुष-पौरुषेय। अपौरुषेय। अतिथि-आतिथेय (अतिथिषु साधुः)। पथिन्-पाथेय (पथि साधु)।

क—विशेषण बनाने में। जैसे, मद्र-मद्रकः। मत्कः। त्वत्कः। (diminutives) पुत्र-पुत्रकः। वृक्ष-वृक्षकः (ह्रस्वो वृक्षः)। (कुत्सित 'bad' अश्वकः 'बुरा घोड़ा'। शूद्रकः 'बुरा शूद्र'।

कल्प (देश्य और देशीय भी)—समानता (equality) या ईषन्न्यूनता (little inferiority) दर्शाने में। जैसे, कुमारकल्पः (कुमाराद् ईषन्न्यूनः)। विद्वत्कल्पः। विद्वद्देश्यः, विद्वद्देशीयः almost learned)। कविकल्पः। मृतकल्पः (almost dead)। पञ्चवर्षदेशीयः (nearly five years old)।

तन—कालवाचक क्रियाविशेषणों से विशेषण बनाने में पुरा-पुरातन (belonging to old)। सायंतनः। दिवातनः। सनातनः। चिरंतनः। अद्यतनः। ह्यस्तनः (ह्योभवः) नूतनः (नव = नू)।

ता (तल्)—(१) भाववाचक संज्ञा बनाने में जैसे, स्त्री-स्त्रीता 'स्त्रीपन'। पुमान्-पुंस्ता। मृदु-मृदुता। शीत-शीतता। (२) समूह (collection of) जैसे, ग्राम-ग्रामता (collection of villages)। जन-जनता (public)। बन्धु-बन्धुता।

त्व—भाववाचक संज्ञा बनाने में। जैसे, अमृत-अमृतत्व। पञ्च-पञ्चत्व (death) गो-गोत्व। मनुष्य-मनुष्यत्व। स्त्री-स्त्रीत्व।

त्य—सम्बन्ध (belonging to) दिखाने में। जैसे, दक्षिण-दाक्षिणात्यः पश्चात्-पाश्चात्यः। पुरस्-पौरस्त्यः (eastern)। अमात्यः। नित्यः। ततस्त्यः।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मय (मयट्)—(१) विकार के अर्थ में (made of)। जैसे, मृद्—मृन्मयः (मृदो विकारः)। हिरण्-हिरण्मयः। काष्ठ-काष्ठमयः (made of wood)। (२) प्राचुर्य (excess)। जैसे, घृत-घृतमयः (घृतं प्रचुरं यस्मिन्)। अन्न—अन्नमयः। मनस्—मनोमयः।

य—भाववाचक संज्ञा बनाने में। जैसे, राजन्—राज्यम्। सेनापति-सैनापत्यम्। पुरोहित—पौरोहित्यम्। सारथि-सारथ्यम्। स्तेयम्। (२) समूह (collection) जैसे, गो—गव्या (गवां समूहः)। वात-वात्या (वातानां समूहः, 'storm') रथ-रथ्या। (३) देवता (having as a presiding deity) जैसे, वायु-वायव्यम्। (presided over by Vayu, a weapon), अग्नि-आग्नेयम्, (अग्नि देवता अस्य)। ऋतु—ऋतव्यः। उषस्—उषस्यः (sacred to Dawn)। (४) दण्डादि[1] गण पर योग्यता (deserving) के अर्थ में। जैसे, दण्ड्यः (deserving punishment), वध्यः, अर्घ्यः, मेध्यः, इत्यादि। (५) अन्य अर्थों में दन्त—दन्त्य (good for teeth)। कण्ठ—कण्ठ्य। नासिका—नस्य (fit for nose)। ग्रीवा—ग्रैव्य। रथ—रथ्यः horse) वयस्—वयस्यः (friend)। तुला—तुल्य। न्याय—न्याय्य (न्यायादनपेतं)। पथिन्—पथ्यं (पथि साधु) हृद्—हृद्यं (मनोज्ञत्वात्)। धन—धन्य. (धनं लब्धा)। धर्म—धर्म्यम् (धर्मादनपेतम्)। धुर—धुर्यः (धुरं वहति)। गो—गव्यम् (गवे हितम्)

(ग) मत्वर्थीयप्रत्ययाः 'Suffixes of Possession'.

इत (इतच्)—तारकादि ग०[2] पर। जैसे, तारका—तारकितं (तारका

---

१. दण्डादि गणः—दण्ड, मुसल, मधुपर्क, कशा, अर्घ, मेघ, मेधा, सुवर्ण, उदक, वध, युग, गुहा, भाग इभ, भङ्ग।

२. तारकादि गणः—तारका, पुष्प, कर्णक, मञ्जरी, ऋजीष, क्षण, सूत्र, मूत्र, निष्क्रमण, पुरीष, उच्चार, प्रचार, विचार, कुड्मल, कण्टक, मुसल, मुकुल, कुसुम, कुतूहल, स्तबक, किसलय, पल्लव, खण्ड, वेग, निद्रा, मुद्रा, बुभुक्षा, धेनुष्या, पिपासा, श्रद्धा, अभ्र, पुलक, अंगारक, वर्णक, द्रोह, दोह, सुख दुःख, उत्कण्ठा, भर, व्याधि, वर्मन्, व्रण, गौरव, शास्त्र, तरंग, तिलक, चंद्रक, अन्धक, गर्व, मुकुर, हर्ष, उत्कर्ष, रण, कुवलय, गर्ध, क्षुध, सीमन्त, ज्वर, गर, रोग,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्य संजाताः) फलित, पुष्पित, मुद्रित, सुखित, दुःखित, उत्कण्ठित, हर्षित, अंकुरित, मूर्छित, पिपासित, बुभुक्षित, मुद्रित, व्याधित, तरंगित मंजरित, दीक्षित।

इन् (इनि)—अकारान्त प्रातिपदिकों और व्रीह्यादि-गण[3] पर लगता है। जैसे, दण्ड–दण्डिन् (दण्डोऽस्यास्ति)। सुख–सुखिन्। दुःख–दुःखिन् अर्थ–अर्थिन्। व्रीहिन्, मायिन्, शालिन्, शिखिन्, पताकिन्, कर्मिन्, इत्यादि।

इक (ठन्)—इन् के स्थान पर इक भी लगता है। जैसे, दण्डिक, धनिक, मायिक, व्रीहिक, इत्यादि।

ग्मिन्—श्रेष्ठ अर्थ (good sense) में वाच् पर लगता है। कुत्सित अर्थ (bad sense) में आट और आल प्रत्यय लगते हैं। जैसे, वाग्मिन् 'orator' वाचाट, वाचाल, 'prattler, बातूनी'

मत् (मतुप्)—मत्वर्थ (possession) में प्रायः सब प्रातिपादिकों पर लगता है (अकारान्त से भिन्न, देखो वत्)। गो–गोमत् (गावोऽस्य सन्ति) ऊर्मि–ऊर्मिमत्। भूमि–भूमिमत। ककुद्–ककुद्मत्। गरुत्–गरुत्मत्। हरित्–हरित्मत्। इक्षु–इक्षुमत्। मधु–मधुमत्।

वत्—जिन प्रातिपादिकों के अन्त में या उपधा में स या अ, आ, या अन्त में स्पर्शवर्ण हों, उन पर मत् के स्थान में वत् मत्वर्थ में लगता है। जैसे, रस–रसवत्। रूप–रूपवत्। वर्ण–वर्णवत्। गन्ध–गन्धवत्। स्पर्श–स्पर्शवत्। स्नेहवत्। शब्दवत्। स्ववत्। किम्–किंवत्। विद्यावत् लक्ष्मीवत्। यशस्वत्। भास्वत्। राजन्वत् या राजवत्। विद्युत्–विद्युत्वत्। तडित्–तडित्वत्।

मिन् (मिनि)—गो–गोमिन्।

र—मत्वर्थ में पाण्डु, मधु, मुनि, ऊष, नग, नष्क, प्रांसु, ख,

रोमाञ्च, पण्डा, कज्जल, तृष, कोरक, कल्लोल, स्थपुट, फल, कञ्चुक, शृंगार, अंकुर, शैवल, वकुल. स्वभ्र, अराल, कलंक, करदम, कन्दल, मूर्छा, अंगार, हस्तक, प्रतिबिंब, विघ्नतन्त्र, प्रत्यय, दीक्षा, गर्ज, गर्भादप्राणिनि।

व्रीह्यादि-गणः—व्रीही, माया, शाला, शिखा, माला, मेखला, केका, अष्टका, पताका, चर्मन्, कर्मन्, दंष्ट्रा, संज्ञा, वडवा, कुमारी, नौ, वीणा, बलाका यवखद, शीर्षान्नयः (words in शीर्ष)।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुख, कुञ्ज आदि शब्दों पर। जैसे, पाण्डुर, मधुर, सुषिर, ऊषर, नगर, खर, मुखर, कुञ्जर।

वल (वलच्)—कृषीवलः 'किसान'। शिखावलः 'मोर'। ऊर्जस्वलः। परिषद्वलः 'राजा'। रजस्वला।

वन् (विनि)—माया, मेधा, स्रज् तथा सकारान्त प्रातिपदिकों पर। जैसे, मायाविन्, मेधाविन्, स्रग्विन्,। तेजस्-तेजस्विन्। यशस्-यशस्विन्। तपस्-तपस्विन्। ओजस्-ओजस्विन्।

(घ) क्रियाविशेषण-प्रत्ययाः 'Suffixes forming Adverbs'.

तस—अपादान (ablative) के अर्थ में। जैसे, आदितः आरंभ से'। अन्यतः, अज्ञानतः, स्वरतः 'स्वर से', वर्णतः, यतः, ततः, कुतः, सर्वतः, परितः।

त्र—अधिकरण (lacative) के अर्थ में। जैसे, सर्वत्र, तत्र, कुत्र, यत्र, इत्यादि।

था—करण (instrumental) के अर्थ में प्रकार (manner) दर्शाने का। जैसे, अन्यथा (अन्येन प्रकारेण), सर्वथा उभयथा, इत्यादि।

दा—समय (time) बताने में। जैसे, सर्वदा 'always', यदा, कदा, तदा, इत्यादि।

धा—वार, प्रकार (manner or kind) के अर्थ में। जैसे, एकधा, द्विधा, त्रेधा, षोढा, सप्तधा, इत्यादि।

वत् (वतिच्)—इव या तुल्य (resemblance) के अर्थ में। जैसे, चन्द्रवत् (चन्द्रः इव), पितृवत्, ब्राह्मणवत् (ब्राह्मणेन तुल्यम्) विधिवत् (विधिमर्हति)।

च्वि—अभूततद्भाव (becoming what it was not before) में नामों और निपातों पर लगता है। अंग (base) का उपसर्ग की भांति कृ, भू या अस् धातु के साथ समास होता है। क्वि का लोप हो जाता है, परन्तु इसके पूर्व अंग (base) में नीचे लिखे विकार होते हैं :—

(क) अन्त्य अ और आ को ई आदेश, इ और उ को दीर्घ और ऋ को री आदेश होता है।

(ख) अन्त्य न् और स् का लोप होकर इनके पूर्ववर्ती अ को ई हो जाता है। जैसे,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्ण+च्वि—कृष्णी, कृष्णीकरोति (अकृष्णः कृष्णः संपद्यते, तं करोति) 'makes black what was not black'। ब्रह्मन्+च्वि—ब्रह्मी, ब्रह्मीभवति (अब्रह्मा ब्रह्मा सम्पद्यते)। गंगा+च्वि—गंगी, गंगीस्यात्। शुचीभवति। पटूस्यात्। मात्रीकरोति। उन्मनीभवति। उच्चकूरोति। विचेतीकरोति। उरूकरोति। विरजीभवति। स्वीकृतम्। दिवाभूता।

आ—च्वि की भाँति। जैसे, दुःख—दुःखाकरोति 'troubles one who ought not to be troubled', सुखाकरोति pleases, one who ought to be pleased', प्रियाकरोति (अनुकूलाचरणेनानन्दयति), शूलाकरोति 'roasts', सत्याकरोति 'settles price'.

सात्—च्वि के अर्थ में परन्तु कात्स्न्र्य के भाव में (when the change is complete)। सात् का लोप नहीं होता। अंग (base) का कृ, भू, अस्, और सं-पद् के साथ समास होता है। जैसे, अग्निसाद्भवति (कृत्स्नं शस्त्रं अग्निः सम्पद्यते), भस्मसात्कुरुते, उदकसाद्भवति (लवणं) 'Salt turns into water', राजसात्करोति, आत्मसात्कुरुते, विप्रसात्सम्पद्यते[1]।

(ङ) तारतम्यबोधक तद्धित।

'Suffixes forming Degrees of Comparison'.

२२८. विशेषणों की मूल-अवस्था (Positive degree) को उत्तर-अवस्था (Comparative degree) और उत्तम अवस्था (Superlative degree) में बदलने के लिए क्रमशः तर और तम प्रत्ययों का बहुधा प्रयोग होता है। उत्तर-अवस्था में विशेषण पर तर लगा कर दो की तुलना से किसी एक की अधिकता या न्यूनता दिखाई जाती है। जिससे तुलना की जाय उस में पंचमी विभक्ति होती है। उत्तम-अवस्था में तम प्रत्यय लगा कर दो से अधिक वस्तुओं की तुलना द्वारा एक को सब से अधिक या न्यून बताया जाता है। जिस से निर्धारण (selection) किया जाय उसमें सप्तमी या षष्ठी विभक्ति होती है।

---

१. च्वि प्रत्यय द्वारा समस्त धातुओं के आवकारी कृदन्त य या त्य से बनते हैं, परन्तु सात् प्रत्यय वाले समस्त धातुओं पर त्वा ही लगता है। जैसे, अग्नीकृत्य परन्तु अग्निसात्कृत्वा।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तर और तम से पूर्व प्रातिपादिकों का वही अंग (base) रहता है जो तृतीया विभक्ति में द्विवचन के प्रत्यय से पूर्व होता है। जैसे, गोविन्दो गोपालात् प्रियतरः 'गोविंद गोपाल से ज्यादा प्यारा है'। लघु—लघुतर, लघुतम। गुरु—गुरुतर, गुरुतम। दृढ़—दृढ़तर, दृढ़तम। विद्वस्—विद्वत्तर, विद्वत्तम। धनिन्—धनितर, धनितम। प्राच्—प्राक्तर, प्राक्तम।

(क) ऐसे ही तुलना के अर्थ में क्रियाओं और निपातों पर तराम् और तमाम् लगा कर तुलनावाचक क्रियाविशेषण बनाते हैं। जैसे, पचतितराम् पचतितमाम्। उच्चैस्तराम्, उच्चैस्तमाम्। नितराम्, नितमाम्। इत्यादि।

२२९. गुणवाचक विशेषणों (adjectives of quality) पर उत्तर-अवस्था में इयस् और उत्तम-अवस्था में इष्ठ प्रत्यय लगते हैं। इन प्रत्ययों से पूर्व प्रातिपदिक के अन्त्य स्वर का उत्तरवर्ती (following) व्यंजन सहित लोप हो जाता है। जैसे, लघु—लघीयस, लघिष्ठ। पटु—पटीयस्, पटिष्ठ। महत्-महीयस्, महिष्ठ।

(क) इयस् और इष्ठ से पूर्व मत्वर्थीय (possessive) प्रत्ययों (मत्, वत्, इन्, विन्, इत्यादि) तथा तृ प्रत्यय का लोप हो जाता है। जैसे, मतिमत्—मतीयस्, मतिष्ठ। वसुमत् वसीयस्, वसिष्ठ। मेधाविन्—मेधीयस्, मेधिष्ठ। विद्याविन्—विद्यीयस्, विद्यिष्ठ। यशस्वत्—यशीयस्, यशिष्ठ। धनिन्—धनीयस् धनिष्ठ। कर्तृ—करीयस्, करिष्ठ। विजेतृ—विजयीयस् विजयिष्ठ। स्तोतृ—स्तवीयस्, स्तविष्ठ।

(ख) ईयस् और इष्ठ से पूर्व प्रादिपदिक के व्यजन संयुक्त ऋ को र होता है। जैसे, कृश—क्रशीयस् क्रशिष्ठ। दृढ़—द्रढीयस्, द्रढिष्ठ। पृथु—प्रथीयस्, प्रथिष्ठ। भृश—भ्रशीयस्, भ्रशिष्ठ। मृदु—म्रदीयस्, म्रदिष्ठ। परन्तु ऋजु—ऋजीयस् ऋजिष्ठ। कृष्ण—कृष्णीयस् कृष्णिष्ठ।

(ग) ईयस-प्रत्ययान्त विशेषणों को ई और इष्ठ प्रत्ययान्त को आ स्त्री-प्रत्यय लगता है। जैसे, यशीयसी, यशिष्ठा। गरीयसी, गरिष्ठा।

(घ) कुछ अनियमित ईयसः प्रत्ययान्त और इष्ठ-प्रत्ययान्त रूप नीचे दिए जाते हैं :—

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तिक 'near'	नेदीयस्	नेदिष्ठ
अल्प 'little'	अल्पीयस् कनीयस्	अल्पिष्ठ कनिष्ठ
उरु 'wide'	वरीयस्	वरिष्ठ
क्षिप्र 'quick'	क्षेपीयस्	क्षेपिष्ठ
क्षुद्र 'mean'	क्षोदीयस्	क्षोदिष्ठ
दीर्घ 'long'	द्राघीयस्	द्राघिष्ठ
दूर 'distant'	दवीयस्	दविष्ठ
प्रशस्य 'praiseworthy'	श्रेयस् ज्यायस्	श्रेष्ठ ज्येष्ठ
प्रिय 'dear'	प्रेयस्	प्रेष्ठ
बहु 'much'	भूयस्	भूयिष्ठ
बहुल 'much'	बंहीयस्	बंहिष्ठ
बाढ 'firm, well'	साधीयस्	साधिष्ठ
युवन् 'young'	यवीयस् कनीयस्	यविष्ठ कनिष्ठ
वृद्ध 'old'	वर्षीयस् ज्यायस्	वर्षिष्ठ ज्येष्ठ
वृन्दारक 'great,lovely'	वृन्दीयस्	वृन्दिष्ठ
विपुल 'much'	ज्यायस्	ज्येष्ठ
स्थिर 'steady'	स्थेयस्	स्थेष्ठ
स्फिर 'much'	स्फेयस्	स्फेष्ठ
स्थूल 'big'	स्थवीयस्	स्थविष्ठ
ह्रस्व 'short'	ह्रसीयस्	ह्रसिष्ठ

अभ्यास ३१.

१. कृत् प्रत्यय और तद्धित प्रत्ययों में क्या भेद है ? सोदाहरण लिखो ।

२. कर्तृवाचक कृत् और तद्धित प्रत्ययों के नाम और उदाहरण लिखो ।

३. मत्वर्थीय, अपत्यर्थीय और भाववाचक प्रत्यय सोदाहरण लिखो ।

४. नीचे लिखे शब्द-समूहों के लिए उचित प्रत्यय लगा कर एक एक पद लिखो :—

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चोरयति यः सः। अंशं हरति यः सः। शक्तिं गृह्णाति यः सः। जलं ददाति यः सः। धर्मं जानाति यः सः। गृहे तिष्ठति यः सः। अन्तं गच्छति यः सः। पंकात् जायते यत् तत्। धनमपहन्ति यः सः। गृह्णाति यः सः। उष्णं भोक्तुं शीलमस्य सः। वसुदेवस्यापत्यं पुमान्। विश्वामित्रस्य गोत्रापत्यं पुमान्। असुरस्यापत्यं पुमान्। अत्रेरपत्यं पुमान्। शर्कराया इदम्। देवदारोर्विकारः। इक्ष्वाकूणां स्वामी यः सः। काकानां समूहः। व्याकरणमधीते यः सः। सुस्नातं पृच्छति यः सः। धनुः प्रहरणमस्य सः। धर्मं चरति यः सः। उपदेशेन जीवति यः सः। लाक्षया रक्तं यत्तत्। न्यायमधीते यः सः। अतिथिषु साधुः। ह्रस्वो वृक्षः। विदुषः ईषन्न्यूनः यः सः। बन्धूनां समूहः। हिरण्यस्य विकारः। घृतं प्रचुरं यस्मिन् सः। वातानां समूहः। वायुर्देवता यस्य तत्। धर्मादनपेतं यत्तत्। गवे हितम्। अर्थोऽस्यास्ति सः। गावोऽस्य सन्ति सः। तपोऽस्यास्ति सः। चन्द्रः इव। ब्राह्मणेन तुल्यः। अब्रह्मा ब्रह्मा सम्पद्यते। अनग्निरग्निः सम्पद्यते। कृत्स्नं (शस्त्रं) अग्निः सम्पद्यते। तारका अस्य संजाता तत्।

५. नीचे लिखे शब्दों और धातुओं से विशेषण बनाओ :—

मुख, रूप, स्पर्श, पिपासा, मूर्च्छा, वाच्, दण्ड, सायं, अद्य, पुरुष, माला, पर्वत, ग्राम, निशा, ऊर्णा, जि, गम्, हिंस, कम्, इत्यादि।

६. नीचे लिखे विशेषणों की उत्तर और उत्तम अवस्थाएँ लिखो :—

महत्, यशस्विन्, विद्वस्, धनिन्, मतिमत्, वसुमत्, विजेतृ, स्तोतृ, गुरु, दूर, वृद्ध, दीर्घ, ह्रस्व, अल्प, स्थूल, इत्यादि।

७. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो :—

ऋग्वेदात् सामवेदस्य महिमा भूयिष्ठी। कृष्णस्य सुभद्रा युवनतर स्वसा। सर्वेषु कुसुमेषु शिरीषकुसुमं म्रदीयान्। सर्वासु नदीषु भागीरथी दीर्घतरा वरीयसा च। धार्तराष्ट्रेभ्यः पाण्डवा बलिष्ठाः। अनृतात्सत्यं श्रेष्ठम्। मोहाद् अभूत्कष्टतमः प्रबोधः। सर्वद्रव्येषु विद्यैव द्रव्यमाहुरनुत्तरम्। सर्वेषु नृषु द्विजः श्रेयान्। निःश्रेयसाय कर्मपथाज्ज्ञानमार्गः साधिष्ठः। सर्वेषु मार्गेषु भक्तिमार्गः श्रेयान् भवति। अन्येभ्यः पर्वतेभ्यो हिमालयः प्रथिष्ठः।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८. नीचे लिखे वाक्यों में रिक्त पदों को दिए गए विशेषणों के उत्तर या उत्तम अवस्था के रूपों द्वारा पूरा करो :—

१. परमात्माणोपि—महतोऽपि—वर्तते। अणु, महत्।
२. गंगायाः सलिलं यमुनाया जलात्—। शुचि।
३. नैतद्विद्मः कतरन्नो—यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः। गुरु।
४. भूतानां प्राणिनः—प्राणिनां बुद्धिजीविनः। प्रशस्य।
५. सर्वद्रव्येषु विद्यैव द्रव्यमाहुः—। प्रिय।
६.—स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्। प्रशस्य।
७. सावित्र्यास्तु—नास्ति मौनात्सत्यं— पवित्र, महत्।
८. नास्ति जीवितादन्यत्—इह जगति सर्वजन्तूनाम्। अभिमत।
९. यद्यस्मत्तः—राक्षसोऽवगस्यते तदिदं शस्त्रं तस्मै दीयताम्। उरु।
१०. पयार्यपीतस्य सुरैर्हिमांशोः कलाक्षयः—हि वृद्धेः। श्लाघ्य।
११. सीता प्राणेभ्योऽपि—आसीद् रामस्य। प्रिया।

९. संस्कृत में अनुवाद करो :—

दशरथ का सब से बड़ा (वृद्ध) बेटा राम और सब से छोटा (युवन्) शत्रुघ्न था। यह सब में नाज़ुक (मृदु) फूल है। सतलुज नदी व्यास से ज़्यादा लंबी (दीर्घ) है। हिमालय पहाड़ों में सब से बड़ा (पृथु) है। घोड़ा जानवरों में सब से तेज़ (आशु) है। सब में छोटा (युवन्) पुत्र माता-पिता को सब से प्यारा होता है। रघु अपने समय में सब से ओजस्वी (ओजस्विन्) और बलवान् (बलिन्) राजा था। यह कहानी आपकी कहानी से अधिक छोटी (ह्रस्व) और रोचक है। आपका घर मेरे घर की अपेक्षा स्कूल से अधिक दूर है। आप मुझ से बड़े (आयु में) (वृद्ध) हैं। झूठ बोलने से चुप रहना अच्छा (प्रशस्य) है। अंग से हीन पुरुष सब से नीच (क्षुद्र) होता है। इन का ज्ञान आप से अधिक (विपुल) है। सारी श्रेणि में हरि सब से मोटा (स्थूल) है। योगी का मन सब से अधिक टिका (स्थिर) होता है। मैं आपके अत्यन्त निकट (अन्तिक) रहता हूँ। उसके पास ज़रा भी (अल्प) तो धन नहीं। सिकन्दर अपने समय में सब से बड़ा विजयी (विजेतृ) था। सारा शहर जल कर राख (use सात्) हो गया। शिष्य गुरु को सुखी करता है (सुख+आ+कृ)। बनिया चावलों की कीमत का फ़ैसला करता है (सत्य + आ + कृ)। खांड पानी में घुल जाती है (use सात्)। ईश्वर ने तोतों को हरा (हरित + च्वि) और मोरों चितकबरा (चित्र + च्वि) बनाया है।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दशमोऽध्यायः ।

समास 'COMPOUNDS'.

२३०. दो या अधिक शब्दों को एक पद में समस्त करने की विधि प्रायः सभी आर्य भाषाओं में पाई जाती है। परन्तु संस्कृत में समास वृत्ति की प्रधानता पाई जाती है। इसमें लंबे और जटिल समस्त पदों का प्रयोग पाया जाता है। ऐसे समस्त पद वाक्यों का भी काम देते हैं। इसलिए समासों का अध्ययन के ज्ञान के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

(क) समर्थ अर्थात् परस्पर संबद्ध अर्थ वाले शब्दों को एक पद में मिलाने की वृत्ति को समास (compound) कहते हैं। समास के पदों में जो सम्बन्ध होते हैं उन्हें विभक्तियों द्वारा प्रकाशित किया नहीं जाता। ये पद अपने प्रातिपदिक रूप में प्रयुक्त होते हैं। विभक्ति आदि प्रत्यय केवल अन्तिम पद पर ही लगते हैं। पूर्वपद (first member) में अविकृत (unchangeable) प्रातिपदिक वैसे ही बने रहते हैं, परन्तु विकृत (changeable) प्रातिपदिकों में कुछ भेद है। दो अंग (bases) वाले प्रातिपदिकों का असर्वनामस्थान (weak) अंग और तीन अंग वालों का असर्वनामस्थान हलादि (middle) अंग समास के पूर्वपद में रहता है। अन्य विकार उत्तरपद (last member) में होते हैं।

(ख) समास के पदों में सन्धि नित्य होती है, क्योंकि यह एक पद होता है। इसके पदों को विभक्ति-प्रत्यय लगा कर जुदा जुदा क्रिया से अन्वित करने को विग्रह (dissolution) में कहते हैं।

(ग) समासों के पदों के परस्पर सम्बन्ध आदि के अनुसार नीचे लिखे चार प्रधान भेद हैं:—

१. द्वन्द्व 'Co-ordinatives', २. तत्पुरुष 'Determinatives', ३. बहुव्रीहि 'Possessives', और ४ अव्ययीभाव 'Adverbials'.

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. द्वन्द्व समास 'Co-ordinative Compounds'.

२३१. द्वन्द्व समास में दो या अधिक पद च (and) के अर्थ में मिलाए जाते हैं। जैसे, रामकृष्णौ (रामश्च कृष्णश्च), पाणिपादम् (पाणी च पादौ च तेषां समाहारः)। द्वन्द्व के दो भेद हैं :—(१) इतरेतरद्वन्द्व और समाहारद्वन्द्व।

२३२. जब द्वन्द्व समास के पद समाहार-अर्थ (aggregate) को छोड़ अपना जुदा जुदा अर्थ दिखाते हों तो उस समास को इतरेतरद्वन्द्व कहते हैं। इतरेतर-योग में यदि पदों का वचन मिलाकर दो हो तो समास का द्विवचन और यदि दो से अधिक हो तो बहुवचन होगा। और अन्त्य पद का लिंग ही समास का लिंग होता है। जैसे, रामलक्ष्मणौ (रामश्च लक्ष्मणश्च)। नदीपर्वतौ (नदी च पर्वतश्च)। कुक्कटमयूर्यौ (कुक्कटश्च मयूरी च)। कन्दमूलफलानि (कन्दश्च मूलञ्च फलञ्च)।

(क) दो विशेषणों का भी च के अर्थ में द्वन्द्व समास होता है। जैसे, उत्तरदक्षिण 'north and south', शीतोष्ण 'cold and hot', शीतोष्णे जले।

(ख) दो क्तान्त कृदन्तों का भी द्वन्द्व समास होता है। इसमें अनुक्रम (sequence) भी पाया जाता है। जैसे, जातप्रेतः (प्रथमं जातः पश्चात् प्रेतः), दृष्टनष्टः (प्रथमं दृष्टः पश्चात् नष्टः), सुप्तोत्थितः 'got up as soon as slept,' स्नातानुलिप्तः 'first bathed and then anointed'.

(ग) यदि पूर्व-पद विद्या (learning) और योनि-संबन्ध (blood relationship) वाचक ऋकारान्त शब्द हो और उत्तर पद भी ऋकारान्त या पुत्र शब्द हो तो पूर्वपद की ऋ को आ आदेश होता है।[1] होतापोतारौ (होतृ-पोतृ), मातापितरौ (मातृ पितृ), मातादुहितरौ, पितापुत्रौ, मातापुत्रौ। परन्तु पितृपितामहौ (उत्तरपद ऋकारान्त नहीं)।

(घ) दो वैदिक देवताओं के नामों के समास को देवताद्वन्द्व कहते हैं। इस में पूर्वपद के अन्त्य वर्ण को आ आदेश होता है[2]। यदि पूर्वपद अग्नि और उत्तरपद सोम या वरुण हो तो अग्नि के इ को दीर्घ हो जाता

---

१. आनङ् ऋतो द्वन्द्वे। ६. ३. २५। २. देवता द्वन्द्वे च। ६. ३. २६।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है[1]। पूर्वपद में दिव् को द्यावा आदेश होता है[2]। वस्तुतः देवताद्वन्द्व में पूर्वपद भी द्विवचनान्त ही रहता है। जैसे, मित्रावरुणौ (मित्रश्च वरुणश्च), इन्द्रासोमौ, इन्द्रावरुणौ, सूर्याचन्द्रमसौ. इन्द्राबृहस्पती, अग्नीमरुतौ (अग्निश्च मरुत्च)। अग्नीषोमौ, अग्नीवरुणौ। द्यावाभूमी (द्यौश्च भूमिश्च), द्यावापृथिव्यौ। परन्तु अग्निवायू या वाय्वग्नी (प्रतिषेध)।

(ङ) यदि सरूप (of the same form) और एकविभक्ति (of the same case or sense) दो या अधिक शब्द द्वन्द्व द्वारा समस्त हों तो केवल एक पद ही शेष रहता है।[3] इस समास को एकशेषद्वन्द्व कहते हैं[4]। यदि जोड़ों (pairs) का समास हो तो पुँल्लिंग शेष रहता है और द्विवचनान्त होता है।[5] ऐसे ही भ्रातृ और पुत्र क्रमशः स्वसृ और दुहितृ के द्वन्द्व में शेष रहते हैं[6]। जैसे, रामौ (रामश्च रामश्च), रामाः (रामश्च रामश्च रामश्च)। हंसौ, (हंसी च हंसश्च), ब्राह्मणौ, (ब्राह्मणश्च ब्राह्मणी च), पितरौ (माता च पिता च), श्वशुरौ (श्वश्रूश्च श्वशुरश्च)। भ्रातरौ (भ्राता च स्वसा च), पुत्रौ (पुत्रश्च दुहिता च)। परन्तु इन्द्रेन्द्राण्यौ (इन्द्रश्च इन्द्राणी च)।

(२) समाहार-द्वन्द्व।

२३३. जब द्वन्द्व समास के पदों में ऐक्य या समूह भाव (aggregate) पाया जाए तो उसे समाहार-द्वन्द्व कहते हैं। समाहार नपुँसक एकवचनान्त होता है। नीचे लिखे अर्थों में नित्य समाहार होता है:—

(क) प्राणियों के अंग (limbs of animals) तूर्य के अंग (parts of music) और सेना के अंग (parts of army)।[7] जैसे, पाणिपादम् (पाणी च पादौ च तेषां समाहारः), करचरणम्, मुखनेत्रम्, शिरोग्रीवम, मांसास्थिरुधिरम् (मांसश्च अस्थि च रुधिरञ्च)। मार्दङ्गिकपाणविकम् (मार्दङ्गिकश्च पाणविकश्च तयोः समाहारः players on these musical instruments' भेरीपटहम्।

---

१. ईद् अग्नेः सोमवरुणयोः। ६. ३. २७। २. दिवो द्यावा। ६. ३. २९। वायुशब्दप्रयोगे प्रतिषेधः। ३. सरूपाणाम् एकशेष एकविभक्तौ। १. २. ६४। ४. एकशेष-द्वन्द्व, वस्तुतः समास कहा नहीं जा सकता। समास के नियम इस पर लागू नहीं। इस लिए एकशेष एक जुदा वृत्ति है। ५. पुमान् स्त्रिया। १. २. ६७। पिता मात्रा। श्वशुरः श्वश्र्वा। १. २. ७०—७१। ६. भ्रातृपुत्रौ स्वसृदुहितृभ्याम्। १. २. ६८। ७. द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्। २. ४. २।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋषभगान्धारम्, धैवतपञ्चमम्। हस्त्यश्वम् (हस्तिनश्च अश्वाश्च तेषां समाहारः) रथिकाश्वारोहम्, धनुः शरम्, शरतूणीरम्।

(ख) नदियों और देशों के विशिष्टलिंग (of different genders) नाम, परन्तु ग्रामों के नहीं।[1] जैसे, (नदी) गंगाशोणम् (गंगा च शोणश्च), कृष्णाब्रह्मपुत्रम् (कृष्णा च ब्रह्मपुत्रश्च) (देश) कुरुकुरुक्षेत्रम् (कुरवश्च कुरुक्षेत्रञ्च), मद्रराजस्थानम्। परन्तु गंगायमुने, वंगकलिंगाः (same gender)।

(ग) क्षुद्र जन्तुओं (insects) के नाम।[2] जैसे दंशमशकम् (दंशाश्च मशकाश्च तेषां समाहारः) मक्खी-मच्छर'। यूकालिक्षम 'जूं-लीख'

(घ) जिन में नित्य वैर हो (animals having natural antipathy)।[3] जैसे, अहिनकुलम् (अहयश्च नकुलाश्च तेषां समाहारः) मार्जारमूषिकम्, गोव्याघ्रम्, काकोलूकम्, श्वशृगालम्।

(ङ) गवाश्व प्रभृति शब्द।[4] जैसे, गवाश्वम् (गावश्च अश्वाश्च तेषां समाहारः) उष्ट्रखरम्, अजाविकम्, मूत्रपुरीषम्, मांसशोणितम्, श्वचण्डालम्, तृणोपलम्, दासीदासम्, स्त्रीकुमारम्, पुत्रपौत्रम्, इत्यादि।

(च) परस्पर विरुद्धार्थ (of contrary sense-) अद्रव्य वाचक (not names of material objects) शब्द विकल्प से।[5] जैसे, शीतोष्णम्, या शीतोष्णे, सुखदुःखम् या सुखदुःखे, जीवितमरणम् या जीवितमरणे। परन्तु कामक्रोधौ।

(छ) नीचे लिखे समास निपातनसिद्ध (irregular) हैं। जैसे, स्त्रीपुंसौ (स्त्री च पुमान् च), ऋक्सामे (ऋक् च साम च), ऋग्यजुषम् (ऋक् च यजुश्च), वाङ्मनसे (वाक् च मनश्च), अक्षिभ्रुवम् (अक्षिणी च भ्रुवौ च), दारगवम् (दाराश्च गावश्च), नक्तन्दिवम् (नक्तञ्च दिवा च), रात्रिन्दिवम् (रात्रौ च दिवा च), अहर्दिवम् (अहनि च दिवा च), अहोरात्रः (अहश्च रात्रिश्च)।

---

१. विशिष्टलिंगो नदीदेशोऽग्रामाः। २. ४. ७। २. क्षुद्रजन्तवः। २. ४. ८। ३. येषां च विरोधः शाश्वतिकः। २. ४. ९। ४. गवाश्वप्रभृतीनि च। २. ४. ११। ५. विप्रतिषिद्धं चानधिकरणवाचि। २. ४. १३।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ज) यदि समाहार-द्वन्द्व के अन्त में चवर्ग, द्, ष् या ह् हो तो इसे अ का आगम होता है।[1] जैसे, वाक्त्वचम्, त्वक्स्रजम्, समिद्दृषदम्, सम्पद्विपदम्, छत्रोपानहम्। परन्तु प्रावृट्शरदौ (न तु समाहारः)।

२३४. द्वन्द्व समास में पद-क्रम (order of members of cd.) नीचे लिखे नियमानुसार होता है :—

(क) अजादि (beginning with vowel) और अदन्त (ending in अ) शब्द पहले आते हैं।[2] जैसे, ईशकृष्णौ, उष्ट्रखरम्, इन्द्राग्नी।

(ख) सब से कम अचों (syllables or vowels) वाला शब्द सब से पहले आता है।[3] जैसे, हरकेशवौ, राममहादेवौ, ग्रीष्मवसन्तौ, नरवानरौ।

(ग) ऋतु (seasons) और नक्षत्रों (stars) के नाम अपने क्रम (astronomical order) में होते हैं, यदि उनके अक्षर समान हों[4]। जैसे, हेमन्तशिशिरवसन्ताः, कृत्तिकारोहिण्यौ। परन्तु ग्रीष्मवसन्तौ।

(घ) अधिक पूज्य (more honourable) नाम पहले आता है[5]। जैसे, देवयक्षौ, तापसपर्वतौ, मानुषवानरौ, सीतारामौ।

(ङ) वर्णों के नाम (caste names) अपने आनुपूर्व्य (order of seniority) से आते हैं[6]। जैसे, ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्राः।

(च) भाइयों में पहले बड़े (eldest) का नाम आता है[7]। जैसे, युधिष्ठिरार्जुनौ, हलधरकृष्णौ।

अभ्यास ३२

१. द्वन्द्व समास के कितने भेद हैं? सोदाहरण लिखो।

२. समाहार-द्वन्द्व किन अवस्थाओं में होता है? सोदाहरण लिखो।

३. नीचे लिखे पद-समूहों के समस्त-पद बनाओ :—

इज्या च अध्ययनं च दानं च। रागश्च शोकश्च। बन्धनञ्च व्यसनञ्च। सुखञ्च दुःखञ्च। जयश्च अजयश्च। धर्मश्च अर्थश्च कामश्च

---

१. द्वन्द्वाच्चुदषहान्तात्समाहारे। ५. ४. १०६। २. अजाद्यदन्तम्। २. २. ३३। ३. अल्पाच्तरम्। २. २. ३४। ४. ऋतुनक्षत्राणां समानाक्षराणामानुपूर्व्येण। वार०। ५. अभ्यर्हितं च। वार०। ६. वर्णानामानुपूर्व्येण। वार०। ७. भ्रातुर्ज्यायसः। वार०।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोक्षश्च । हस्तौ च पादौ च । शीतश्च उष्णश्च । गुणाश्च कर्माणि च । ब्रह्मा च वरुणश्च इन्द्रश्च रुद्रश्च मरुत् च । भ्राता च भगिनी च । ऋक् च यजुश्च । अहनि च दिवा च । अयोध्या च काश्मीराश्च । मथुरा च पाटलिपुत्रश्च । अयोध्या च वाराणसी च । ब्रह्मपुत्रश्च चन्द्रभागा च । गंगा च शोणश्च । गंगा च यमुना च । करश्च चरणश्च । भेरी च पटहश्च । रथिकाश्च अश्वारोहाश्च । मार्जारश्च मूषिकाश्च । अश्वाश्च महिषाश्च । यूकाश्च लिक्षाश्च । ब्राह्मणाश्च क्षत्रियाश्च । इन्द्रश्च वरुणश्च । सूर्यश्च चन्द्रमा च । अग्निश्च बृहस्पतिश्च । द्यौश्च क्षमा च । अग्निश्च सोमश्च । भ्राता च स्वसा च । पिता च पितामहश्च । माता च पिता च । इन्द्रश्च इन्द्राणी च । जीवितञ्च मरणञ्च ।

४. नीचे लिखे समासों का विग्रह करो और उन्हें सिद्ध करो :—

रामरावणयोः । रामलक्ष्मणाभ्याम् । श्वश्रूश्वशुरौ । पुत्रौ । हंसौ । रामाः । कुक्कुटौ । मित्रावरुणाभ्याम् । यातननान्दरौ । छत्रोपानहम् । कामक्रोधौ । पुत्रपौत्रम् । काकोलूकम् । दंशमशकम् । काशीमगधम् । कुरुकुरुक्षेत्रम् ।

५. नीचे लिखे समासों को शुद्ध करो और हेतु दोः—

अग्नीन्द्रौ । खरोष्ट्रम् । केशवहरौ । वानरनरौ । रामसीते । बसन्त-शिशरौ । शूद्रवैश्यौ । कृष्णबलरामौ । रथिकाश्वरोहाः । गंगायमुनम् । कृष्णागोदावरिम् । उज्जयनीकौशाम्बीम् । ब्राह्मणक्षत्रियम् । दंशमशकाः । अहिनकुलाः । वाक्त्वक् । इन्द्रौ । अग्नीमरुतौ । शिवावैश्रवणौ । अग्नावायू ।

६. संस्कृत में अनुवाद करो, मोटे छपे शब्दों का अनुवाद समस्त पदों से करो :—

सीता, राम और लक्ष्मण १४ वर्ष वन में रहे । ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों के धर्म मनु और याज्ञवल्क्य की स्मृतियों में लिखे हैं । धर्म, अर्थ और काम के लिए सब यत्न करते हैं । सत्य, क्षमा और तप धर्म के साधन हैं । परमात्मा ने सूरज और चाँद तथा द्युलोक और पृथिवी को बनाया । साँझ-सवेरे पति और पत्नी हवन करें । बरसात में मक्खी-मच्छर कष्ट देते हैं । यह देख कर मेरे हाथ-पाँव काँपने लगे । पोरस की

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पैदल और घुड़सवार सेना ने सिकंदर पर हमला किया। चन्द्रगुप्त ने मगध और राजस्थान को जीता। राजा ने शत्रुसेना के तीर और कमान छीन लिए। आपके गौ-घोड़े, बेटे पोते और नौकर-नोकरानियां सब मौजूद हैं। बुढ़ापे में माता-पिता की सेवा करना बेटा-बेटी का धर्म है।

२. तत्पुरुष 'Determinative Compounds'.

२३५. तत्पुरुष समास में केवल दो पद होते हैं। पूर्व-पद उत्तर-पद की व्यवस्था या निर्धारण (determines) करता है। इस में उत्तर-पद प्रधान और पूर्व-पद इसके आश्रित होता है। इसके तीन प्रधान भेद हैः (१) तत्पुरुष (Dependent Determinative), (२) कर्मधारय (Descriptive Determinative),— द्विगु (Numeral Descriptive) कर्मधारय का अवान्तर भेद है—और (३) गति, प्रादि तथा उपपद तत्पुरुष।

(क) तत्पुरुष 'Dependent Determinative'.

२३६. तत्पुरुष में उत्तर-पद का अर्थ प्रधान होता है। क्रिया में इसी के अर्थों का अन्वय होता है। पूर्व-पद प्रथमा के अतिरिक्त अन्य सब विभक्तियों में प्रयुक्त होता है और उत्तर-पद के अर्थ की व्यवस्था करता है। समास का लिंग-आदि उत्तर-पद के अनुसार होता है। जैसे, तत्पुरुषः (तस्य पुरुषः), राजपुरुषः (राज्ञः पुरुषः) पूर्व-पद की विभक्ति के अनुसार इसके ६ भेद हैं :—

(१) द्वितीया-तत्पुरुष में पूर्व-पद द्वितीयान्त होता है और उसका—

(क) श्रित, अतीत, पतित, गत, अत्यस्त, प्राप्त, आपन्न आदि के साथ समास होता है[1]। जैसे, कृष्णाश्रितः (कृष्णंश्रितः), दुःखातीतः, नरकपतितः, गृहगतः (गृहं गतः), तरंगात्यस्तः, ग्रासप्राप्तः, सुखापन्नः। ग्रामगामी, ओदनबुभुक्षुः।

(ख) कालवाची द्वितीयान्त पदों का ऐसे सुबन्तों के साथ जिनसे काल विशेष की व्याप्ति (duration) पाई जाए।[2] जैसे, संवत्सरवासः (संवत्सरं वासः), वर्षभोग्यः (वर्षं भोग्यः), मुहुर्त्तसुखम।

(२) तृतीया-तत्पुरुष में पूर्व-पद तृतीयान्त होता है।

---

१. द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः। २. १. २४। २. अत्यन्तसंयोगे च। २. १. २९।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) **गुणवाची** सुबन्त और **अर्थ** शब्द का समास उन तृतीयान्त पदों के साथ होता है जिन से वह **गुण** और **अर्थ** सम्पन्न हों[1]। जैसे, **शंकुलाखण्डः** (शंकुलया खण्डः) 'cut by knife', **धान्यार्थः** (धान्येन अर्थः) 'wealth got by grain'.

(ख) तृतीयान्त का पूर्व, सदृश, सम, ऊनार्थ शब्द, कलह, निपुण, मिश्र, श्लक्ष्ण (polished) के साथ समास होता है[2]। जैसे, **मासपूर्वः** (मासेन पूर्वः), **स्वामीसदृशः** (स्वामिना सदृशः), **मातृसमः** (मात्रा समः) **मासोनम्**, **अल्पोनम्** 'deficient by little', **मासावरः** 'younger by a month', **वाक्कलहः** (वाचा कलहः), **वाङ्निपुणः** (वाचा निपुणः), **गुडमिश्रः आचारश्लक्ष्णः** (आचारेण श्लक्ष्णः)।

(ग) तृतीयान्त कर्ता (agent) या करण (instrument) का **कृत्प्रत्ययान्त** शब्दों के साथ समास होता है[3]। जैसे, **अहिहतः** (अहिना हतः) **देवदत्तः** (देवेन दत्तः), **नखभिन्नः** (नखैर्भिन्नः) 'torn by nails'.

(घ) तृतीयान्त **व्यञ्जन** (an article used in seasoning food) वाचक पदों का **अन्न-वाची** शब्दों के साथ समास होता है।[4] जैसे, **दध्योदनः** (दध्ना उपसिक्तः ओदनः), **क्षीरोदनः**।

३. चतुर्थी-तत्पुरुष में पूर्व-पद चतुर्थ्यन्त होता है।

चतुर्थ्यन्त विकृतिवाचक शब्दों का प्रकृति-वाचक (expressing material) तदर्थ (sense of purpose) में समास होता है, और ऐसे ही अर्थ, बलि, हित, सुख, रक्षित आदि के साथ भी।[5] जैसे, **यूपदारु** (यूपाय दारु), **कुण्डलहिरण्यम्** (gold for ear-rings)। **द्विजार्थः** (द्विजाय अयं, सूपः), **द्विजार्था** (यवागूः), **द्विजार्थम्** (पयः)[6], **भूतबलिः** (भूतेभ्यो बलिः), **गोहितम्** (गोभ्यो हितम्) 'good for cows', **गोसुखम्**, **भुवनरक्षितम्**।

---

१. तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन। २. १. ३०। २. पूर्वसदृशसमोनार्थकलहनिपुणमिश्रश्लक्ष्णैः। २.१.३१। कर्तृकरणे कृता बहुलम्। २.१.३२। ४. अन्नेन व्यञ्जनम्। २. १. ३४। ५. चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः। २. १. ३६। ६. द्विजार्थ के विग्रह में अर्थ शब्द नहीं आता और समस्त पद का वही लिंग होता है जो विशेष्य का हो। इसे नित्य-समास कहते हैं। (अर्थेन नित्यसमासो विशेष्यलिंगता चेति वक्तव्यम्)।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४. पञ्चमी-तत्पुरुष में पूर्व पद पंचम्यन्त होता है।

(क) पंचम्यन्त का भय, भीत, भीति भी, आदि के साथ समास होता है[1]। जैसे, चौरभयम् (चौरेभ्यो भयम्), वृकभीतः (वृकेभ्यो भीतः), सिंहभीतिः, शृगालभीः।

(ख) अपेत, अपोढ, मुक्त, पतित, अपत्रस्त, आदि के साथ भी[2]। जैसे, सुखापेतः (सुखाद् अपेतः), कल्पनापोढः (कल्पनायाः अपोढः) चक्रमुक्तः (चक्रात् मुक्तः) स्वर्गपतित.' तरंगापत्रस्तः। 'afraid of waves.,

५. षष्ठी-तत्पुरुष में पूर्व पद षष्ठ्यन्त होता है।

(क) षष्ठ्यन्त शब्द का किसी समर्थ (connected by construction) पद के साथ समास होता है।[3] जैसे, तत्पुरुषः (तस्य पुरुषः), राजपुरुषः, चन्दनगन्धः।

(ख) षष्ठी-तत्पुरुष-निषेध—तृ और अक अन्त वाले कर्तृवाचक सुबन्तों के साथ षष्ठ्यन्त का समास नहीं होता है।[4] जैसे, घटस्य कर्ता (न तु घटकर्ता) अपां स्रष्टा, ओदनस्य पाचकः।

परन्तु याजक, पूजक, परिचारक, स्नातक, अध्यापक, होतृ, भर्तृ (protector) आदि इसके अपवाद हैं। जैसे, ब्राह्मणयाजकः देवपूजकः राजपरिचारकः, विद्यास्नातकः, गणिताध्यापकः, अग्निहोता, भूभर्ता। परन्तु वज्रस्य भर्ता 'thunderbolt-weilder'.

(ग) निर्धारण (selection) में षष्ठी तत्पुरुष नहीं होता।[5] जैसे, नृणां द्विजः श्रेष्ठः। कृष्णा गवां बहुक्षीरा।

(घ) पूरण (ordinal numerals), गुण (attribute), सुहितार्थ (satisfaction) शतृ और शानच् प्रत्ययान्त (present participles), क्त्वन्त, ल्यबन्त और तुमुनन्त (indeclinable participles) तव्यान्त (potential participles) और समानाधिकरण (word in apposition) आदि शब्दों के साथ षष्ठी-तत्पुरुष नहीं होता[6]। जैसे सतां षष्ठः। छात्राणां पंचमः। काकस्य कार्ष्ण्यम्।

---

१. पञ्चमी भयेन। २. १. ३७। २. अपेतापोढमुक्तपतितापत्रस्तैरल्पशः। २. १. ३८। ४. षष्ठी। २. २. ८। ४. तृजकाभ्यां कर्तरि २. २. १५। याजकादिभ्यश्च। २. २. ९। ५. न निर्धारणे। २. २. १०। ६. पूरणगुणसुहितार्थसदव्ययतव्यसमानाधिकरणेन। २. २. ११।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फलानां सुहितः तृप्तो वा । ब्राह्मणस्य कुर्वन् । ब्राह्मणस्य कुर्वाणः (किंकरः) । ब्राह्मणस्य कृत्वा । तस्य आदाय । द्विजस्य कर्तव्यम् । पाणिनेः सूत्रकारस्य । तक्षकस्य नागस्य ।

(ङ) मति (approving), बुद्धि (knowing) और पूजा (honouring) के अर्थ में क्तान्त (past pass. part.) से समास नहीं होता ।[1] जैसे, राज्ञां मतः । सतां विदितः । साधूनां पूजितः ।

(च) पूर्व, अपर, अधर और उत्तर, अवयव वाचकों (indicating parts) का षष्ठ्यन्त अवयवी-वाचक (indicating whole of the same object) शब्दों के साथ समास होता है । पूर्व आदि शब्द पहले आते हैं[2] । ऐसे ही अर्ध (half) का षष्ठ्यन्त अवयवी के साथ समास होता है[3] । जैसे, पूर्वकायः (पूर्वं कायस्य), अपरकायः, अधरकायः । अर्धपिप्पली (अर्धं पिप्पल्याः) ।

(६) सप्तमी-तत्पुरुष में पूर्व-पद सप्तम्यन्त होता है ।

सप्तम्यन्त शब्दों का शौण्ड, धूर्त, कितव, प्रवीण, निपुण, पण्डित, पटु, कुशल, तथा सिद्ध, शुष्क, पक्व, बन्ध आदि शब्दों तथा विविक्तदन्त प्रत्ययान्तों (य) के साथ, यदि ऋण गम्यमान (implied) हो, सप्तमी-तत्पुरुष समास होता है । जैसे, अक्षशौण्डः (अक्षेषु शौण्डः) 'skilled in dice', अक्षकितवः, वाक्पटुः (वाचि पटुः), सभापण्डितः (wise in assembly) । वाराणसीसिद्धः (वाराणस्यां सिद्धः) आतपशुष्कः (आतपे शुष्कः) 'dried in the sun', तैलपक्वः 'fried in oil', चक्रबन्धः (चक्रे बन्धः), मासदेयम् (मासे देयम्, ऋणम्) ।

अलुक् तत्पुरुष ।

२३७. कई तत्पुरुष समासों में पूर्व-पद की विभक्ति का लोप (लुक्) नहीं होता । इन्हें अलुक्-तत्पुरुष (dependents retaining case terminations) कहते हैं । जैसे, (२) धनंजयः 'winning wealth' (Arjuna) । (३) ओजसाकृतम् 'done with might', जनुषान्धः 'जन्म से अंधा', आत्मनाद्वितीयः 'second by himself', सहसाकृतम् इत्यादि । (४) परस्मैपदम् 'word for another',

१. क्तेन च पूजायाम् । २. २. १२ । २. पूर्वापराधरोत्तरमेकदेशिनैकाधिकरणे । २. २. १ । ३. अर्धं नपुंसकम् । २. २. २ ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आत्मनेपदम् voice for one's self', परस्मैभाषा, आत्मनेभाषा। (५) स्तोकान्मुक्तः 'released with little', अल्पान्मुक्तः, अन्तिकादागतः दूरादागतः कृच्छ्रादागतः। (६) वाचस्पतिः 'lord of speech', देवानांप्रियः 'a fool', चौरस्यकुलम्, वाचोयुक्तिः, दिशोदण्डः, पश्यतोहरः, दिवोदासः, दिवस्पतिः, शुनःशेपः, शुनःपुच्छः। दास्याःपुत्रः। (७) युधिष्ठिरः 'firm in battle' (Yudhistra), खेचरः 'moving in sky bird', सरसिजम्, जलेशयम, पंकेरुहः, कर्णेजपः, स्तम्बेरमः 'elephant', शरदिजः, प्रावृशिजः, वर्षेजः, हृदिस्पृक्, इत्यादि।

नञ्-तत्पुरुष।

२३८. यदि तत्पुरुष समास का पूर्व-पद न (नञ्) हो तो इसे नञ्-तत्पुरुष कहते हैं[1]। उत्तर-पद परे होने पर न (नञ्) के न् का लोप हो जाता है और अ शेष रहता है (हलादि उत्तर-पद होने पर)[2]। जैसे, (न ब्राह्मणः) अब्राह्मणः, (न वृषलः) अवृषलः, (न धार्मिकः) अधार्मिकः।

यदि उत्तर-पद अजादि हो तो अ को न का आगम (=अन) होता है[3]। जैसे, (न अजः) अनजः, (न अश्वः) अनश्वः अनुपलब्धिः। अपवाद—नकुल, नख, नपुंसक, नक्षत्र, नक्र, नाक, नग या अग।

(ख) कर्मधारय 'Descriptive Determinatives'.

२३९. कर्मधारय (descriptive determinative) समास में पूर्व-पद उत्तर-पद की किसी विशेषता को कहता है (describes) पूर्वपद विशेषण का काम देता है। कर्मधारय तत्पुरुष ही होता है, जिसमें दोनों पद समानाधिकरण (in the same case) होते हैं[4]। तत्पुरुष में पूर्व-पद प्रथमा के अतिरिक्त किसी विभक्ति में होता है, परन्तु कर्मधारय में दोनों पदों की एक ही विभक्ति होती है। जैसे, कृष्णसर्पः (कृष्णश्चासौ सर्पश्च)।

(१) दो समानाधिकरण संज्ञाओं का कर्मधारय समास होता है। जैसे, राजर्षिः (राजा चासौ ऋषिश्च) 'king-sage', स्त्रीजनः 'woman-folk'.

---

१. नञ्। २. २. ६। २. नलोपो नञः। ६. ३. ७३। ३. तस्मान्नुडचि ६. ३. ७४। ४. तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः। १. २. ४२.

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) समानाधिकरण में प्रायः उपमा (comparison) भी पाई जाती है। उपमान-वाचक (denoting standard of comparison) सुबन्तों का साधर्म्य-वाचक (denoting common quality) सुबन्तों के साथ समास होता है[1]। जैसे, घनश्यामः (घन इव श्यामः) 'dark as a cloud', चन्द्रसुन्दरः (चन्द्र इव सुन्दरः) मृगचपला (मृगी इव चपला। इसे उपमानपूर्वपदकर्मधारय कहते हैं।

(ख) उपमेय-वाचक (denoting object of comparison) सुबन्तों का उपमान-वाचक (denoting standard of comparison- सुबन्त, व्याघ्र, सिंह, चन्द्र, कमल, आदि के साथ समास होता है[2]। जैसे, पुरुषव्याघ्रः (पुरुषो व्याघ्र इव) 'man-tiger', मुखचन्द्रः (मुखं चन्द्र इव) 'face-moon', चरणकमलम्, पादपद्म 'feet-lotus', वाङ्मधु 'speech-honey'। इसे उपमानोत्तरपदकर्मधारय समास कहते हैं।

मुखचन्द्रः का विग्रह 'मुखं चन्द्रः इव' या 'मुखम् एव चन्द्रः' दोनों प्रकार हो सकता है। इव के साथ उपमा (simile) और एव के साथ रूपक (metaphor) अलंकार होगा।

(२) विशेषण का विशेष्य (noun) के साथ समास होता है[3]। जैसे, नीलोत्पलम् (नीलञ्च तत् उत्पलञ्च) रक्तपद्मम्, पीताम्बरम्।

(३) दो विशेषण या क्तान्तों का भी कर्मधारय समास होता है (देखो २३२ क, ख)। जैसे, शुक्लकृष्णः, पीतप्रतिबद्धः, गृहीतप्रतिमुक्तः।

(क) यदि स्त्रीलिंग विशेषण कर्मधारय में पूर्वपद हो तो समास में पुं० हो जाता है[4]। जैसे, सुन्दरभार्या (सुन्दरी भार्या) परमगतिः, महानवमी, कृष्णचतुर्दशी, पाचकस्त्री, सुकेशभार्या (सुकेशी भार्या), परन्तु सुतनूभार्या (ऊकारान्त स्त्री०)

(४) यदि कर्मधारय समास में कु[5] पूर्व-पद हो तो इसे (क) कत्

---

१. उपमानानि सामान्यवचनैः। २. १. ५५.। २. उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्याप्रयोगे। २. १. ५६। व्याघ्रादयः—व्याघ्र, सिंह, ऋक्ष, ऋषभ, चन्दन, वृक, वृष, वराह, हस्तिन्, रुरु, पृषत्, पुण्डरीक, चन्द्र, पद्म, कमल, किसलय। ३. विशेषणं विशेष्येण बहुलम्। २. १. ५७। ४. पुंवत्कर्मधारयजातीयदेशीयेषु। ६. ३. ४२। ५. कोः कत्तत्पुरुषेऽचि। रथवदयोश्च। तृणे च। का पथ्यक्षयोः। ईषदर्थे। विभाषा पुरुषे। कवं चोष्णे। ६. ३. १०१, १०२, १०५–१०७।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदेश होता है अजादि, रथ, वद, आदि उत्तरपद होने पर, (ख) विकल्प से का होता है पुरुष या जल उत्तरपद होने पर, और (ग) विकल्प से का या कव होता है उष्ण परे होने पर। जैसे, (क) कदश्वः (कुत्सितोऽश्वः) 'bad horse' कदन्नम्, कद्रथः 'bad chariot', कद्वदः 'bad speaker'। (ख) कापुरुषः या कुपुरुषः 'bad man', काजलम् 'little water', (ग) कोष्णं, कवोष्णं, या कदुष्णम् 'luke-warm'।[1]

द्विगु 'Numeral Descriptive'

२४०. जिस कर्मधारय समास में पूर्व-पद संख्यावाचक (numeral) हो उसे द्विगु (numeral descriptive) कहते हैं।[2] द्विगु समास का लिंग नपुंसक[3] या स्त्री० होता है और यह समाहार (aggregate) का वाचक होता है। द्विगु एकवचनान्त होता है।[4] जैसे, त्रिभुवनम् (त्रयाणां भुवनानां समाहारः), चतुर्युगम्, पञ्चपात्रम् (पञ्चानां पात्राणां समाहारः), पञ्चगवम्, पञ्चराजम्।

(क) यदि उत्तर-पद अकारान्त हो (भुवन, युग, आदि के अतिरिक्त) तो द्विगु स्त्रीलिंग में होता है और ई स्त्री-प्रत्यय लगता है। जैसे, त्रिलोकी (त्रयाणां लोकानां समाहारः) 'three-worlds', पञ्चवटी (पञ्चानां वटानां समाहारः) शताब्दी 'a century', सप्तशती, अष्टाध्यायी।

(ख) तद्धितार्थ में द्विगु होता है और इसमें समास पर तद्धित-प्रत्यय (secondary suffix) लगता है। जैसे द्विगुः (द्वाभ्यां गोभ्यां क्रीतः) षाण्मातुरः (षण्णां मातॄणाम् अपत्यम्), पञ्चकपालः।

(ग) द्विगुसमास किसी उत्तर-पद के साथ पूर्व-पद की भाँति समस्त होता है। जैसे, चतुर्जनदृष्टम् (चतुर्भिः जनैः दृष्टम्) पञ्चहस्तप्रमाणः (पञ्च हस्ताः प्रमाणम् अस्य), पञ्चगवधनः (पञ्च गावः धनं यस्य)।

---

१. कुछ अनियमित कर्मधारय ये हैं :—मयूरव्यंसकादि—मयूरव्यंसकः (मयूरश्चासौ व्यंसकश्च), अकिंचनः, ग्रामान्तरम्, चिन्मात्रम्। शाकपार्थिवादि—शाकपार्थिवः (शाकप्रियः पार्थिवः), देवब्राह्मणः (देवपूजको ब्राह्मणः)। २. संख्यापूर्वो द्विगुः। २. १. ५२। ३. स नपुंसकम्। २. ४. १७। ४. द्विगुरेकवचनम्। २. ४. १। तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च। २. १. ५१

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ग) प्रादि, गति और उपपद तत्पुरुष

'Prepositional and Upapada Determinatives'

२४१. (क) यदि तत्पुरुष का पूर्व-पद प्रादि (preposition) हो तो उस समास को प्रादि-तत्पुरुष कहते हैं। जैसे, प्रवातः (प्रकृष्टो वातः), प्राचार्यः (प्रगतः आचार्यः), अतिमालः (अतिक्रान्तो मालाम्), अतिरथः।

(क) यदि तत्पुरुष का पूर्व-पद गति (indeclinable particle) हो तो समास को गति-तत्पुरुष कहते हैं। जैसे प्रादुर्भूय, अलंकृत्य, ऊरीकृत्य 'having accepted', पुरस्कृत्य, पुरस्कारः, तिरस्कारः, सत्कारः, अलंकृतिः।

(ग) यदि तत्पुरुष का उत्तर-पद उपपद (a verbal noun in Krit suffix) हो तो समास को उपपद-तत्पुरुष कहते हैं। जैसे, कुम्भकारः, (कुम्भं करोति), सामगः (साम गायति), वरदः 'boon-granting', विश्वजित् 'all-conquering', कर्मकृत् 'doing-work, laborious'। परन्तु पयोधरः (पयसां धरः, धरतीति धरः)।

General rules for Dependent Compounds.

२४२. तत्पुरुष समास के अन्त में (उत्तर-पद होने पर),—

(१) अङ्गुलि को अङ्गुल आदेश होता है। यदि पूर्व पद संख्यावाचक (numeral) या अव्यय (indeclinable) हो।[1] जैसे, द्व्यङ्गुलम् (द्वे अङ्गुली प्रमाणमस्य), त्र्यङ्गुलम् , निरङ्गुलम् (निर्गतम् अङ्गुलिभ्यः) अत्यङ्गुलम्।

(२) रात्रि को रात्र आदेश होता है यदि संख्यावाचक, अव्यय, एकदेशवाचक (words denoting parts), सर्व, संख्यात और पुण्य पूर्व पद हों[2]। जैसे, दशरात्रम् (दशानां रात्रीणां समाहारः), द्विरात्रम् , अतिरात्रः (अतिक्रान्तः रात्रीम्) पूर्वरात्रः (पूर्वं रात्रेः) 'firs part of night', मध्यरात्रः, सर्वरात्रः (सर्वा रात्रिः), संख्यातरात्रः (संख्याता 'counted' रात्रिः), पुण्यरात्रः 'holy-night'। संख्यावाचक के साथ रात्र नपुं० होता है। अहोरात्रः द्वन्द्व है।

---

१. तत्पुरुषस्याङ्गुले संख्याव्ययादेः। ५. ४. ८६। २. अहः सर्वैकदेशसंख्यातपुण्याच्च रात्रेः। ५. ४. ८७।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३) सक्थि (thigh) को सक्थ आदेश होता है यदि उत्तर, पूर्व, मृग, या उपमानवाचक (denoting examplar) शब्द पूर्व-पद हो[1]। जैसे, उत्तरसक्थम् 'upper part of thigh', पूर्वसक्थम्, मृगसक्थम् 'deer's thigh', फलकसक्थम् (फलकमिव सक्थि) 'board-like-thigh'।

(४) अक्षि को अक्ष आदेश होता है जब इसका अर्थ आंख न हो। जैसे, गवाक्षः (गवाम् अक्षि इव), परन्तु बालकाक्षि (बालकस्य अक्षि)।

(५) राजन् 'king', अहन् 'day', सखि 'friend' को क्रमशः राज, अह, सख आदेश होता है।[2] जैसे, वङ्गराजः (वङ्गानां राजा), कुरुराजः, । उत्तमाहः (उत्तमम् अहः), सप्ताहः, एकाहः, पुण्याहम्। रामसखः (रामस्य सखा), परमसखः 'dearest friend'।

परन्तु अहन् 'day' को अह्न आदेश होता है यदि अव्यय, एकदेशवाचक (words denoting parts), सर्व, पुण्य, आदि पूर्वपद हों।[3] जैसे, प्राह्णः[4] (प्रारंभः अह्नः) 'first day', मध्याह्नः (मध्यम् अह्नः) 'mid-day', अपराह्णः, सायांह्नः, पूर्वाह्णः, सर्वाह्णः, पुण्याहम्।

(६) उक्षन् को उक्ष आदेश होता है यदि वृद्ध, महत्, या जात पूर्वपद हो। जैसे, वृद्धोक्षः 'old bull' महोक्षः (महान् उक्षा), जातोक्षः।

महत् पूर्व-पद को महा आदेश होता है। (कर्मधारय और बहुव्रीहि में) जैसे महादेवः, महाबाहुः। परन्तु महत्सेवा (महतः सेवा)।

(७) पथिन्[5] को पथ (पुं०) आदेश होता है। जैसे, राजपथः 'royal road' धर्मपथः। परन्तु अव्यय के साथ और द्विगु समास में नपुं० होता है। जैसे, विपथम्, त्रिपथम्, अपथम्।

(८) छाया को छाय (नपुं०) हो जाता है यदि छाया देने वाली वस्तुएं बहुत हों (बाहुल्य)।[6] जैसे, इक्षुच्छायम् (इक्षूणां छाया), लताच्छायम्। परन्तु तरुच्छायम् या तरुच्छाया।

---

१. उत्तरमृगपूर्वाच्च सक्थ्नः। ५. ४. ९८। २. राजाहः सखिभ्यष्टच्। ५. ४. ९१। ३. अह्नोऽह्न एतेभ्यः। ५. ४. ८८। ४. अह्नोऽदन्तात्। ८. ४. ७। अकारान्त पूर्वपद के र् से परे अह्न के न् को ण होता है। ५. पथो विभाषा। ५. ४. ७२। अपथं नपुंसकम्। २. ४. ३०। ६. छाया बाहुल्ये। २. ४. २२।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(९) समासान्त के नियम नञ्-तत्पुरुष पर लागू नहीं[1]। जैसे, अराजा, असखा।

अभ्यास ३२

१. तत्पुरुष समास किसे कहते हैं? इसके कितने भेद हैं? सोदाहरण लिखो।
२. अलुक्-समास किसे कहते हैं? इसके प्रसिद्ध उदाहरण दो।
३. तत्पुरुष का निषेध किन अवस्थाओं में होता है? सोदाहरण लिखो।
४. नीचे लिखे शब्द-समूहों के लिए समस्त पद लिखोः—

वर्षं भोग्यः। धान्येन अर्थः। मात्रा समः। दध्ना उपसिक्तम् ओदनम्। द्विजाय अयम्। कल्पनाया अपोढः। घटस्य कर्ता। पयसां धरः। विद्यायाः स्नातकः। साधूनां पूजितः। पूर्वं कायस्य। स्तोकात् मुक्तः। वाचः युक्तिः। घन इव श्यामः। मुखं चन्द्र इव। मुखमेव चन्द्रः। प्रथमं गृहीतः पश्चान्मुक्तः। प्रगतः आचार्यः। अतिक्रान्तो मालाम्। साम गायति। निर्गतमङ्गुलिभ्यः। पूर्वं रात्रेः। मृगस्य सक्थि। मृगस्य अक्षि। कुरूणां राजा। परमश्चासौ सखा च। प्रारंभः अह्नः। महतः सेवा। महान् चासौ देवः च। लतानां छाया। न राजा।

५. नीचे लिखे समासों का विग्रह करोः—

केशपुष्पैः। अक्षसूत्रम् नियमस्थया। हरिणाङ्गना। पुत्रवात्सल्यम्। रशनागुणास्पदम्। षट्पदश्रेणिभिः। बुद्धगतः। अङ्गविलेपनम्। धृतिहीना। शार्दूलगणसेवितम्। ऋद्धियुक्ताः। धर्मचारिणी। अनार्यजुष्टम्। जनाधिपः। कार्पण्यदोषात्। हृदयदौर्बल्यम्। रुधिरप्रदिग्धान्। जन्मकर्मफलप्रदः। अकर्मणि। किंसखा। सर्वसम्पदः। गुणानुरोधेन। गुरूपदिष्टेन। अशङ्किताकारः। मनोरमा। शमीतरु। गिरिरेणुरूषितः। पूर्वकायः। तपःक्षमम्। अन्तःकरणप्रवृत्तयः। अन्तिकचरः। धर्मारण्यम्। स्यन्दनालोकभीतः। पद्मतारः। राजर्षिकन्यकाः। वेतसगृहम्। कुसुमप्रसूतिसमये। पतिगृहः। गृहिणीपदम्। दारत्यागी। चित्रार्पिता। सुहृज्जनः। पुरुषकेसरिणा। धर्माभिषेकक्रिया। आखण्डलसमः। पञ्जरस्था। बलिन्याकुला। विकचकमलैः। वदनमदिरा। क्षीरोदनः।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

१. नञस्तत्पुरुषात् ५. ४. ७१।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६. नीचे लिखे समासों के रूप शुद्ध करो और हेतु भी दो :—

पितासमः। वाचकलहः। ओदनपाचकः। वज्रभर्ता। काककार्ष्ण्यम्। फलतृप्तः। कायाधरः। अल्पमुक्तः। दिवदासः। अराजः। चन्द्रमुखः। निरङ्गुलिः। पूर्वरात्रिः। दशरात्रः। पूर्वसक्थि। मृगाक्षाः। मद्रराज्ञः। परमसखा। पुण्याहः। कृष्णाचतुर्दशी। सुकेशीभार्या। सुतनुभार्या। कश्वः। कान्नम्। कुजलम्। चतुर्युगी। त्रिलोकम्। महोक्षा। इक्षुच्छाया।

७. संस्कृत में अनुवाद करो, मोटे छपे शब्दों का अनुवाद समस्त पदों से करो:—

उसका वनवास एक वर्ष तक भोगने को था। वह शक्ल में तो आपसे मिलता है परन्तु आयु में पांच वर्ष छोटा है। वह बोलने में चतुर है इसलिए सभा में पण्डित माना जाता है। सात ऋषियों ने पुरुषों में शेर, राम की पूजा की। बच्चे का चाँद सा मुखड़ा सब को प्यारा लगता है। राज़ा के चरण-कमलों में उसकी धार्मिक प्रजा ने वन्दना की। उसकी वाणी के मधु ने सब को मोह लिया। उसका रंग बादल सा काला था। वहां आधे रास्ते पर एक सुन्दर मन्दिर बना है। वह क्या दोस्त है जो अच्छी सलाह नहीं देता। इन्द्र तीनों लोकों का राजा है। आज तेज़ हवा चल रही है। सब को जीतने वाले योधा का सब सम्मान करते हैं। रात के पहले हिस्से में मुझे नींद न आई परन्तु आधी रात के पीछे आँख लगी। किसी शुभ दिन मगध के राजा ने सारे संसार की विजय के लिए प्रस्थान किया। सारा दिन वह काम करता रहा परन्तु दोपहर को उसने आराम किया। बड़ी सड़क पर एक बूढ़ा बैल बैठा था। किसान गन्नों की छाँह में सोता था। मेरे दोस्त (सखा) ने आपकी बहुत (महत्) सेवा की। गरमी से सताए हुए मनुष्य के लिए वृक्ष की छाँह आराम देने वाली है। कोसे पानी से हाथ पाँव धोओ। आपका सखा बहुत दूर से आया है। मुझे कुण्डलों के लिए सोना दो। ज़बान की लड़ाई में वह बड़ा प्रवीण है। यज्ञ की समिधा धूप में सुखाई हुई हैं। यह ऋण एक साल में देना है।

— —

३. बहुव्रीहि समास 'Possessive Compounds'.

२४३. बहुव्रीहि (Possessive) समास में दो या अधिक प्रथमान्त समानाधिकरण पद होते हैं। पूर्व-पद उत्तर-पद का विशेषण होता है और

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों समस्त होकर अन्य-पद के विशेषण बनते हैं।[1] यह अन्य-पद समास में शामिल नहीं होता, परन्तु इस का अर्थ प्रधान रहता है। बहुव्रीहि समास के विग्रह में यह अन्य पद यत् सर्वनाम से जाहिर होता है, क्योंकि किसी न किसी विभक्ति में यत् विग्रह में ज़रूर रहता है। लिंग, वचन और विभक्ति में बहुव्रीहि की समता इसी संज्ञा (अन्य पद) के साथ होती है। जैसे, पीताम्बरः (पीतम् अम्बरं यस्य सः, हरिः) 'wearing yellow garment, पीले कपड़ों वाला (हरि)', इन्द्रशत्रुः (इन्द्रः शत्रुः यस्य, वृत्रः) 'having Indra as a foe', बहुव्रीहि प्राप्तोदकः (प्राप्तम् उदकं यम्, ग्रामः), ऊढरथः (ऊढः रथः येन, अनड्वान्), उपहृतपशुः (उपहृतः पशुः यस्मै, रुद्रः), वीरपुरुषः (वीराः पुरुषाः यस्मिन्, ग्रामः)।[2]

(क) यदि बहुव्रीहि के दोनों पद समानाधिकरण (in apposition) न हों तो विशेषण उत्तरपद और विशेष्य पूर्वपद होता है। जैसे, चक्रपाणिः (चक्रं पाणौ यस्य, विष्णुः), 'having a disc in hand', चन्द्रकान्तिः (चन्द्रस्य इव कान्तिर्यस्य) 'moon-lustered', शशिशेखरः (शशी शेखरे यस्य) 'moon-crested', कुशहस्तः (कुशो हस्ते यस्य) 'with kusa grass in hand'.

(ख) अ (negative particle), उपसर्ग (preposition) और सह (इसे विकल्प से स आदेश होता है) बहुव्रीहि का पूर्वपद हो सकते हैं। जैसे, अपुत्रः (अविद्यमानः पुत्रः यस्य) 'having no son, sonless', निर्घृणः (निर्गता घृणा यस्य) 'ruthless', अधोमुखः 'down-cast', विजीवितः 'dead', सहपुत्रः या सपुत्रः (पुत्रेण सह) 'accompanied by his son', सभार्यः।

(ग) अन्तराल (direction between two directions)

---

१. अनेकमन्यपदार्थे। २. २. २४। २. 'पीताम्बर' तत्पुरुष और बहुव्रीहि दोनों प्रकार का समास हो सकता है। तत्पुरुष और बहुव्रीहि में यह भेद है कि तत्पुरुष में पूर्वपद उत्तरपद का विशेषण होता है और बहुव्रीहि में दोनों पद मिलकर अन्य पद के विशेषण होते हैं। तत्पुरुष में पीत-अम्बर का विशेषण है (पीतम् अम्बरम्), परन्तु बहुव्रीहि (पीतम् अम्बरं यस्य) यह तीसरे पद (हरिः) का विशेषण है। तत्पुरुष को बहुव्रीहि में बदला जा सकता है। वेद में इन में स्वर (accent) का भेद है।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अर्थ में दो दिशाओं के नाम बहुव्रीहि समास में प्रयुक्त होते हैं।[1] जैसे, उत्तरपूर्वा (उत्तरस्याः पूर्वस्याश्च दिशोऽन्तरालम्) 'north-east'. दक्षिणपूर्वा ।

(घ) यदि बहुव्रीहि में आ या ई स्त्री-प्रत्ययान्त (ऊ-प्रत्ययान्त नहीं) विशेषण का समानाधिकरण स्त्री-प्रत्ययान्त विशेष्य से समास हो तो विशेषण का पुँल्लिंग रूप प्रयुक्त होता है और विशेष्य का अन्त्य स्वर ह्रस्व हो जाता है।[2] जैसे, निर्मलमतिः (निर्मला मतिः यस्य) 'clear-headed', छिन्नग्रीवः (छिन्ना ग्रीवा यस्य), चित्रगुः (चित्राः गावः यस्य), रूपवद्भार्यः ।

परन्तु यदि प्रिया, मनोज्ञा, कल्याणी, सुभगा, कान्ता, चपला, स्वसा, दुहिता, अबला, तनया, इत्यादि उत्तरपद हों तो विशेषण का स्त्री-प्रत्यय बना रहता है। जैसे, शोभनाप्रियः (शोभना प्रिया यस्य) 'having a beautiful spouce', सुलोचनाकान्तः (सुलोचना कान्ता यस्य) ।

२४४. बहुव्रीहि समास के अन्त में (उत्तर-पद में) --

(१) अक्षि और सक्थि को अक्ष और सक्थ आदेश होता है यदि स्वाङ्ग (parts of one,s body) अभिप्रेत हो। जैसे, कमलाक्षः (कमल-वत् अक्षिणी यस्य), कमलाक्षी स्त्री॰ 'lotus-eyed', दीर्घाक्षः (दीर्घे अक्षिणी यस्य) 'long-eyed', दीर्घसक्थः (दीर्घे सक्थिनी यस्य) long-thighed', परन्तु दीर्घसक्थि शकटम् ।

(२ धर्म को धर्मन् आदेश होता है यदि इससे पूर्व केवल एक पद हो। जैसे, समानधर्मा (समानः धर्मः यस्य) 'having equal condition', कल्याणधर्मा, मरणधर्मा 'fated to die'.

(३) धनुष् को धन्वन् आदेश होता है। जैसे, अधिज्यधन्वा (अधिज्यं धनुर्यस्य) 'with strung bow', गाण्डीवधन्वा 'with Gandiva as his bow, Arjuna', शार्ङ्गधन्वा, सुधन्वा ।

(४) प्रजा (progeny) और मेधा (intelligence) को क्रमशः

---

१. दिङ्नामान्यन्तराले । २. २. २६ । २. स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ् समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणीप्रियादिषु । ६. ३. ३४ ।

(१) बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात्षच् । ५. ४. ११३ । (२) धर्मादनिच् केवलात् । ५. ४. १२४. । (३) धनुषश्च । ५. ४. १३२ । (४) नित्यमसिच् प्रजामेधयोः । ५. ४. १२२ ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रजस् और मेधस् आदेश होता है। जैसे, सुप्रजाः (शोभना प्रजा यस्य) 'having good progeny', दुष्प्रजाः, अप्रजाः। सुमेधाः (शोभना मेधा यस्य) 'of good intellect', दुर्मेधाः 'having bad intellect'; अमेधाः।

(५) गन्ध 'smell' को गन्धि आदेश होता है यदि (क) उत्, पूति या सु पूर्वपद हो और (ख) अल्पमेल (slight admixture) या (ग) उपमान (comparison) पाया जाए। जैसे, (क) उद्गन्धिः (उद्गतः गन्धः यस्य) 'whose smell is spread about', पूतिगन्धिः 'having repulsive smell', सुगन्धिः। (ख) घृतगन्धि (घृतस्य गन्धः यस्मिन् तत्, भोजनम्) 'having little ghee', दधिगन्धि। (ग) पद्मगन्धि (पद्मस्य इव गन्धः यस्य) 'having lotus smell'.

(६) जाया 'wife' को जानि आदेश होता है। जैसे, युवजानिः, (युवतिः जाया यस्य सः) 'having a young wife', भूजानिः 'king'.

(७) नासिका को नस् आदेश होता है यदि समास संज्ञा हो या उपसर्ग पूर्वपद हो। जैसे, उन्नसः (उद्गता नासिका यस्य) 'having prominent nose', प्रणसः 'having good nose', परन्तु स्थूलनासिकः।

(८) हृदय को हृत् आदेश होता है यदि सु या दुस् पूर्वपद हो मित्र या शत्रु के अर्थ में। जैसे सुहृत् (शोभनं हृदयं यस्य) 'a friend', दुर्हृत् 'a foe'। परन्तु सुहृदय 'good-intentioned' (विशेषण)।

(९) दन्त और पद को क्रमशः दत् और पाद् आदेश होता है यदि पूर्वपद सु या संख्यावाचक हो। सुदन् (शोभना दन्ता यस्य), सुदती (स्त्री०) 'having good teeth, young', द्विदन्, द्विदती (स्त्री०), फलदती। सुपाद् सुपदी (स्त्री०), द्विपात्, द्विपदी, त्रिपदी।

(१०) मूर्धन् को मूर्ध आदेश होता है यदि द्वि या त्रि पूर्व-पद

---

(५) गन्धस्येदुत्पूतिसुसुरभिभ्यः। ५. ४. १३५। (६) जायाया निङ्। ५. ४. १३४। (७) अञ् नासिकायाः संज्ञायां नसं चास्थूलात्। उपसर्गाच्च। ५. ४. ११८-११९। (८) सुहृद्दुर्हृदौ मित्रामित्रयोः। ५. ४. १५०। (९) वयसि दन्तस्य दतृ। स्त्रियां संज्ञायाम्। ५. ४. १४१, १४३। पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः। कुम्भपदीषु च। संख्यापूर्वस्य। ५. ४. १३८-१३९।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हों[1]। लोमन् को अन्तर् और बहिर् के पीछे लोम आदेश होता है[2]। जैसे, द्विमूर्धः (द्वौ मूर्धानौ यस्य), त्रिमूर्धः 'three headed', परन्तु दशमूर्धा। अन्तर्लोमः, बहिर्लोमः।

२४५. नीचे लिखी अवस्थाओं में बहुव्रीहि समास में उत्तर-पद के अन्त में क का आगम होता है:—

(१) ईकारान्त और ऊकारान्त (नदी गण) स्त्री० शब्द तथा ऋकारान्त शब्दों के अन्त में क का आगम होता है। जैसे, बहुनदीकः (देशः) 'having many rivers', मृतपत्नीकः, बहुस्त्रीकः, दुष्टवधूकः, सवधूकः, बहुबन्धूकः। बहुभ्रातृकः 'having many brothers', जीवत्पितृकः, देवमातृकः, (देवी माता यस्य), बहुकर्तृकः (बहवः कर्तारः यस्मिन्)।

(२) इन् अन्त वाले बहुव्रीहि को स्त्री० में क का आगम होता है। क से पूर्व न् का लोप हो जाता है[4]। जैसे, बहुधनिका (बहवः धनिनः यस्यां, नगरी) 'having many rich men', बहुवाग्मिका (सभा) 'having many orators'.

(३) उरस्, सर्पिस्, उपानह्, दधि, शालि का एकवचन में और पुंस्, अनडुह्, पयस्, नौ, लक्ष्मी को एकवचन में नित्य तथा द्वि० और बहुवचन में विकल्प से क का आगम होता है[5]। जैसे, व्यूढोरस्कः (व्यूढम् उरः यस्य) 'having well-developed chest', प्रियसर्पिष्कः 'fond of ghee', एकपुंस्कः (एकः पुमान् यस्य) 'having one man', स्थिरलक्ष्मीकः 'of abiding fortune'। परन्तु द्विपुमान् या द्विपुंस्कः (द्वौ पुमांसौ यस्य सः)

२४६. युद्ध की प्रवृत्ति में (in a fight with each other) सप्तम्यन्त (locative) सरूप-पद (words of the same form) ग्रहण-विषय (denoting something that can be seized) में अथवा तृतीयान्त (instrumental) सरूप पद प्रहरणविषय (denoting weapons or things used as weapons)

---

१. द्वित्रिभ्यां ष मूर्ध्नः। ५. ४. ११५। २. अन्तर्बहिर्भ्यां च लोम्नः। ५. ४. ११७। ३. नद्यृतश्च। ५. ४. १५३। ४. इनः स्त्रियाम्। ५. ४. १५२। ५. उरःप्रभृतिभ्यः कप्। ५. ४. १५१।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में बहुव्रीहि में समस्त होते हैं[1]। इसमें कर्म-व्यतिहार (exchange of blows) पाया जाता है। इसमें पूर्वपद के अन्त्य स्वर को दीर्घ और उत्तर पद के स्वर को इ आदेश होता है। अन्त्य उ को इ से पूर्व गुण होता है। ये समास अव्यय होते हैं। जैसे, केशाकेशि (केशेषु केशेषु गृहीत्वा इदं युद्धं प्रवृत्तम्) 'केसोंकेसी', दण्डादण्डि (दण्डैश्च दण्डैश्च प्रहृत्य इदं युद्धं प्रवृत्तम्) 'डंडाडंडी'। मुष्टीमुष्टि। 'मुक्कामुक्की'। मुसलामुसलि 'मुसलोंमुसली'। बाहाबाहवि या बाहूबाहवि 'बाहोंबाहीं'। असयसि 'तलवारोंतलवारी'। हस्ताहस्ति 'हाथोंहाथी'।

अभ्यास ३४.

१. बहुव्रीहि समास किसे कहते हैं? बहुव्रीहि और तत्पुरुष में क्या भेद है? सोदाहरण स्पष्ट करो।

२. बहुव्रीहि समास के अन्त में कप् क का आगम होता है? सोदाहरण लिखो

३. नीचे लिखे शब्द-समूहों के स्थान पर समस्त-पद प्रयुक्त करो।:—

निर्मलं जलं यस्याः। प्रफुल्लानि कमलानि यस्मिन्। निर्मला मतिः यस्य। सती बुद्धिः यस्य। बह्वयः नाड्यः यस्मिन्। शुभ्रा तनूः यस्य। शीता गौः यस्य। सुलोचना कान्ता यस्य। मृता पत्नी यस्य। ध्वस्ता चमू यस्य। देवो माता यस्य। बह्वयः नद्यः यस्मिन्। स्थिरा लक्ष्मीः यस्य। बहवः वाग्मिनः अस्याम्। अल्पं वयः यस्य। मुण्डितं शिरः यस्य। दश मूर्धानः यस्य। विशाले अक्षिणी यस्याः। अविद्यमाना प्रजा यस्य। दृष्टं धर्मं यैः। दध्नः गन्धं यस्मिन् तत्। द्वौ पुमांसौ यस्य। शोभना दन्ता यस्याः। भूः जाया यस्य। गाण्डीवः धनुः यस्य। उत्तरस्याः पूर्वस्याश्च दिशोऽन्तरालम्। शशी शेखरे यस्य। चक्रं पाणौ यस्य। केशेषु केशेषु गृहीत्वा इदं युद्धं प्रवृत्तम्। धृता माला येन।

४. नीचे लिखे समासों का विग्रह करो :—

दीर्घबाहुः। शुभ्रतनुः। शोभनाप्रियः। बहुकुमारीकः। सोपा-

---

१. तत्र तेनेदमिति सरूपे। २. २. २७। सप्तम्यन्ते ग्रहणविषये सरूपे पदे तृतीयान्ते च प्रहरणविषये इदं युद्धं प्रवृत्तमित्यर्थे समस्यते कर्मव्यतिहारे द्योत्ये स बहुव्रीहिः। सिद्धान्तकौमुदी। इच्कर्मव्यतिहारे। ५. ४. १२७। ओर्गुणः। ६. ४. १४६।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नत्कः। शिलोरस्कः। निरर्थकम्। बहुधनिका। त्रिमूर्धः। बहुकर्तृकः। प्रियसर्पिष्कः। सुपदी। प्रणसः। पद्मगन्धिः। मरणधर्माणः। कमलाक्षी। निर्घृणः। चन्द्रकान्तिः। अचिन्त्यहेतुकः। बालमृगाक्षी। त्रिलोचनः। स्मेरमुखः। अमंगलाभ्यासरतिः। व्यवस्थापितवाक्। कृतारिषड्वर्गजयः। प्रशान्तबाधम्। वसूपमानस्य। चारचक्षुषः। दृष्टधर्मप्रचारा। अविदितगतयामा। आविर्भूतज्योतिषाम्। ख्यातिकामैः। धृतप्रेमा। साक्षात्कृतधर्माणः। विन्यस्तरूपा। निःसपत्नः। दशमुखः। त्र्यम्बकः। विवृद्धतृष्णः। परिलुप्तधैर्यः। भवनेत्रजन्मा। आत्मयोनिः। अधिकजातलज्जा। विकीर्णमूर्धजा। अधिज्यकार्मुकः। क्षत्रपरिग्रहक्षमा। परोक्षमन्मथः। समुद्ररसना। मदरक्षणी। तपोधनः। अनन्यमानसा। अग्निगर्भा। संयमधनान्। प्रत्यर्पितन्यासः। सपत्नीकः। अपोढशब्दः। जालग्रथिताङ्गुलिः। जयन्तप्रतिमः। सप्तद्वीपा। मुसलामुसलि। हस्ताहस्ति।

५. नीचे लिखे बहुव्रीहि समासों के रूप शुद्ध करो :—

पाणिचक्रः। कान्तिचन्द्रः। उत्तरपूर्वे। छिन्नाग्रीवा। सुलोचनकान्तः। रूपवतीभार्या। दीर्घाक्षि। कमलाक्षणा। समानधर्मः। चित्रगौ। सुधनुः। शार्ङ्गधनुः। दुर्मेधा। सुगन्धः। पद्मगन्धः। सूपगन्धः। युवजाया। स्थूलनसः उन्नासिकः। द्विदन्ती। त्रिपादी। त्रिमूर्धानः बहुनदी। बहुकर्ता। बहुभ्राता। एकपुमान्। व्यूढोरः। प्रियसर्पिः। दण्डदण्डी। बाहुबाहू।

६. संस्कृत में अनुवाद करो, मोटे छपे शब्दों का अनुवाद समस्तपदों से करो :—

इन्द्र के शत्रु वृत्र ने गौओं को कैद कर लिया। हाथ में चक्र वाले विष्णु भगवान् ने जिस दैत्य ने उनसे वर पाया था उसे मार डाला। चाँद से मुखड़े वाली दमयन्ती को नल ने जंगल में छोड़ दिया। बिना पुत्र का मनुष्य प्रायः दया के बिना होता है। गोपाल शोक से मुँह नीचा किए बैठा था। वह अपनी पत्नी के साथ हरिद्वार गया। कुरुक्षेत्र जालन्धर से दक्षिण-पूर्व की दिशा में है। निर्मल बुद्धि वाला ही इस समस्या को जानेगा। सुग्रीव ने बालि को, जिसकी भार्या मनोज्ञा थी, कैद कर लिया। गाण्डीव धनुष वाले अर्जुन ने कमल सी आँखों वाली द्रौपदी को स्वयंवर में जीता।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मैं अपनी जीतने वाली सेना से आपकी सहायता करूँगा। सब मनुष्य मरने वाले (धर्म) ही हैं। जिसने धर्म को साक्षात् कर लिया है उसे ऋषि कहते हैं। दुष्ट मति वाले मनुष्य की सब निन्दा करते हैं। उस राजा के कोई औलाद न थी। ऐसे ऋषि जिनका तप ही धन है आजकल मिलने कठिन हैं। फूलों की मीठी मीठी गन्ध सारे बाग में फैल गई। जिस भोजन में घी गन्ध मात्र हो वह बलदायक नहीं हो सकता। जिस देश में बहुत नदियां हों वह बहुत धनवाला होता है। उस सभा में बहुत अच्छे वक्ता थे। यह संसार, जिसका कर्ता ईश्वर है, आश्चर्य से भरपूर है। बहुत भाइयों वाले कौरवों से पांच पांडवों ने युद्ध किया। रावण, जिसके दस सिर थें, तीन सिर वाले राक्षस का भाई था। जिसका पिता जीता है वह मनुष्य बड़े अच्छे भाग वाला है। सीता अच्छे दान्तों वाली लड़की है। यह गौ चार दांत वाली है। वे मुक्कामुक्की लड रहे थे।

---

४. अव्ययीभाव समास 'Adverbial Compounds'.

२४७. अव्ययीभाव (adverbial compound) में अव्यय (उपसर्ग या क्रियाविशेषण) का संज्ञा के साथ समास होता है। अव्यय पूर्वपद होता है और समास में इसी का अर्थ प्रधान होता है।[1] समास भी अव्यय-संज्ञक और नपुं० होता है। जैसे, अनुरूपम्।

(क) समास के अन्त्य वर्ण में नीचे लिखे विकार होते हैं:—

(१) दीर्घ स्वर को ह्रस्व, ए, ऐ को इ और ओ, औ को उ आदेश होता है।[2] जैसे, अनुगंगम्, अधिस्त्रि, अनुविष्णु, उपगु, इत्यादि।

(२) अन् अन्त वाले पदों के न् का पुं० और स्त्री० में नित्य और नपुं० में विकल्प से लोप होता है[3]। जैसे, अध्यात्मम्, उपराजम् परन्तु उपचर्मम् या उपचर्म।

(३) दिव्, दिश्, मनस्, शरद्, मानस्, उपानह्, चतुर् आदि शब्दों को नित्य और नदी, गिरि, पौर्णमासी आदि को विकल्प से अ का आगम होता है[4]। अक्षि और पथिन् को अक्ष और पथ आदेश होता

---

१. अव्ययीभावश्च। १. १. ४१। २. गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य। १. २. ४८। ३. अनश्च। नपुंसकादन्यतरस्याम्। ५. ४. १०८—१०९। ४. नदीपौर्णमास्याग्रहायणीभ्यः। गिरेश्च सेनकस्य। ५. ४. ११०, ११२।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
है। जैसे, प्रतिदिवम्, प्रतिदिशम्, उपदिशम्, सुमनसम्, उपशरदम्, इत्यादि। उपनदम्-दि, उपगिरं रि, उपपौर्णमासं-मासि। प्रत्यक्षम्, परोक्षम्, समक्षम्, अनुपथम्।

२४८. अव्ययीभाव समास में अव्यय नीचे लिखे अर्थों में प्रयुक्त होता है[1] :—

(१) विभक्ति (meaning of a case); जैसे, अध्यात्मम् (आत्मनि इति) अधिगोपम्, अधिहरि। (२) सामीप्य (nearness); जैसे, उपगुरु (गुरोः समीपे), उपकूलम्, उपगवम्। (३) अभाव (absence); जैसे, निर्विघ्नम् (विघ्नानामभावः), निर्मक्षिकम्, निर्जनम्। (४) अत्यय (lapse); जैसे, अतिहिमम् (हिमस्यात्ययः); अतिवसन्तम्, अतियौवनम्, अतिमात्रम् 'beyond limits'। (५) असम्प्रति (inopportune); जैसे अतिनिद्रम् (निद्रा सम्प्रति न विद्यते) 'past sleeping time'। (६) पश्चात् (after); जैसे, अनुविष्णु (विष्णोः पश्चात्)। (७) योग्यता (fitness); जैसे, अनुरूपम् (रूपस्य योग्यम्), अनुगुणम् worthy of merits'। (८) वीप्सा (repetition); जैसे, प्रतिगृहम् (गृहे गृहे), प्रत्यर्थम्, प्रत्यहम्, प्रत्येकम्। (९) अनतिक्रम या अनतिवृत्ति (non-violation, 'accordance with); जैसे, यथाशक्ति (शक्तिमनतिक्रम्य), यथाविधि। (१०) आनुपूर्व्य (succession); जैसे, अनुज्येष्ठम् (ज्येष्ठस्यानुपूर्व्येण) 'according to seniority'। (११) पर्यन्त (limit); जैसे, आसमुद्रम् (समुद्रपर्यन्तम्)।

अभ्यास ३५.

१. अव्ययीभाव समास किसे कहते हैं। यह किन अर्थों में होता है? सउदाहरण लिखो।

२. नीचे लिखे शब्द-समूहों के स्थान पर समस्त पद प्रयुक्त करो :—

कूलस्य समीपे। गृहे गृहे। शक्तिम् अनतिक्रम्य। विघ्नस्य अभावः। हिमस्य अत्ययः। निद्रा सम्प्रति न युज्यते। रथस्य पश्चात्। रूपस्य योग्यम्।

---

[1] अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानुपूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसम्पत्तिसाकल्यान्तवचनेषु। २. १. ६।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३. नीचे लिखे समासों का विग्रह करो :—

अनुज्येष्ठम् । अध्यात्मम् । निर्मक्षिकम् । प्रत्यहम् । यथाविधि । आसमुद्रम् । प्रतिदिशम् । परोक्षम् । उपचर्मम् । उपनदम् । उपपौर्णमासम् । अनुगंगम् ।

४. संस्कृत में अनुवाद करो, मोटे छपे शब्दों का अनुवाद समस्त-पदों से करो :—

मैं नदी के **किनारे किनारे** दूर तक गया । यह काम अवश्य **बिना विघ्न** समाप्त होगा । प्रजा ने राजा की **उनके गुणों के अनुसार** प्रशंसा की । **जहाँ तक हो सकेगा** मैं आपकी सहायता करूंगा । **रसम के मुताबिक** उसने एक कुमारी से विवाह किया । **अपने बल के अनुसार** व्यायाम करना चाहिए । **हर एक दिन नियम के अनुसार** सन्ध्या करनी चाहिए । **हर सवेरे** वह सैर को जाता है । **मुसकराहट के साथ** उसने मेरी बात का उत्तर दिया । **बड़े आदर के साथ** उन्होंने हमारा स्वागत किया । छोटों के साथ नरमी से और बड़ों के साथ सम्मान से बोलो । **जब तक जियो** सच बोलो । बालक ने **बड़ाई के क्रम से** सब को प्रणाम किया । रघु का राज्य **समुद्र तक** था । शिष्य **गुरु के समीप** बैठा था । मैं **बसन्त के अन्त तक** वहां रहा । **आँखों के सामने** अन्याय सहा नहीं जाता । **आँखों से परे** प्रीति घट जाती है । इस **सड़क के साथ साथ** चले जाइए ।

———

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकादशोऽध्यायः ।

अव्यय Indeclinable Words'

२४९. जो तीनों लिंगों, तीनों वचनों और सब विभक्तियों में समान रहे ऐसे अविकारी शब्द को अव्यय (indeclinable) कहते हैं ।[1] अव्ययों के नीचे लिखे चार भेद हैं :—१. उपसर्ग (Prepositions), २. क्रियाविशेषण (Adverbs), ३. समुच्चयबोधक (Conjunctive particles), और ४. विस्मयादिबोधक (Interjections).

१ उपसर्ग 'Prepositions'.

२५०. जो निपात (अव्यय) क्रिया और कृदन्त आदि से पूर्व प्रयुक्त होते हैं उन्हें उपसर्ग (prepositions) कहते हैं। इन में प्रायः गति[2] अव्यय भी शामिल हैं। कुछ प्रसिद्ध उपसर्ग नीचे दिए गए हैं:—

अति 'beyond,over' अधि 'over, above', अनु 'after, along,' अप 'away, from', अपि (or पि) 'near to, over', अभि 'towards, near to', अव (or व) 'away, off, down', आ 'up to, towards, all round, a little', उत् 'up, upon', उप 'towards, near to, by', दुस् or दुर् 'hard, difficult', नि 'in, into, opposed to', निस् or निर् 'out, without, away', परा 'away, back opposite', परि 'all round, about', प्रति 'towards, back, in return वि 'apart, away, separate', सम् together with' सु well'.

---

१. सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु । वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम् ॥ २. गति अव्यय भी धातुओं से पूर्व आते हैं। उन में प्रसिद्ध ये हैं:— अन्तर्, आविस्, पुरस्, प्रादुर्, नमस्, अस्तं, वशे, साक्षात्, पुनर्, उच्चैस्, नीचैस्, शनैस्, इत्यादि ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) धातुओं से पूर्व एक से अधिक उपसर्ग भी आ सकते हैं। जैसे, अभि-नि-विश्, प्रत्युद्गम्, इत्यादि।

(ख) उपसर्ग के योग से सकर्मक धातु अकर्मक और इसके विपरीत तथा परस्मैपद धातु आत्मनेपद और इसके विपरीत विकृत हो जाते हैं। जैसे, धा, अन्तर्धा। रम् आ० वि-रम् प०। इत्यादि।

(ग) उपसर्ग धातु के अर्थ को विशिष्ट (intensify) अनुवर्तित (modify) या बाधित (totally alter) करते हैं।

धातुओं के अर्थ में उपसर्गों के योग से क्या विकार होते हैं यह नीचे दी गई उदाहरण-सूची से स्पष्ट होता है :—

धातु	उदाहरण
अभि-अर्थ् 'request';	...तावत् प्रियाप्रवृत्तये सारङ्गम् अभ्यर्थये। (विक्रमो०)
प्र-अर्थ् 'beg, desire';	...अवग्राहे वृष्टिं प्रार्थयन्ते कृषीवलाः During draught the peasants desire rain'.
सम्-अर्थ् 'consider believe';	सत्यमिति समर्थये।
अप-अस् 'abandon';	...आभरणानि अपास्य किं त्वया वल्कलं धृतम्।
अभि-अस् 'practise';	...तोयदेषु (in clouds) गजा अभ्यसन्ति तटाघातम् (butting)।
study',	...वेदमेवाभ्यसेन्नित्यम्।
उप-नि-अस् 'propose'	...किमिदमुपन्यस्तम्।
निर्-अस् 'expel'	...अरुणेन तमो निरस्तम्।
आप् 'obtain';	...पुत्रमेवं गुणोपेतं चक्रवर्तिनमाप्नुहि
प्र आप् 'meet';	...तां जटायुः प्राप।
वि-आप् 'pervade';	...लोकान् इमांस्त्वं व्याप्य तिष्ठसि।
सम्-आप 'finish';	...व्रतशेषं समापयेत्।
इ 'go';	...शशिनं पुनरेति शर्वरी (night)।
अति-इ 'pass over';	...नयनविषयं यावदत्येति भानुः। Me.
अधि इ 'study';	...ब्राह्मणो वेदानधीते।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनु-इ follow, imitate';	...अयमन्वेति गुरुं बालः ।
अव-इ 'know';	...अवैमि ते सारम् । कुमार०
उत्-इ 'rise';	...उदेति सविता ताम्रः । हितो०
प्र-इ 'die';	...प्रेत्य अमृता भवन्ति ।
प्रति-इ 'believe';	....सर्वो हि आत्मास्तीति प्रत्येति ।
प्रति-उत्-इ 'receive';	....तं सपर्य्यया प्रत्युदियाय पार्वती कु०
इष् 'wish';	....तत्ते भवतु तत्सर्वं यदिच्छामि । शा०
अनु-इष् 'search';	....न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत् कु०
प्र-इष् 'send';	...यावत् शत्रुघ्नं प्रेषयामि । उत्तर
ईक्ष् 'see, care for';	....न कामवृत्तिर्वचनीयम् (reproach) ईक्षते । कु०
अप-ईक्ष् 'expect';	....सर्वः फलमपेक्षते ।
उत्-प्र-ईक्ष imagine';	....तस्य विघ्न नुत्प्रेक्षे ।
परि-ईक्ष् 'examine';	....मायां मयोद्भाव्य परीक्षितोऽसि। Rv.
उप-ईक्ष् 'disregard';	...उपेक्षते यः श्लथलम्बिनीर्जटाः । कु०
कृ 'do, make';	....नृपेण चक्रे युवराजशब्दभाक् । Rv. (hier-apparent).
अङ्गी-कृ 'accept';	....राज्यमङ्गीचकार सः ।
अनु-कृ 'imitate';	...न चैव अस्य (गुरोः) अनुकुर्वीत गतिभाषितचेष्टितम् । Manu.
अप-कृ 'injure';	....किं तवापकृतं मया ।
अप-आ-कृ 'remove';	....न पुत्रवात्सल्यमपाकरिष्यति (तत्) । कुमार०
अलं-कृ 'adorn';	....प्रसाधनैः वपुः अलञ्चकार ।
उप-कृ 'serve';	....मित्रस्य सर्वदा उपकुर्यात् ।
नमस्-कृ 'salute';	....मुनित्रयं नमश्चकार ।
निर्-आ-कृ 'forsake';	....न ईश्वरं निराकुर्यात् ।
पुरस्-कृ 'honour, place in front';	....मुनीन् पुरस्कृत्य यज्ञं चकार ।
प्रति-कृ 'repay';	मित्राणामुपकारं प्रत्यकरोत् सः ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'remedy';	...व्याधिमिच्छामि ते ज्ञातुं प्रतिकुर्यां हि तत्र वै। महा०
वि-कृ 'affect';	...विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां ...न चेतांसि त एव धीराः। कु०
'creat';	....मनः सृष्टिं विकुरुते। मनु
वि-प्र-कृ 'outrage';	....तारकेण विप्रकृता देवाः स्वयंभुवं ययुः। कु०
वि-आ-कृ 'tell';	....तन्मेसर्वं भगवान् व्याकरोतु। महा-
उत्-कॄ 'engrave';	....उत्कीर्णा इव वासयष्टिषु निशानिद्रालसा बर्हिणः। विक्र०
परि-कॄ 'deliver';	...महीं सूनौ पर्यकिरत रघुः।
प्रति-कॄ 'tear';	....ऊरोविदारं प्रतिचस्करे नखैः। शिशु
अति-क्रम् 'pass away';	....अत्यक्रामदविज्ञातः कालः परमदुस्तरः।
अधि-आ-क्रम् 'occupy';	....अध्याक्रान्ता वसतिरमुनाप्याश्रमे सर्वभोग्ये। शा०
अप-क्रम् 'go away';	....नगराद् अपक्रान्तः।
आ-क्रम् 'rise';	....यावत्प्रतापनिधिराक्रमते न भानुः।
परा क्रम् 'show valour';	....बकवत् चिन्तयेदर्थान् सिंहवच्च पराक्रमेत। मनु०
प्र-क्रम् 'begin';	....प्रचक्रमे च प्रतिवक्तुमुत्तरम्। Rv.
अधि-क्षिप् 'offend';	....विशेषेणाधिक्षिप्तोऽस्मि। शा०
उप-क्षिप् 'hint';	....छन्नं कार्य्यमुपक्षिपन्ति। मृच्छ०
नि-क्षिप् 'entrust';	....तेन धूः (earth) सचिवेषु निचिक्षिपे। रघु०
प्र-क्षिप् 'interpolate';	....प्रक्षिप्तं पद्यमिदम्।
सम्-क्षिप् 'shorten';	...संक्षिप्यते क्षण इव कथं दीर्घयामा त्रियामा (night) मेघ०
अति-आ-ख्या 'decline'	....युक्तं नाम ते साम्प्रतमीदृशैरक्षरैः प्रत्याख्यातुम् शा०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वि-आ-ख्या 'explain'; ...इदं सर्वं व्याख्यातं मया।
गम् 'go'; ...गच्छति पुरः शरीरम्। शा०
'become'; ....वद सम्प्रति कस्य बाणतां नव-चूतप्रसवो गमिष्यति। शा०
अधि-गम् 'acquire'; ....पृथिव्यां सागरान्तायां यत्किञ्चिदधिगम्यते। राम०
अभि-आ गम् 'arrive'; ....रामो दण्डकारण्यमभ्यगात्।
अव-गम् 'know'; ....त्वं कथं नावगच्छसि। भट्टि०
उप-आ-गम् 'approach'; ....तपोधनं वेत्सि न मामुपागतम्। शा०
प्रति-उत्-गम् 'receive'; ....अतिथिनं प्रत्युज्जगाम सा।
सम्-गम् 'meet'; ....कपिना समगंस्त राक्षसाः। Bh.
अनु-ग्रह 'favour'; ....महात्मानोऽनुगृह्णन्ति भजमानानरीनपि। शिशु०
नि-ग्रह् curb, chastise'; ....गृहाण चापं निगृहाण ताड़काम्। A
परि-ग्रह accept'; ....ज्ञानेन परिगृह्य तानध्यापयामास कविः। मनु
प्रति-ग्रह accept'; ....1. सर्वतः करं (tax) प्रतिगृह्णीयात्
'marry'; राजा। 2. कन्यां विधिवत्प्रतिगृह्णीयात् (marry). 3. तं शरैःप्रति-
'oppose; जग्राह। Rv.
वि-ग्रह quarrel, fight'; ....न बलवता विगृह्णीयात्।
सम्-ग्रह 'collect'; ....स धनं संगृह्णाति, न ददाति नाश्नुते।
अति-चर् 'go against'; ....पुत्राः पितॄनत्यचरन् नार्यश्चात्यचरन् पतीन्। महा०
अभि-चर् 'do wrong'; ....पतिं या नाभिचरति मनोवाग्देहसंयता। मनु०
उत्-चर् 'arise'; ....दिव्यस्तूर्यध्वनिरुदाचरत्। Rv.
'utters'; (2) शब्दमुच्चरति।
उप-चर 'serve'; ....गिरिशमुपचचार प्रत्यहं सा सुकेशी। कु०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्र-चर् 'spread'; ....तावत् रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति । रामा०

ज्ञा 'know'; ....जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिः ।

अनु-ज्ञा 'permit'; ....सखि, अनुजानीहि मां गमनाय । शा०

अप-ज्ञा 'conceal'; ....आत्मानमपजानानः शशमात्रोऽनयद्दिनम् । भट्टि०

अभि-ज्ञा 'recognise'; ....किं नाभिजानासि मां यद्भवन्मित्रमहम् ।

अव-ज्ञा 'disregard'; ....अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम् । गीता०

प्रति-ज्ञा promise'; ....प्रतिजज्ञे स्वयं चैव सुग्रीवो रक्षसां बधम् ।Bh.

अव-तॄ 'descend'; ....रथादवततार (सः) । रघु०

निस्-तॄ 'overcome'; ....आपदं निस्तरेत् । महा०

वि-तॄ 'give'; ....वितरति यथा प्राज्ञे गुरुः विद्यां तथा जडे । उत्तर०

अप-दिश् 'pretend'; ....मित्रकृत्यमपदिश्य पार्श्वतःप्रस्थितम्

आ-दिश् 'command'; ....सा रामं वनगमनायादिदेश ।

उप-दिश् 'instruct': ....उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानम् । गीता०

प्र-दिश् 'give'; ....प्रदिशसि जलं याचितश्चातकेभ्यः।M,

सम्-दिश् 'send'; ....अथ विश्वात्मने देवी सन्दिदेश मिथः सखीम् । कु०

उत्-दृश् 'foresee,expect'; ....उत्पश्यामि सखे ते कालक्षेपम् । Me.

उप-दृश् 'point out'; ....नयविद्भिर्नवे राज्ञि सदसच्चोपदर्शितम् । Rv.

अति-सम्-धा 'deceive'; ....भगवन् कुसुमायुध, त्वयातिसन्धीयते कामिजनसार्थः । शा०

अन्तर्-धा 'disappear'; ....अन्तर्दधे भूतपतिः सभूतः । कु०

अभि-धा 'speak, call'; ....राजा ...भ्यधात् । क्षेत्रमित्यभिधीयते । गीता०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभि-सं-धा 'win over'; ...तान् सर्वानभिसन्दध्यात् सामादिभिरुपक्रमैः । मनु-

अव-धा 'attend' ...अवधत्तां देवो देवी च । वेणि०

आ धा 'fix; ...मय्येव मन आधत्स्व । गीता०

उप-धा 'apply'; ...क्रिया हि वस्तूपहिता प्रसीदति Rv.

तिरस्-धा 'disappear'; ...ऋषिस्तिरोदधे । रघु

नि-धा 'entrust, deposit'; ...राघवो निदधे विजयाशंसां चापे ...सीतां च लक्ष्मणे । राम०

परि-धा 'put on'; ...त्वयं च मेध्यं परिदधे रौरवीम् ।

पुरस्-धा 'put at the head';...तुरासाहं पुरोधाय धाम स्वायंभुवं ययुः । कु०

प्र-नि-धा 'prostrate'; ...प्रणिधाय कायं प्रसादये त्वाम् । गीता०

प्रति-वि-धा 'retaliate'; ...एतेषु क्षिप्रमेव कस्माद् न विप्रतिहितमार्य्येण । Mu.

अनु-नी 'conciliate'; ...भ्राता भ्रातरमनुनयेत ।

उप-नी invest with sacred thread ...षडवर्षीयं ब्राह्मणकुमारमुपनयेत ।

परि-नी 'marry'; ...परिणेष्यति पार्वतीं यदा हरः। कु०

प्र-नी 'compose'; ...भगवता कालिदासेन मेघदूतं प्रणीतम् ।

वि-नी 'educate'; ...विनिन्युरेनं गुरवो गुरुप्रियम् । Rv.
'pay off'; करं विनयते ।

अभि-पत् 'approach'; ...हन्तुमभिपतति पाण्डुसुतम् । Ki.

नि-पत् 'happen'; ...मरणव्याधिशोकानां किमद्य निपतिष्यति । पञ्च०

प्र-नि-पत् 'bow'; ...तस्मै सशंस प्रणिपत्य नन्दी । कु०

उद्-पद् 'be born'; ...सा भूधराणामधिपेन तस्यामुदपादि । कु०

उप-पद् 'be possible'; ...सर्वं सखे त्वय्युपपन्नमेतत् कु

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रति-पद् 'acknowledge'; 'under take'; ...प्रमदाः पतिवर्त्मगा इति प्रतिपन्नं हि विचेतनैरपि। कु० 2. कार्यं त्वया नः प्रतिपन्नकल्पम्। कु०

वि-पद् 'die'; ...सार्थवाहो धनमित्रो नाम नौव्यसनेन विपन्नः। दश-

आ-प्रच्छ take leave of'; ...आपृच्छस्व प्रियसखममुं शैलम्। Me

अनु-भू 'experience'; असक्तः सुखमन्वभूत्। Rv.

अभि-भू 'attack; ...अभ्यभावि भरताग्रजस्त्वया। Rv.

परि-भू 'insult'; ...मा मां महात्मन् परिभूः। Bh.

प्र-भू 'prevail'; ...प्रभवति मनसि विवेको विदुषामपि।

अनु-मा 'guess, infer'; ...मरुतां वेगभंगोऽनुमीयते। कु०

उप-मा 'compare with'; ...रूपं रूपेण उपमीयते।

निर्-मा 'create, compose';...दिवं भूमिञ्च निर्ममे। नु-नूतनं काव्यं निर्मिमे।

उप-यम् 'marry'; ...रामः सीतामुपयेमे।

नि-यम् 'restrain' ...सुतां शशाक मेना न नियन्तुमुद्यमात्। कुमार०

सम्-यम् 'control; ...योगिन आत्मानं संयच्छन्ति।

उप-रम् 'die, stop'; ...तस्याः भगिनी उपरता। 2 अत चित्तमुपरमते।

वि-रम् 'end'; ...अविदितगतयामा रात्रिरेव व्यरंसीत्। उत्तर

'desist'; ...वत्स, एतस्मात् विरम विरम। उत्तर

अनु-वद् 'repeat'; ...अनुवदति शुकस्ते मञ्जुवाक् पंज-...रस्थः। Rv.

अप-वद् 'reproach, revile'; ...अपवदते धनकामो न्यायम्।

उप-वद् 'conciliate, persuade'; ...भृत्यानुपवदते।

परि-वद्'speak ill of'; ...परिवदन् अन्यांस्तुष्टो भवति दुर्जनः। महा०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रति-वद् 'reply'; ...तं प्रत्युवाचाथ राघवोऽपि । Bh.
वि-वद् 'quarrel'; ...न केनचिद् विवदेत् ।
सम्-वद् 'resemble'; ...अहो संवदन्त्यक्षराणि । Mu.
अनु-प्र-विश् 'adapt'; ...भावमनुप्रविश्यान्यानात्मवशं नयेत् ।
अभि-नि-विश् 'resort to'; ...भयं तावत्सेव्यादभिनिविशते सेवकजनम् । Mudra.
सम्-विश् 'sleep'; ...नाश्नीयात्सन्धिवेलायां न गच्छेन्नापि संविशेत् । Manu.
प्र-वृत् 'begin'; ...हन्तं प्रवृत्तं संगीतकम् । Malv.
वि-परि-वृत् 'revolve'; ...जगद्विपरिवर्तते । Gita.
वि-अप-वृत् 'turn back'; ...चेतः कथं कथमपि व्यपवर्तते ।
उप-आ-श्रु 'learn'; ...केशिना हृतामुर्वशीं नारदादुपाशुश्राव इन्द्रः ।
प्रति-श्रु 'promise'; ...प्रतिशुश्राव काकुत्स्थस्तेभ्यो विघ्नप्रतिक्रियाम् । Rv.
अव-सद् 'sink down'; ...विद्वान् न कृच्छ्रेष्ववसीदति ।
प्र-सद् 'favour'; ...प्रसीद देवेश जगन्निवास । Gita.
2. 'succeed'; ...क्रिया हि वस्तूपहिता प्रसीदति ।
3. 'clear'; ...दिशः प्रसेदुः ।
अनु-स्था 'follow, obey'; 'discharge'; ...हला अनुतिष्ठ आत्मनो नियोगम् । Malav
2. 'grant'; ...प्रजापतिः (यस्य) शैलाधिपत्यं स्वयमन्वतिष्ठत् । Ku.
उत्-स्था 'rise'; ...उत्तिष्ठ वत्स ।
2. 'proceed'; ...यदुत्तिष्ठति वर्णेभ्यो नृपाणां क्षयि तत्फलम् । Sak.
उपा-स्था 'serve'; ...पार्वती शिवमुपतस्थौ ।
2. 'worship gods'; ...न त्र्यम्बकादन्यमुपास्थिता गौ । Bh.
3. 'unite, join'; ...प्रयागे गङ्गा यमुनामुपतिष्ठते ।
4. 'lead'; ...अयं पन्थाः वाराणसीमुपतिष्ठते ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

5. approach'; ...भिक्षुकः प्रभुमुपतिष्ठते ।
प्र-स्था 'march'; ...जगद्विजयाय रघुः प्रतस्थे ।
प्रति-स्था 'establish'; ...अश्मापि याति देवत्वं महद्भिः सुप्रतिष्ठितः ।
सम्-स्था 'obey'; ...दारिद्र्याद्बान्धवजनो वाक्ये न संतिष्ठते । Mri, Ca.
अनु-हृ 'imitate'; ...वपुरनुहरति तव चन्द्रलेखाम् । पितरमनुहरति पुत्रः ।
आ-हृ 'perform'; ...रघुः विश्वजितमाजह्रे ।
उद्-हृ 'quote'; ...वचनमिदं महाभारतादुद्धृतम् ।
2. destroy'; ...त्रिदिवमुद्धृतदानवकण्टकम् । Sak.
उद्-आ-हृ 'utter'; ...नोदाहरेद् गुरोः नाम परोक्षमपि केवलम् ।
2. 'narrate'; ...अत्रेममितिहासमुदाहरन्ति ।
उप-हृ 'offer'; ...मातृभ्यो बलिमुपहर । Mrcch.
परि-हृ 'avoid' ...स्त्रीसन्निकर्षं परिहर्तुमिच्छति ।
प्र-हृ 'strike'; ...आर्त्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि । Sak.
वि-आ-हृ 'speak'; ...इति व्याहृत्य विबुधान्विश्वयोनिस्तिरोदधे । Kumara.
सम् हृ 'remove, suppress'; ...क्रोधं प्रभो संहर संहरेति । Ku.
आ ह्वे 'challenge'; ...अह्वत चेदिरान्मुरारिम् । Sisu.

अभ्यास ३६

१. नीचे लिखे उपसर्ग-युक्त धातुओं के अर्थ प्रकाशित करने के लिए इन्हें वाक्यों में प्रयुक्त करो :—

अप्-अस्, वि-आप्, अनु-इष्, प्रति-कृ, प्र-क्रम्, प्रति-आख्या, प्रति-उत्-गम्, प्रति-ग्रह्, अप-ज्ञा, उप-दिश्, अति-सम्-धा, परि-नी, प्र-नि-पत्, अभि-भू, निर्-मा, उप-रम्, अनु-वद्, सम् विश्, प्रति-श्रु, प्र सद्, उप-स्था, अनु-हृ, etc.

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२. संस्कृत में अनुवाद करो :—

मैं इसे सच समझता हूँ (सम्-अर्थ्)। मैं प्रस्ताव करता हूं (उप-नि-अस्) कि आपको वेद पढ़ना चाहिए (अधि-इ)। मैं आपका हिसाब देखने (परि-ईक्ष्) के लिए अपने लेखक को भेज दूँगा (प्र-इष्)। किसी को अपने मित्र छोड़ने नहीं चाहिएँ (निर्-आ-कृ)। उसने जबरदस्ती शहर पर कब्ज़ा कर लिया (अधि-आ-क्रम्)। आपने मुझ पर इलजाम क्यों लगाया (अधि-क्षिप्)। रास्ते में मुझे गोपाल मिला (सम्-गम्)। अपने मन पर काबू पाओ (नि-ग्रह्)। राजा को अपनी प्रजा से कर लेना चाहिए (प्रति-ग्रह्)। अपने माता-पिता की कभी अवज्ञा न करो (अव-ज्ञा)। अपने गुरु से कोई बात मत छुपाओ (अप-ज्ञा)। अपने आपको उसने मित्र दिखाकर (अप-दिश्) हमें ठग लिया (अति-सम्-धा)। सिर निवा कर (प्र नि-धा) अपनी माता को प्रसन्न करो (प्र सद्)। भले लोगों की सदा अनुनय करो (अनु-नी)। दुर्भिक्ष में बहुत से लोग मर गए (वि-पद्)। जो किसी का अनादर करता है (परि-भू) वह दुःख पाता है (अधि-गम्)। रूप में उसे लक्ष्मी से उपमा दी जाती है (उप-मा)। दुष्ट लोग सदा भलों को बुरा कहते हैं (अप-वद्)। सन्ध्या के समय सोना नहीं चाहिए (सम्-विश्)। संयमी कभी विपत्तियों में नहीं डूबते (अव-सद्)। यह बालक शकल में अपने पिता से मिलता है (अनु-हृ)। भीम ने युद्ध में दुर्योधन को ललकारा (आ-ह्वे)। अपने गुरुओं की सेवा करो (उप-स्था)। अपने मित्रों से विदा ले (आ-प्रच्छ्)। बीमारी को शीघ्र ही रोक (प्रति-वि-धा)। उसने अपने शत्रुओं को भी साथ मिला लिया (अभि-सम्-धा) दुष्यन्त ने शकुन्तला को छोड़ दिया (प्रति-आ-ख्या)ईश्वर सारे संसार में व्यापक है (वि-आप्)।

---

२. क्रियाविशेषण 'Adverbs'.

२५१. कुछ अव्यय क्रिया कि विशेषता को बताते हैं। इन्हें क्रिया-विशेषण कहते हैं। संज्ञा, सर्वनाम और संख्यावाचकों से भी क्रिया-विशेषण बनते हैं। एकवचन नपुं० द्वितीयान्त संज्ञा और विशेषण भी क्रिया-विशेषण हो सकते हैं। प्रायः अन्य विभक्त्यन्त नाम भी ऐसे प्रयुक्त होते हैं। जैसे, सत्यम् 'truly', सुखं 'happily'; अवश्यं, अत्यन्तं बलवत् 'forcibly;' भूयः 'again'; सुखेन, धर्मेण 'justly', उत्तरेण, अचिरेण, 'instantly'; चिराय, अर्थाय; बलात् 'perforce', दूरात्, चिरात्, अकस्मात्; अग्रे, स्थाने 'rightly', सपदि, एकपदे, ऋते, इत्यादि।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) क्रियाविशेषण बहुत हैं। उन में से प्रसिद्ध ये हैं :—अथ, अद्धा, आम्, इह, कर्हि, तर्हि, दिष्ट्या, पुनः, पुरा, प्राक्, प्रायः, बहिः, मिथः, मुधा, मुहुः, वै, शनैः, शश्वत्, सकृत, सद्यः, सम्प्रतिः, सम्यक्, सहसा, सुष्ठु, स्वयं, ह्यस्।

३. समुच्चयबोधक और क्रियाविशेषण 'Conjunctive and Adverbial Particles'.

२५२. कुछ प्रसिद्ध समुच्चयबोधक (Conjunctives) और क्रियाविशेषण (adverbs) अव्ययों के भिन्न भिन्न अर्थ और प्रयोग नीचे दिए जाते हैं :—

अङ्ग—पूजा (pray) और संबोधन (address) के अर्थ में। जैसे, अंग माणवकमध्यापय 'कृपया लड़के को पढ़ाइए।' अंग, कच्चित्कुशली तातः 'श्रीमन्, क्या पिता जी कुशल से हैं।'

अथ—१. आरंभ में मंगल (auspiciousness) के अर्थ में। अथातो ब्रह्मजिज्ञासा। २. अधिकार (marking beginning of a statement) के अर्थ में—अथेदमारभ्यते द्वितीयं तंत्रम् 'अब दूसरा अध्याय आरंभ किया जाता है।' ३. च (and) के अर्थ में—भीमोऽथार्जुनः। ४. प्रश्न पूछने में—अथ सा किमाख्यस्य राजर्षेः पत्नी 'वह किस राजा की पत्नी है?' ५. यदि (if,in case) के अर्थ में—अथ कौतुकमावेदयामि 'यदि कौतुक है तो मैं निवेदन करता हूं।' अथ तान्नानुगच्छामि गमिष्यामि यमक्षयम्। अथ किम् 'हां' yes'। अथवा 'या'—रामो अथवा लक्ष्मणः। 'परन्तु'—अथवा रामेण किं दुष्करम् 'परन्तु राम के लिए क्या दुष्कर है।'

अपि—१. च (and) के अर्थ में वाक्य के भागों को मिलाता है (अपि-अपि)। २. भी (also), यद्यपि (though), केवल (only) —दमनकोऽपि निर्जगाम 'दमनक भी चला गया'। बालोऽपि, एकाक्यपि (though alone)। मुहूर्त्तमपि 'केवल क्षण भर' ३. सब (all), संख्यावाचकों के साथ— चतुर्णामपि वर्णानाम् 'सब (सभी) चारों वर्णों का।' इन सब अर्थों में जिस शब्द के साथ अपि आता है उसके पीछे प्रयुक्त होता है। ४. प्रश्न (question)—अप्येतत्तपोवनम् 'क्या यह तपोवन है'। ५. शंका (doubt)—अपि चौरो भवेत् 'शायद वह चोर

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो'। ६. संभावन (hope)—अपि जीवेत् स ब्राह्मणशिशुः 'आशा है वह ब्राह्मण का लड़का जी जाए'।

इति—१. किसी के वाक्य को उद्धृत करने में हिन्दी के कि या अंग्रेजी के inverted commas के स्थान पर प्रयुक्त होता है—तत्र गमिष्यामीति स मामुवाच। २. हेतु (cause)—न धर्मशास्त्रं पठतीति कारणम् 'क्योंकि वह धर्मशास्त्र पढ़ता है यह कारण नहीं।' वैदेशिकोऽस्मीति पृच्छामि त्वाम् 'मैं तुम्हें पूछता हूँ क्योंकि मैं परदेसी हूँ।' ३. हेतु (purpose, motive)—शरीरस्य मा विनाशो भूदिति स जलं पपौ 'उसने जल पिया ताकि शरीर का नाश न हो।' ४. समाप्ति (marks the end)—इति तृतीयोऽङ्कः 'यहाँ तीसरा अंक समाप्त होता है।' ५. प्रकार, अपेक्षा (capacity for, 'as regards')—शीघ्रमिति सुकरं निभृतमिति चिन्तनीयं भवेत् 'जल्दी करने को यह आसान होगा पर पोशीदा करने को सोचना होगा।'

इव—अपने सम्बन्धित शब्द के पीछे प्रयुक्त होता है। इससे सम्बद्ध शब्द एक ही विभक्ति में होते हैं। १. उपमा (comparison, like')—संसारोऽर्णव इव 'संसार समुद्र के समान है।' अयं चोर इवाभाति 'यह चोर सा मालूम पड़ता है।' २. उत्प्रेक्षा, मानो (as if)—मृगानुसारिणं पिनाकिनमिव पश्यामि 'मैं मृग का पीछा करते हुए मानो शिव को देखता हूँ।' ३. ईषद्, 'कुछ, तकरीबन' (somewhat, almost)—सरोषमिव 'कुछ क्रोध से'। मुहूर्त्तमिव 'तकरीबन घंटा'। ४. किमिव—'संभवतः', 'निश्चय'— विना सीतादेव्या किमिव हि न दुःखं रघुपतेः 'रानी सीता के विना रघुपति को संभवतः क्या दुःख न होगा'। किमिव मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम् 'निश्चय प्यारी सूरतों को क्या गहना न होगा।'

एव—अर्थ की विशेषता दिखाता है और सम्बद्ध शब्द के पीछे आता है। १. केवल (only)—एक एव 'केवल एक'। २. मात्र (very)—दर्शनमेव 'दर्शनमात्र'। ३. स्वयम्—अहमेव 'मैं स्वयम्'। ४. समस्त (whole)—वसुधैव 'सारी पृथिवी'। तथैव, नैव।

कच्चित्—वक्ता की इच्छा (काम) को जाहिर करता है—शिवानि वस्तीर्थजलानि कच्चित् 'मैं आशा करता हूँ आप के तीर्थों के जल कल्याणकारी हैं'।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कामम्—का अर्थ है 'इच्छा-पूर्वक'। यह अनुमति को भी जाहिर करता है 'ठीक' (granted) के अर्थ में। और इसके पीछे तु, किन्तु, तथापि प्रयुक्त होते हैं—कामं न तिष्ठति मदाननसंमुखी सा भूयिष्ठमन्यविषया न तु दृष्टिरस्याः 'ठीक वह मेरी ओर मुँह करके नहीं ठहरती पर उसकी दृष्टि का विषय प्रायः और कोई नहीं।

किम्—१. प्रश्न पूछने में—तत्रैव चपले किं न प्रलयं गतासि 'हे चपला, तू वहीं क्यों नष्ट न हो गई?' उ, उत, या पुनः के साथ किम् संभावना, विमर्श आदि को जाहिर करता है और 'कितना ज्यादा' (how much more) या 'कितना कम' (low much less) के अर्थ में प्रयुक्त होता है—एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम् 'एक एक भी अनर्थ के लिए है, कितना ज्यादा होगा जब चारों इकट्ठे हों।' चाणक्येनाहूतस्य निर्दोषस्यापि शंका जायते किमुत सदोषस्य (मुद्रा०) 'चाणक्य से बुलाए हुए निर्दोष को भी शंका होती है, दोषी को और भी कितनी ज्यादा।' किम् और अव्ययों के साथ भी आता है—किंच 'moreover' किंतु 'but', किमिति, किमिव 'wherefore', किंवा 'perchance', किंस्वित् 'why', किमपि 'very'।

किल—१. वार्तायां (historic), 'कहते हैं, they say'—जघान कंसं किल वासुदेवः 'कहते हैं कृष्ण ने कंस को मारा।' बभूव योगी किल कार्तवीर्यः। २. अलीके (expressing feigned action) 'मानो, as if'—प्रसह्य सिंहः किल गां चकर्ष 'मानो सिंह ने गौ को ज़ोर से खेंचा। ३. संभाव्य (hope)—पार्थः किल विजेष्यते कुरून् 'आशा है अर्जुन कौरवों को जीतेगा।' ४. निश्चय से (certainly)—अर्हति किल कितवः उपद्रवम् 'निश्चय दुष्ट विपत्ति के योग्य है।'

केवलम्—मात्र (merely)—निषेदुषी स्थंडिल एव केवलम्। न केवलं—अपि (not only-but)—न केवलं यो महतोऽपभाषते शृणोति तस्मादपि यः स पापभाक् 'न केवल वही जो बड़ों की निन्दा करता है परन्तु वह भी जो उससे सुनता है पापी है।

क—जब अन्य प्रश्न के साथ प्रयुक्त होता है (क-क) तो महदन्तर great difference, incongruity) को जाहिर करता है—क सूर्यप्रभवो वंशः क चाल्पविषया मतिः 'सूर्य से पैदा हुए वंश और मेरी छोटी बुद्धि में बड़ा अन्तर है।' तपः क वत्से क च तावकं वपुः (कुमार०)।

Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

खलु—१. निश्चय (surely)—मार्गे पदानि खलु ते विषमीभवन्ति 'निश्चय तेरे पाँव रास्ते पर लड़खड़ाते हैं।' २. अनुनय (कृपया, please)—देहि खलु मे प्रतिवचनम् 'कृपया मुझे उत्तर दीजिए।' न खलु बाणः सन्निपात्योऽयमस्मिन् (शकु०)। ३. जिज्ञासा (enquiry)—न खलु तामभिक्रुद्धो गुरुः (विक्रमो०) ४. हेतु (reason)—न विदीर्ये कठिनाः खलु स्त्रियः 'मैं फट नहीं जाती, क्योंकि स्त्रियां बड़ी कठिन होती हैं।' ५. निषेध—खलु रुदित्वा 'मत रोओ'।

च—यह प्रत्येक या केवल अन्तिम संबद्ध शब्द या वाक्य के साथ प्रयुक्त होता है, रामश्च गोविन्दश्च या रामो गोविन्दश्च। च—च (on the one hand—on the other,—न च सुकरं तस्याः कार्यं परिक्षीणश्चास्या बलम् 'एक ओर तो उसका काम कठिन है दूसरी ओर उसका बल घट गया है।' २. ज्योंही—त्योंही—ते च प्रापुरुदन्वन्तं बुबुधे चादिपूरुषः 'ज्यों ही वे समुद्र पर पहुँचे त्यों ही विष्णु जागे।'

चेद्—(if) यह वाक्य या पद के आदि में प्रयुक्त नहीं होता। अथचेद्, न चेद्, नोचेद् (otherwise)—सर्वं विमृश्य कर्तव्यं नोचेत्पश्चात्तापं व्रजिष्यसि 'सब काम सोच समझ कर करना चाहिए नहीं तो पश्चात्ताप करोगे (पाओगे)।' चेन्न—भावि चेन्न तदन्यथा 'यदि ऐसा होना है तो अन्यथा न होगा।' इति चेन्न यदि यह कहो तो नहीं' (in discussions)।

जातु—(possibly, at all)—किं तेन जातु जातेन 'उसके पैदा होने का संभवतः क्या लाभ है।' न जातु बाला लभते स्म निर्वृतिम् 'उस लड़की ने जरा भी शान्ति को न पाया।

ततः—१. फिर—ततः कतिपयदिवसापगमे 'फिर कुछ दिन बीतने पर।' २. इसलिए—यतः पापं करोति ततो दण्डमवाप्नोति। ३. तो—यदि गृहीतमिदं ततः किम् 'जो यह पकड़ा जाए तो क्या (होगा)।' ४. ततस्ततः 'फिर आगे कहिए। (in dialogues).

तथा—१. ऐसे, वैसे ही—तथा मां वंचयित्वा 'मुझे ऐसे ठग कर।' सूतस्तथा करोति 'सारथि वैसा ही करता है।' २. और (=च)—अनागतविधाता च प्रत्युत्पन्नमतिस्तथा (=च)। ३. ऐसा ही हो—तथेति। तथा च 'similarly', तथापि 'nevertheless', तथा हि 'that is to say namely'.

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तद्--१. इसलिए (हेतु)--राजपुत्रा वयं तद् विग्रहं श्रोतुं नः कुतूहलमस्ति 'हम राज-पुत्र हैं इसलिए युद्ध के जानने (सुनने) की हमें कुतूहल है। २. तब (यदि के साथ)--यदिमहत् कुतूहलंतत्कथयामि 'यदि बहुत कुतूहल है तो मैं वर्णन करूंगा।'

तावत्--१. पहले--प्रिये इतस्तावदागम्यताम् 'प्यारी, पहले इधर आइए।' २. इस अन्तरमें--सखेस्थिरप्रतिबन्धो भव, अहं तावत्स्वामिनश्चित्तवृत्तिमनुवर्तिष्ये 'मित्र, अपने विरोध में स्थिर रहो (डटे रहो), इस अन्तर में मैं स्वामी के चित्त की इच्छा के अनुसार बर्ताव करूंगा।' ३. अभी--गच्छ तावत् 'अभी जाइए।' ४. निश्चय--त्वमेव तावत्प्रथमो राजद्रोही 'निश्चय तुम ही पहले राजद्रोही हो।' ५. विषय--विग्रहस्तावदुपस्थितः 'जहां तक लड़ाई का सम्बन्ध है यह तो आ ही गई।' ६. कम से कम--न तावन्मानुषी सा 'वह (स्त्री) कम से कम मनुष्य जाती मे नहीं है।'

तु--वाक्य के आरंभ में नहीं आता। यह भेद (adversative), अवधारण (restrictive) और पादपूरण (expletive) के अर्थ में प्रयुक्त होता है। स सर्वेषां सुखानां प्रायोऽन्ते ययौ, एकं तु सुतमुखदर्शनसुखं न लेभे। अवनिपतिस्तु तामनिमेषलोचनो ददर्श। अन्य अव्ययों के साथ अपितु, नतु, किन्तु, परन्तु आदि इसके प्रयोग हैं।

न--१. 'not' न दृष्टोऽयं मया। २. अनिश्चयवाचक सर्वनामों के साथ--न कोऽपि 'कोई नहीं।' न किंचित् 'कुछ नहीं।' ३. निषेध के अभाव में (in positive sense) दो बार (न न) प्रयुक्त होता है--नेयं न वक्ष्यति मनोगतमाधिहेतुम् 'वह अवश्य अपने मन की पीड़ा के हेतु को कहेगी।'

ननु--१. प्रश्न, उत्तर हां में चाहता है--नन्वहं ते प्रियः 'क्या मैं तुम्हें प्यारा हूँ।' २. अनुनय, 'कृपया'--ननु मां प्रापय पत्युरन्तिकम् 'कृपया मुझे मेरे पति के पास पहुँचाइए।' ननु को भवान्। ३. आमन्त्रण (vocative)--ननु मूर्खाः पठितमेव युष्माभिस्तत्काण्डम् 'ओ मूर्खों, तुमने वह कांड अवश्य पढ़ा है।' ४. अवधारण--ननु भवानग्रतो मे वर्तते ,आप ही मेरे सामने हैं।'

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम—१. नाम वाला (by name)—दशरथो नाम। पुष्पपुरी नाम नगरी। २. निश्चय—मया नाम जितम् 'निश्चय मुझे विजय मिली है।' ३. संभाव्य (perhaps, possibly) दृष्टस्त्वया कश्चिद्धर्मज्ञो नाम 'संभवतः कोई धर्म के जानने वाला आप से देखा गया है।' को नाम राज्ञां प्रियः 'संभवतः कौन राजाओं का प्यारा है।' अभ्युपगम (granted, it may be that)—एवमस्तु नाम 'अच्छा ऐसा ही हो।' ५. अलीके (feigned action, pretence)—कार्तान्तिको नाम भूत्वा 'ज्योतिषी (झूठा) बन कर।' ६. विस्मय (wonder)—अन्धो नाम पर्वतमारोहति 'आश्चर्य, अन्धा पर्वत पर चढ़ता है।' क्रोध (anger)—किं नाम विस्फुरन्ति शस्त्राणि 'ओह, क्या शस्त्र चमकते हैं।' अपि नाम—विधिलिङ् के साथ वाक्य के आरंभ में संभावना के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

नु—१. प्रश्न और विकल्प—स्वप्नो नु माया नु मतिभ्रमो नु 'क्या, यह सपना था, माया थी या मेरे मन का भ्रम था।' २. प्रश्नवाचकों के साथ 'संभवतः'—कथं नु गुणवद् विन्देयं कलत्रम् 'संभवतः कैसे मैं गुणवाली पत्नी को पाऊँ!'

नूनम्—निश्चय—नूनं तव पाशांश्छेत्स्यति 'वह अवश्य तुम्हारे बंध काटेगा।' अद्यापि नूनं हरकोपवह्निस्त्वयि ज्वलति 'निश्चय शिव के कोप की अग्नि अब तक भी तुम में जलती है।

परम्—१. अत्यन्त—परमनुगृहीतोऽस्मि 'मैं अत्यन्त आभारी हूँ।' ज्यादा से ज्यादा (at the most)—आयुस्तत्र मर्त्यानां परं त्रिंशद्भवति 'वहां मनुष्यों की आयु ज्यादा से ज्यादा तीस वर्ष होती है।' २. केवल (nothing but, only)—विषाणे स्तः परं न ते 'तुम्हारे केवल सींग ही नहीं।'

मा—निषेधार्थक (negative) निपात है और लोट् तथा लुङ् (अ के बिना) के साथ प्रयुक्त होता है—मा गच्छ, मा गमः या मा स्म गमः 'मत जा।' मा तावत् 'ईश्वर न करे।' मा नाम।

मुहुः—१ बार बार (often)—बालो मुहू रोदिति 'बालक बार बार (बहुत) रोता है। २. मुहुः—मुहुः (कभी—कभी)—मुहुर्भ्रंश्यद्बीजा मुहुरपि बहुप्रापितफला नीतिर्नयविदः 'नीतिविद् की नीति कभी बीज नष्ट हुई, कभी बहुत फल देने वाली मान पड़ती है।'

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यतः—१. कहां से (whence)—यतस्त्वया ज्ञानमशेष माप्तम् 'तुम से पूरा ज्ञान कहां से प्राप्त किया गया है।' २. हेतु (because)—स सर्वैः निन्दितः यतः सोऽतीव दुर्वृत्तः 'उसकी सब निन्दा करते हैं क्योंकि वह अत्यन्त दुराचारी है।'

यथा—१. जैसा—यथा आज्ञापयति देवः 'जैसा महाराज अज्ञा करें।' २. इव (like)—राजते भैमी सौदामिनी यथा 'भीम की पुत्री बिजली के समान चमकती है।' आसीदियं दशरथस्य गृहे यथा श्रीः (उत्तरराम-चरितम्)। ३. ऐसे (so, namely)—तद्यथानुश्रूयते 'वह ऐसे सुना जाता है।' ४. कि (introducing a direct assertion)—विदितं खलु ते यथा स्मरः क्षणमप्युत्सहते न मां विना 'निश्चय यह तुम्हें मालूम ही है कि कामदेव मेरे विना एक क्षण भी नहीं सह सकता।' ५. ताकि (so that)—दर्शय तं चौरसिंहं यथा व्यापादयामि 'उस चोर सिंह को मुझे दिखा ताकि मैं उसे मार डालूं।'

यथा—तथा १. जैसा—वैसा (as—so)—यथावृक्षस्तथा फलम् 'जैसा पेड़ वैसा फल।' २. ऐसे—जैसे, कि (so—that)—तथा करिष्ये यथा स वधं करिष्यति 'मैं वैसे करूँगा कि वह वध करेगा।' ३. क्योंकि—इसलिए (since—therefore)—यथायं प्रचण्डो नभस्वान् तथा तर्कयामि आसन्नीभूतः पक्षिराजः 'क्योंकि यह हवा तेज है इसलिए मैं अनुमान करता हूँ कि पक्षिराज (गरुड़) निकट आ पहुँचे हैं।' ४. इतना—जितना (as–as)—न तथा बाधते शीतं यथा बाधति बाधते 'जाड़ा इतना कष्ट नहीं देता जितना 'बाधति' रूप।' यथैव शान्ता प्रिया तनूजास्य तथैव सीता 'उसे जितनी अपनी बेटी शान्ता प्यारी है उतनी ही सीता (प्यारी है)।' यथा यथा—तथा तथा, जितना जितना—उतना उतना (the more—the more, the less–the less)—यथा यथा यौवनमति क्राम तथा तथा अनपत्यताजन्मा महानवर्द्धतास्य संतापः 'जितनी जितनी उसकी जवानी घटती गई उतना उतना सन्तान के अभाव से पैदा हुआ उसका बड़ा संताप बढ़ता गया।'

यद्—१. कि, किसी वाक्य के उधृत करने में, इति के साथ और बिना—वक्तव्यं यदिह मया हता प्रियेति 'तुम्हें कहना चाहिए कि यहां प्रिया मुझ से मारी गई।' किं त्वं मत्तोऽसि यदेवमसम्बद्धं प्रलपसे 'क्या तू

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पागल है जो (कि) ऐसे असंबद्ध बकता है। २. ताकि (in order that)—किं शक्यं कर्तुं यन्न क्रुध्यते नृपः 'क्या किया जासके ताकि (जिससे) राजा नाराज न हो।' ३. हेतु (because)—प्रियमाचरितं लते त्वया मे यदीयं पुनर्मया दृष्टा 'हे लता, तूने मेरा भला किया क्योंकि यह फिर मुझे दीख पड़ी।'

यदि—सांकेतिक वाक्यों के आरंभ में आता है। यदि वा (or, or else)—अज्ञानाद् यदि वा ज्ञानात् 'अनजाने से या जाने से।' यद्यपि 'although, even if'.

यावत्—१. अवधि (duration of time or space) द्वितीयान्त सुबन्तों के साथ—स्तन्यत्यागं यावत्पुत्रयोरवेक्षस्व 'चूंघना छोड़ने तक अपने बेटों की रक्षा कर।' २. तो अभी—यावदिमां छायामाश्रित्य प्रतिपालयामि ताम् 'इस छाँव का आसरा लेकर मैं अभी उसकी प्रतीक्षा करता हूँ।'

यावत्—तावत् १. जब तक—तब तक (as long as—so long) यावद् वित्तोपार्जनशक्तिस्तावन्निजपरिवारो रक्तः 'जब तक धन कमाने की ताकत है तब तक परिवार भी अनुरक्त है।' सूत तावद्रथं स्थापय यावदहमवतरामि। २. साकल्य (totality, all)—यावद् दत्तं तावद् भुक्तम् 'जितना दिया गया सब खाया गया।' ३. ज्योंहि—त्योंहि, अभि—कि (as soon as, no sooner-than, scarcely-when)—एकस्य दुःखस्य न यावदन्तं गच्छामि तावद् द्वितीयं समुपस्थितं मे 'अभी मैं एक दुःख के अन्त को नहीं पहुँचता कि दूसरा आ मोजूद होता है।' कभी इसके साथ न प्रयुक्त होता है। यावन्न, न यावत्-तावत्।

वरम्—इस का प्रयोग न के साथ (वरं—न, 'better-than') होता है। न के पीछे प्रायः च, तु और पुनः भी आते हैं—वरं प्राणत्यागो न पुनरधमानामुपगमः 'प्राणों का त्याग अच्छा है परन्तु नीचों की संगत नहीं।' याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा 'गुणवाले से निष्फल प्रार्थना भली पर नीच से सफल प्रार्थना कुछ नहीं।'

वा—अपने संबद्ध पद के पीछे आता है। च की भाँति या तो सब पदों के साथ या केवल अन्तिम पद के साथ प्रयुक्त होता है। १. या (or)—रामो वा गोविन्दो वा या रामो गोविन्दो वा। २. उपमा (=इव 'like')—

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जातां मन्ये तुहिनमथितां पद्मिनीं वा अन्यरूपाम् (मेघ०) 'कोरे से झुलसी हुई कमलिनी के समान उसे मैं रूप में बदलती हुई मानता हूँ।' ३. विकल्प (optionally)—वर्षे तृतीये पञ्चमे वा (कर्णवेधः) ४. प्रश्नवाचक के साथ संभावना के अर्थ में—मृतः को वा न जायते 'मरा हुआ (मर कर) संभवतः कौन पैदा नहीं होता।'

हि—कभी वाक्य या पाद के आरंभ में नहीं आता। १. हेतु (because)—अग्निरिहास्ति धूमो हि दृश्यते 'यहां आग है क्योंकि धुआं दिखाई देता है।' २. निश्चय (indeed)—न हि कमलिनीं दृष्ट्वा ग्राहमवेक्षते मतंगजः 'निश्चय कमल के पेड़ को देख कर हाथी मगरमछ की परवाह नहीं करता।' ३. अवधारण (restrictive)—मूढो हि मदनेनायास्यते 'केवल मूर्ख (ही) काम से पीड़ित होता है।' ४. उदाहरण (illustrating, for instance)—सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः 'जैसे सूरज हज़ारों गुणा वापस देने के लिए रस को लेता है।' ५. अनुनय (कृपया, pray) प्रश्नवाचक और लोट् के साथ—कथं हि देवाञ्जानीयाम् 'कृपया, कैसे मैं देवताओं को जानूँ।' तद्धि दर्शय 'कृपया, यह दिखाइए।' ६. पादपूर्ण (expletive) के लिए छंद आदि में।

४. विस्मयादिबोधक 'Interjections'.

२५३. जो अव्यय शब्द वक्ता के मनोविकार को बताते हैं उन्हें विस्मयादिबोधक (Interjections) कहते हैं। यह वक्ता के भिन्न भिन्न भावों के सहसा उद्गार होते हैं, इसलिए वाक्य के अन्य शब्दों से इनका सम्बन्ध नहीं होता। ये वाक्य के आदि में प्रयुक्त होते हैं। कुछ प्रसिद्ध विस्मयादिबोधक नीचे दिए गए हैं:—

अयि—१. संबोधन (Vocative, prithee)—अयि मकरोद्यानं गच्छावः 'मित्र, आओ विहारवन को चलें।' अयि मातर्देवयजनसंभवे देवि सीते। २. प्रश्न—अयि जीवितनाथ जीवसि 'हे मेरे प्राणों के नाथ, क्या आप जीवित हैं?'

अये—१. आश्चर्य—अये भगवत्यरुन्धती 'ओह, भगवती अरुन्धती।' अये वसन्तसेना प्राप्ता। २. दुःख, शोक—अये देवपादपद्मोपजीविनोवस्थेयम् 'शोक (हा) महाराज के चरण-कमलों के सेवकों की यह हालत।' ३. संबोधन।
CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरे—अवे, रे, रेरे इत्यादि संबोधन में अवज्ञा के द्योतक हैं। अरे दुष्ट, रेरे चातक।

अहह—१. खेद, शोक—अहह दारुणो वज्रनिर्घातः 'हा, यह वज्र का भयानक आघात है।' अद्भुत और सुख के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है। ऐसे ही आ, ओ, हा, बत आदि का प्रयोग है।

अहो—संबोधन, शोक, विषाद, करुण, विस्मय, प्रशंसा आदि अर्थों में प्रथमान्त सुबन्तों के साथ प्रयुक्त होता है। अहो राजानः। अहो विपाकः। अहो उन्मीलन्ति वेदनाः। अहो मधुरमांसां दर्शनम्। अहो गीतस्य माधुर्यम्। अहो वकुलावलिका।'

आ—१. स्मृति, किसी वस्तु का अकस्मात् याद आना (sudden recollection)—आ एवं किल तदासीत् 'ओ, निश्चय वह ऐसे था' २. पादपूर्ण-आ एवं मन्यसे। आः-अवज्ञा के अर्थ में आता है—आः मूर्ख।

दिष्ट्या—१. हर्ष, ईश्वर का धन्यवाद—दिष्ट्या प्रतिहितं दुर्जातम् 'ईश्वर का धन्यवाद है कष्ट दूर हो गया।' २. वृध् धातु के साथ बधाई के अर्थ में, बधाई का विषय तृतीयान्त होता है—दिष्ट्या महाराजो विजयेन वर्धते 'महाराज को विजय पर बधाई हो।'

धिक्—अवज्ञा, विषाद, असन्तोषादि के अर्थ में प्रयुक्त होता है—धिक् तान्। धिग्जाल्मान्।

बत—(प्रायः अहो पूर्वक-अहो बत) १. खेद, अनुकंपा—अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम् 'हा शोक, बड़ा भारी पाप करने लगे हैं।' २. सन्तोष—अहो बतासि स्पृहणीयवीर्यः 'ओह, तुम वांछनीय बल वाले हो।' ३. विस्मय—हता बत वराकी सा। अहो बत महच्चित्रम्। ४. संबोधन—बत वितरत तोयं तोयवाहा नितान्तम् ओ 'बादलो बहुत पानी दो।'

भोः—संबोधन में सब वचनों और लिंगों में प्रयुक्त होता है—भो भोः पण्डिताः।

साधु—१. बहुत अच्छा (well done, bravo)—साधु भवान्। २. अच्छा—साधु यामि 'अच्छा, मैं जाता हूं।'

स्वस्ति—स्वागत या विदा के अर्थ में प्रयुक्त होता है। स्वाहा और स्वधा क्रमशः देवताओं और पितरों को बलि देने में प्रयुक्त होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हन्त—१. हर्ष, आश्चर्य—हन्त प्रवृत्तं संगीतकम् 'अहा, संगीत आरंभ हो गया है।' २. विषाद, अनुकंपा—हन्त धिङ्मामधन्यम् 'शोक, मुझ अधन्य को धिक्कार है।' ३. वाक्यारंभ (inceptive particle)—हन्त ते कथयिष्यामि 'अच्छा, आप को बताऊँगा।'

हा—१. विषाद—हा प्रिये जानकि 'शोक, हे प्यारी जानकी।' २. विस्मय – हा कथं में प्रियसखी कौशल्या 'अहो, यह तो मेरी प्यारी सखी कौशल्या है।' कष्टम्, धिक्, हन्त आदि के साथ हा प्रयुक्त होता है—हा हन्त हन्त नलिनीं गज उज्जहार 'हा शोक, हाथी ने कमल के पे को उखाड़ डाला।

अभ्यास ३७

१. नीचे लिखे अव्ययों के भिन्न भिन्न अर्थ दिखाने के लिए उन्हें वाक्यों में प्रयुक्त करो :—

अथ, इति, इव, एव, किल, क-क, च-च, चेद्, तथा, तावत्, नाम, यथा, यथा-तथा, यद्, यावत्-तावत्, वा, हि, हन्त, हा, इत्यादि।

२. नीचे लिखे वाक्यों में अव्यय और उनके अर्थ बताओ :—

अहो सर्वास्ववस्थासु चारुता शोभां पुष्यति। अपि ज्ञायते कतमेन दिग्भागेन गतः स जाल्म इति। अयि जात कथितव्यं कथय। यदि यथा वदति क्षितिपस्तथा त्वमसि किं पितुरुत्कुलया त्वया। अथ तु वेत्सि शुचिव्रतमात्मनः पतिकुले तव दास्यमपि क्षमम्॥ पुराणमित्येव न साधुः सर्वं न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्। यद-भावि न तद्भावि भावि चेन्न तदन्यथा। अनुत्सेकः खलु विक्रमा-लंकारः। त्वां वनदेवता अपि न द्रक्ष्यन्ति किं पुनर्मर्त्याः। कच्चिद-ज्ञानसंमोहः प्रनष्टस्ते धनंजय। क्व रुजा हृदयप्रमाथिनी क्व च ते विश्वसनीयमायुधम्। न केवलं तद्गुरुरेक पार्थिवः, क्षितावभूदेक-धनुर्धरोऽपि सः। वयस्य मया न साधु समर्थितमापत्प्रतिकारः किल प्रमदवनोद्यानप्रवेश इति। तात लताभगिनीं वनज्योत्स्नां ताव-दामन्त्रयिष्ये। आर्य ननु रामभद्र इत्येव मां प्रत्युपचारः शोभत तातपरिजनस्य, तद्यथाऽभ्यस्तमभिधीयताम्। परिश्रमं नाम विनीय च क्षणं वक्तुं प्रचक्रमे। अननुपन्नं खल्वीदृशं त्वयी। ननु प्रवातेऽपि

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निष्कम्पा गिरयः। अयि कठोर यशः किल ते प्रियं किमयशो ननु घोरमतः परम्। कथय नाथ कथं बत मन्यसे। अकथितोऽपि ज्ञायत एव यथायमाभोगस्तपोवनस्येति। यथा नौ प्रियसखी बन्धुजनशोचनीया न भवति तथा निर्वाहय। शिशुर्वा शिष्या वा यदसि मम तत्तिष्ठतु तथा। वरं मौनं कार्यं न च वचनमुक्तं यदनृतम्। विकसति हि पतंगस्योदये पुण्डरीकम्। द्वावपि किलागमिनौ प्रयोगनिपुणौ च। अनियन्त्रणानुयोगो नाम तपस्विजनः।

३. संस्कृत में अनुवाद करो:—

यदि (अथ) मैं सत्य न बोलूँ तो मर जाऊँ। क्या (अपि) आपका अध्ययन निर्विघ्न है। ईश्वर करे (अपि) वह सफल हो। विद्वान् के तौर पर (इति) वह माननीय है पर अध्यापक के तौर पर (इति) वह निन्दनीय है, ऐसी (इति) सब की सम्मति है। वह मुझ से कुछ (इव) रोष से बोला। झूठों से क्या कुछ (किमिव) उम्मीद नहीं। बालक के दर्शन मात्र से ही (एव) मुझे दया आ गई। यह ठीक है (कामम्) कि उसे मालूम नहीं पर (तु) वह झूठ नहीं बोलता। तूफान ने बड़े बड़े वृक्षों को उखाड़ डाला तो लताओं को तो और भी अधिक। कहा जाता है (किल) कि चाणक्य ने नन्द वंश का नाश किया। मुझे आशा है (किल) आप परिक्षा में पास हो जाएँगे। न सिर्फ आप (न केवलम्) बल्कि आप के साथी भी (अपि) सज़ा पाएँगे। आप के धन और मेरी ग़रीबी में बड़ा अन्तर है (क-क)। कृपया (खलु) आप यह पुस्तक न लीजिए। ज्योंहि (च) मैं वहां पहुँचा कि (च) वर्षा आरंभ हो गई। एक तो (च) वह बीमार था दूसरे (च) उसे सारा काम करना पड़ा। आपको सच बोलना चाहिए नहीं तो (नो चेद्) आप का कोई विश्वास न करेगा। यदि आप पढ़ना चाहते तो गुरु के पास जाते। निश्चय (तावत्) तुम पहले विद्रोही हो। आप घर जाइए इस अन्तर में (तावत्) मैं वहीं ठहरूंगा। शायद (नाम) तुमने मेरी पुस्तक देखी है। संभवतः (नाम) कौन ऐसा कहेगा। झूठ में (नाम) नगर-रक्षक बन कर वह छावनी में दाखिल हो गया। वह अवश्य (नूनं) आपकी सहायता करेगा। ज्यादा से ज्यादा (परम्) तीन दिन मैं यहां ठहर सकता हूँ। ईश्वर न करे (मा तावत्) यह चोर हो। वह कमलिनी के समान (यथा) सुन्दर है। मैं जानता था कि (यथा) वह कभी चोरी न करेगा। मैं ऐसा (तथा) करूंगा कि (तथा) वह अपना दोष स्वीकार करेगा। रोग इतना (तथा) दुःख

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दायक नहीं जितनी (यथा) कमजोरी । जितना जितना (यथा यथा) दुःख का ध्यान करोगे उतना उतना (तथा तथा) यह अधिक कष्टदायक होगा । जैसा (यथा) बोओगे वैसा (तथा) काटोगे । जब तक (यावत्) मनुष्य के पास धन है तब तक (तावत्) लोग उसकी आज्ञा मानते हैं । जब तक (तावत्-यावत्) मैं लौटूं आप यहां ठहरें । मैं जानता हूँ क्यों (येन) वह इतना अभिमान करता है । भिक्षा का अन्न खाना अच्छा (वरम्) पर दूसरों के धन का स्वाद कुछ नहीं । कौन संभवतः (वा) इस पर यकीन लाएगा । निश्चय (हि) कामी पुरुष निन्दा की परवाह नहीं करता । कृपया (हि) मुझे बताइए मैं कैसे (कथम्) वहां पहुंचूं । मित्र (अयि), आओ कालेज चलें । परीक्षा में पास होने पर आप को बधाई हो । (दिष्ट्या वृध्) । ओहो (अहो बत), आपका राज्य कितना बड़ा है । आइए (हन्त), मैं आप को अपने रत्न दिखाऊंगा । ऐलो (हन्त), मेरे पुराने मित्र आ गए ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वादशोऽध्यायः ।

वाक्यरचना विचार: 'Outlines of Syntax'.

२५४, अंग्रेजी में रचना के विषय में प्रायः वाक्य से शब्द-क्रम पर ही विचार होता है। अंग्रेजी वाक्य का अर्थ शब्द-क्रम पर आश्रित है। यही बात हिन्दी में पाई जाती है। परन्तु संस्कृत विभक्ति-प्रधान (inflexional) भाषा है। इसमें वाक्य का अर्थ विभक्ति के आधीन रहता है शब्द-क्रम के नहीं। इसलिए इस अध्याय में समता (concord). कारक (government of cases) और लकारार्थ (uses of tenses and moods) आदि पर विचार कियाजाएगा।

शब्द-क्रम 'Order of Words in a Sentence'.

२५५. हिन्दी और अंगरेज़ी की भाँति संस्कृत में किसी शब्द का अर्थ वाक्य में उसके स्थान पर निर्भर नहीं, क्योंकि संस्कृत में शब्दों के सम्बन्ध को विभक्ति आदि प्रकाशित करते हैं। उदाहरण के लिए हिन्दी के वाक्य राम ने रावण को मारा (Rama killed Ravana) को लिजिए। यदि राम और रावण के क्रम (order) को बदल दिया जाए तो अर्थ सर्वथा बदल जाता है। जैसे, रावण ने राम को मारा। परन्तु संस्कृतवाक्य रामः रावणं जघान में यदि शब्द-क्रम (order of words) को बदल भी दिया जाए तो भी अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे, रावणं रामो जघान या जघान रामः रावणम् , सब का अर्थ एक ही है। यद्यपि व्याकरण के अनुसार किसी शब्द-क्रम की आवश्यकता नहीं तो भी अन्वय के हेतु कोई क्रम अवश्य होना चाहिए। प्राचीन संस्कृत साहित्य के अवलोकन से पता लगता है कि वाक्य के शब्दों में ऐसा क्रम होना चाहिए:—प्रथम कर्त्ता (subject) और उसके विशेषण (attributes), दूसरे कर्म (object) और उसके विशेषण (उसके पूर्व) और अन्त में क्रिया (verb)

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रियाविशेषण (adverbs) अन्त के अतिरिक्त कहीं (प्रायः आरंभ में) आ सकते हैं, और समुच्चयवाचक निपात (conjunctives) प्रायः वाक्य के आदि में या प्रथम शब्द के पीछे प्रयुक्त होते हैं। जैसे, किन्तु करटकादयोऽप्याश्वास्यन्ताम्। जनकस्तु सत्वरं स्वीयं पुरं जगाम परन्तु जनक शीघ्र ही अपनी राजधानी को गया।'

(क) विशेषण अपने विशेष्य से पूर्व आता है। जैसे, अमोघं सायकम्। परन्तु जब विधेय विशेषण उद्देश्य के साथ (predicatively) प्रयुक्त हो तो विशेष्य से पीछे आता है। जैसे, तस्य सायकममोघमस्ति। यदि गुणवाचक और सार्वनामिक (pronominal) विशेषण इकट्ठे प्रयुक्त हों तो सार्वनामिक पहले आता है। जैसे, सा कोमला शय्या। तस्यामतिदारुणायां निशायाम्।

(ख) षष्ठ्यन्त संबन्धवाचक (genetive) अपने संबन्धी शब्द से पूर्व आता है। यदि उसका कोई विशेषण भी हो तो विशेषण सम्बन्धवाचक से पूर्व आता है। जैसे, अयम् अस्य देव्याः सन्ततिः।

(ग) सम्बोधन (vocative) वाक्य के आदि में प्रयुक्त होता है। जैसे, देव, पृच्छामि किंचित् 'महाराज, मैं आप से कुछ पूछना हूँ।'

(घ) कथाओं में अस् (be) और प्रायः भू वाक्य के आदि में प्रयुक्त होते हैं। जैसे, अस्ति मगधदेशे चम्पकवती नामारण्यानी 'मगधदेश में चम्पकवती नाम एक जंगल है।'

(ङ) रीतिवाचक, कालवाचक, स्थानवाचक, परिणामवाचक आदि क्रियाविशेषण (adverbs) अपने संबन्धी शब्द के निकट आते हैं। विस्मयबोधक (interjections) और प्रश्नवाचक (interrogatives) वाक्य के आदि में आते हैं। जैसे, शीघ्रं जगाम सः। अहो गीतस्य माधुर्यम्। कस्त्वम्। किं वा त्वया क्रियते।

(च) समुच्चयवाचक निपात (conjunctives) च, वा, तु, हि, चेत् कभी वाक्य के आदि में प्रयुक्त नहीं होते।

अभ्यास ३८

नीचे लिखे वाक्यों में शब्द-क्रम शुद्ध करो :—

दशरथस्य भार्याः आसन् तिस्रः कौशल्या सुमित्रा च कैकेयी चतुर्णाम् अमीषां फलानां मध्ये रोचते ते यत् तद् गृह्यताम्।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैवायत्तं जन्मकुले तु मदायत्तं पौरुषम् ।
अतिभारः अस्ति कः समर्थानाम् । तातः कुमार! त्वामाह्वयति ।
अस्माकम् इमे सन्ति गृहाः । इदम् आर्य! आसनम् ।
दुर्गाणि नरः तरतु च भद्राणि पश्यतु ।
घोरे कथम् अस्मिन् निवससि अरण्ये ।
रामो वा लक्ष्मणः गतो वनम् ।
हि सहस्रगुणं रविः उत्स्रष्टुम् आदत्ते रसम् ।
मे विचारमूढः त्वं प्रतिभासि ।
अन्यत्रमना अहं अभवम् नाश्रौषम् अतः ।
अर्थागमश्च नित्यमरोगिता, च प्रिया भार्या च प्रियवादिनी,
च वश्यः पुत्रः च अर्थकरी विद्या, जीवलोकस्य षड् सुखानि राजन् ।
वने कस्मिंश्चित् सिंहः नाम भासुरकः स्म प्रतिवसति ।
नागार्जुनस्य कदाचित् तस्य पुत्रेषु प्रष्ठः सर्वेषु पञ्चत्वं बालः आययौ अपि ।
राजा नाम दुष्यन्तः कर्तुं मृगयां एकदा जगाम वनम् ।

वचन 'Number'.

२५६. (क) हिन्दी और अँगरेजी में केवल दो वचन हैं, एकवचन और बहुवचन । परन्तु संस्कृत में एक तीसरा द्विवचन भी है । संस्कृत में एकवचन हिन्दी और अँगरेजी की तरह प्रायः जाति का बोधक भी होता है । जैसे सिंहः सर्वश्वापदेषु बलिष्ठः 'शेर सारे जानवरों से बलवान् है ।' ब्राह्मणो न हन्तव्यः 'ब्राह्मण को नहीं मारना चाहिए ।' नरेषु ब्राह्मणः श्रेष्ठः ।

(ख) द्विवचन दो का वाचक है । शरीर के अंग तथा पुरुष और स्त्री वाचक नाम, जो प्रायः इकट्ठे आते हैं, द्विवचन में प्रयुक्त होते हैं । जैसे, हस्तौ, पादौ, दम्पती, पितरौ । उन शब्दों का अनुवाद, जो हिन्दी आदि में बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं, और जो दो का अर्थ रखते हैं, संस्कृत में द्विवचन से करना चाहिए । जैसे, 'राम अपने हाथ पाँव धोता है' रामः हस्तौ पादौ प्रक्षालयति ।

(ग) बहुवचन दो से अधिक के लिए प्रयुक्त होता है । एकवचन की भांति यह जाति (whole class) का भी बोधक है । जैसे, वानराः अत्यन्त-चपलाः । दृष्टधर्माणः हि ऋषयः । परन्तु कई शब्द संस्कृत में बहुवचन में

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रयुक्त होते हैं परन्तु अर्थ एकवचन का देते हैं। जैसे, दाराः, आपः, वर्षाः, सिकताः (sand) अक्षताः (rice) प्राणाः और गृहाः।

(घ) कभी कभी बहुवचन आदर के लिए प्रयुक्त होता है। जैसे, इति श्रीशङ्कराचार्याः 'ऐसे श्री शंकराचार्य कहते हैं।' आदर के लिए प्रायः पादाः शब्द भी अन्त में प्रयुक्त होता है। जैसे, देवपादान्।

(ङ) उत्तम पुरुषों में प्रायः बहुवचन का प्रयोग होता है (cf. English editorial 'we') जैसे, वयमपि भवत्यौ सखीगतं किंचित्पृच्छामः 'हम (=मैं) भी आपकी सखी के विषय में आप से कुछ पूछते हैं।'

(च) देशों के नाम सदा बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं। क्योंकि ये देशवासिओं के नाम से प्रसिद्ध होते हैं। जैसे, अहं गतः कदाचित् कलिंगान् 'मैं एक वार कलिंग (देश) को गया।' परन्तु मगधदेशम्।

(छ) व्यक्तिवाचक नाम (proper noun) बहुवचन में वंश का बोधक होता है। जैसे, रघूणामन्वयं वक्ष्ये 'अब मैं रघुवंश का वर्णन करूँगा। जनकानां रघूणां च संबंधः कस्य न प्रियः 'रघु और जनक के वंशों का संबंध किसे प्यारा नहीं।'

The Article.

२५७. संस्कृत में Article (defenite or indefenite) अंग्रेजी के अनिश्चयवाचक a या an का संस्कृत में अनुवाद एक या कश्चिद् से करना चाहिए। निश्चयवाचक 'the' का अनुवाद तद् सर्वनाम से किया जाएगा। जैसे, एकः या कश्चिद् बालः 'a boy'। स राजा 'the king'। सा नगरी 'the city'.

अभ्यास ३६.

जीवों में मनुष्य श्रेष्ठ है और मनुष्यों में ब्राह्मण। संन्यासी आदर के योग्य है। सब जन्तुओं में हाथी सब से बड़ा है और शेर सब से बलवान्। मैंने अपनी आंखों उस दृश्य को देखा है। सब जन्तुओं को अपने प्राण सब से प्यारे होते हैं। सरदी के मारे लोगों के हाथ-पाँव अकड़ गए। रेगिस्तान में धूप से रेत तप जाती है। सदा अपने माता-पिता का आदर करो और भाई-बहिन से प्रेम करो। पति-पत्नी नित्य सन्ध्या करें। हम पूछना चाहते हैं कि आपने अभी तक यह काम क्यों नहीं किया। दीनों पर दया करनी चाहिए ऐसा आचार्य कहते हैं। जीवात्मा परमात्मा से भिन्न है यह स्वामी दयानन्दजी का मत है। अशोक ने कलिंग
CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को जीता। मैं वंग देश को गया। राम रघुओं में सब में श्रेष्ठ राजा था। मुग़लों में अकबर सब से अधिक सर्वप्रिय राजा था। कौरवों ने बहुत वर्ष इन्द्रप्रस्थ में राज्य किया।

समता 'Concord'.

२५८. जिन सम्बन्धी शब्दों में लिंग, वचन और विभक्ति समान हों उन में समता कहलाती है। यह समता नीचे लिखे सम्बन्धितों में होती है :—
१. कर्ता और क्रिया, २. विशेषण और विशेष्य और ३. नाम और सर्वनाम।

१. कर्ता की क्रिया से समता 'Concord of Subject and Verb'.

२५९ कर्त्ता का जो पुरुष और वचन होगा वही क्रिया का भी होगा। जैसे, मृगाः सस्यं खादन्ति 'मृग खेती को खाते हैं।' आपत्स्वपि न मुह्यन्ति नराः पण्डितबुद्धयः 'बुद्धिमान् लोग दुःखों में भी मोह को प्राप्त नहीं होते।' साधयामः वयम् 'हम जाते हैं।'

(क) क्रिया के स्थान में कृदन्त विशेषण या विशेष्य भी प्रयुक्त हो सकते हैं। इन की भी समता कर्त्ता के साथ होती है। जैसे, स कृतवान्, सा कृतवती, तेन कृतम्, ते कृतवन्तः। सुभृत्यः दुर्लभः 'अच्छा नौकर मिलना कठिन है।'

(ख) परन्तु यदि पात्र, आस्पद, स्थान, पद, प्रमाण, भाजन, आदि शब्द क्रिया के स्थान में प्रयुक्त हों तो उनमें केवल नपुंसकलिंग और एकवचन प्रयुक्त होता है। क्योंकि इन अवस्थाओं में अध्याहृत (understood) क्रिया की समता कर्त्ता के साथ होती है, इन शब्दों से नहीं। जैसे, गुणाः पूजास्थानं गुणिषु 'गुणवालों में गुण पूजा का स्थान है।' अत्रभवन्तः प्रमाणम् 'यहाँ आप प्रमाण हैं।' संपदः पदमापदाम् 'धन दुःखों का घर है।' अर्थात् संपदः पदमापदां सन्ति न तु 'अस्ति'। त्वमसि महसां भाजनम्।

२६०. जब भिन्न भिन्न वचनों के दो या अधिक च से सम्बद्ध कर्त्ता प्रयुक्त हों तो क्रिया में बहुवचन (combined number) होता है। जैसे, द्रौपदी पाण्डवाश्च वनं जग्मुः 'द्रौपदी और पांडव वन को गए।'

परन्तु जब वे एकभाव (oneness) को दिखाते हों तो क्रिया में

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकवचन होता है। पृथक्त्व (separateness) में भी एकवचन ही होता है। जैसे, पटुत्वं सत्यवादित्वं कथायोगेन बुध्यते 'चतुराई और सचाई बोल-चाल से जानी जाती है।' न मां त्रातु तातः प्रभवति न चाम्बा 'मेरा पिता मेरी रक्षा नहीं कर सकता और नहीं मेरी माता।'

कभी कभी क्रिया की समीपवर्ती कर्त्ता से समता होती है। जैसे, अहश्च रात्रिश्च उभे च संध्ये धर्मोऽपि जानाति नरस्य वृत्तम् 'दिन, रात, दोनों संध्याएँ और धर्म भी मनुष्य के काम को जानता है।'

(क) यदि दो या अधिक भिन्न पुरुषों के कर्त्ता च से मिलाए जाएँ तो उत्तम पुरुष के भाव में क्रिया की समता उत्तम पुरुष से और उत्तम पुरुष के के अभाव में मध्यमपुरुष से होगी। जैसे, त्वञ्चाहञ्च रामश्च पाठशालां गच्छामः। अहञ्च त्वञ्च (or अहञ्च रामश्च) पाठशालां गच्छावः। त्वं गोपालश्च तत्रास्ताम्।

(ख) यदि दो या अधिक कर्त्ता वा से युक्त हों तो क्रिया की समता समीपवर्ती कर्त्ता से सर्वथा होती है। जैसे, रामो लक्ष्मणो वा गच्छतु 'राम या लक्ष्मण जाए।' स वा इमे बालका वा फलानि गृह्णन्तु 'वह या ये बालक फलों को लें।' इमे बालका वा स वा फलानि गृह्णातु 'ये बालक या वह फलों को ले।' स वा यूयं वैतत्कर्मकुरुत। यूयं वा स वैतत्कर्म-करोतु।

(ग) यदि दो या अधिक कर्ता किसी सर्वनाम (pronoun) या नाम के साथ समानाधिकरण (case in apposition) हों तो विधेय (predicate) की समता नाम या सर्वनाम से होती है। जैसे, माता मित्रं पिता चेति स्वभावात् त्रितयं हितम् 'माता, मित्र और पिता तीनों (नपुं०) स्वभाव से ही हित के करने वाले (नपुं०) होते हैं।

अभ्यास ४०.

१. संस्कृत में अनुवाद करो :—

उर्वशी इन्द्र का सुकुमार अस्त्र है। तुम मेरे प्राण हो और मेरी आँखों की ज्योती हो। निस्तेज बलवान् पुरुष भी अपमान का स्थान होता है। अच्छे बालक बड़ों के प्रेम के भाजन होते हैं। अनेक प्रकार मैं आपकी कृपाओं का पात्र बना। व्याकरण के विषय में आप प्रमाण हैं। झूठ पापों का घर है। निस्स्वार्थ मित्र मिलना दुर्लभ है। राम, लक्ष्मण और सीता ने नदी को पार किया। घुड़सवार और

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैदल फ़ौज तैय्यार है। गोविंद, तुम और मैं लाहौर जाएँगे। तुमने और गोपाल न वह कठिन काम किया। शकुन्तला स्त्रियोंमें रत्न और अपने घर का शृंगार है। तुमने या मालती ने यह खबर उनको पहुँचाई है। आपने मेरी पुस्तक ली है या इन लड़कों ने। आपने या इन लड़कियों ने ये आम खाए हैं। भीम और मैं या कर्ण और तुम इस योधा को पराजित कर सकते हो।

२. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो और हेतु भी दो :--

१. स विदर्भमगच्छन्। २. दुर्योधनस्य शंकास्थानाः पाण्डवाः। ३. मुनिना कुक्कुरो व्याघ्रं कृतः ४. विद्यार्थिनः गुरोः स्नेहभाजनाः। ५. बलवानपि निस्तेजाः कस्य नाभिभवास्पदः। ६. आयुः कर्म, वित्तं, विद्या च देहिनः नियताः। ७ तीर्थोदकञ्च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हति। ८. कर्म ज्यायान ह्यकर्मणः। ९. यमिमां पुष्पितं वाचं प्रवदति विपश्चितः। १०. त्वं जीवितमस्ति मे हृदयं द्वितीयम्। ११. अहो प्रमोदो विषादश्च पौराणां परां कोटिमधिरोहति। १२. मम पिता भवन्तो वा मां त्रातुं प्रभवति। १३. रामो भवांश्च तत्र गच्छथः। १४. अहञ्च भीष्मश्च कर्णश्च पाण्डवैः योत्स्यन्ते। १५. मम युद्धविशारदाः शूराः यूयं वा भीष्ममभिरक्षन्तु। १६ अहं वा इमे जनाधिपाः वा न भविष्यामोऽतः परम्।

२. विशेषण और विशेष्य की समता।

२६१. संस्कृत में विशेषण के वही लिंग, विभक्ति और वचन होते हैं जो विशेष्य के हों। जैसे, रूपवान् पुरुषः। रूपवती स्त्री। तानि पुस्तकानि। तेभ्यो जनेभ्यः। स्वादु फलम्। रूपवतीभ्यां कन्याभ्याम्।

परन्तु संख्यावाचक विशेषण अपने नियत लिंग और वचन प्रयुक्त होते हैं। जैसे, शतं ब्राह्मणाः, शतं स्त्रियः, विंशतिः मित्राणि।

(क) यदि एक विशेषण का दो या अधिक विशेष्यों के साथ सम्बन्ध हो तो विशेषण उस वचन में प्रयुक्त होता है जो सब विशेषणों को मिलाकर हो। यदि विशेष्य पुँल्लिंग और स्त्रीलिंग हों तो विशेषण पुँल्लिंग में प्रयुक्त होता है और यदि पुँलिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग तीनों हों तो विशेषण नपुंसकलिंग में प्रयुक्त होता है। जैसे, राजा राज्ञी च स्तुत्यचरितौ स्तः 'राजा (पुं०) और रानी (स्त्री०) प्रशंसनीय चरित्र वाले (पुँ०) हैं।' मृगया-ऽक्षास्तथा पानं गर्हितानि महीभुजाम्, शिकार (स्त्री०) जुआ (पुँ०)

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
और (शराब) पीना (नपुं०) राजाओं के लिए त्याज्य (नपुं०) हैं। अक्ष-स्तथा पानं गर्हिते।

(ख) प्रायः विशेषण की समता उसके समीपवर्ती विशेष्य के साथ भी होती है। जैसे, उद्वेगः कलहः कण्डूः सेव्यमाना च वर्धते 'चिन्ता (पुँ०) कलह (पुँ०) और खुजली (स्त्री०) ध्यान दी हुई (स्त्री०) बढ़ती है।' कामश्च जृम्भितगुणो नवयौवनञ्च।

३. नाम और सर्वनाम की समता।

२६२. सम्बन्धबोधक सर्वनाम (Relative pronouns) की समता लिंग और वचन में अपने पूर्वकथित नाम (antecedent noun) के साथ होती है। परन्तु विभक्ति उनके अपने अपने वाक्यों (clauses) के सम्बन्ध से निर्दिष्ट होती है। जैसे, यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः 'जिस के पास धन है वही नर कुलीन है।' बुद्धिर्यस्य बलं तस्य 'जिस की बुद्धि उसका बल।'

(क) यदि सम्बन्धबोधक सर्वनाम का विधेय (predicate) कोई ऐसा नाम हो जिसका लिंग पूर्वकथित नाम के लिंग से भिन्न हो, तो सम्बन्धबोधक सर्वनाम 'पूर्वकथित नाम के लिंग' ही में प्रयुक्त होता है और निर्देशक सर्वनाम (Demonstrative pronoun) उस नाम के लिंग में प्रयुक्त्व होता है जिस का वह विशेषण है। जैसे, शैत्यं हि यत्सा प्रकृति-र्जलस्य 'जो (Rel. नपुं०) शीतता (Antec. नपुं०) है वह (Demo. स्त्री०) जल की प्रकृति (स्त्री०) है।'

(ख) यदि सम्बन्धबोधक सर्वनाम (यत्) पूर्ण वाक्य के स्थान में प्रयुक्त्व हो, जैसे अंगरेजी में 'that', तो वह नपुंसकलिंग और एकवचन में होता है। जैसे, ननु वज्रिण एव वीर्यमेतद्विजयन्ते द्विषतो यदस्य पक्ष्याः 'निश्चय यह इन्द्र का ही बल है कि (Rel. नपुं० एकव०) उसके मित्र शत्रुओं पर विजय पाते हैं।' यन्प्रिया नयनविषयं याता स एव मे महोत्सवः।

अभ्यास ४१.

१. संस्कृत में अनुवाद करो :—

भले बालकों की सब प्रशंसा करते हैं। इस श्रेणी में तीन लड़के और बीस लड़कियां हैं। उसने सौ रुपया और पच्चीस गौएं दान कीं। पांडव और द्रौपदी बड़े दुःखी थे। फकीरी बाना पहन कर राम और सीता बन को गए।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका रूप और वाणी प्रशंसनीय हैं। स्वादु आहार और रोचक पुस्तकें सब को प्यारी हैं। काम, क्रोध और हिंसा मनुष्य के लिए त्याज्य हैं। परों के बिना पक्षी जल से शून्य तालाब, और धन से हीन मनुष्य संसार में निष्फल हैं। ईश्वर की कृपा से हम सुरक्षित हैं और ऐसे ही और लोग भी। जो सच बोलते हैं वे सन्मान पाते हैं। पुत्र वह है जो भक्ति वाला हो और नौकर वह है जो आज्ञाकारी हो। दूसरों की उन्नति को सहन न करना यह दुष्टों का स्वभाव ही है। जो मैं परीक्षा में पास हो गया हूँ वह आप की कृपा का फल है।

२. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो और हेतु भी दो :—

१. अयं देवी वाग् वश्यमिवानुवर्तते। २. द्रव्याभिलाषाकुलाः मित्राणि सर्वत्र मिलन्ति। ३. भवान् गौतमी च पक्षपातिनी शकुन्तलायाः। ४. पाण्डवाश्च द्रौपदी च यशस्विनी सन्ति। ५. धर्मः कामः सुखं वयश्च सर्वेषां वांछिताः। ६. सत्यं ज्ञानं दमः धृतिश्च दुर्लभाः लोके। ७. यो निशा सर्वभूतानां तस्मिन् जागर्ति संयमी। ८. भुञ्जते त्वघं पापा याः पचन्त्यात्मकारणात्। ९. ये पापाः अपि स्युः स यान्ति परां गतिम्। १०. स सुहृद् व्यसने यत् स्यात्, तत् पुत्रो यत्तु भक्तिमत्। ११. शैत्यं हि यत् तत् प्रकृतिर्जलस्य। १२. यन्मे धनं, तत्तवेव भागः। १३. कामो दर्पः हर्षः सुखञ्च एते सर्वे धनात्प्रवर्तन्ते। १४. यस्यार्थः तत् हि पण्डितः। १५. यन्मया ज्ञानं प्राप्तं तत् गुरोरेव कृपा।

कारक-प्रकरणम् Government of Cases'.

२६३. वाक्य में क्रिया के साथ नाम के सम्बन्ध को कारक कहते हैं। संस्कृत में छः कारक हैं :—कर्ता (nominative). कर्म (accusative). करण (instrumental), सम्प्रदान (dative), अपादान (abalative) और अधिकरण (locative)। सम्बन्ध (genetive) कारक नहीं गिना जाता क्योंकि इसका क्रिया के साथ सम्बन्ध का ज्ञान नहीं होता। इन को कारक विभक्ति (cases governed by verbs) भी कहते हैं। अव्ययों के योग में भी कारक प्रयुक्त होते हैं इन्हें उपपद-विभक्ति (cases governed by indeclinables) कहते हैं।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्ता 'Nominative'.

२६४. कर्ता प्रायः प्रातिपदिक (crude form of a word), लिंग, परिमाण, वचन, आदि को दिखाने के लिए प्रयुक्त होता है[1]। जैसे, कृष्णः, श्रीः, ज्ञानम् , आढकम् , एकः, बहवः, इत्यादि। जो आप ही क्रिया के करने में प्रधान हो उसे कर्ता कहते हैं[2]। कर्ता में प्रथमा विभक्ति होती है। कर्तृवाच्य (active voice) में कर्ता प्रथमान्त होता है और कर्मवाच्य (passive voice) में कर्म प्रथमान्त होता है। जैसे, रामो गच्छति। घटः क्रियते।

कर्म 'Accusative'.

२६५. वह वस्तु या मनुष्य जिस पर क्रिया के व्यापार का फल (effect) होता है कर्म कहलाता है[3]। जैसे, हरिं सेवते। कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है[4]।

(१) समस्त 'सकर्मक धातुओं' के साथ कर्म अवश्य प्रयुक्त होता है। और कई सकर्मक धातुओं के साथ प्रधान कर्म के अतिरिक्त एक विधेय कर्म (factitive object) भी प्रयुक्त होता है। जैसे, कुमारं नेतारं कृत्वा 'कुमार को (acc.) नेता (fact. ob) बना कर।' जानामि त्वां प्रकृति-पुरुषम् 'मैं आपको प्रधान पुरुष जानता हूँ।'

(२) गत्यर्थक धातुओं के साथ स्थानबोधक शब्दों में द्वितीया का प्रयोग होता है[5]। जैसे, ग्रामं गच्छति 'गाँव को जाता है।' विषादमगच्छत् 'दुःख को प्राप्त हुआ।' विचचार दावम् 'जंगल में फिरा।' पश्चादुमाख्यां सुमुखी जगाम 'पीछे वह सुन्दरी उमा के नाम को प्राप्त हुई।' यदि गति वास्तविक (real) हो तो चतुर्थी भी प्रयुक्त हो सकती है। जैसे ग्रामं ग्रामाय वा गच्छति।

(३) शी (lie down), स्था (stand), और आस् (be) के साथ अधि के योग से अधिकरण में द्वितीया का प्रयोग होता है[6]। जैसे.

---

१. प्रातिपदिकार्थलिंगपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा। २. ३. ४६। २. स्वतन्त्रः कर्ता। १. ४. ५५.। ३. कर्तुरीप्सिततमं कर्म। १. ४. ४९.। ४. कर्मणि द्वितीया। २. ३. २.। ५. गत्यर्थकर्मणि द्वितीयाचतुर्थ्यौ चेष्टायामध्वनि। २. ३. १२। ६. अधिशीङ्स्थासां कर्म। १. ४. ४६।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शय्यामधिशेते, 'शय्या पर सोता है। हरिः वैकुण्ठमधितिष्ठति 'हरि वैकुण्ठ में रहता है।' आसनमध्यास्ते 'आसन पर बैठता है।'

(४) विश् के साथ अभि-नि के योग से इसी प्रकार द्वितीया प्रयुक्त होती है[1]। जैसे, अभिनिविशते सन्मार्गम् 'वह अच्छे मार्ग (acc.) पर चलता है।'

(५) वस् के साथ उप, अनु, अधि या आ के योग में द्वितीया का प्रयोग होता है[2]। जैसे, उप-अनु-अधि-आ-वसति वैकुण्ठं हरिः 'हरि वैकुण्ठ में (acc.) रहता है।'

(६) अकर्मक धातुओं के साथ भी कर्म प्रयुक्त होता है यदि कर्म व्यवधानरहित (continuous) काल या मार्ग का बोधक हो[3]। जैसे, देवो द्वादशवर्षाणि न ववर्ष 'बारह वर्ष (acc.) तक वर्षा न हुई।' क्रोशं कुटिला नदी 'नदी एक कोस तक (acc.) टेढ़ी है।' मासं गुडधानाः 'एक मास के लिए गुड़ और धान।' परन्तु मासस्य द्विरधीते 'महीने में दो बार पढ़ता है।'

(७) उभयतः, सर्वतः, धिक्, उपर्युपरि, अधोधः, अध्यधि (nearness) शब्दों के योग में द्वितीया का प्रयोग होता है[4]। जैसे, उभयतः कृष्णं गोपाः 'गोप कृष्ण के (acc.) दोनों ओर हैं।' सर्वतः कृष्णम् 'कृष्ण के (acc.) चारों ओर।' धिग्जाल्मान् 'धूर्तों (acc.) को धिक्कार है।' उपर्युपरि लोकं हरिः 'हरि संसार के (acc.) ठीक ऊपर है।' अधोधो लोकं पातालः 'पाताल पृथ्वी के (acc.) ठीक नीचे है।'

(८) अभितः, परितः (round); समया, निकषा (near); हा (woe to be); और प्रति (to) के योग में भी द्वितिया प्रयुक्त होती है।[5] जैसे, परिजनो राजानम् अभितः–परितः–स्थितः 'नौकर राजा के (acc.) चारों ओर खड़े थे।' ग्रामं समया–निकषा 'गाँव के निकट'। हा वेदनिन्दकम् 'वेदनिन्दक के (acc.) लिए शोक हो।' नगरगमनं प्रति।

---

१. अभिनिविशश्च। १. ४. ४७। २. उपान्वध्याङ्वसः १. ४. ४८।

३. कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे। २. ३. ५।

४. उभसर्वतसोः कार्या धिगुपर्यादिषु त्रिषु।
द्वितीयाम्रेडितान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते॥ वा०॥

५. अभितःपरितःसमयानिकषाहाप्रतियोगेऽपि। वा०।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(९) अन्तरेण (without, regarding) और अन्तरा (between) के योग में भी द्वितीया का प्रयोग होता है[1]। जैसे, कोऽन्य-स्त्वामन्तरेण शक्तः 'तुम्हारे (acc.) बिना और किसकी शक्ति है।' देवीं वसुमतीमन्तरेण 'रानी वसुमती (acc.) के विषय में।' अन्तरा त्वां च मां च 'तुम्हारे और मेरे बीच में।'

(१०) अनु (after. resembling) कर्मप्रवचनीय के योग में द्वितीया प्रयुक्त होती है।[2] जैसे, जपमनु प्रावर्षत् 'जप के (acc) पश्चात् वर्षा हुई।' सर्वं मामनु ते 'तेरा सब कुछ मेरे (acc.) से मिलता है।

'अभि' 'प्रति', और 'उप' कर्मप्रवचनीय भी ऐसे ही प्रयुक्त होते हैं।

(क) अकर्मक धातुओं के साथ भी उपसर्गों (prepositions) के योग में कर्म प्रयुक्त होता है। जैसे, प्रभुचित्तमेव हि जनोऽनुवर्तते 'निश्चय लोग अपने स्वामी की इच्छा (acc.) के अनुसार चलते हैं।'

अभ्यास ४२.

१. संस्कृत में अनुवाद करो:—

जनक ने अपनी लड़की का नाम सीता रक्खा। अर्जुन ने कृष्ण को रथवान बनाया। मैं लाहौर जाऊँगा। असंयमी पुरुष सदा दुःख को प्राप्त होता है (या)। निर्धन लोग जमीन पर ही सोते हैं (अधि-शी)। सीता वाल्मीकि के आश्रम में रही (अधि-वस्)। कृपया इस कुरसी पर बैठिए (अधि आस्)। मैं तो पहाड़ पर रहता हूँ (अधि-स्था)। सायं काल को मैं एक नगर में पहुँचा (अभि-नि-विश्)। मैं कालेज में दो वर्ष व्याकरण पढ़ता रहा। यह सड़क लगा-तार पांच मील तक खराब है। सड़क के दोनों ओर फलदार पेड़ हैं। महात्मा गांधी के चारों ओर लोग खड़े थे। तुम्हारे बिना (अन्तरेण) यह काम कौन कर पाएगा। आप की इस मामले में (अन्तरेण) क्या राय है? जालन्धर और अमृतसर के बीच (अन्तरा) व्यास नदी बहती है। मैं आराम करने के पीछे (अनु) भोजन करूँगा। मूर्ख लोग ही केवल दूसरों की राय के पीछे चलते हैं (अनु-चर)।

२. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो और हेतु भी दो: –

१. धननाशं श्रुत्वा विषादाय ययौ सा। २. महाराजो रामो ऽयोध्यायामध्यास्ते। ३. पाण्डवाः वनस्थल्यामध्यशेरन्। ४. स धर्म-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

[1] अन्तरान्तरेण युक्ते। २.३.४। [2] कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया। २.३.८।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभायामभिनिविशति। ५. दशरथोऽस्मिन् प्रासादे अध्यवसत्। ६. अस्मिन्नाश्रमे बहवः यतयः आवसन्ति। ७. द्वादशवर्षेभ्यः स निरन्तरं वेदानध्यैत। ८. क्रोषाय कुटिलोऽयं राजमार्गः। ९. पापस्य धिक्। १० ग्रामस्याभितो नदी वर्तते। ११. दीनस्य प्रति दया कर्तव्या। १२ स रक्षांसि वेद्याः परितो निरास्थत्। १३. मन्दौत्सुक्योऽस्मि नगरगमनस्य प्रति। १४. तत्र कतिपयेभ्यो दिवसेभ्योऽतिष्ठः। १५. एतद् गुडधानमेकाय मासाय याति। १६. तव मम चान्तरा गोपालः उपविष्टः। १७. तपसोऽन्तरेण विद्या न भवति। १८. मनुष्याः मे पथोनुवर्तन्ते। १९. यज्ञस्यानु देवो ववर्ष। २०. हा मम मन्दभागस्य।

द्विककर्मकधातु 'Verbs governing two Accusatives.'

२६६. संस्कृत में कुछ ऐसे भी धातु हैं जिनके साथ दो कर्म प्रयुक्त होते हैं, एक मुख्य या प्रधान (direct) और दूसरा गौण या अकथित (indirect)। ऐसे धातुओं को द्विकर्मक धातु कहते हैं। अकथित कर्म मेंभी द्वितीया विभक्ति प्रयुक्त होती है जैसे 'धेनुं (ind.) दोग्धि पयः (dir.) वक्ता की इच्छा के अनुसार 'धेन्वाः (abl.) पयो दोग्धि' के स्थान में प्रयुक्त हुआ है।

(१) अधोलिखित कारिका में कहे हुए और इनके पर्यायवाचक अन्य धातु द्विकर्मक हैं :—

दुह्याच्पच्दण्डरुधिप्रच्छिचिब्रूशासुजिमन्थमुषाम्।
कर्मयुक् स्यादकथितं तथा स्यान्नीहृकृष्वहाम्॥

(दुह् 'milk', याच् 'beg', पच् 'cook' दण्ड् 'punish', रुध् 'obstruct', प्रच्छ् 'ask', चि 'collect', ब्रू 'tell' शास् 'instruct', जि 'win', मन्थ् 'churn', मुष् 'steal', and also नी, हृ, कृष् वह् 'lead, carry')

जैसे, गां दोग्धि पयः 'गौ से (ind.) दूध (dir.) दुहता है।' बलिं याचते वसुधां 'बलि से (ind.) पृथिवी (dir.) मांगता है।' तण्डुलानोदनं पचति 'चावलों से (ind.) भात (dir.) पकाता है।' चौरं शतं दण्डयति 'चोरको (ind) सौ रुपए (dir.) दंड देता है।'

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्रजमवरुणद्धि गाम् 'बाड़े में (ind.) गौ को (dir.) बंद करता है।' नरं पन्थानं पृच्छति 'आदमी से (ind) मार्ग (dir.) पूछता है।' वृक्षमवचिनोति फलानि 'वृक्ष से (ind) फलों को (dir.) तोड़ता है।' छात्रं (ind.) धर्मं (dir.) ब्रूते शास्ति वा। देवदत्तं (ind.) शतं (dir.) जयति। क्षीरनिधिं (ind.) सुधां (dir) मथ्नाति। देवदत्तं (ind.) शतं (dir) मुष्णाति। ग्रामम् (ind.) अजां (dir.) नयति, हरति, कर्षति, वहति वा।

उपरिलिखित उदाहरणों से प्रतीत होगा कि क्रिया को पूर्ण करने के लिए जो कर्म द्वितीया विभक्ति में प्रयुक्त होता है वह मुख्य या प्रधान (principal) कर्म है, और वक्ता की इच्छानुसार द्वितीया में प्रयुक्त होता है। वह गौण या अकथित (secondary) कर्म है।

(क) द्विकर्मक धातुओं के कर्मवाच्य (passive) में उपरिलिखित पहली बारह धातुओं का द्वितीयान्त गौण कर्म, और अन्त की चार धातुओं का प्रधान कर्म प्रथमान्त में बदल जाता है[1]। और दूसरा कर्म कर्तृवाच्य की भांति वैसा ही बना रहता है। जैसे,

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
स धेनुं (ind.)पयो(dir.) दोग्धि।	तेनधेनुः (nom)पयो(acc.)दुह्यते।
देवाःसमुद्रं(ind)सुधां(d)ममन्थुः	देवैःसमुद्रः(n.)सुधां (acc.)ममन्थे।
सोऽजां (dir.) ग्रामं (ind)नयति	तेन अजा(nom.) ग्राम(acc.)नीयते
हरति, कर्षति, वहति वा।	ह्रियते कृष्यते, उह्यते वा।

प्रेरणार्थक क्रिया णिजन्त 'Causals'.

(४) णिजन्त क्रियाओं का अर्थ यह है कि कोई मनुष्य या पदार्थ किसी अन्य मनुष्य या पदार्थ को किसी कर्म के करने को प्रेरित करता है। जैसे, अश् से अश्नाति 'खाता है।' आशयति 'खिलाता है।'

(क) गणपठित (primitive) क्रिया का कर्ता णिजन्त में तृतीयान्त हो जाता है। प्रेरक णिजन्त क्रिया का कर्ता होता है और कर्म वैसा ही बना रहता है। जैसे,

---

[1] गौणे कर्मणि दुह्यादेः प्रधाने नीहृकृष्वहाम्।......लादयो मताः। सि० कौ० (पा० ७०८३)

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

बुद्धिभक्षार्थयोः शब्दकर्मकाणां निजेच्छया ... प्रयन्त्रानां

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गणपठित	णिजन्त
देवदत्तः (nom.) ओदनं पचति।	स)देवदत्तेन(ins.)ओदनं पाचयति
रामः (nom.) भार्यां त्यजति।	स) रामेण(ins.) भार्यां त्याजयति

(ख) जिन धातुओं का अर्थ गति (motion), बुद्धि (knowledge), या भक्षण (eating) हो, और जिनका कर्म कोई शास्त्र (literary work) हो, या जो अकर्मक धातु हों, उनका असली (primitive) कर्ता णिजन्त में द्वितीयान्त हो जाता है।[1] जैसे,

गणपठित	णिजन्त
शत्रवः स्वर्गमगच्छन्।	शत्रून् (acc.) स्वर्गमगमयन्।
शिष्याः वेदार्थमविदुः।	शिष्यान् (acc.) वेदार्थमवेदयन्।
बालका मोदकमश्नन्।	बालकान् (acc.) मोदकमाशयन्।
छात्रः वेदान् अधीते।	छात्रं (acc.) वेदानध्यापयति।
पृथ्वी सलिले आस्त।	पृथ्वीं (acc.) सलिले आसयन्।

उपरिलिखित नियम के कई अपवाद (exceptions) भी हैं:—

(ग) नी और वह् धातुओं का असली कर्ता णिजन्त में द्वितीयान्त नहीं होता किन्तु तृतीयान्त होता है[2]। जैसे

भृत्यो भारं नयति वहति वा। | भृत्येन (ins.) भारं नाययति वाहयति वा

परन्तु जब वह् का णिजन्त कर्ता वाहक (driver) का वाचक हो तो णिजन्त में साधारण नियमानुसार द्वितीयान्त का ही प्रयोग होता है[3] जैसे,

वाहा रथं वहन्ति।	सूतो वाहान् (acc.) रथं वाहयति।
वहन्ति यवान् बलीवर्दाः।	(स)वाहयति यवान् बलीवर्दान्(acc)।

(घ) अद् और खाद् (eat) का कर्ता भी णिजन्त में तृतीयान्त होता है[4]। जैसे,

बालोऽन्नमत्ति खादति वा | बालेन (acc.) अन्नमादयति खादयति वा।

(ङ) दृश् धातु के साथ णिजन्त में द्वितीया का प्रयोग होता है[5]।

---

१. गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्माकर्मकाणामणि कर्त्ता स णौ। १. ४.५२।
२. नीवह्योर्न। वार्तिक। ३. नियन्तृकर्तृकस्य वहेरनिषेधः। वा०। ४. आदिखाद्योर्न। वा०। ५. दृशेश्च। वा०।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भक्ताः हरिं पश्यन्ति से ('गुरुः) हरिं भक्तान् (acc.) दर्शयति।'

(च) णिजन्त क्रियाओं को कर्मवाच्य बदलने के लिए णिजन्त क्रिया का प्रधान कर्म, जो गणपठित (primitive) क्रिया का कर्ता है, प्रथमान्त होता है, और दूसरा कर्म वैसा ही बना (retained) रहता है। जैसे,

गणप०	णिजन्त	णि० कर्मवा०
रामोग्रामं गच्छति।	(स) रामं (Dir.) ग्रामं गमयति	(तेन) रामो (nom.) ग्रामं गम्यते।
भृत्यः कटं करोति।	(स) भृत्येन भृत्यं (Dir.) वा कटं कारयति	(तेन) भृत्यः (nom.) कटं कार्यते।
गोविन्दो मासमास्ते।	(स) गोविन्दं (Dir.) मासमासयति	(तेन) गोविन्दो (nom.) मासमास्यते।
छात्रः वेदानधीते।	(स)छात्रं वेदानध्यापयति	(तेन) छात्रः वेदानधीयते

(छ) उन णिजन्त धातुओं का, जिनका अर्थ बुद्धि (knowledge) और भक्षण (eating) ही या जिनका कर्म शास्त्र (literary work) हो, प्रधान या गौण दोनों में से प्रत्येक कर्म कर्मवाच्य का कर्ता हो सकता है। जैसे, माणवकं धर्मं बोधयति 'माणवको धर्मं बोध्यते' या 'माणवकं धर्मो बोध्यते' दोनों हो सकते हैं।

(ज) द्विकर्मक धातु भी (क) और (ख) का अनुसरण करते हैं। अर्थात् जिन धातुओं का अर्थ गति आदि है उनके साथ गणपठित क्रिया का कर्ता द्वितीया में प्रयुक्त होता है, और अन्य धातुओं के साथ (ग) के अधीन तृतीया में प्रयुक्त होता है। जैसे, वामनो वलिं वसुधां याचते से '(स) वामनेन बलिं वसुधां याचयति।' गोपोऽजां नगरं हरति से 'गोपेन अजां नगरं हारयति।'

अभ्यास ४२.

१. नीचे लिखे वाक्यों में वाच्य-परिवर्तन करो और इन्हें णिजन्त में बदलो :—

ततो द्रोणोऽर्जुनं भूयो रणशिक्षामशिक्षयत्। तौ दम्पती स्वां प्रति राजधानीं प्रस्थापयामास वशी वसिष्ठः। वाल्मीकिस्तौ कुश-लवौ सांगं वेदमध्यापयत्। महाश्वेता कादम्बरीमनामयं पप्रच्छ। स कुशलमबले पृच्छति त्वां वियुक्तः। मधुसूदनोऽर्जुनमिदं वाक्य-मुवाच। सोऽपृच्छल्लक्ष्मणं सीताम्। लक्ष्मणो रामं सर्वं वृतान्त-
CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मकथयत्। सा तापसान् धर्मं शास्ति। आखण्डलः काममिदं बभाषे। गोपालो गाः ग्रामं नयति। स मनीषितं दिवं दुग्धवान्। याचकः धनिनं धनं भिक्षते। चौरो देवदत्तं शतं मुष्णाति। देवाः क्षीरनिधिं सुधाममथ्नन्।

२. नीचे लिखे वाक्यों में वाच्य-परिवर्तन करो और णिजन्तों को मूल वाक्यों (primitive) में बदलो :—

तौ कुशलवौ भगवता वाल्मीकिना त्रयीविद्यामध्यापितौ। जथोदाहरणं बाह्वोर्गापयामास किन्नरान्। छात्रो धर्मं बोध्यते। भृत्यः कटं कार्यते।

३. संस्कृत में अनुवाद करो :—

मैंने उसे व्याकरण पढ़ाया। भिखारी ने सौदागर से सौ रुपया मांगा। राजा ने बागी को दो साल की कैद की सज़ा दी। यह भार मुझ से स्टेशन पर न ले जाया जाएगा। अपराधी को दो सौ रुपया जुरमाना हुआ। चौदह रत्न क्षीर सागर से दुहे गए। लड़कों से कई प्रश्न पूछे गए। प्रजा से कर दिलाया गया। उन्होंने दुर्योधन के पास एक दूत भेजा। अपने नौकर से पानी मँगाइए। मैंने चितेरे से एक चित्र बनवाया है। सुमन्त्र ने घोड़ों से रथ को शीघ्र चलवाया। उसने अपने शत्रुओं से अपने भाई को पकड़वा दिया। माता पुत्र को खाना खिलाती है। आपको पुस्तक पढ़ाई गई। लड़कों को फल खिलाए गए। मुझ से पाठ पढ़वाया गया। यह आज्ञा सब से मनवाई जाएगी। आपको लाहौर भिजवा दिया जाएगा। धोबी से कपड़े धुलवाए गए। अर्जुन को कृष्ण से गीता का उपदेश दिया गया।

करण 'Instrumental'.

२६७. संस्कृत में करण प्रधानतया किसी क्रिया के कर्त्ता (agent) या साधन (instrument) का बोधक है[1]। यह क्रिया की सिद्धि में मुख्य साधक होता है[2]। जैसे, तेनोक्तम्। स खड्गेन व्यापादितः 'वह तलवार से मारा गया।' अधोलिखित अर्थों में भी करण प्रयुक्त होता है:—

(१) हेतुवाची (reason) शब्दों में तृतीया विभक्ति होती है[3]।

---

१. कर्तृकरणयोस्तृतीया। २. ३. १८। २. साधकतमं करणम्। १.४.४२। ३. हेतौ। २. ३. २३। फलमपि इह हेतुः। द्रव्यादिसाधारणं निर्व्यापारसाधारणं च हेतुत्वम्। सि० कौ०।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जैसे, तेनापराधेन त्वां दण्डयामि 'उस अपराध के कारण मैं तुम्हें दंड देता हूँ।' विद्यया यशः 'विद्या से कीर्ति होती है। अध्ययनेन वसति 'पढ़ने को रहता है।'

(२) प्रकृति आदि शब्दों के साथ भी तृतीया प्रयुक्त होती है[१]। जैसे, प्रकृत्या दर्शनीयः 'स्वभाव से ही देखने योग्य।' जात्या ब्राह्मणः 'जन्म से ब्राह्मण।' आत्मानुरूपां विधिनोपयेमे 'अपने अनुरूप कन्या को विधि से ब्याहा।'

(३) किसी वस्तु के मूल्य (price) में। जैसे, रूप्यकशतेन विक्रीयमाणं पुस्तकम् 'सौ रुपए को बिकती हुई पुस्तक।' आत्मानं सततं रक्षेद् दारैरपि धनैरपि 'आत्मा की स्त्री और धन (खरच करने) से भी सदा रक्षा करे।'

(४) गत्यर्थक धातुओं के साथ वाहन (vehicle) मार्ग या दशा (route or direction), और क्रियासाधक शरीरांग (part of body) वाचक शब्दों में भी तृतीया प्रयुक्त होती है। जैसे, वाजिना चरति 'घोड़े (vehicle) पर जाता है।' कतमेन मार्गेण गतः 'वह किस मार्ग (route) से गया।' स श्वानं स्कन्धेनोवाह 'वह कुत्ते को कंधे (part of body) पर उठा कर ले गया।'

(५) शपथ अर्थवाची धातुओं के योग में। जैसे आत्मनाहं शपे 'मैं अपनी कसम खाता हूँ।'

(६) मार्ग (place) या समय (time) वाचक शब्दों में यदि कार्य समाप्त हो गया हो तो तृतीया विभक्ति होती है[२]। जैसे, द्वादशभिर्वर्षैर्व्याकरणं श्रूयते 'बारह वर्ष (time) में व्याकरण पढ़ा जाता है' क्रोशेन पाठस्तेनाधीतः 'कोस में (space) उसने पाठ याद कर लिया।'

(७) उत्कृष्टता (excelling) और समता (resembling) वाचक धातुओं के साथ उन शब्दों में तृतीया होती है जिनके कारण उत्कृष्टता और समता है। जैसे, पूर्वान् महाभाग तयातिशेषे 'हे महाभाग, उस (भक्ति) में तुम अपने पूर्वजों से बढ़ गए हो।' स्वरेण राममनुहरति 'स्वर में वह राम से मिलता है।'

(८) जिस विकृत अंग (limb) से अंगवाले का अंगविकार

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

१. प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्। वा०। २. अपवर्गे तृतीया। २. ३. ६.।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(defect of body) जाना जाए उस में तृतीया विभक्ति होती है[1]। जैसे, अक्ष्णा काणः 'आँख से काना।' पादेन खंजः 'पावों से लंगड़ा।'

(९) किसी व्यक्ति की विशेष दशा (state) या अवस्था (condition) के बोधक लक्षण-वाचक शब्दों में तृतीया होती है[2]। जैसे, जटाभिस्तापसः 'जटाओं से तपस्वी।'

(१०) सह, साकं, सार्धं और समं (with) के योग में तृतीया होती है[3]। जैसे, पुत्रेण सह पिता गतः 'पुत्र के साथ पिता गया।'

(क) अर्थः, प्रयोजनं, कार्यं (need, use), किं (what ?) (कृ धातु के साथ और बिना) शब्दों के योग में तृतीया होती है। जैसे, को मे जीवितेनार्थः 'मेरे लिए (gen.) जीवन का क्या प्रयोजन है।' देवपादानां सेवकैर्न प्रयोजनम् 'महाराज को सेवकों की कोई आवश्यकता नहीं।' तृणेन कार्यं भवतीश्वराणाम् 'धनवालों का काम तृण से भी सिद्ध होता है।' किं तया क्रियते धेन्वा 'उस गौ से क्या करना है।'

(ख) कृतम् (away with) और अलम् (enough) के साथ भी तृतीया प्रयुक्त होती है। जैसे, कृतमभ्युत्थानेन 'मत उठिए'। अलमतिविस्तरेण 'अधिक विस्तार न कीजिए।'

(ग) हीन, ऊन, न्यून आदि शब्दों के साथ भी तृतीया होती है। धर्मेण हीनाः 'धर्म से हीन।'

(घ) सम, समान, सदृश और तुल्य के योग में भी तृतीया होती है। जैसे, शक्रेण समः 'इन्द्र के समान।' अनेन सदृशः 'उसके तुल्य।' रजसा तुल्यः 'धूल के बराबर।'

अभ्यास ४४

१. संस्कृत में अनुवाद करो:—

हम वहां बड़े आराम से रहे। ब्राह्मण स्वभाव से ही दयालु होते हैं। जन्म से हर कोइ शूद्र पैदा होता है, पर संस्कारों से द्विज हो जाता है। उसने अपना घोड़ा दो सौ रुपए में बेच कर दो हज़ार में एक मोटर मोल ली। अपना रुपया खर्च करके भी अपने मित्रों की सहायता करो। शत्रु ने हवाई ज़हाजों द्वारा अपनी फौज पहुँचाई। महात्मा गांधी की आज्ञा को सभी शिर पर उठाते हैं। वह चोर

---

१. येनाङ्गविकारः। २. ३. २०। २. इत्थंभूतलक्षणे। २. ३. २१। ३. सहयुक्तेऽप्रधाने २. ३. १९।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किधर गया ? मैं अपना विस्तर अपने सिर पर उठा कर ले जा सकता हूँ। सड़क पर से लोग बाग़ को जा रहे थे। मैं तुम्हारी शरारत के कारण तुम से नाराज़ हूँ। व्यापार के लिए वह योरप गया। मैं अपनी जान की कसम खाती हूँ कि मैं अवश्य आपके साथ जाऊँगी। बुद्धि में वह अपने साथियों से बढ़ कर है। धन में वह कुबेर के बराबर है। शकल में तुम अपने भाई से मिलते हो। उसने दो साल में बी० ए० पास कर लिया। छावनी चार मील तक फैली हुई थी। चार दिन तक मैं अपना काम समाप्त कर लूंगा। क्या तुम्हें अपने किए पर लज्जा नहीं आती (लज्)। वह पांव से लंगड़ा है पर लाठी के सहारे चलता है। अपने साधारण कपड़ों से वह विद्यार्थी जान पड़ता है। ज्यादा क्या, गुलामी मौत है। परीक्षा पास करने से क्या यदि तुम सभ्य नहीं बनते।

२. नीचेलिखे वाक्यों को शुद्ध करो और हेतु भी दो:

१. गोविन्दः कर्णे बधिरः पादे च खञ्जोऽस्ति। २. चक्षुषः काणः पुरुषोऽतीव दुष्टो भवति। ३. अङ्गस्य हीनः पुरुषः स्वभावे क्रूरो भवति। ४. जातौ नापितः स परं वल्कलेषु तापसो दृश्यते। ५. गुरुभक्तौ स गोविन्दमतिशेते। ६. रूप्यकशतात् क्रीतोऽयमश्वः। ७. कस्मिन् दिग्विभागे गतः स जाल्मः। ८. दूरीकृता खलु गुणेषु उद्यानलता वनलताभिः। ९. त्रिवर्षेषु महाभारतं श्रूयते। १०. मासं सांगं वेदमधीत्य स पण्डितो जातः। ११. शत्रोः सह न संदध्यात्। १२. मूर्खस्य समं मैत्री न कार्या। १३. तव कलहस्य कोऽर्थः। १४. काणस्य चक्षुषः किं वा चक्षुःपीडैव केवलम्। १५. कृतमतिप्रसादस्य अलमतिविस्तरस्य च।

सम्प्रदान 'Dative'.

२६८. अत्यन्त इष्ट पदार्थ समझ कर जिसके लिए देने का अभिप्राय किया जाए वह कारक सम्प्रदान संज्ञक होता है[1]। सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है[2] जैसे, शिष्याय विद्यां ददाति 'शिष्य को विद्या देता है।' यहां शिष्य (dat.) गौण कर्म है। यह नीचे लिखे अर्थों में प्रयुक्त होता है।

१. चतुर्थी गौण-कर्म में प्रयुक्त होती है :—

१. कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्। १. ४. ३२। २. चतुर्थी संप्रदाने। २. ३. १३।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) रुच्यर्थक धातुओं के योग में चाहने वाले का सम्प्रदान कारक होता है[1]। जैसे, ब्रह्मचारिणे रोचते विद्या 'ब्रह्मचारी को विद्या भाती है।'

(ख) धृ (owe) धातु के योग में उत्तमर्ण (creditor) में चतुर्थी होती है[2]। जैसे, देवदत्ताय शतं धारयति 'वह देवदत्त के सौ रुपए धराता है।' वृक्षसेचने द्वे धारयसि मे (शकु०)।

(ग) स्पृह् (desire) धातु के योग में ईप्सित अर्थात् जिस पदार्थ के ग्रहण की इच्छा होती है वह सम्प्रदान-संज्ञक होता है[3]। जैसे, धनाय स्पृहयति 'वह धन की इच्छा करता है।

(घ) क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्य्, असूय् और इनके पर्यायवाचक धातुओं के योग में जिसके प्रति कोप किया जाए वह सम्प्रदान-संज्ञक होता है[4]। जैसे' राजा दुष्टाय क्रुध्यति 'राजा दुष्ट पर क्रोध करता है।' शत्रवे द्रुह्यति 'शत्रु से द्रोह करता है।' हरये ईर्ष्यति असूययति वा।

(ङ) उपसर्गयुक्त क्रुध् और द्रुह् के साथ चतुर्थी के स्थान में द्वितीया प्रयुक्त होती है[5]। जैसे, दुष्टम्-अभिक्रुध्यति, अभिद्रुह्यति वा 'दुष्ट पर क्रोध करता है या द्रोह करता है।' न खलु तामभिक्रुद्धो गुरुः (विक्र)।

(च) प्रति या आ पूर्वक श्रु (promise) के योग में जिससे प्रतिज्ञा की जाए (person promised) उसका सम्प्रदान कारक होता है[6]। जैसे, विप्राय गां प्रतिश्रृणोति 'ब्राह्मण को गौ (देने) की प्रतिज्ञा करता है।'

(छ) जिन धातुओं का अर्थ देना (दा, अर्पय), कहना (चक्ष्, शंस्, कथ्, ख्या, निवेदय), भेजना और फेंकना (sending, casting) (प्र-हि, वि-सृज्, क्षिप्) और दिखाना (दर्शय) हो उनके गौण (ind.) कर्म में चतुर्थी प्रयुक्त होती है। जैसे, विप्राय गां ददाति 'ब्राह्मण को गौ देता है।' कथयामि ते भूतार्थम् 'मैं तुमसे (dat.) सत्य कहता हूँ।' होमवेलां गुरवे निवेदयामि 'होम का समय गुरु को निवेदन करता हूं।' भोजेन दूतो रघवे विसृष्टः 'भोज ने रघु के पास दूत भेजा।' ते रामाय शरान् क्षिपन्ति वे राम पर तीर फकते हैं।'

---

१. रुच्यर्थानां प्रीयमाणः १. ४. ३३। २. धारेरुत्तमर्णः। १. ४. ३५। ३. स्पृहेरीप्सितः। १. ४. ३७। ४. क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः। १.४.३७। ५, क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म। १. ४. ३८। ६, प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पूर्वस्य कर्ता। १. ४. ४०।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२. चतुर्थी तदर्थ (dative of purpose) के लिए प्रयुक्त होती है:—

(क) जिस कार्य के लिए कारणवाची शब्द का प्रयोग किया हो उस कार्यवाची शब्द में चतुर्थी विभक्ति होती है[1]। जैसे, यूपाय दारु 'खंभे के लिए काठ।' कुण्डलाय हिरण्यम् 'कुन्डल के लिए सोना।'

(ख) अप्रयुज्यमान (not used) तुमुन्नन्त (infinitive) के कर्म (object) में चतुर्थी होती है[2]। जैसे, फलेभ्यो याति (= फलान्याहर्तुं याति) 'फलों के लिए जाता है।' मुक्तये हरिं भजति (= मुक्तिं प्राप्तुम्)। आतपाय छत्रम् (= आतपं निवारयितुम्)। पिपासायै जलम्।

(ग) भाववाचक संज्ञा (abstract noun) तुमुन्नन्त (infinitive) के अर्थ में चतुर्थी में प्रयुक्त होता है।[3] जैसे, यागाय याति (= यष्टुम्) यज्ञ करने को जाता है।' युद्धाय प्रस्थितः (= योद्धुम्) 'युद्ध करने को चला।'

(घ) क्लृप् (be fit for, tend or conduce to) और इनके पर्य्यायवाचक सं-पद्, जन्, प्र-भू आदि धातुओं के योग में फल (result) वाचक शब्दों में चतुर्थी विभक्ति होती है[4]। जैसे, भक्तिर्ज्ञानाय कल्पते 'भक्ति ज्ञान को उत्पन्न करने में समर्थ है।' रक्षणाय संपद्यते, प्रभवति, कल्पते वा 'रक्षा के लिए समर्थ है।'

अस् और भू (प्रयुक्त और अप्रयुक्त) का भी ऐसे ही प्रयोग होता है। जैसे, लघूनामपि संश्रयो रक्षायै भवति 'क्षुद्रों की एकता भी रक्षा के लिए समर्थ होती है।'

(ङ) उत्पात (portentous phenomenon) अर्थात् बिजली के चमकने और ओले आदि के गिरने से जो बात जानी जाए उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है[5]। जैसे, वाताय कपिला विद्युत् 'पीली बिजली आंधी को सूचित करती है।'

३. कुछ अव्ययों (indeclinables) के साथ चतुर्थी प्रयुक्त होती है :—

(क) नमः; स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम् (equal to) और

---

१. तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या। वा०। २. क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः। २. ३. १४। ३. तुमर्थाच्च भाववचनात्। २. ३. १५। ४. क्लृपि संपद्यमाने च। वा०। उत्पातेन ज्ञापिते च। वा०।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वषट् के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है[1]। जैसे, नमो ब्रह्मणे, स्वस्ति भवते, अग्नये स्वाहा, पितृभ्यः स्वधा, दैत्येभ्यो हरिरलम् दैत्यों को हरि काफी है।'

(ख) कुशलं स्वागतं आदि भी ऐसे ही प्रयुक्त होते हैं। जैसे, कुशलन्ते (dat.) स्वागतं देव्यै।

(ग) हित और सुख के योग में भी चतुर्थी होती है। जैसे, ब्राह्मणाय हितं—सुखम् 'ब्राह्मण के लिए हितकारी।'

(घ) प्र-भू और शक् धातु के साथ अलम् (sufficient, match for) के अर्थ में चतुर्थी होती है। जैसे. प्रभवति मल्लो मल्लाय एक मल्ल दूसरे के लिए काफ़ी है।' रक्षणाय प्रभवति शक्नोति वा 'वह रक्षा करने को समर्थ है।'

(ङ) नमस्कृ (bow) के साथ प्रायः द्वितीया और कभी कभी चतुर्थी आती है, और प्रणि-पत् और प्रणम् के साथ दोनों प्रयुक्त होती हैं। जैसे, मुनित्रयं नमस्कृत्य। नमस्कुर्मो नृसिंहाय। तस्मै प्रणिपत्य नन्दी। प्रणम्य त्रिलोचनाय।

अभ्यास ४५.

१. संस्कृत में अनुवाद करो :—

आप को आम पसंद है (रुच्) परन्तु मुझे सेव रुचिकर है। उसने मेरा हज़ार रुपया देना है (धृ)। दूसरों के बल की इच्छा मत करो (स्पृह्)। भले लोग किसी से द्रोह नहीं करते (द्रुह्), परन्तु दुष्ट सदा दूसरों से ईर्ष्या करते हैं (ईर्ष्य्)। बड़ों को छोटों से नफरत नहीं करनी चाहिए (असूय्)। संतुष्ट प्रजा कभी अपने राजा से द्रोह नहीं करती (द्रुह् या अभि-द्रुह्)। उसने उचित समय पर मुझे सहायता देने का वचन दिया (प्रति-श्रु)। द्वारपाल ने अतिथि का आना राजा से निवेदन किया (निवेदय)। जो वहां हुआ सो आप मुझे बताइए (कथ्)। पाण्डवों ने कृष्ण को सन्धि करने के लिए (सं-धा) दुर्योधन के पास भेजा (वि-सृज्)। अभिमन्यु पर कौरवों ने चारों ओर से तीर चलाए (क्षिप्), परन्तु वह अकेला ही सब के लिए काफ़ी था (अलम्)। आप मुझ पर क्यों क्रोध करते हैं (क्रुध्)। मैं आप से द्रोह नहीं करता (अभि द्रुह्)। कालिदास ने यश के लिए काव्य रचा। प्रतिदिन वह सैर को जाता है। पृथ्वीराज मुहम्मदगौरी से युद्ध

---

१. नमः स्वस्तिस्वाहास्वधालंवषड्योगाच्च। २. ३. १६।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
करनेको चला। कमज़ोर आदमियों की भी एकता रक्षा के लिए होती है (प्र-भू) व्यायाम स्वास्थ्य को देने वाला होता है (क्लृप्)। अच्छी शिक्षा ही भलाई के लिए होती है (सं-पद्)। शिव को प्रणाम करके (प्रणि-पत्), पार्वती ने उन्हें फूलों की अंजलि भेंट की (अर्पय)। भगवन् आप को नमस्ते, आप मेरी रक्षा करने के योग्य हैं। राम को स्वागत, सीता को स्वस्ति, लक्ष्मण को कुशल, ऐसे प्रजा ने उनका अभिनन्दन किया।

२. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो और हेतु भी दो :—

१. बालकं रोचते मोदकम्। २. गोविन्दस्य रूपकशतं धारयसि त्वम्। ३. ये कर्मफलं स्पृहयन्ति आत्मानं त द्रुह्यन्ति। ४. अपराधिने अनभिक्रुध्य अनागसं क्रुध्यसि किम्। ५. अभयं तं प्रतिश्रुत्य कथं तस्य प्राणानसूयसि त्वम्। ६. दरिद्रान् धनं दत्वान्यान् मा कथय। ७. कौरवाः अर्जुने शरानक्षिपन्। ८. कुंडलस्य हिरण्यं स्वर्णकारं प्रदेयम्। ९. घृतं बलं कल्पते बलञ्च रक्षणम्। १०. स्वस्ति भवन्तं, पुनर्दर्शनं गच्छतु भवान्। ११. सर्वेषां शत्रूणां अभिमन्युरलम्। १२. नमस्त्वां देवेशम् इति स कृष्णाय प्रणिपपात। १३. गोब्राह्मणस्य यद् हितं तत्त्वया कार्यम्। १४. भवतो रक्षणं न प्रभवामीति स मां न्यवेदयत्। १५. धर्मस्य राजा भवति न तु प्रजापीडनस्य। १६. इन्द्रस्य वषट्। १७. पुत्रस्य कुशलम्। १८. अग्निं स्वाहा। १९. दुदोह गां स यज्ञं शस्यं च मघवा दिवम्।

अपादान 'Ablative',

२६९. जिससे वियोग हो उसे अपादान (ablative) कहते हैं[1]। अपादान में पंचमी विभक्ति होती है[2]। जैसे, ग्रामादागच्छति 'गांव से आता है।' अश्वात्पतति 'घोड़े से गिरता है।' इसके प्रयोग नीचे लिखे हैं :—

(१) भय (fear) और रक्षा (protection) अर्थ वाले धातुओं के योग में भय के हेतु (source of fear) में पंचमी विभक्ति होती है[3]। जैसे, वृकेभ्यो बिभेति 'भेड़ियों से डरता है। चौरेभ्यो रक्षति 'चोरों से रक्षा करता है।' दुःखात् त्रातुम्। कलहादुद्विजते।

---

१. ध्रुवमपायेऽपादानम्। १. ४. २४। २. अपादाने पंचमी। २. ३. २८। ३. भीत्रार्थानां भयहेतुः। १. ४. २४।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) परा पूर्वक जी धातुके प्रयोग में असोढ (unbearable) अर्थात् जिसको न सहसके उसमें पंचमी विभक्ति होती है।[1] जैसे, अध्ययनात् पराजयते 'अध्ययन को सह नहीं सकता।'

(३) वारण (preventing) अर्थ वाले धातुओं के योग में अत्यन्त इष्ट कारक में पंचमी होती है[2]। जैसे, सस्येभ्यो गां वारयति 'धान्य (खेतों) से गौ को हटाता है।' पापान्निवारयति 'पाप से हटाता है।'

(४) जहाँ से मार्ग और काल का परिमाण (point of time or space) किया जाए वहाँ पंचमी विभक्ति होती है[3]। जैसे, समुद्रात् पुरी क्रोशौ 'समुद्र से पुरी दो कोस है।' सप्ताहात् 'सप्ताह के पीछे'।

(५) नियमपूर्वक पढ़ाने वाले (teacher) का कारक अपादान संज्ञक होता है[4]। जैसे, उपाध्यायादधीते 'उपाध्याय से पढ़ता है'।

(६) जन् (be born) धातु के कर्ता की प्रकृति (prime cause) में पंचमी विभक्ति होती है[5]। जैसे, अग्नेर्धूमो जायते 'आग से धुँआँ उत्पन्न होता है।' ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते।

(७) भू धातु के कर्ता के प्रभाव (source) में पंचमी होती है[6]। जैसे, हिमवतो गङ्गा प्रभवति 'हिमालय से गंगा निकलती है।'

(८) अपादान कारण और हेतु (cause, reason or motive) को भी दर्शाता है। जैसे, लोभाद्धनं गृह्णाति 'लाभ से (कारण) धन लेता है।' पर्वतोऽग्निमान् धूमवत्त्वात् 'धुएँ वाला होने के कारण पर्वत अग्नि वाला है।'

(९) तुलना (comparison) बोधक शब्दों के योग में जिससे तुलना की जाए (person or thing excelled) उसमें पंचमी विभक्ति होती है[7]। जैसे, गोविन्दाद् रामो विद्वत्तरः 'गोविन्द से राम अधिक विद्वान् है।' अनृतात् सत्यं श्रेयः 'झूठ से सत्य बढ़कर है।' मूल्यात् पंचगुणो दण्डः। वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि (उत्तर०)।

(१०) जहाँ ल्यबन्त क्रिया (absolutive gerund) का लोप हो वहाँ उसके कर्म (object) में पंचमी विभक्ति होती है[8]। जैसे, प्रासादात्

---

१. पराजरसोढः। १. ४. २६। २. वारणार्थानामीप्सितः। १. ४. २७। ३. यतश्चाध्वकालनिर्माणं तत्र पंचमी। वा०। ४. आख्यातोपयोगे। १. ४. २९। ५. जनिकर्तुः प्रकृतिः। १. ४. ३०। ६. भुवः प्रभवः। १. ४. ३१। ७. पञ्चमी विभक्तेः। २. ३. ४२। ८. ल्यब्लोपे कर्मण्युपसंख्यानम्। वा०।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेक्षते (प्रासादमारुह्य) 'महल से देखता है।' अधिकरण (place of action) में भी[1]। जैसे' आसनात्प्रेक्षते (आसने उपविश्य प्रेक्षते)।

(११) प्रश्न (question) और उत्तर (answer) वाची शब्दों में पंचमी विभक्ति होती है[2]। जैसे, कुतो भवान्? पाटलिपुत्रात् 'आप कहाँ से आए हैं? पाटलिपुत्र से।'

(१२) जुगुप्सा (abhorrence), विराम (cessation) और प्रमाद (swerving) अर्थ वाले धातुओं के योग में पंचमी होती है[3]। जैसे, पापात् जुगुप्सते, विरमति 'पाप से घृणा करता है, हटता है।' स्वाधिकारात्प्रमत्तः।

(१३) अन्य, पर, इतर (other than); आरात् (near, remote); ऋते (without); दिशावाची (indicating direction with reference to time or space) शब्द, जिन शब्दों में अञ्च उत्तर-पद दिशा वाचक हो, और आ या आहि अन्त वाले अव्ययों के साथ पंचमी विभक्ति होती है[4]। जैसे, कृष्णाद् अन्यो भिन्न इतरो वा। आराद् वनात् 'बन से दूर या निकट'। ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः 'ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं।' दिक्—ग्रामात् पूर्व उत्तरो वा 'गाँव से पूर्व या उत्तर को।' चैत्रात्पूर्वः फाल्गुणः 'फागुन चैत्र से पहले है।' उत्तरो ग्रीष्मो वसन्तात् 'वसंत से गरमी पीछे है।' अञ्च्—प्राग् ग्रामात् 'गाँव के पूर्व में।' प्रत्यक् ग्रामात्। आ—दक्षिणा ग्रामात्, उत्तरा ग्रामात्। आहि—दक्षिणाहि ग्रामात् 'गाँव के दक्षिण को।'

(क) प्रभृति, आरभ्य, बहिः ऊर्ध्वं, परं, अनन्तरं के योग में भी पंचमी होती है। जैसे, शैशवात् प्रभृति-आरभ्य 'बचपन से लेकर।' प्रथमादारभ्य 'आरम्भ से लेकर।' पुराद्बहिः 'शहर से बाहर।' अस्मात्परम् 'इसके पीछे।' पाणिग्रहणादनन्तरं 'विवाह के पीछे।'

(ख) आ (till, as far as) उपसर्ग के योग में पंचमी विभक्ति होती है। जैसे, आकैलासात् 'कैलास तक' आमूलात्। 'आरंभ से।'

(१४) प्रतिनिधि (representative, exchange) के अर्थ में प्रति उपसर्ग के योग में पंचमी प्रयुक्त होती है[5]। जैसे, प्रद्युम्नः कृष्णात्प्रति

---

१. अधिकरणे च। २. प्रश्नाख्यानयोश्च। वा०। ३. जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम्। वा०। ४. अन्यारादितरर्तेदिक्शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते। २. ३. २९। ५. प्रतिनिधिप्रतिदाने च यस्मात्। २. ३. ११।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
'प्रद्युम्न कृष्ण का प्रतिनिधि है।' तिलेभ्यः प्रतियच्छति माषान् 'उड़दों को तिलों से बदलता है।'

(१५) पृथक् (different) विना, नाना अव्ययों के योग में विकल्प से द्वितीया, तृतीया और पंचमी होती है[1]। जैसे, रामाद्, रामेण, रामं वा विना-पृथक्-नाना।'

अभ्यास ४६.

मूर्ख अपमान और मौत से भी नहीं डरता। ब्राह्मण सन्मान से घबराता है (उद्-विज्)। शिकारी ने बालक को शेर से बचा लिया (त्राय)। अपनी अकलमंदी से उसने अपने आप को संकट से बचा लिया। जो पाप से हटाए (निवारय) वह मित्र है। वह हिसाब पढ़ने से भागता है (परा-जि)। मैंने गुरु से चारों वेद पढ़े है। मूर्खता से अभिमान पैदा होता है। (जन्)। सतलुज नदी मानसरोवर से निकलती है (प्र-भू)। भले लोगों का दिल फूल से भी नरम होता है। कर्म से ज्ञान बढ़कर है। आप की आमदनी मुझसे दुगनी है। मैंने अपने घर की छत से देखा कि सिपाही मन्दिर से बाहर आ रहे थे। जंगल से धुआं उठ रहा था। जालन्धर से अमृतसर पचास मील है। एक महीने के पीछे मैं यहां से कलकत्ते चला जाऊँगा। आधी रात तक दोनों फौजें युद्ध से न रुकीं (वि-रम्)। वह घाटे से डरता था इसलिए वह सट्टे से बचता रहा (नि-वृत्)। मनुष्य को अपने धर्म से प्रमाद नहीं करना चाहिए (प्र-मद्)। वह अपनी फजूलखर्ची (अतिव्यय, मुक्तहस्तता) से सदा कर्ज़दार रहता है। मैं आरंभ से आप को यह कहानी सुनाता हूं। उसने अपनी गौ को भैंस से बदल लिया। पुत्र पिता का प्रतिनिधि है। बी० ए० पास करने के पीछे वह व्यापार में लग गया। शहर से दूर पूर्व की ओर एक सुन्दर बाग है। शहर की आबादी (जन-वास) कालेज तक पहुँच गई है।

२. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो और हेतु भी दो :—

१. सदाचारेण भ्रंशते मूर्खः। २. धर्मो भयस्य त्रायते। ३. अपमानस्य भीतः स कलहमुद्विजते। ४. वृत्तकेषु वन्यान्निवारयति। ५. सोऽध्ययनं पराजयते परं शत्रुभ्यः पराजयते। ६. कामेन क्रोधः प्रजायते। ७. मया नाट्याचार्येणाभिनयविद्या शिक्षिता। ८. तस्य धनं मम धनस्य पंचगुणम्। ९. सर्वेषु छात्रेषु गोविन्दो विद्वत्तरः।

---

[1] पृथग्विनानानाभिस्तृतीयान्यतरस्याम्। २। ३। ३२।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१० अहंकारं जुगुप्सते मेधावी। ११. सा कंदुकक्रीडां न विरमति, अतश्च अध्ययने प्रमत्ता। १२. महाविद्यालयो नगरस्य क्रोशौ वर्तते। १३. मासे सर्व एव गमिष्यन्ति। १४. भोजनस्यानन्तरं मुखं प्रक्षालयेत्। १५. नगरस्यारात्काननं विद्यते। १६ तण्डुलैः प्रतियच्छति माषान्। १७. अस्योद्यानस्य पूर्वं नदी वहति। १८. श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः परधर्मस्य स्वनुतिष्ठितस्य।

सम्बन्ध 'Genetive'.

२७०. जहां कर्म आदि कारक-संज्ञा की विवक्षा न हो वह शेष कहलाता है। इसमें षष्ठी विभक्ति होती है[1]। यह एक वस्तु के दूसरी वस्तु के साथ सम्बन्ध को बताता है। जैसे, वृक्षस्य शाखा 'वृक्ष की शाखा।' मृत्तिकायाः घटः 'मिट्टी का घडा।' राज्ञः पुरुषः। भवतः कार्यम्। तस्याः शंकया। जलस्य विंदुः।

१. कुछ धातुओं के साथ षष्ठी विभक्ति प्रयुक्त होती है :—

(क) अधि-इ स्मृ (think, remember), दय (have mercy), ईश्, प्र-भू (rule, be master of) और अस्, भू (be) तथा विद्यते के कर्म में षष्ठी विभक्ति होती है[2] जैसे, अध्येति तव लक्ष्मणः 'लक्ष्मण तुम्हें याद करता है।' कच्चिद्भर्तुः स्मरसि 'क्या तू स्वामी को याद करती है।' ग्रामस्येष्टे 'वह गाँव का मालिक है।' आत्मनः प्रभविष्यामि 'मैं अपने आपको वश में रक्खूंगा।' रामस्य दयते 'वह राम पर दया करता है।' मम पुस्तकं विद्यते 'मेरे पास एक पुस्तक है।'

(ख) ज्ञा (have incorrect knowledge, suppose—अविदर्थ) के साथ करण में षष्ठी विभक्ति होती है[3]। जैसे, तैले सर्पिषो जानीते 'तेल को घी समझता है।' मधुनः जानीते।

(ग) व्यव-हृ (transact business) और पण् के कर्म में षष्ठी होती है[4]। जैसे, शतस्य व्यवहरति 'वह सौ रुपया व्यापार में लगाता है।'' सहस्रस्य पणते। 'हजार रुपया दाव पर लगाता है।'

---

१. षष्ठी शेषे। २. ३. ५०। कारकप्रातिपदिकार्थव्यतिरिक्तः स्वस्वामिभावादिसम्बन्धः शेषः। सि० कौ०। २. अधीगर्थदयेशां कर्मणि। २. ३. ५२। ३. ज्ञोऽविदर्थस्यकरणे। २. ३. ५१। ४. व्यवहृपणोः समर्थयोः। २. ३. ५७।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(घ) अनु-कृ (imitate), वद् (speak of) तथा संभावना अर्थ वाले धातुओं के साथ षष्ठी आती है। जैसे, तस्य (या तम्) अनुकरोति 'उसका अनुकरण करता है।' मम एवं वदति 'मेरे विषय में वह ऐसा कहता है।' तस्य संभाव्यते 'उससे यह संभव है।'

(ङ) उप-कृ (do good); अप-कृ, अप-राध् (do harm) वि-श्वस् (trust in), क्षम् (for bear with) के साथ कर्म में (सप्तमी के विकल्प से) षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे, मित्राणामुपकरोति 'वह मित्रों का भला करता है।' किं मया तस्यापकृतम् 'मैंने उसका क्या बुरा किया।' क्षमस्व मे (gen.) 'मेरे पर क्षमा करो।'

२. कुछ कृदन्तों के साथ षष्ठी विभक्ति प्रयुक्त होती है :—

(क) क्तान्त कृदन्तों (past passive part.) के योगमें वर्तमान (present) काल के अर्थ में षष्ठी होती है[१]। जैसे, विदितो भवान् मे 'तुम मुझे विदित हो।' राज्ञां मतः पूजितो वा।

(ख) क्तान्त कृदन्तों (P. P. P.) के साथ अधिकरण (place of action) के अर्थ में या भाववाचक संज्ञा (abstract noun) की भाँति षष्ठी आती है[२]। जैसे, इदमेतेषां शयितम् 'यह इनकी शय्या है।' रमापतेः यातम्। मयूरस्य नृत्यम्। तस्याः गतम्।

(ग) विधिकृदन्तों (potential passive part.) के योग में (तृतीया के साथ) विकल्प से कर्ता (agent) में षष्ठी होती है[३]। जैसे, मम (मया वा) सेव्यो हरिः 'मुझे हरि की सेवा करनी चाहिए।' गन्तव्या ते वसतिरलका 'तुम्हें अलका नगर को जाना चाहिए।'

(घ) ति, तृ, अ, अन्, आदि कृत्प्रत्ययों द्वारा बनी संज्ञाओं के साथ कर्ता (subjectively) या कर्म (objectively) में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे, जगतः कर्ता 'जगत का बनाने वाला।' कूपस्य खनिता। क्रियामिमां कालिदासस्य 'कालिदास के इस काव्य को।' शास्त्राणां परिचयः। तस्य कृतिः। सुहृदां दर्शनम्।

(ङ) जब कृत्प्रत्ययान्त का कर्ता (agent) और कर्म (object) दोनों प्रयुक्त हों तो कर्म में षष्ठी होती है[५]। जैसे, आश्चर्यं गवां दोहोऽगोपेन 'बिना ग्वाले गौओं का दुहना आश्चर्य है।'

---

१. क्तस्य च वर्तमाने। २. ३. ६७। २. अधिकरणवाचिनश्च। २. ३. ६८। ३. कृत्यानां कर्तरि वा। २. ३. ७१। ४. कर्तृकर्मणोः कृति। २. ३. ६५। ५. उभयप्राप्तौ कर्मणि। २. ३. ६६।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३. षष्ठी विभक्ति प्रायः विशेषणों (adjectives) के साथ भी प्रयुक्त होती है :—

(क) आयत्त (dependent on), प्रिय (dear to) आदि के पर्य्यायवाचक और संबन्ध (belonging) बोधक विशेषणों के साथ। जैसे, तवायत्तः स प्रतिकारः 'वह प्रतिकार तेरे अधीन है।' राज्ञां प्रियः। तस्य धनम्। भवतोऽनुरूपम् 'आप के योग्य।'

(ख) अभिज्ञ (acquainted with), कोविद (skilled in), उचित (accustomed to) और इनके पर्य्यायवाचकों के साथ (सप्तमी के विकल्प से)। जैसे, लोकव्यहाराणामभिज्ञोऽसि 'आप संसार के व्यवहारों को जानने वाले हैं।' संग्रामाणां कोविदः युद्ध में चतुर।' शोणितस्य उचितः सिंहः 'रक्त (पीने) की आदत वाला शेर।'

(ग) तुल्य (like, equal to) और इसके पर्य्यायवाची शब्दों के योग में (तृतीया विकल्प से)[1]। जैसे, कृष्णस्य (कृष्णेन वा) तुल्यः 'कृष्ण के बराबर।' कोन्योऽस्ति सदृशो मम। 'कृष्णस्य उपमा तुला वा नास्ति।

४. कुछ क्रियाविशेषण के साथ भी षष्ठी विभक्ति प्रयुक्त होती है :—

(क) दिग्वाची तस् अन्तवाले क्रिया-विशेषणों और उपरि, अधः, पुरः, पश्चात्, अग्रे, पुरस्तात् आदि के साथ षष्ठी प्रयुक्त होती है[2]। जैसे, ग्रामस्य दक्षिणतः 'ग्राम के दक्षिण में।' पुरस्ताद्यतीनां 'यतियों के आगे।' तरूणामधः। तस्य पुरः। ममाग्रे।

(ख) एनान्त दिग्वाची क्रिया-विशेषणों के साथ द्वितीया के विकल्प से षष्ठी होती है[3]। जैसे, उत्तरेणास्य 'इस (स्थान) के उत्तर को।' दक्षिणेन ग्रामस्य ग्रामं वा।

(ग) कृत्वः और इसके समानार्थ प्रत्ययान्त शब्दों (multiplicatives) जैसे, द्विः, त्रिः, अष्टकृत्वः इत्यादि, के योग में जो कालवाची शब्द है उससे अधिकरण कारक (locative sense) में षष्ठी विभक्ति होती है[4]। जैसे, दिवसस्य पञ्चकृत्वो भुङ्क्ते बालः 'यह बालक दिन में पाँच बार खाता है।' दिवसस्य द्विरधीते 'दिन में दो बार पढ़ता है।

(घ दूर (distant) और अन्तिक (near) आदि के साथ पंचमी

---

१. तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां तृतीयान्यतरस्याम्। २. ३. ७२। २. षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन। २. ३. ३०। ३. एनपा द्वितीया। २. ३. ३१। ४. कृत्वोर्थप्रयोगे कालेऽधिकरणे। २. ३. ६४।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के साथ विकल्प से षष्ठी प्रयुक्त होती है[1]। जैसे, ग्रामस्य (ग्रामात्) दूरम्, अन्तिकं, निकटं, समीपं वा।

५. दो वस्तुओं में भेद (difference) या विकल्प (option) को बताने के लिए भी षष्ठी प्रयुक्त होती है। जैसे, एतावानेव आयुष्मतः शतक्रतोश्च विशेषः तुम्हारे और इन्द्र में केवल इतना ही भेद है।' व्यसनस्य च मृत्योश्च व्यसनं कष्टमुच्यते 'पाप में और मृत्यु में पाप अधिक बुरा कहा जाता है।'

(क) हेतु (cause, reason) और इसके पर्यायवाचक शब्दों (निमित्त कारण) के साथ षष्ठी प्रयुक्त होती है[2]। जैसे, अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन् 'थोड़े के कारण से बहुत छोड़ने की इच्छा करता हुआ।' मम कारणात्।

अभ्यास ४७.

१. संस्कृत में अनुवाद करो :—

विदेश में मनुष्य अपने देश को अधिक याद करता है (स्मृ)। सारी यात्रा में आप मुझे विशेष याद आते रहे (अधि-इ)। इस खेत का कौन मालिक है (ईश्)। अध्यापक लड़कों पर काबू न पा सका (प्रभू)। उसने बड़ी मुश्किल से अपने आप को वश में रक्खा (ईश प्र-भू) क्या आप के पास कोई मोटर गाड़ी है ?। सदा दीनों पर दया करो (दय्)। अपने बड़ों का अनुकरण करो (अनु-कृ)। जंगल में थके मुसाफिर ने दूर से रेत को पानी समझा (ज्ञा)। वह दुष्ट आप के विषय में ऐसा कहता है (वद्)। अच्छे लड़कों से यही उम्मीद की जाती है (सं-भाव्य) घर के सभी लोगों को विदित था। उसका बिछौना (शयितं) फूलों का बना था। उसकी हंसी (स्मित) मोतियों के समान और चाल (गतं) हंस के समान थी। आप धन के मालिक हैं और हम विद्या के सब लड़कों को अपना प्रतिदिन का काम समय पर समाप्त करना चाहिए। मुझे सच बोलना चाहिए। कुँवे को खोदने वाला नीचे को और दीवार को बनाने वाला ऊपर को जाता है। मित्रों के दर्शन सभी को प्यारे है। मुझे मालूम नहीं कि मैंने यह हुक्म क्यों (हेतु) दिया था। सचाई में तो वह युधिष्ठिर के बराबर (तुल्य) है। प्रमोद के अभिज्ञ लोग आसानी से ही सब कलाओं में प्रवीण हो जाते हैं। व्यूह बनाने की विद्या में चतुर (कोविद) सेनापति सदा विजयी होता है। इस काम की सफलता आप पर ही निर्भर (आयत्त) है। उसने अपने योग्य (अनुरूप)

---

१. दूरान्तिकार्थैः षष्ठ्यन्यतरस्याम्। २. ९. ३४। २. षष्ठी हेतुप्रयोगे। २. ३. २६।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कन्या से विवाह किया। शहर से दूर एक योगी रहता है। गाँव के पूर्व में एक पाठशाला है। इस दवाई को दिन में तीन वार पीजिए। हमें दिन में दो वार सन्ध्या करनी चाहिए। सत्य और धर्म में कोई फ़र्क (विशेष) नहीं। मौत और अपमान में मौत अच्छी है। मैंने एक लाख रुपया व्यापार में लगाया (व्यवहृ)।

२. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो और हेतु भी दो :—

१. अध्येति रामः सीतामद्यापि। २. दुर्योधनः स्वखेनां न प्राभवत्। ३. गोविन्दः इमं नगरमीष्टे। ४. कौरवान् दयते अर्जुनः। ५. तिलेषु माषान् जानाति। ६. भवानेवं मां वदिष्यतीति भवन्तं न संभाव्यते। ७. विदितं भवतो जल्पितं माम्। ८. शास्त्रेषु ज्ञानं सुखाय कल्पते। ९. दुःखं हेतु स एवं न करोति। १०. कृष्णां तुल्यः भवान् संग्रामाय कोविदः। ११. एतत्कार्यं कृष्णायानुरूपमतस्तस्मै आयतम्। १२. पञ्चकृत्वोऽहनि भुङ्क्ते सः। १३. वर्षे त्रिः सोऽन्नाऽयाति। १४. व्यसनान्मरणाच्च, व्यसनं कष्टमुच्यते। १५. नगरेण समीपमिदं वनम्। १६. ग्रामाद्दक्षिणेन तरुभ्योऽधः सरो वर्तते। १७. सदा सद्भिः सम्मतं कार्यं करणीयं त्वाम्। १८. भासेन कालिदासेन च का उपमा।

अधिकरण 'Locative'.

२७१. जिस में पदार्थ धरे जाते हैं या जिस में या पर कर्ता अपना व्यापार करता है उसे आधार[1] कहते हैं। आधार में अधिकरण कारक होता है, और उस में सप्तमी विभक्ति होती है[2]। जैसे, तिलेषु तैलम्; कटे शेते; धर्मे तिष्ठति।

(१) किसी क्रिया के समय को निर्दिष्ट करने के लिए सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे, आषाढस्य प्रथमे दिवसे 'आषाढ (मास) के पहले दिन को।

(२) अतिशयवाचक (superlative) विशेषणों के साथ, और समुदाय में किसी वस्तु या व्यक्ति के (selection, distinction) में समुदायवाचक शब्द में (षष्ठी के विकल्प से) सप्तमी होती है[3] (cf.

---

१. आधारोऽधिकरणम्। १. ४. ४५। २. सप्तम्यधिकरणे च। २. ३. ३६।
३. यतश्च निर्धारणम्। २. ३. ४१। जातिगुणक्रियासंज्ञाभिः समुदायादेकदेशस्य पृथक्करणं निर्धारणम्। (सि० कौ०)

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'of' or 'among' in English)। जैसे, नृणां नृषु वा द्विजः श्रेष्ठः। गवां गोषु वा कृष्णा बहुक्षीरा 'गौओं में काली गौ अधिक दूध देती है।'

(३) कर्म-संयोग (intimate union) में जिस निमित्त के लिए वह कर्म किया जाता है उस निमित्त वाले शब्द में सप्तमी विभक्ति होती है[1]। जैसे, चर्मणि द्वीपिनं हन्ति 'खाल के लिए गैंडे को मारता है।' दन्तयोर्हन्ति कुंजरम्।

(४) स्निह्, अनुरञ्ज्, अभिलष्, रम् और इनके पर्य्यायवाचक धातुओं के योग में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे, बालेऽस्मिन् स्निह्यति मे मनः 'मेरा मन इस बालक में स्नेह रखता है।' राजनि अनुरक्ताः प्रजाः 'प्रजा राजा से प्रेम करती है।' श्रेयसि रतः 'श्रेयस में लगा हुआ।' न तापसकन्यायां शकुन्तलायां ममाभिलाषः।

(५) युज् (appoint) धातु के योग में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे, कर्मणि नियुङ्क्ते 'काम पर नियत करता है।' आश्रमधर्मे नियुङ्क्ते। त्रिलोकस्यापि प्रभुत्वं तस्मिन् युज्यते 'तीन-लोक का राज भी उसके योग्य है।' युक्तमिदं त्वयि।

(६) अप-राध् (offend) के योग में षष्ठी के विकल्प से सप्तमी होती है। जैसे, कस्मिन्नपि पूजार्हे अपराद्धा शकुन्तला 'किसी पूज्य व्यक्ति का शकुन्तला ने अपराध किया है।' नतु ग्रीष्मस्यैवं सुभगमपराद्धं युवतिषु (शकु०)।

(७) ग्रह् (seize), प्र-हृ (strike), बन्ध् (fasten), लग्, श्लिष्, सञ्ज् (cling), वि-श्वस् (believe in) और इनके पर्य्यायवाची धातुओं के योग में सप्तमी होती है। जैसे, केशेषु गृहीत्वा 'केशों से पकड़ कर।' वृक्षे बबन्ध 'वृक्ष में बांधा।' व्यसनेष्वासक्तः 'व्यसनों में फंसा हुआ।' शत्रुषु विश्वसिति 'शत्रुओं पर विश्वास करता है।' पादयोः लग्नः 'पाँव में लगा हुआ।' अनागसि प्रहरति 'निर्दोष पर प्रहार करता है।'

(८) क्षिप्, मुच्, अस् (throw, dart) के योग में जिसकी ओर कुछ फेंका जाए उसमें तथा वृत्, व्यव-हृ (act, behave) के साथ सप्तमी आती है। जैसे, तस्मिन् शरान् मुमुचुः चिक्षिपुः वा 'उस पर तीर चलाए।' अरौ बाणान् क्षिपति 'शत्रु पर तीर चलता है।' न खलु

१. निमित्तात्कर्मयोगे। वा०।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न खलु बाणः सन्निपात्योऽयमस्मिन्। आर्यास्मिन् विनयेन वर्तताम् 'आर्य, इस से विनयपूर्वक वर्तिए।' कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने (शकु०)।

(९) वि-तृ (impart) के योग में चतुर्थी के विकल्प से सप्तमी होती है। जैसे वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जडे 'गुरु बुद्धिमान् को ऐसे ही विद्या देता है जैसे जड़ को।'

(१०) कारण (cause) या इसके पर्य्यायवाची शब्द के योग में कार्य्य (effect) में सप्तमी प्रयुक्त होती है। जैसे, दैवमेव हि नृणां वृद्धौ क्षये कारणम् 'निश्चय मनुष्यों की वृद्धि और क्षय का कारण दैव ही है।'

(११) योग्यता (fitness, suitableness) बोधक शब्दों के योग में जिन नामों से योग्यता निर्दिष्ट हो उनमें सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे, युक्तमिदं त्वयि 'यह तुम्हारे योग्य है।' त्रैलोक्यस्यापि प्रभुत्वं तस्मिन् युज्यते 'तीन लोक का राज्य भी उसके योग्य है।' त गुणाः परस्मिन् ब्रह्मणि उपपद्यन्ते 'वे गुण परब्रह्म के योग्य हैं।'

(१२) पूजा (adoration) अर्थात् सत्कारपूर्वक सेवा करने के अर्थ में वर्त्तमान (used साधु और निपुण शब्द के योग में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे, पितरि साधुः, मातरि निपुणः।

(१३) व्यापृत, आसक्त व्यग्र, तत्पर (engaged in, intent on); कुशल, निपुण, शौण्ड, पटु, प्रवीण, पण्डित (skilful); और धूर्त, कितव (rogue) के योग में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे, गृहकर्मणि व्यापृता व्यग्रा वा 'घर के काम में लगी हुई।' अक्षद्यूते निपुणः, प्रवीणः, 'जूए में निपुण।'

(१४) स्वामी, ईश्वर, अधिपति, साक्षिन्, इत्यादि के साथ षष्ठी के विकल्प से सप्तमी आती है। गवां गोषु वा स्वामी 'गौओं का मालिक।' पृथिव्याः पृथिव्यां वा ईश्वरः। व्यवहारे व्यवहारस्य वा साक्षी।

अभ्यास ४८.

१. संस्कृत में अनुवाद करोः—

आश्विन के दसवें दिन रावण मारा गया। नदियों में गंगा सबसे पवित्र है। सब रोशनियों में बिजली की रोशनी बढ़िया है। राम ने मृग को खाल के लिए मारा। लक्ष्मण का राम से बहुत प्यार था। गृहस्थी धन से बहुत प्यार करते हैं (स्निह्)। प्रजा महाराज चन्द्रगुप्त में अनुरक्त थी (अनु-रंज्)।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्मा संसार के यश की इच्छा नहीं करते (अभि-लष्)। वह सारा दिन अपने काम में लगा रहता है (रम्)। अपने गुरु से भला वर्ताव करो (साधु)। लड़कियों से विनय-पूर्वक वर्ताव करो (वृत्)। अपने सह-पाठियों से मित्र का सा सलूक करो। फलों पर रोड़े मत फैंको (क्षिप्)। अपनी मूर्खता से तुमने अपने पिता जी को नाराज कर लिया (अप-राध्। मैनेजर ने गोपाल को स्कूल का हेडमास्टर लगा दिया (नियुज्)। नेतापन उसी को युक्त है (युज्) जो अपने अनुगामियों पर दया करता है। यह काम आपके लायक (युज्) नहीं। उसने पीछे से आकर मेरी बाँह पकड़ ली (ग्रह)। घोड़े को पेड़ से बांध दो। बे गुनाह पर प्रहार मत करो (प्र-हृ)। हमारे कालेज में अनेक विद्याओं में निपुण प्रोफैसर लड़कों को शिक्षा देते हैं (वि-तृ)। चाँद के घटने बढ़ने का कारण सूरज ही है। यह लड़का हाकी खेलने में अच्छा (कुशल) है। मैं तो अपने काम में लगा था (व्यग्र) सो मैंने सड़क पर जाते हुए किसी को नहीं देखा। अपने मित्रों का यकीन करो (वि-श्वस्)। अपने गुरुओं के कहने में रहो (स्था)। वह भादों की पांच तारीख को पकड़ा गया।

२. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो और हेतु भी दो :—

१. अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृत्तमः। सर्वेभ्यः पर्वतेभ्यो हिमालय उच्चतमः। ३. केशेभ्यश्चमरीं हन्ति। ४. अस्ति मे सोदरस्नेहोऽपि तेभ्यः। ५. दुष्टं राजानं प्रजा नानुरज्यन्ते। ६ श्रेष्ठपुरुषाः मित्रेभ्यः धर्मेण वर्तन्ते। ७. कथं मां कार्यविनिमयेन व्यवहरति। ८. कथं गुरून् अपराद्धो भवान्। ९. कौरवा अभिमन्यो शरीरं शरान् मुमुचुः। १०. काश्यपः शकुन्तलामाश्रमधर्माय नियुंक्ते। ११. उपपन्नमेतद् ऋषिकल्पस्य अस्य राज्ञः। १२. स मम वचनं न विश्वसिति। १३. निर्गुणभ्योऽपि सत्त्वेभ्यो दयां कुर्वन्ति साधवः। १४. न मातुर्न दाराणां न सोदर्यस्य न चात्मनः, विश्वासस्तादृशः पुंसां यावान् मित्रस्य स्वभावजस्य। १५. अपकारिभ्यो यः साधुः स साधुः सद्भिरुच्यते। १६. गुरुः शिष्यं विद्यां वितरति। १७. सा गृह-कार्यैः व्यापृता। १८. व्यसनैरासक्तः पुरुषः आचारेण धूर्तो भवति। १९. अस्मै व्यवहाराय भवतः कः साक्षी। २०. मम दुःखाय सुखाय वा भवानेव कारणम्।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Genetive and Locative Absolutes.

१७२. जब कृदन्त (Participle) की समता एक ऐसे कर्त्ता के साथ हो जो प्रधान क्रिया (principal verb) के कर्त्ता से भिन्न हो तो वह वाक्य absolute construction में होता है।

यदि अप्रधान वाक्य (subordinate clause) का कर्त्ता या उसके स्थान में प्रयुक्त कोई सर्वनाम प्रधान वाक्य (principal clause) में न पाया जाए, तो अप्रधान वाक्य में यह रचना प्रयुक्त होती है। उदाहरण के लिए इस वाक्य को लो—'राम, जब उसने लंका को ले लिया, अयोध्या को वापस आया।' यहां दोनों वाक्यों का कर्त्ता एक ही है अतः यहां absolute construction नहीं हो सकती। इसका अनुवाद यह होगाः—लङ्कां गृहीत्वा रामोऽध्यां निववृते। परन्तु इस वाक्य 'राम, जब लक्ष्मण ने लंका को ले लिया, अयोध्या को वापस आया' के अनुवाद में absolute प्रयुक्त हो सकता है। जैसे, लक्ष्मणेन गृहीतायां लङ्कायां रामोऽयोध्यां निववृते।

Locative Absolute.

(१) जिस क्रिया से क्रियान्तर का लक्षण किया जाए, अर्थात् जिस क्रिया का काल उससे भिन्न दूसरी क्रिया के काल से जाना जाए, उसमें सप्तमी विभक्ति होती है[1]। जैसे, गोषु दुह्यमानासु स गतः 'गौओं के दुहे जाने पर वह गया।' यहां दोहन क्रिया से गमन क्रिया का लक्षण किया जाता है, अतः 'दोहन' क्रिया में सप्तमी हुई। कः पौरवे वसुमतिं शासति अविनयमाचरति 'जब पौरव पृथिवी पर शासन करता है तो कौन अविनय का आचरण करता है।' क एष मयि स्थिते चन्द्रगुप्तमभिभवितुमिच्छति 'मेरे होते हुए यह कौन चन्द्रगुप्त को पराजित करना चाहता है।'

(क) इस रचना का विधेय (predicate) कृदन्त होता है और उसकी अपने कर्त्ता के साथ लिंग और वचन में समता होती है। जैसे, गोषु दुह्यमानासु।

(ख) ज्यों ही, अभी मुशकिल से--जब उसी समय जब (cf. Eng. 'as soon as', 'scarcely--when') के अर्थ में एव और मात्र absolute कृदन्त के पीछे प्रयुक्त होते हैं। जैसे, प्रभातायामेव रजन्याम् 'अभी मुशकिल से दिन निकला ही था जब।' प्रविष्टमात्र एव तत्र

---

१. यस्य च भावेन भावलक्षणम्। २. ३. ३७। यस्य क्रियया क्रियान्तरं लक्ष्यते ततः सप्तमी स्यात्। (सि० कौ०)।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भवति नः कर्माणि निरुपप्लवानि संवृत्तानि 'ज्यों ही महाराज ने प्रवेश किया त्यों ही हमारे काम निर्विघ्न हो गए।'

(ग) एवं, इत्थं, तथा, इति अव्यय यदि कृदन्त के साथ प्रयुक्त हों तो कर्त्ता उपेक्षित (omitted) होता है। जैसे, एवं गते, तथानुष्ठिते 'ऐसा होने पर।' तेनाभ्युपेते।

Genetive Absolute.

(२) अनादर (contempt or disregard) में जिस क्रिया से क्रियान्तर का लक्षण किया जाए वहाँ (सप्तमी के विकल्प से) षष्ठी विभक्ति होती है[1]। 'यद्यपि' आदि के अर्थों में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे, पश्यतो राज्ञः सिंहो गां चकर्ष 'राजा के देखते हुए भी शेर ने गौ को खींचा।' नन्दाः पशव इव हताः पश्यतो राक्षसस्य 'राक्षस के देखते हुए भी नन्द पशुओं की भाँति मारे गए।' रुदतः पुत्रस्य (या रुदति पुत्रे) पिता प्राव्राजीत् 'पुत्र के रोते हुए भी पिता संन्यासी हो गया।'

अभ्यास ४६.

१. संस्कृत में अनुवाद करो :—

N. B. Translate by using the absolute construction of the words in thick type.

दीपक का क्या लाभ है जब कि चाँद की ज्योति सारे फैल रही है। जब सूरज चमक रहा हो तो अँधेरा संसार को कैसे ढक सकता है। जब अध्यापक बोलता है तो बालक कान लगा कर पाठ सुनते हैं। जब आप हमारे रक्षक हैं तो हमारी धर्मक्रियाओं में कैसे विघ्न हो सकता है। ऐसा होने पर सब लोग प्रसन्न हुए। ज्यों ही रामचन्द्र ने रावण को मारा त्यों ही आकाश से फूलों की वर्षा हुई। जब काम समाप्त हो जाएगा उसी समय तुम्हें छुट्टी हो जाएगी। मुशकिल से अभी सूर्य उदय ही हुआ था जब हम बाहर सैर को गए। अभी वह सोच ही रहा था कि वहाँ सड़क पर दो आदमी आ पहुँचे। यद्यपि गुरु देखता है तो भी विद्यार्थी आपस में लड़ रहे हैं। ज्यों ज्यों समय व्यतीत होता गया त्यों त्यों विद्यार्थी को व्याकरण का अधिक ज्ञान होता गया। धीर पुरुष वे हैं जिनके चित्त में विकार का हेतु होने पर भी विकार नहीं होता। जब विपत्तियाँ

---

१. षष्ठी चानादरे। २. ३. ३८।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आती हैं हैं तो सभी शत्रु बन जाते हैं। यद्यपि ईश्वर सबको देखता है तो भी मनुष्य पाप करते हैं। अभी सेनापति मुश्किल से गया ही था कि सैनिकों ने शहर को आग लगा दी। अभी मैंने अपनी बात खतम ही की थी कि उसने रोना आरंभ कर दिया। ऐसा होने पर मुझे स्कूल छोड़ना पड़ा।

२. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो और हेतु भी दो :—

१. रामेण गृहीतायां लंकायां रामोऽयोध्यां निववृते। २. बालकेषु मौनं गतेषु गुरुस्तानध्यापयत्। ३. अनवसितवचने एव मयि अहं ततः प्रस्थितः। ४. आगतेपु विप्रेषु तेभ्यो दक्षिणामददत्। ५. अयोध्यां निवृते रामे स राज्यमकरोत्। ६. जातमात्रे शत्रौ नरः प्रशमं नयेत्। ७. राजा पश्यन् सिंहो गां चकर्ष। ८. तथानुष्ठितं रामो वनमगात्। ९. अप्रभातैव रजनी स युद्धाय प्रस्थितः। १०. एवमहं वदन् अपि स निर्जगाम।

३. नीचे दिए वाक्यों में भिन्न भिन्न कारकों के प्रयोग के लिए हेतु दो :—

१. सर्वस्य लोचनं शास्त्रम्। २. अर्जुनमिदं वाक्यमुवाच मधुसूदनः। ३. देवो द्वादशवर्षाणि न ववर्ष। ४. सभा वैश्रवणी राजन् शतयोजनामायता। ५. क इदानीं सहकारमन्तरेणातिमुक्तलतां पल्लवितां सहते। ६. तृणेन कार्यं भवतीश्वराणाम्। ७. अलं महीपाल तव श्रमेण। ८. स वपुषा चतुर्भुजो मुखेन च त्रिलोचन आसीत्। ९. द्वादशभिर्वर्षैर्व्याकरणं श्रूयते। १०. साधोः शिक्षा गुणाय सम्पद्यते नासाधोः। ११. उपदेशोहि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये। १२. भोजेन दूतो रघवे विसृष्टः। १३. भक्तिर्ज्ञानाय कल्पते। १४. वृत्तसेचने द्वे धारयसि मे। १५. स्वार्थात्सतां गुरुतरा प्रणयिक्रियैव। १६. क्रोधाद्भवति संमोहः। १७. विवक्तादृतेऽन्यच्छरणं नास्ति। १८. आमूलात् श्रोतुमिच्छामि। १९. जन्मनः प्रभृति वल्लभा सा ते। २०. अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छति सः। २१. मम गात्राणामनीशोऽस्मि संवृत्तः। २२. शरीरस्य गुणानां च दूरमत्यन्तरम्। २३. द्विरह्नो भुंक्ते सः। २४. विस्मृतं कस्य हेतोर्नः। २५. भक्त्या गुरौ मय्यनुकम्पया च प्रीतोऽस्मि ते। २६. तस्मिन् जीवति जीवामि मृते तस्मिन् म्रिये पुनः। २७. अनभिज्ञो गुणानां यः स भृत्यैर्नानुगम्यते। २८. अशुद्धप्रकृतौ राज्ञि जनता नानुरज्यते। २९. दण्डनीत्यां नात्यादृतोऽभूत् सः। ३०. तमस्तपति घर्मांशौ कथमाविर्भविष्यति।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४. नीचे लिखे वाक्यों में रिक्त पदों के स्थान पर कोष्ठों (brackets) में शब्द दिए गए हैं। उन पर उचित विभक्तियां लगा कर रिक्त स्थानों को पूरा करो:—

१. विना —(मलय) अन्यत्र चन्दनं न प्ररोहति। २.—(आय) दुःखं —(व्यय) दुःखं धिगर्थाः कष्टसंश्रयाः। ३. बाल्यात्परामिव —(दशा) मदनोऽध्युवास। ४ नरपतिहितकर्ता —(द्वेष्यता) याति —(लोक)। ५. स सेतुं बन्धयामास —(सवंग) लवणांभसि। ६. अलं —(अतियन्त्रणा), कृतं —(अतिप्रसाद)। ८. किं —(तद्) क्रियते —(धेनु) या न सूते न दुग्धदा। ९. सत्यं चेत् —(तपस्) च किं शुचि मनो यद्यस्ति —(तीर्थं) किम्। १०. —(विष्णु) सदृशो वीर्ये — (क्षमा) पृथिवीसमः। ११. बालोऽपि सोऽस्ति —(तेजस्) रविः। १२. अस्य मुखं सीतायाः —(मुखचन्द्र) संवदति। १३. सर्वज्ञस्यापि एकस्य निर्णयः —(दोष)। १४. स्पृहयामि खलु —(दुर्ललित) —(अदस् पुं०)। १५ तत्किं —(जामातृ) कुप्यसि। १६. —(परित्राण) साधूनां —(विनाश) च दुष्कृतां संभवामि —(युग)। १७. तरुच्छाया तप्तस्य —(निर्वाण)। १८. विभावरी —(अरुण) कल्पते। १९. परोपकारः —(पुण्य) — (पाप) परपीडनम्। २०. अनुजानीहि मां —(गमन) २१. इतरः —(रावण) एष राघवानुचरो यदि २२. —(सावित्री) तु परं नास्ति, —(मौन) सत्यं विशिष्यते। २३. — (जन्म) जायते शूद्रः —(संस्कार) द्विज उच्यते। २४. मनीषिणः —(संसार) बीभत्समानाः —(अरण्य) विश्राम्यन्ति। २५. भवतु कोपिष्यामि —(राम) यदि —(आत्मन्) प्रभविष्यामि। २६. सद्भावप्रतिपन्नानां —(वंचन) का विदग्धता। २७. पंचकृत्वः —(दिवस) अधीते। २८. योगः —(कर्मन्) कौशलम्। २९. पतिकुले — (युष्मद्) दास्यमपि क्षमम्। ३०. शुश्रूषस्व —(गुरु) कुरु प्रियसखीवृत्तिं —(सपत्नीजन)। ३१. भव दक्षिणा —(परिजन)। ३२. संप्रति —(युष्मद्) वीतचिन्तोऽहम्। ३३. —(लता) —(पूर्वलूना) प्रसूनस्योद्गमः कुतः। ३४. —(श्री) दुरापः कथमीप्सितो भवेत्। ३५. न तु ग्रीष्मस्यैवं सुभगमपराद्धं — युवती। ३६. —(अनुकारिन्) पूर्वेषां युक्तरूपमिदं — (युष्मद्)।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वनाम 'PRONOUNS'.

२७३—(१) संस्कृत में पुरुषवाचक (personal) सर्वनाम प्रायः कम प्रयुक्त होते हैं, क्योंकि वे क्रिया के अन्तर्गत होते हैं। जैसे, गच्छति = स गच्छति 'वह जाता है।' अस्मद् और युष्मद् सब लिंगों में समान रहते हैं।

(क) अस्मद् और युष्मद् के आदेश मा, मे, नौ, नः और त्वा, ते, वां, वः, कभी वाक्य या पद के आरंभ में, च, वा, एव, हि के पहले और सम्बोधन के पीछे प्रयुक्त नहीं होते। मम (not मे) मित्रम्। देव! अस्मान् (not नः) पाहि। तस्य वा मम वा गृहम् (not मे)।

(ख) भवत् अस्मद् और युष्मद् से भिन्न होने के कारण प्रथम पुरुष में प्रयुक्त होता है। जैसे, किमाह भवान् 'आपने क्या कहा।'

(२) निर्देशक (demonstrative) सर्वनाम इदम् और एतद् (this) के रूप उत्तम (first) या प्रथम (third) पुरुष के साथ यह और यहां (here) के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। जैसे, एष तपस्वी तिष्ठति 'तपस्वी यहां है।' अयमस्मि 'मैं यहां हूं।' अयं जनः (this person) प्रायः अहं के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

(क) तद् प्रायः विख्यात (celebrated) या प्रसिद्ध (well known) के अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे, सा रम्या नगरी 'वह प्रसिद्ध सुन्दर नगरी।'

(i) तद् पूर्वोक्त (aforesaid, thus circumstanced) के अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे, सोऽहम् 'मैं (जैसा पहले कहा गया)।'

(ii) वही (very same) के अर्थ में। जैसे, तानीन्द्रियाणि तदेव नाम 'वे ही इन्द्रियां हैं वही नाम है।' तदेव पंचवटीवनम्। वाणास्त एव शशिनः सुखयन्ति गात्रम्।

(iii) भिन्न (several) या नाना (various) के अर्थ में दो बार (तद् तद्) प्रयुक्त होता है। जैसे, तेषु तेषु स्थानेषु। 'अनेक स्थानों में।' तासु तासु कलासु 'भिन्न भिन्न कलाओं में।'

(३) सम्बन्धवाचक (relative) सर्वनाम जो कोई (whatever) के अर्थ में दो बार प्रयुक्त होता है। जैसे, यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतः मा ब्रूहि दीनं वचः 'जिस जिसको तू देखता है उस उसके आगे दीन वचन मत बोल।' प्रश्नवाचक-सर्वनाम के साथ भी यह इसी अर्थ का बोधक

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
होता है। जैसे, यस्मै कस्मै 'जिस किसी को।' यत्र कुत्रापि 'जहां कहीं भी।'

(४) प्रश्नवाचक (interrogative) सर्वनाम चित्, चन, अपि और स्विद् के साथ अनिश्चयवाचक (indefinite) सर्वनाम का अर्थ देते हैं। जैसे, कश्चिद् यक्षः 'कोई यक्ष।' कदा-चित्-चन-अपि 'किसी समय।' कोऽपि हेतुः।

(५) अनिश्चयवाचक अन्य-अन्य या पर-पर, 'एक-दूसरा' (one-other) के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। जैसे, अन्यः करोति अन्यो भुङ्क्ते 'एक करता है दूसरा भोगता है।' मनस्यन्यद्वचस्यन्यत्कार्यमन्यद्दुरात्मनाम्।

(क) इसी अर्थ में एक---अपर, अन्य प्रयुक्त होते हैं। जैसे, एको ययौ गृहमपरः पाठशालाम् 'एक घर को गया दूसरा पाठशाला को।'

(ख) बहुवचनात्मक एके के स्थान में केचित् (some) प्रयुक्त होता है। जैसे, इति केचित् मन्यन्ते 'ऐसा कुछ लोग मानते हैं।'

(६) कर्मकर्तृवाचक (reflexive) सर्वनाम आत्मन् (self) है। यह सदैव पुँलिंग और एक वचन में प्रयुक्त होता है। जैसे, आत्मानं बहु मन्यामहे वयम् 'हम अपने आपको बड़ा समझते हैं।' का स्त्री आत्मानं विकत्थते 'कौन स्त्री अपनी शेखी मारती है।

स्व, स्वकीय, आत्मीय, निज भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होते हैं।

अभ्यास ५०.

१. संस्कृत में अनुवाद करो :—

आप लाहौर से कब आए? मैं यहाँ अभी आया हूँ। आप ठहरें मैं अभी आया। यह आदमी है जो आपकी सहायता करेगा। आप कोई चिन्ता न करें यह दास (अयं जनः) आपकी सेवा के लिए उपस्थित है। मैं, जिसके हालात ऐसे हैं (सोऽहम्), आपकी बात को मान नहीं सकता। आप, जिनका जिकर पहले किया जा चुका है (ते), समय पर मेरी सहायता नहीं कर सकते। उस प्रसिद्ध (तद्) ऋषि ने सीता की रक्षा की। यह वही (तद्) शहर है जिस पर हवाई जहाज़ों ने बंब गिराए थे (अग्न्यस्त्रैः चूर्ण्)। एक ही मनुष्य एक ही काल में अनेक (तद् तद्) स्थानों में नहीं हो सकता। उसने अनेक (तद् तद्) देशों की यात्रा की है। उनका एक लड़का तो व्यापार में लग गया और दूसरा फौज में भरती हो गया (सैन्यमध्ये आ-रुह्, युद्धकर्मणि प्रवृत्)। जिस किसी को देखो उसी से प्रार्थना मत करो। जिस किसी को अपनी पुस्तक देनी नहीं चाहिए। कोई भी मनुष्य झूठे का विश्वास न करेगा। कोई कहते हैं कि इस

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार का बनाने वाला ईश्वर है और दूसरे कहते हैं कि यह आप ही बन गया है। जो कोई क़ानून तोड़ेगा सज़ा पाएगा। बड़ी चतुराई से उन्होंने अपने आपको बचाया। हम ने आप ही तो यह काम किया है। कभी किसी राजा ने यह शहर बसाया था (निर्मा)। हर कोई ऐसा नहीं कर सकता। कुछ लोग ऐसा कहते हैं। तुम सदा अपनी शेखी मारते हो (विकत्थ्)।

२. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो और हेतु भी दो :—

१. अधुना भवान् कुत्र गच्छसि। २. अत्रभवती मां किं कथयसि। ३. अयं जनः अन्येभ्यो जीवनं धारयामि। ४. नः कुतूहलं नास्ति चित्रदर्शने। ५. मे पुस्तकं केन हृतम्। ६. नासौ सभा यस्मिन् न सन्ति वृद्धाः। ७. हे प्रभो, मे सर्वाणि पापानि क्षमस्व। ८. ते स्वसा तेषु तेषु कलासु निपुणा। ९. केन हेतोः नाभिभाषसे भवती। १०. तदेव प्रियसखी वासन्ती, तानि एव जातनिर्विशेषाः पादपाः। ११. ताः स्त्रियः आत्मनो निन्दन्ति। १२. अपरः करोति अन्यो भुङ्क्ते। १३. आत्मनो बहुमन्यन्ते ते। १४. ज्ञानं कर्म्मणः श्रेय इत्यपरे कर्म ज्ञानात् श्रेयः इति चान्ये। १५. कंचिदपि पुरुषोऽत्र नायातः।

कृदन्त 'Participles',

२७४. क्त्वान्त (indeclinable) और तुमुन्नन्त (infinitive) कृदन्तों के अतिरिक्त सब कृदन्त विशेषणों की तरह प्रयुक्त होते हैं। कभी ये क्रिया और विशेष्य (noun) की भांति भी प्रयुक्त होते है। जैसे, तस्या गतम् 'उस (स्त्री) की चाल।' स नगरं गतः।

शत्रन्त 'Present Active Participles'

२७५. यदि एक कार्य की दूसरे कार्य के साथ समकालीनता (contemporaneity) निर्दिष्ट हो तो शत्रन्त (present active part.) प्रयुक्त होता है। जैसे, विचारयन् गच्छति 'विचारता हुआ जाता है।'

(१) शत्रन्त किसी क्रिया के लक्षण (attribute) और हेतु (cause) को बताने के लिए प्रयुक्त होता है[1]। जैसे, गच्छन् भक्षयति 'चलता हुआ खाता है।' हरिं पश्यन् मुच्यते 'हरि को देखने से (by reason of) मुक्त होता है।' शयाना भुञ्जते यवनाः 'यवन लेटे हुए खाते हैं।'

---

१. लक्षणहेत्वोः क्रियायाः। ३. २. १२६।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) आस् (sit), स्था (stand), भू और अस् के योग में शत्रन्त क्रिया के अविराम (continuity) को बताता है (English continuous sense)। जैसे, भक्षयन्नास्ते 'वह खाता रहता है।' सा यत्नेन रक्ष्यमाणा तिष्ठति 'उस (स्त्री) की यत्न से रक्षा की जा रही है।'

(३) शील (habit), वयः (standard of age), शक्ति (ability) को बताने के लिए शत्रन्त आत्मनेपद में प्रयुक्त होता है[1]। जैसे, भोगं भुञ्जानः 'भोग भोगते हुए' (शील)। कवचं बिभ्राणः 'कवच पहने हुए' (आयु)। शत्रुं निघ्नानः 'शत्रु को मारते हुए' (शक्ति)।

(४) प्रसिद्ध सत्य (general truth) को दिखाने के लिए शत्रन्त प्रयुक्त होता है जैसे, शयाना वर्धते दूर्वा 'दूबड़ा फैले हुए बढ़ता है।' आसीनं वर्धते बिसम् 'भिस सीधी बढ़ती है।'

(५) लज्ज्, ह्री, त्रप् (be ashamed) के भाव (emotion) को दिखाने के लिए शत्रन्त प्रयुक्त होता है। जैसे, एवं ब्रुवाणः लज्जते 'ऐसे कहता हुआ लजाता है।' एवं निर्घृणः प्रहरन्न लज्जसे 'ऐसा कड़ा प्रहार करते हुए तुम्हें लजा नहीं आती।' स्वयं साहसं संदिशन्ती बाला जिह्रेति।

स्यदन्त 'Future Active Participles'.

२७६. भविष्यत् कृदन्त से उस कार्य का बोध होता है जो शीघ्र ही भविष्यत् में होने वाला हो। जैसे, करिष्यन् 'करने को।'

(क) भविष्यकाल के अतिरिक्त यह इच्छा (intention) या हेतु (purpose) को भी बताता है। जैसे, करिष्यमाणः सशरं शरासनम् 'धनुष पर तीर रखने की इच्छा करता हुआ।' दुष्टान्विनेष्यन्विचचार दावम् 'दुष्टों को ठीक करने के हेतु वह जंगल में फिरा।'

ऐसे वाक्यों का जैसे "चलने से 'पहले' उसने थोड़ा पानी पिया" अनुवाद स्यदन्त को कर्ता का विशेषण बना कर करना चाहिए। जैसे, प्रयाणं करिष्यन् स किञ्चिज्जलं पपौ।

(२) क्वसु और कानच् प्रत्ययान्त कृदन्त (past perfect part.) प्रायः कम प्रयुक्त होते हैं और क्रिया की समाप्ति को बताते हैं। जैसे, स शुश्रुवांस्तद्वचनम् 'जब वह उसके वचन को सुन चुका।' तं तस्थिवांसं नगरोपकण्ठे 'उसे जो नगर के निकट बैठ चुका था'।

---

१. ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु चानश्। ३. २. १२९।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३) क्तवत्वन्त कृदन्त (past active participles) भूत काल में प्रयुक्त होते हैं और इनकी लिंग और वचन में कर्ता से समता होती है। जैसे, स कृतवान्। सा कृतवती। वयं कृतवन्तः।

अभ्यास ५१.

१. संस्कृत में अनुवाद करो, मोटे छपे शब्दों के लिए कृदन्त प्रयुक्त करो :—

तीर चलाते हुए शिकारी हिरण के पीछे दौड़ा। पुस्तकें लिए हुए और आपस में बातें करते हुए बालक स्कूल को जाते हैं। पढ़ते हुए उसने ज्ञान प्राप्त किया। केवल आपके दर्शन करने से लोग दुःख से छूट जाते हैं। लेटे हुए पढ़ना नहीं चाहिए। आप को देख कर ही मैं प्रसन्न हो गया हूँ। शत्रुओं को मारते हुए सैनिक आगे बढ़े। कवच को पहने हुए राजकुमार युद्धक्षेत्र में गया। भोगों को भोगते हुए अमीर आदमी किसी के दुःख को नहीं जानते। शहरियों पर प्रहार करते हुए सेनापति को लज्जा नहीं आई। क्या पाप करते हुए तुम्हें शरम नहीं आती। मैं कल सारा दिन पढ़ता रहा। सारी रात हवाई जहाज उड़ते रहे और बंब बरसाते रहे। मुझे अपनी प्रशंसा आप करते हुए शरम आती है। धावा बोलने से पहले सेनापति ने अपनी फौज का निरीक्षण किया। विलायत जाने को उसने पासपोर्ट (अनुज्ञापत्र) के लिए दर्खास्त दी। मरने से पहले बूढे ने अपनी वसीयत (इच्छा-पत्र) बेटे को दी। जाने से पूर्व मैं आप के दर्शन करूंगा। जब वह पढ़ चुका तो गुरु ने उसे सनद (प्रमाण-पत्र) दी। लोग उसी के पीछे चलते हैं जो सब जान चुका है। जब वह बैठ चुका तो मैंने उसे पत्र दिया। मैंने आप को कल बाजार में देखा था। उसने यह खबर मुझ से सुनी। उन्हों ने मुझ से व्याकरण पढ़ा। उन स्त्रियों ने एक चोर को पकड़ा।

२. नीचे लिखे वाक्यों में कोष्ठों (brackets) में दिए धातुओं से उचित शत्रन्तादि कृदन्त बना कर रिक्त स्थानों को पूरा करो :—

१. वह्नौ — (गम्) पतंगो नाशं याति। २. विरोधं — (वितन्) त्वया न साधु कृतम्। ३. — (शी) भुञ्जते यवनाः। ४. अहं तं — (प्रति-इष्) अतिष्ठम्। ५. अन्येषां धनं — (अप-हृ) न लज्जसे किम्। ६. स भवन्तं — (प्रति-पालय) आस्ते तत्र, ७. कवचं — (भृ) अभिमन्युः रणभूमिं ययौ। ८. तेषां गतिं — (ज्ञा) अहं तत्र गतः। ९. — (अनु-या) मुनितनयां सहसा विनयेन वारितोऽहम्। १०. प्रयाणं — (कृ) स आज्ञामयाचत।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्तान्त 'Past Passive Participles'.

२७७. क्तान्त (p.p.p.) विशेषणों और कर्मवाच्य (passive) क्रिया की भाँति प्रयुक्त होते हैं। कर्तृवाच्य (active voice) में क्तवत्वन्त (past active participles) का प्रयोग होता है। जैसे, तेन उक्तम्, स उक्तवान् 'उसने कहा।'

(क) गत्यर्थक (implying motion) और अकर्मक (intransitive) धातुओं के, और श्लिष् (embrace) शी, स्था आस् (dwell) जन्, रुह् और जॄ (grow old) के क्तान्त कर्तृवाच्य (active) क्रिया की भाँति प्रयुक्त होते हैं[1]। जैसे, स तत्र गतः 'वह वहाँ गया।' स वैकुण्ठमधिष्ठितः 'वह वैकुण्ठ में रहा।' स वृक्षमारूढः 'वह वृक्ष पर चढ़ा'। तस्यां सुता जाता 'उस (स्त्री) के लड़की पैदा हुई।' शिवमुपासितः।

(ख) क्तान्त भावबाच्य (impersonal) क्रियाओं की भाँति भी प्रयुक्त होते हैं। जैसे, मया तत्र चिरं स्थितम् 'मैं वहाँ देर तक खड़ा रहा।'

(ग) क्तान्त प्रायः भाववाचक संज्ञा (abstract noun) की भाँति नपुंसक लिंग में प्रयुक्त होते हैं[2]। जैसे, तस्या हसितम् 'उस (स्त्री) की हँसी'

विधिकृदन्त 'Potential or Future Passive Pt'.

२७८. विधिकृदन्त 'कर्मवाच्य' क्रिया की तरह प्रयुक्त होते हैं। जैसे, अजा ग्रामं नेतव्या 'बकरी को ग्राम ले जाना चाहिए।' हन्तव्योऽस्मि न ते राजन् 'हे राजन्, आप को मुझे मारना नहीं चाहिए।'

(क) विधिकृदन्त प्रायः साधारण भविष्यत् अर्थ में भी प्रयुक्त होते हैं। जैसे, युवयोः पक्षबलेन मयापि सुखेन गन्तव्यम् 'आप (दो) के परों के बल से मैं भी सुख से चला जाऊँगा।' ततस्तेन शब्दः कर्तव्यः 'तब वह जरूर शब्द करेगा।'

(ख) विधिकृदन्त भाववाच्य क्रिया की तरह भी नपुंसक लिंग और एक वचन में प्रयुक्त होते हैं। जैसे, मयावश्यं देशान्तरं गन्तव्यम् 'मुझे अवश्य दूसरे देश में जाना चाहिए।'

(ग) भवितव्यम् और भाव्यम् अवश्यकर्तव्यता (necessity) या संभाव्यता (probability) के अर्थ में भाववाच्य में प्रयुक्त होते हैं।

---

१. गत्यर्थाकर्मकश्लिषशीङ्स्थासवसजनरुहजीर्यतिभ्यश्च। ३. ४. ७२।
२. नपुंसके भावे क्तः। ३. ३. ११४।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अवस्था में विधेयात्मक विशेषण या विशेष्य की समता करणात्मक कर्ता के साथ होती है। जैसे, तस्य प्राणिनो बलेन सुमहता भवितव्यम् 'उस जानवर का बल अवश्य महान् होना चाहिए।' तया सन्निहितया भवितव्यम् 'सम्भवतः वह (स्त्री) पास ही है।' अस्य शब्दानुरूपेण पराक्रमेण भाव्यम् 'संभवतः उसका बल उसके शब्द के मुताबिक होगा।'

अभ्यास ५२.

१. संस्कृत में अनुवाद करो, मोटे छपे शब्दों का क्तान्त और विधिकृदन्तों से अनुवाद करो :—

यह चित्र मुझसे बनाया गया है। मैं प्रयाग गया और वहाँ एक धर्मशाला में ठहरा। हमने अपने मित्र का स्वागत किया (प्रति-उद्-गम्) और उसे छाती से लगाया (श्लिष्)। कृष्ण कैदखाने में पैदा हुए थे (जन्)। यहाँ पौदे उग आए थे। (आ रुह्)। तप करता हुआ ऋषि बूढ़ा हो गया (जॄ) शेर को देख कर वह वृक्ष पर चढ़ गया (आ-रुह्)। जंगल में सीता जमीन पर सोईं। पार्वती ने शिव की उपासना की (उप-आस्)। वह युद्ध में मर गया। मैं वहाँ देर तक खड़ा रहा। उसकी चाल को देखकर आप प्रसन्न थे। उसकी हँसी बहुत मोहिनी थी। कब तक मुझे आपका इन्तजार करना चाहिए। पापी को सज़ा मिलनी चाहिए। आप यहाँ जरूर आए होंगे नहीं तो आपको यह मालूम नहीं होना चाहिए था। बुरी आदत जरूर मनुष्य को बुराई की ओर ले जाएगी। संभवतः उसे आज गैरहाज़िर होना चाहिए। आपको अपने पिता की आज्ञा माननी चाहिए। संभवतः उसके पास बहुत धन होगा। इस काम का करने वाला ज़रूर कोई होगा।

२. नीचे लिखे वाक्यों में कोष्ठों में दिए धातुओं के क्तान्त या विधिकृदन्तों के उचित रूपों द्वारा रिक्त स्थानों को पूरा करो :—

१. जलं पातुं यमुनाकच्छं —(अव-तॄ) सः। २. स वृद्धः— (जन्) — (उपरम्) च। ३. अथ केन — (प्र-युज्) अयं पापं चरति पूरुषः। ४ एवं बहुविधा यज्ञाः — (वि-तन्) ब्रह्मणो मुखे। ५. ज्ञानी त्वात्मैव मे — (मन्)। ६. तस्याः — (गम्) सर्वैः प्रशंसितम्। ७. कस्येदं — (लिख्)। ८. न हीदं त्वयान्यथा — (मन्)। ९. किमिदानीं — (कृ), कां दिशं — (गम्) च। १०. त्वया गोग्रासं — (नी)। ११. त्वया सह मयापि तत्र सुखेन— (गम्)। १२. दुष्टबालकैः सहैकत्र न — (स्था) त्वया।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुमुन्नन्त Infinitive'.

२७९. यदि कोई कार्य किसी अन्य कार्य के निमित्त किया जाए तो उसमें तुमुन्नन्त (Infinitive) प्रयुक्त होता है। जैसे, जेतुं यतते 'जीतने का यत्न करता है।' यहां 'जेतुं' = जयाय, क्योंकि तुमुन्नन्त प्रायः सम्प्रदान अर्थ का बोधक होता है।

तुमुन्नन्त संस्कृत में क्रिया के साथ कर्ता या कर्म के स्थान में प्रयुक्त नहीं हो सकता। साधारणतया वाक्य में किसी शब्द के साथ इसका सम्बन्ध होता। यदि हिन्दी में तुमुन्नन्त किसी क्रिया का कर्ता या कर्म हो तो संस्कृत अनुवाद में उसके स्थान में उसी धातु की भाववाचक संज्ञा का प्रयोग करना चाहिए। जैसे, 'प्रातःकाल उठना आरोग्यता देता है' प्रातरेव उत्थानं (not उत्थातुं) आरोग्यावहम्।

(क) यदि तुमुन्नन्त और साधारण क्रिया का कर्ता एक ही हो तो इच्छार्थक धातुओं के साथ 'तुमुन्नन्त' प्रयुक्त होता है[1]। जैसे, अत्तुं वाञ्छति 'खाना चाहता है।' पिनाकपाणिं पतिमाप्तुमिच्छति 'शिव को पति पाना चाहती है।'

(ख) शक् (be able), धृष् (make bold), ज्ञा (know), ग्ला (be wearied), घट् (strive) रभ् (begin), लभ् (get), क्रम् (march), सह् (bear), अर्ह् (be pleased), अस् (be) तथा अन्य समानार्थक धातुओं के साथ तुमुन्नन्त प्रयुक्त होता है। जैसे, न शक्नोमि हृदयमवस्थापयितुम् 'मैं अपने दिल को टिका नहीं सकता।' कर्तुमारेभे उसने करना आरंभ किया।' जानासि देवीं विनोदयितुम् 'तुम महारानी को खुश करना जानते हो।' न विषहे विपत्तिमवलोकयितुम् 'मैं विपत्ति को देख नहीं सकता।' अस्ति, भवति, विद्यते वा अन्नं भोक्तुम् 'खाने को अन्न है।'

(ग) काल, समय, वेला, (time,opportunity) और इन के पर्यायवाचक शब्दों के साथ, तुमुन्नन्त प्रयुक्त होता है[3]। जैसे, नायं कालो विलम्बितुम् 'यह देर करने का समय नहीं।' अवसरोऽयमात्मानं प्रकाशयितुम्। 'यह अपने आप को प्रकाशित करने का मौका है।'

(घ) प्रथम और मध्यम पुरुष के एक वचन में अर्ह् (deserve)

---

१. समानकर्तृकेषु तुमुन्। ३. ३. १५८। २. शकधृषज्ञाग्लाघटरभलभक्रमसहार्हास्त्यर्थेषु तुमुन्। ३. ४. ६५। ३. कालसमयवेलासु तुमुन्। ३. ३. १६७।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धातु के साथ लोट् लकार के विनय अर्थ (please) में तुमुन्नन्त प्रयुक्त होता है। जैसे, भवान् श्रोतुमर्हति 'क्या आप कृपया सुनेंगे।' न मां परं संप्रतिपत्तुमर्हसि 'कृपया मुझे ग़ैर न समझिए।'

(ङ) अलम् (able, strong sufficient) तथा अन्य पर्याप्तिवचनों (words implying ability, power or skill) के साथ तुमुन्नन्त आता है[1]। जैसे, लोकमलं दग्धुं हि तत्तपः 'वह तप संसार के जलाने को काफी था।' लिखितमपि ललाटे प्रोज्झितुं कः समर्थः 'माथे पर लिखे हुए को भी मेटने को कौन समर्थ है?' भोक्तुं प्रवीणः कुशलः पटुर्वा 'खाने में चतुर।'

(च) काम और मनस् के साथ तुमुन्नन्त अन्तिम म् के बिना प्रयुक्त होते हैं[2]। यह बहुव्रीहि समास होता है। जैसे, द्रष्टुकामः 'देखने की इच्छा वाला।' गन्तुमना 'जाने के मन वाला।'

(छ) तुमुन्नन्त का कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य दोनों में समान रूप रहता है। कर्मवाच्य में क्रिया में विकार होता है परन्तु तुमुन्नन्त वैसा ही बना रहता है। जैसे, कर्तुं न युज्यते 'किया जाने के योग्य नहीं है।' तेन ग्रामं गन्तुमिष्यते। तेन मण्डपः कारयितुमारब्धः।

क्त्वान्त 'indeclinable Past Pt. or Gerunds'.

२८० जब एक ही कर्ता (same agent) एक से अधिक काम क्रम से करता हो तो अन्तिम क्रिया के अतिरिक्त सब क्रियाओं में क्त्वान्त (gerund) प्रयुक्त हो सकता है। जैसे, तं प्रणम्य स गतः 'उसको प्रणाम करके वह गया।' स तं पशुं राक्षसं मत्वा भयाद् भूमौ प्रक्षिप्य दैवं निर्भर्त्स्य गृहमुद्दिश्य प्रस्थितः 'उस पशु को राक्षस जान कर, भय से ज़मीन पर फेंक, दैव को बुरा कह और घर को उद्देश्य कर वह चल दिया।'

(क) किम्, अलम् या भाववाच्य क्रिया के साथ क्त्वान्त करण के अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे, किं तव गोपयित्वा 'छुपाने से तुम्हें क्या लाभ।' अलं वनं गत्वा 'वन को जाने से क्या लाभ (वन को मत जाओ)।' पशून् हत्वा यदि स्वर्गे गम्यते 'पशुओं को मार कर यदि कोई स्वर्ग में जाता है।

१, पर्याप्तिवचनेष्वलमर्थेषु। ३. ३. १६६। २. तुङ्काममनसोरपि वः०।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ख) कुछ क्त्वान्त और ल्यबन्त (gerunds) उपसर्ग की भांति प्रयुक्त होते हैं। जैसे, उद्दिश्य 'towards', आदाय 'with' (taking), अवलम्ब्य, आश्रित्य, आस्थाय 'resorting to', 'by means of', मुक्त्वा, परित्यज्य, वर्जयित्वा 'excepting' (leaving)' अधिकृत्य 'regarding', 'about', आरभ्य 'since' (beginning from).

अभ्यास ५३.

१. संस्कृत में अनुवाद करो, मोटे छपे शब्दों का अनुवाद तुमुन्नन्त या क्त्वान्त आदि से करो :—

मैं पानी पीना चाहता हूँ। मैं ऐसे भयानक दृश्य का वर्णन कर नहीं सकता। हम ऐसे शब्द सुनना बरदास्त कर नहीं सकते (सह्)। उसने धर्म की व्याख्या करनी आरंभ की (प्र-क्रम्)। आप लोगों को खुश करना नहीं जानते (ज्ञा)। उसके पास अपना निर्वाह करने को काफी रुपया है (अस् या विद्यते)। उसके पास खर्चने को एक कौड़ी भी नहीं। इस लड़के ने झूठ बोलने की धृष्टता की (धृष्)। हमारी फौज दुश्मन को हराने के लिए काफी है (अलम्)। वह धन कमाने को कुशल है। ईश्वर के बिना इस संसार के बनाने को कौन समर्थ है। अब शत्रु पर हमला करने और उसे भगा देने का अवसर है। यह अधिकार मांगने का समय नहीं अब तो युद्ध करने का समय है। कृपया मुझे यहां अकेली न छोड़िए (अर्ह्)। आज रात को हमारे यहां भोजन कीजिए (अर्ह्)। झूठ बोलना पाप है और सच बोलना पुण्य। सवेरे उठना आरोग्य देता है। बोलने की इच्छा से वह सभा में गया। मैं अब जाना चाहता हूँ। मित्रों को शत्रु समझना आपको उचित नहीं। रावण को मार कर, सीता को छुड़ा कर और विभीषण को लका का राज्य दे कर राम अयोध्या को लौटे। पढ़ने से क्या (किं) यदि उस पर आचरण न करो। दुखियों को सता कर क्या होगा। दूसरों को ठगने से बस करो (अलम्)। बंदूक लेकर (आ-दा) उसने शेर को मार डाला। चुग़लखोरी (परिवाद) का आसरा लेकर (आ-श्रि) उसने अपने आप को बदनाम कर लिया। धन को छोड़ (वर्ज्) आपके पास सब कुछ है। आपकी सखी के विषय में (अधि-कृ) हम कुछ पूछना चाहते हैं।

२. नीचे लिखे वाक्यों में कोष्ठों में दिए धातुओं के तुमुन्नन्त, क्त्वान्त या ल्यबन्त कृदन्तों के उचित रूपों द्वारा रिक्त स्थानों को पूरा करो :—

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. नीचः परकार्यं—(घातय) एव वेत्ति न—(प्रसाधय)। २. अहमपि असमर्थः—(श्रु)। ३. विद्यते मे धनं—(भुज्)। ४. न शक्नोम्येतद् दृश्यं—(दृश्)। ५. नार्हसि मां एकाकिनीमेव—(वि-हा)। ६. मृत्युकाले—(रक्ष्) कः समर्थः। ७. उत्पलपत्रधारया शमीलतां—(छिद्) ऋषिर्व्यवस्यति। ८. अवसरोऽयं—(युध्) शत्रुभिः। ९. सिंहं—(दृश्) स पलायितः। १०. किं तव निर्बलान्—(पीड)। ११. दण्डं—(अव-लंब्) तिष्ठति सः। १२. न च श्रेयोऽनुपश्यामि—(हन्) स्वजनमाहवे।

३. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो और हेतु दो :—

१. ते हिमालयमामन्त्रयित्वा शूलिनं च प्राप्त्वा स्वर्गं ययुः। २. प्रातरेवोत्थातुमारोग्यावहम्। ३. अहं गातुमधीये। ४. अहं भाषितुं तमश्रौषम्। ५. अस्ति मे विभवः सर्वं परिज्ञातव्यम्। ६. अहं भवन्तं गन्तुमिच्छामि। ७. भोगं भुञ्जन् स तत्र वसति। ८. कवचं बिभ्रन् स सेनां नयति। ९. शत्रुं निघ्नन् स विजयं प्राप्नोति। १०. प्रयाणं कर्तव्यः स ममाज्ञामयाचत। ११. विचार्यं गच्छति सः। १२. स इदं कार्यं कृतम्। १३. स मह्यमिदं निवेदितः। १४. तस्याः गन्तुं सर्वैः प्रसंशितम्। १५. न हन्तव्यं न हन्तव्यमाश्रममृगोऽयम्। १६. तया संनिहितया भवितव्या।

लकारार्थ 'TENSE AND MOODS.'

लट्, वर्त्तमान 'Present.'

२८१. वर्त्तमान काल में जो क्रिया हो रही है उसे निर्दिष्ट करने के लिए लट् लकार प्रयुक्त होता है। यह क्रिया के अविराम (continuity) को भी बताता है। 'सर्वकाल में सत्य रहने वाली वस्तु' (true for all times) को बताने में भी प्रयुक्त होता है। जैसे, जलं वहति 'जल ले जाता है।' सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम् 'कहो, सत्संगति मनुष्य का क्या नहीं करती।'

इस के अतिरिक्त लट् लकार अधोलिखित अर्थों में प्रयुक्त होता है :—

(क) वर्त्तमान के समीपवर्ती (immediate) भूत या भविष्यत् में लट् लकार प्रयुक्त होता है[1]। जैसे, अयमागच्छामि 'मैं अभी आया हूँ।' कदा गमिष्यसि—एष गच्छामि 'तू कब जायगा ? मैं अभी जाऊँगा।'

---

१. वर्त्तमानसामीप्ये वर्त्तमानवद्वा। ३. ३. १३१।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ख) कथाओं में (historical present) और स्वाभाविक क्रिया (habitual action) के बताने में भूत काल के अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे, दमनकः पृच्छति कथमेतत् 'दमनक ने पूछा यह कैसे।' हिरण्यको भोजनं कृत्वा बिले स्वपिति 'हिरण्यक भोजन कर के बिल में सोया करता था।'

(ग) स्म उपपद (particle) के योग में लट् भूतार्थ में प्रयुक्त होता है[1]। जैसे, एकस्मिश्चिद्वने भासुरको नाम सिंहः प्रतिवसति स्म 'किसी वन में भासुरक नाम का एक शेर रहता था।'

(घ) प्रश्नवाचक शब्दों (interrogatives) के साथ जब विचार या इच्छा विवक्षित (implied) हो तो लट् भविष्यत् के अर्थ में प्रयुक्त होता है[2]। जैसे, किं करोमि क गच्छामि 'मैं क्या करूँगा, कहाँ जाऊँगा।' किं गच्छामि तपोवनम् 'क्या मैं तपोवन जाऊँगा।'

(ङ) पुरा और यावत् के साथ लट् भविष्यत् काल और निश्चय का बोधक होता है।[3] जैसे, आलोके ते निपतति पुरा सा 'निश्चय वह तुम्हारी नज़र में पड़ेगी।' यावच्छत्रुघ्नं प्रेषयामि 'मैं अभी शत्रुघ्न को भेजूँगा।'

(च) कदा और कर्हि के साथ विकल्प से भविष्यत् के अर्थ में लट् प्रयुक्त होता है[4]। जैसे, कदा गच्छन्ति 'वे कब जाएँगे?' कर्हि प्रतिष्ठसे ग्रामम् 'तुम गाँव को कब जाओगे?

(छ) लिप्सा की सिद्धि (fulfilment of desire) में लट् लृङ् (conditional) के अर्थ में प्रयुक्त होता है[5]। जैसे यो अन्नं ददाति स स्वर्गं याति 'जो अन्न देता है (देगा) सो स्वर्ग हो जाता है (जाएगा)।'

अभ्यास ५४.

भले लोगों का संग पाप को दूर करता है, चित्त को प्रसन्न करता है और कीर्त्ति को चारों तरफ फैलाता है। मैं वहाँ से अभी आया हूँ। आप कब जाएँगे। मैं अभी जाता हूँ और आपका काम करता हूँ। खाना खाकर वह सैर को जाता है। जंगली लोग पहाड़ों की कन्दराओं में रहते हैं। महाराज अशोक पाटलिपुत्र में राज करते थे (स्म)। इस जंगल में एक शेर रहता था। यहाँ एक योगी रहता था जो कई महीने समाधि में रहता था। मैं किधर जाऊँगा, इस निर्जन वन

---

१. लट स्मे। ३. २. ११८। २. किंवृत्ते लिप्सायाम्। ३. ३. ६। ३. यावत्पुरानिपातयोर्लट्। ३. ३. ४। निपातावेतौ निश्चयं द्योतयतः सि० कौ०। ४. विभाषा कदाकर्ह्योः। ३. ३. ५। ५. लिप्स्यमानसिद्धौ च। ३. ३. ७।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं किस से रास्ता पूछूँगा ? क्या मैं स्कूल जाऊँगा ? जो सच बोलता है वह स्वर्ग को जाता है। जो परिश्रम से पढ़ता है वह पास हो जाता है। मैं किस का विश्वास करूँ ? तुम निश्चय (पुरा) उसे वहाँ पाओगे। आपके रास्ते में देहली अवश्य (पुरा) आएगी। मैं उसे अभी (यावत्) जाने की आज्ञा करता हूँ। मैं अभी (यावत्) आपको सब कुछ बता दूँगा। आप घर कब (कदा) जाएँगे ?

२ नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध या सिद्ध (justify) करो :—

१. सत्संगतिर्जाड्यं हरिष्यति वाचि सत्यं च सिञ्चिष्यति। २. सेयं शकुन्तला पतिगृहं याति। ३. एवं युवतयो गृहिणीपदं यास्यन्ति। ४. अस्ति मगधदेशे चम्पकवती नामारण्यानी। ५. नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः। ६. हस्ती ब्रूते कस्त्वम्। ७. तस्मिन् वने एको सिंहः प्रत्यवसत् स्म। ८. यावदहमेव तत्र गमिष्यामि। ९. कर्हि गमिष्यसे लवपुरं भवान्। १०. सायंकाले सीतागमिष्यति पुरा।

भूत काल 'Past Tenses'.

२८२. हिन्दी, अँगरेजी आदि भाषाओं में केवल एक ही भूत काल है। परन्तु संस्कृत में तीन हैं। जिस समय संस्कृत साधारण बोली की भाषा थी तब इनके प्रयोगों में भेद था। परन्तु संस्कृत के साधारण बोली की भाषा न रहने से इनके प्रयोग में भी भेद न रहा।

(१) लङ् (imperfect) उस क्रिया को बताता है जो आज के दिन से पहले समाप्त हो चुकी हो (अनद्यतन)[1]। यह ऐतिहासिक भूतकाल (historical past) के लिए भी प्रयुक्त होता है।

(क) समीप-भूतकाल-अन्तर्गत प्रश्न के पूछने में भी लङ् प्रयुक्त होता है[2]। जैसे, अगच्छत् किं स ग्रामम् 'क्या वह ग्राम को चला गया ?' परन्तु यदि दूर का काल हो तो लिट् (perfect) प्रयुक्त होता है। जैसे, कंसं जघान किम् 'क्या उसने कंस को मारा ?'

(२) लिट् (perfect) उस दूर की भूत क्रिया को बताता है जो आज से पहले समाप्त हो चुकी हो और जिसको वक्ता ने न देखा हो (परोक्षे)[3]। अतः इसमें उत्तम (1st) और मध्यम (2nd) पुरुषों का

१. अनद्यतने लङ्। ३. २. ३। २. प्रश्ने चासन्नकाले। ३. २. ११७।
३. परोक्षे लिट्। ३. २. ११५।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयोग बहुत कम होता है। जैसे, बभूव योगी किल कार्तवीर्यः 'कहते हैं कि कार्तवीर्य एक योगी था।'

(३) लुङ् (aorist) साधारण भूतार्थ में प्रयुक्त होता है[1]। आज से पहले की क्रिया लङ् और लिट् से निर्दिष्ट होती है, अतः लुङ् निकटवर्ती (recent) क्रिया में, जो आज के दिन (current day) में हुई हो, प्रयुक्त होता है, जैसा कि अँगरेज़ी में present perfect. यह संवाद (dialogue) में भी प्रयुक्त होता है। जैसे, अभूत्संपादितस्वादुफलो मे मनोरथः 'मेरे मनोरथ ने स्वादु फल को प्राप्त कर लिया।' तुभ्यं मया राज्यमदायि 'मैं तुमको राज्य दे चुका हूँ।'

(क) लुङ् समीप भूतकाल के अतिरिक्त प्रबन्ध (continuousness) के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है[2]। लङ् इस अर्थ में प्रयुक्त नहीं हो सकता। जैसे, ब्राह्मणेभ्यो यावज्जीवमन्नमदात् 'जीवन भर वह ब्राह्मणों को अन्न देता रहा।'

(ख) मा और मास्म के साथ लुङ् आगम (augment) बिना लोट् के अर्थ में प्रयुक्त होता है[3]। जैसे, मा गाः 'मत जाओ।' मा शुचः 'शोच मत करो।' मास्म प्रतीपं गमः 'विरुद्ध मत जाओ।'

अभ्यास ५५.

१. संस्कृत में अनुवाद करो :—

रघु सन्तान की प्राप्ति के लिए वसिष्ठ के पास गया। अर्जुन ने उत्तरकुमार को कौरवों की सेना के कपड़े उतारने की आज्ञा दी। राम और लक्ष्मण सीता सहित कुछ दिन दंडक वन में रहे और फिर आगे चल दिए। नल ने अपना सारा राज्य जूए में हार दिया और दमयन्ती को साथ लेकर जंगल को चला गया। नल ने दमयन्ती को जंगल में अकेली छोड़ दिया। दिलीप ने अपना राज्य रघु को दिया और आप जंगल को चला गया। राम ने रावण को मारा और लंका का राज्य विभीषण को दे दिया। क्या आपको आपके नौकर ने नहीं बताया कि मैं कल आपसे मिलने गया था। मैं बड़ा खुश हूँ कि आपको इस काम में सफलता प्राप्त हुई है। अब सब सभासद आ चुके हैं, अतः अब हमें कार्य आरंभ करना चाहिए। गोविन्द सारे दिन पढ़ता रहा। जीवन भर वह हर प्रकार से पीड़ितों के दुःख दूर करने का यत्न करता रहा। क्या तुम अपना

१. लुङ्। ३. २. ११०। २. क्रियाप्रबन्धसामीप्ययोः। ३. ३. १३५। ३. माङि लुङ्। स्मोत्तरे लङ् च। ३. ३. १७५–७६।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ याद कर चुके हो ? नहीं, महाराज ! अभी तक तो मैंने आरंभ भी नहीं किया । हे बालको, यद्यपि तुम्हारा अध्यापक तुम पर सख्ती करे तो भी उसकी आज्ञा से बाहर मत जाओ । कष्ट आने पर घबराओ नहीं ।

२. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध या सिद्ध करो—

१. रामः कंसमहन् किम् । २. जगाम किमद्य स ग्रामम् । ३. अभवत् राजा किल शूद्रको नाम । ४. जिज्ञासुभ्यो यावज्जीवं विद्याम-ददत् । ५. तपोवनवासिनामुपरोधो मा बभूव । ६. त्वं प्रतिष्ठां मा अगमः । ७. गुरूणामवज्ञां मास्म चकर्थ । ८. दुर्जनानामुपकारं मास्म अकरोः । ९. क्लैव्यं मास्म जगन्थ पार्थ । १०. चंडवर्मा प्राणैरेनं न व्ययूयुजत् । ११. ब्राह्मणानां वचनेषु संशयो मा भूत् । १२. बभूव सर्वं शुभशंसि तत्क्षणम् ।

भविष्यत् 'Future'.

२८३. संस्कृत में भूत की भाँति भविष्यत् भी दो हैं । हिन्दी, अँगरेज़ी आदि में इनमें कोई भेद नहीं किया जाता । लुट् (first future) उस भविष्य क्रिया का बोधक है जो वर्त्तमान (current day) में न हो (अनद्यतन-भविष्यत्), अर्थात् इसके पश्चात् (remote) हो । और लृट् (second or simple future) वर्त्तमान दिन की भविष्य क्रिया (अद्यतनभविष्यत्) तथा अन्य साधारण भविष्य क्रियाओं में प्रयुक्त होता है । लृट् भविष्य प्रबन्ध (continuousness) में भी प्रयुक्त होता है । जैसे, पञ्चभिरहोभिर्वयमेव तत्र गन्तारः 'पांच दिन में हम ही वहां जाएँगे ।' यास्यत्यद्य शकुन्तला 'शकुन्तला आज जाएगी ।' अथ कस्मिन् प्रदेशे विश्रमिष्ये 'मैं कहां विश्राम करूँगा ।

(क) कभी लृट् (simple future) लोट् अर्थात् आज्ञा (courteous command) के अर्थ में प्रयुक्त होता है । जैसे, तदा मम पांशांश्छेत्स्यसि 'पीछे मेरे बन्धनों को काटो ।' पश्चात्सरः प्रति गमिष्यसि मानसं तत् 'मानसरोवर को पीछे जाइए ।'

लृङ् 'Conditional',

२८४. लृङ् उन सांकेतिक[1] (conditional) वाक्यों में प्रयुक्त होता

---

१. लिङ्निमित्ते लृङ् क्रियातिपत्तौ । ३. ३. १३९ । हेतुहेतुमद्भावादि लिङ्-निमित्तं तत्र भविष्यत्यर्थे लृङ् स्यात् क्रियाया अनिष्पत्तौ गम्यमानायाम् । सि० कौ० ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है जिनमें कोई भूत वा भविष्यत् कार्य किसी अन्य कार्य पर निर्भर करता हो, परन्तु कारण के न होने से कार्य न हो सकता हो। कारणद्योतक (antecedent or protasis) और कार्यद्योतक (consequent or apodosis) दोनों वाक्यों (clauses) में लृङ् प्रयुक्त होता है। जैसे, सुवृष्टिश्चेदभविष्यद् दुर्भिक्षं नाभविष्यत् 'यदि अच्छी वर्षा हो जाती तो दुर्भिक्ष न होता।'

(क) यदि कारणद्योतक (antecedent) वाक्य में विधिलिङ् (potential) प्रयुक्त हो तो कार्यद्योतक (consequent) वाक्यान्तर्गत लङ् सांकेतिक वर्त्तमान (hypothetical present) के अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे, यदि न प्रणयेद्राजा दण्डं उपापीडयिष्यन् दुर्बलान् बलवत्तराः 'यदि राजा दण्ड न दे (pot.) तो अधिक बल वाले दुर्बलों को दुःख दें।'

अभ्यास ५६.

१. संस्कृत में अनुवाद करो :—

एक महीने में जहाज लिवरपूल पहुँच जाएगा। मैं तीन दिन में लौटूँगा। दस दिन में कालेज में छुट्टियाँ हो जाएँगी। मैं कुछ दिनों तक शिमले जाऊँगा और वहाँ पहाड़ों की शोभा को देखूँगा। हमारा मित्र हिरण्यक नाम चूहा इस वन में रहता है, वह हमारे बन्धनों को काटेगा और हमें मुक्त करेगा। हे राजन्, यदि राम को युवराज बनाया जाएगा (अभि-सिच्) और उसको वन को न भेजा जाएगा, तो मैं ज़हर खाकर मर जाऊँगी। जो कुछ आपकी सहायता के लिए आवश्यक होगा वह सब मैं आपके विना कहे ही कर दूँगा। छुट्टियों में आप कहाँ जाएँगे। आप कहाँ जाइएगा। मैं लखनऊ जाऊँगा। आज वर्षा होगी। इस वर्ष बहुत पाला पड़ेगा। आप घबराइयेगा नहीं, सब ठीक हो जाएगा। हे भद्र पुरुष, अब तुम चले जाओगे, परन्तु पहले तुम मेरी एक बात को सुनो। हे पथिक, पहले मेरी सहायता कीजिए पीछे अपना काम कीजिएगा। यदि कोई अग्नि में हाथ डालेगा तो अवश्य ही जल जाएगा। यदि गोपाल हरि को गाली न देता तो लड़ाई न होती। यदि मनुष्य धर्म को छोड़ेगा तो दुःख पाएगा। हम वही काम करेंगे जो युधिष्ठिर को खुश करेगा। यदि दुर्योधन हठ न करता तो महाभारत का घोर युद्ध न होता। यदि तुम अपना प्रतिदिन का कार्य भलीभाँति करते तो परीक्षा में फेल न होते। यदि अध्यापक अपने विद्यार्थियों को न ताड़े तो वे सदैव शरारत करें।

२. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध या सिद्ध करो :—

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. पंचभिरहोभिर्वयमेव तत्र गन्तास्मः। २. अद्यैव पतिगृहं गन्ता शकुन्तला। ३. ते विद्यालयमस्मिन्नहनि गन्तारः। ४. वयं ह्यः देशान्तरं यास्यामः। ५. वयं लवपुरं गमिष्यामो बहूनि च पुस्तकान्यानेतास्मः। ६. भवांस्तत्रात्यद्भुतं दृश्यं द्रष्टा। ७. अधुनैवैतत्कार्यमारब्धाहे। ८. अरुणस्तमो भेत्ता। ९. आशा बलवती राजन् शल्यो जेष्यति पाण्डवान्। १०. त्वया सह निवस्तास्मि वनेषु मधुगन्धिषु। ११. अथ धर्मं व्याख्यास्यामः। १२. किंवाभविष्यदरुणस्तमसां विभेत्ता तं चेत्सहस्रकिरणो धुरि नाकरिष्यत्। १३. नाभविष्यदियं शुद्धा यद्यपास्यमहं ततः।

लोट् 'Imperative'.

२८५. लोट् मध्यम पुरुष में आज्ञा, प्रार्थना और उपदेश के अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे, कुरु देवकार्यम् 'देवताओं का काम करो।' देहि मे प्रतिवचनम् 'मुझे उत्तर दीजिए।' भज क्षमाम् 'क्षमा को धारण करो।'

(क) लोट् कर्मवाच्य प्रथम पुरुष के एक वचन में प्रार्थना के अर्थ में (कर्तृवाच्य मध्यम पु० के स्थान में) प्रयुक्त होता है। जैसे, एतदासनमास्यताम् 'यह आसन है, आप पधारिए।' देव श्रूयताम् 'महाराज सुनिए।'

(ख) लोट् इच्छा और आशीर्वाद के अर्थ में विधिलिङ् (optative) और आशीर्लिङ् (benedictive) के स्थान में प्रयुक्त होता है। जैसे, चिरं जीव 'देर तक जीते रहो।' पुत्रं लभस्व 'आपको पुत्र प्राप्त हो।' काले वर्षतु पर्जन्यः 'समय पर बादल बरसे।'

(ग) उत्तम पुरुष में लोट् प्रश्न (question), शक्ति (ability) और विधि (necessity) के अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे, किं करवाणि ते 'मैं तुम्हारे लिए क्या करूँ।' करवामैतद्वयं देवि प्रियं तव 'हे देवि, हम आपकी यह भलाई कर सकते हैं।' नहि दूतवधं करवाणि 'मुझे दूत का वध नहीं करना चाहिए।'

(घ) स्म के योग लोट् प्रार्थना के अर्थ में और मा के योग में वर्तमान के अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे, बालमध्यापय स्म 'कृपया बालक को पढ़ाइए।' मा भवतु 'यह नहीं है।'

(ङ) लोट् सम्भावना (possibility) या संशय (doubt) के अर्थ में विशेषतः प्रश्नवाचक शब्दों (interrogatives) के योग में प्रयुक्त

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
होता है। जैसे, प्रत्येतु कस्तद् भुवि '(सम्भवतः) पृथिवी पर उसका कौन विश्वास करेगा।' किमधुना करवाम 'अब हम क्या करें।'

आशीर्लिङ् 'Benedictive or Precative'.

२८६. आशीर्लिङ् आशीर्वाद देने में प्रयुक्त होता है। उत्तम पुरुष के साथ यह वक्ता की इच्छा को बताता है। जैसे, वीरप्रसवा भूयाः '(ईश्वर करे) तू वीर पुत्रों को उत्पन्न करने वाली हो।' कृतार्थो भूयासम् '(ईश्वर करे) मैं कृतार्थ होऊँ।'

(क) कभी कभी यह लोट् और विधिलिङ् के अर्थों में प्रयुक्त होता है। जैसे, इदं वचो ब्रूयास्त 'आप इस बात को कहें।'

अभ्यास ५७.

१. संस्कृत में अनुवाद करो :—

लीजिए, यह है आपकी पुस्तक। कृपया अब मुझे आज्ञा दीजिए। मुझे यह काम नहीं करना चाहिए। अब मुझे जाना चाहिए। जाओ और सिद्धि को प्राप्त करो। हे बालको, सदैव अपने माता, पिता और गुरुओं की सेवा करो और उनकी आज्ञा को मानो। अपने नौकर को कहो कि मेरे लिए पानी लाए। देवदत्त ने यज्ञदत्त को कहा 'आओ हम सैर को चलें।' अब आप जा सकते हैं, ईश्वर आपके मार्ग को कल्याणकारी करे, और आप अपने कार्य में सफलता प्राप्त करें। हे महाराज, मेरी अवस्था को भी सुनिए और मेरे दुःख को दूर कीजिए। कृपया बालक को पुस्तक दीजिए (स्म)। झूठे का कौन विश्वास करे। यदि वर्षा होती है तो संभवतः वह कैसे यहां आए। कृपया इस पत्र को पढ़िए (स्म)। ईश्वर करे कि इस देश में वर्षा समय पर हो, पृथिवी धन-धान्य वाली हो, प्रजा आनन्द में रहे, और ब्राह्मण निर्भय हों। आप कहें या न कहें वह स्वयं ही इस काम को कर लेगा। नीति के जानने वाले चाहे निन्दा करें या स्तुति, धीर पुरुष न्याय से पैर नहीं हटाते। पुरुषार्थ-हीन पुरुष की इस संसार में कौन रक्षा करे। ईश्वर करे तुम देर तक शासन करो और समस्त-गुण-सम्पन्न पुत्रों को प्राप्त करो। मुझे अब पढ़ना चाहिए। सुन्दर पवन चले और सब लोगों को आनन्द दे। हे विद्यार्थियो! ईश्वर करे कि तुम विद्या पढ़ कर सूर्य के समान होओ, और भारतवर्ष से अविद्या के अन्धकार को दूर करो।

२. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध या सिद्ध करो :—

१. राजानः परिपालयन्तु वसुधाम्। २. एतदासनमास्स्व। ३. मे प्रतिवचनं देयाः। ४. तृष्णां छिन्द्धि भज क्षमां जहि मदं पापे

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रतिं मा कुरु। ५. यथेष्टं चर वैदेहि:, पन्थानः सन्तु ते शिवाः। ६. सिन्धुमपि शोषयाणि। ७. सतां पीडनं मा भवत्विदानीम्। ८. पुत्रमेवं गुणोपेतं चक्रवर्तिनमाप्नुहि। ९. केवलं वीरप्रसवा भूयाः। १०. कुशलं ते भूयात्।

विधिलिङ् 'Optative or Potential'.

२८७. विधिलिङ् (optative or potential) विधि (command), निमन्त्रण (invitation), आमन्त्रण (permitting), अधीष्ट (speaking of honorary duty), संप्रश्न (questioning) और प्रार्थना (prayer) के अर्थ में प्रयुक्त होता है[1]। जैसे, आपदर्थं धनं रक्षेत् 'विपत्ति के लिए धन की रक्षा करे।' इह भवान् भुञ्जीत 'आप यहां भोजन कीजिए।' इहासीत भवान् 'आप यहां बैठिए।' पुत्रमध्यापयेद्भवान् 'आप मेरे बेटे को पढ़ाइए।' किं भो वेदम् अधीयीय उत तर्कम् 'श्रीमन् क्या मैं वेद पढ़ूं या तर्क?' भोजनं लभेय 'मैं भोजन पाऊँ।'

(क) प्रैष (direction), अतिसर्ग (permission to do as one likes) और प्राप्तकाल (proper time for an action) में विधिलिङ्, लोट् या कृत्य-प्रत्ययान्त (तव्य, अनीय, य) प्रयुक्त होते हैं[2]। जैसे, इहासीत भवान् (आस्यतां, या आसितव्यं भवता)।

(ख) यत् शब्द के प्रयोग में काल, समय, वेला आदि के साथ विधिलिङ् आता है[3]। जैसे, कालः समयो वेला वा यद्भुञ्जीत भवान् 'यह समय है जब आप को भोजन करना चाहिए।'

(ग) यदि अर्हता (fitness) या शक्ति (capability) अभिप्रेत हो तो विधिलिङ्, कृत्य या तृच् प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं[4]। जैसे, भवान् खलु कन्यां वहेत वोढा वा या भवता खलु कन्या उह्येत, वोढव्या, वोह्या, वहनीया वा 'तुम कन्या से विवाह के योग्य हो।' भीमः दुर्योधनं जयेत, जेता वा या भीमेन दुर्योधनः जीयेत, जेतव्यः, जेयः, जयनीयः वा 'भीम दुर्योधन को जीत सकता है।'

---

१. विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसंप्रश्नप्रार्थनेषु लिङ्। ३. ३. १६१। २. प्रैषातिसर्गप्राप्तकालेषु कृत्याश्च। ३. ३. १६३। ३. लिङ् यदि। ३. ३. १६८। ४. अर्हे कृत्यतृचश्च। शकि लिङ् च। ३. ३. १६९, १७२।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(च) प्रश्नवाचक किम्, कतर, आदि के साथ गर्हा (censure) में विधिलिङ् या लृट् प्रयुक्त होता है[1]। जैसे, कः हरिं निंदेत् (निन्दिष्यति वा) 'हरि की कौन निन्दा करे।' को नाम वृषलः यं भवान् याजयेत् (याजयिष्यति वा)।

२८८. आश्रित वाक्य (dependent clause) में विधिलिङ् काम (hope) या प्रार्थना (prayer) के अर्थ में प्रयुक्त होता है[2]। जैसे, आशंसेऽधीयीय 'मैं आशा करता हूँ मैं पढूंगा'।

(क) यदि कच्चित् के प्रयोग विना काम (hope) अभिप्रेत हो तो विधिलिङ् प्रयुक्त होता है। जैसे, कामो मे भुञ्जीत भवान् 'यह मेरी कामना है कि आप भोजन करें। 'परन्तु कच्चिद्भर्तुः स्मरसि रसिके त्वं हि तस्य प्रियेति।

(ख) संभावना-वचन (hope or expectation) जैसे, संभावय, अपि, अपि नाम, में जब यद् शब्द प्रयुक्त न हो तो विधिलिङ् या लृट् प्रयुक्त होता है[3]। परन्तु यद् के साथ केवल विधिलिङ् आता है। जैसे, संभावयामि भुंजीत भोक्ष्यते वा भवान् मैं आशा करता हूँ आप भोजन करें या करेंगे।' अपि जीवेत् स ब्राह्मणशिशुः 'आशा है वह ब्राह्मण का लड़का जी जाए (उत्तर०)।' अपि नाम भगवतीनीतिर्विजेष्यते (मालती०) 'आशा है भगवती की नीति विजयी होगी।' परन्तु संभावयामि यद् भुञ्जीथास्त्वम् 'मुझे संभावना है कि आप भोजन करें।'

(ग) इच्छा (wish) अर्थ वाले धातु जैसे, इष्, कम्, प्रार्थ्, आदि, के साथ विधिलिङ या लोट आता है[4]। जैसे, इच्छामि सोमं पिवेत् पिवतु वा भवान् 'मैं चाहता हूँ आप सोम पिएँ।'

२८९. संकेतार्थक (conditional) वाक्यों में जहां एक वाक्य के अर्थ का दूसरे वाक्य के अर्थ के साथ हेतुहेतुमद्भाव (cause and effect) का संबन्ध हो तो दोनों वाक्यों (clauses) में विधिलिङ् प्रयुक्त होता है।[5] यदि या चेद् संयोजक होते हैं।' जैसे, यदि तातः सन्निहितो भवेत् ततः किं भवेत् 'यदि पिता जी यहां होते तो क्या होता।' यदि न स्यान्नरपति-

१. किंवृत्ते लिङ्-लृटौ। ३. ३. १४४। २. कामप्रवेदनेऽकच्चिति। ३. ३. १५३। ३. विभाषा धातौ संभावनवचनेऽयदि। ३. ३. १५५। ४. इच्छार्थेषु लिङ्लोटौ। ३. ३. १५७। ५. हेतुहेतुमतोर्लिङ्। ३. ३. १०५।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
विप्लवेत नौरिव प्रजा 'यदि राजा न हो तो नौ की भाँति प्रजा नष्ट हो जाए।' दैवात्पश्येर्जगति विचरन्निच्छया मत्प्रियां चेत्, आश्वास्यादौ तदनु कथयेर्माधवीयामवस्थाम् (मालतीमाधवम्)।

(क) हेतुहेतुमद्भाव में विनय (politeness) के अर्थ में कभी लोट् भी प्रयुक्त होता है। जैसे, न चेदन्यकार्यातिपातो गृह्यतामातिथेय-सत्कारः 'यदि अन्य किसी काम में विघ्न न हो तो अतिथि को उचित सत्कार स्वीकार कीजिए।'

अभ्यास ५९

१. संस्कृत में अनुवाद करो :—

मनुष्य कपटी मित्र को छोड़ दे। ब्रह्मचारी ब्रह्ममुहूर्त में उठे, सायं प्रातः सन्ध्या करे और दिन में न सोए। धर्म पालन करने को शरीर की रक्षा करे। अभी आप यहीं ठहरिए। आप यह पुस्तक लें। आप मुझे वेद पढ़ाएँ। मैं यहां ठहरूँ या चला जाऊँ। क्या मैं यह पुस्तक ले सकता हूँ। यह समय है कि यह विद्यार्थी वेद पढ़ना आरंभ करे। अब अवसर आ गया है कि आप संन्यास लें। हमारा देश अपनी रक्षा करने में शक्त है। आप की कौन बराबरी करे। दुष्ट बालक को कौन पढ़ाए। मैं आशा करता हूँ आप लाहौर जाएँगे। उम्मीद है मैं कल आप के दर्शन करूँ। अब तुम अपना काम संभालने के योग्य हो। आशा है कि बीमार आगे से अच्छा है। कौन चाहेगा कि तुम एक दुष्ट की सहायता करो। संभव है यह वही लड़की हो। मेरा दोष तो कहिए ताकि मैं इसे दूर करूँ। मैं चाहता हूँ कि आप इस वर्ष बी० ए० की परीक्षा दें। मनुष्य ऐसा काम न करे जो दूसरों को दुःख दे। यदि आप वहां होते तो आप को बड़ा आश्चर्य होता। यदि आपके पिता जी देखें तो बड़े नाराज हों। यदि कष्ट न हो तो एक दिन और ठहरें। मैं यहाँ प्रति दिन आता हूँ ताकि टेनिस खेलूं। संभव है वह झूठा हो या सच्चा। जो पाप करे उसे दंड देना चाहिए। अब आप को काम खतम करना चाहिए। आशा है मैं इस काम में सफल हूँगा। ईश्वर सब को सफलता प्रदान करे।

२. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध या सिद्ध (justify) करो :—

१. आत्मानं सततं रक्ष। २. ब्राह्मणः प्रत्यहं यजतु। ३. कच्चिज्जीवेत् मम मित्रम्। ४. सहसा विदधीत न क्रियाम्। ५. संभावयामि यद्भवान् लवपुरं गमिष्यति। ६. कालोऽयमात्मानं प्रकाश-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

येत् । ७. दोषं तु मे कंचित्कथय येन स प्रतिविधीयिष्यते । ८. लभेत प्रार्थयिता न वा श्रियं श्रिया दुरापः कथमीप्सितो भविष्यति । ९. वर्जयेत्तादृशं मित्रम् । १०. उत्सीदेयुरिमे लोका न करिष्यामि कर्म चेदहम् । ११. क ईप्सितार्थस्थिरनिश्चयं मनः पयश्च निम्नाभिमुखं प्रतीपयेत् । १२. न मुह्येदथकृच्छ्रेषु न च धर्मं परित्यजेत् । १३. शाम्येत प्रत्युपकारेण नोपकारेण दुर्जनः । १४. सर्वतो जयमिच्छेत् पुत्रादिच्छेत्पराजयम् १५. अपि नाम विजयी भवेयम् ।

शब्द-निरुक्ति 'Parsing'.

२९०. वाक्य में प्रत्येक शब्द के प्रकार, लिंग, वचन, कारक या काल आदि होते हैं । इन सब को जुदा जुदा बताने को शब्द-निरुक्ति (parsing) कहते हैं । संस्कृत में शब्द-निरुक्ति के प्रायः वही नियम हैं जो हिन्दी में हैं । इसलिए हिन्दी के समान ही संस्कृत वाक्य के शब्दों की निरुक्ति होती है ।

(१) संज्ञा की निरुक्ति में इसका भेद, लिंग, वचन, कारक और वाक्य में संबन्ध बताया जाता है । जैसे, ब्राह्मणाः शास्त्राण्यधीयीरन् मन्दिरे ।

ब्राह्मणाः जातिवाचक, पुँ०, बहु०, कर्ता-कारक, अधीयीरन् क्रिया का कर्ता

शास्त्राणि—जातिवाचक, नपुं०, बहु, कर्म-कारक, अधीयीरन् क्रिया का कर्म ।

मन्दिरे—जातिवाचक, नपुं०, एकव०, अधिकरण, अधीयीरन् क्रिया के स्थान को बताता है ।

(२) सर्वनाम की निरुक्ति में इसका भेद, पुरुष, लिंग, वचन, कारक और संबन्ध बताया जाता है । जैसे, हंस, प्रयच्छ मे कान्तां गतिरस्यास्त्वया हृता ।

मे—पुरुषवाचक सर्वनाम, उत्तमपु०,एक०, संबन्ध-कारक,कान्तांके साथ संबद्ध ।

अस्याः—पुरुषवाचक सर्वनाम, प्रथमपुरुष, स्त्रीलिंग, एकवचन, संबन्ध कारक, गतिः के साथ संबद्ध ।

त्वया—पुरुषवाचक सर्वनाम, मध्यमपुरुष, एकवचन, कारण-कारक, 'हृता' क्रिया का तृतीयान्त कर्ता ।

(३) विशेषण की निरुक्ति में इसका भेद, विशेष्य, लिंग, वचन, कारक और अन्य सबन्ध बताए जाते हैं । जैसे, एते तेजोमया द्वादशादित्याः सन्ति ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐते—विशेषण, निर्देशक, पुँ०, बहु०, कर्ता-कारक, 'आदित्याः' का विशेषण ।

तेजोमयाः—विशेषण, गुणवाचक, पुँल्लिंग, बहुवचन, कर्ता-कारक, मूल-अवस्था, 'आदित्याः' का विशेषण ।

द्वादश—विशेषण, निश्चित-संख्यावाचक, गणना वाचक, पुं०, बहुवचन, कर्ता-कारक, 'आदित्याः' का विशेषण ।

(४) क्रिया की निरुक्ति में उसके भेद, वाच्य, काल, पुरुष, लिंग, वचन, पद, आदि बताए जाते हैं। जैसे, कथय कथं मामेकपद उत्सृज्य प्रयासि ।

कथय—क्रिया, सकर्मक, कर्तृवाच्य, लोट् लकार, कथ् का मध्यम पुरुष, एकवचन, परस्मै०, 'त्वं' अध्याहृत कर्ता से समता ।

उत्सृज्य—पूर्वकालिक क्रिया, सकर्मक, कर्तृवाच्य, अविकारी कृदन्त ।

प्रयासि—क्रिया, अकर्मक, कर्तृवाच्य, प्र-या धातु का लट् लकार, मध्यमपुरुष, एकवचन, परस्मै०, 'त्वं' अध्याहृत कर्ता से समता ।

(क) यदि क्रिया के स्थान पर कृदन्त, विशेषण या विशेष्य प्रयुक्त हों तो उनको निरुक्ति में विशेषणों या संज्ञाओं निरुक्ति की विशेषताएँ भी बतानी चाहिए ।

(५) क्रियाविशेषणों की शब्द-निरुक्ति में इनके भेद तथा जिस क्रिया, विशेषण, या क्रियाविशेषण के वे विशेषण हों उसे बताना चाहिए। जैसे, साधु अभिहितं भवत्या ।

साधु—क्रियाविशेषण, रीतिवाचक, 'अभिहितं' क्रिया का विशेषण ।

(६) समुच्चयबोधकों (conjunctives) की शब्द-निरुक्ति में इनके भेद और जिनका यह समुच्चय करते हों उन्हें बताना चाहिए। जैसे, कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा ।

वा, समुच्चयबोधक, विभाजक, 'कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं' और 'दुःखमेकान्ततः (उपनतं) वाक्यों का बिभाजन करता है ।

(७) विस्मयादिबोधक (interjections) में इनके भेद और अर्थ बताने चाहिएँ । जैसे, अहो, गीतस्य माधुर्यम् ।

अहो—विस्मयादिबोधक, आश्चर्यबोधक ।

(८) उपसर्ग (prepositions) प्रायःक्रिया के साथ प्रयुक्त होते हैं। अँग्रेजी के समान इनका प्रयोग संस्कृत में पाया नहीं जाता ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभ्यास ५६.

नीचे लिखे वाक्यों में भिन्न-भिन्न पदों की शब्द निरुक्ति करो :—

गच्छत्वार्य पुनर्दर्शनाय। भक्तिर्ज्ञानाय कल्पताम्। असंतुष्टाः द्विजा नष्टाः सन्तुष्टाश्चापि पार्थिवाः। दरिद्रान् भर कौन्तेय मा प्रयच्छेश्वरे धनम्। साधूनां दुर्जनाद् भयम्। सत्संगतिः पुरुषं मातेव रक्षति। अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः। आचारं तावत्प्रतिपद्यस्व। मा कुरु जनधनयौवनगर्वं हरति निमेषात्कालः सर्वम्। अकारणद्वेषपरो हि यो भवेत् कथं जनस्तं परितोषमेष्यति। उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।

किमपेक्ष्य फलं पयोधरान्ध्वनतः प्रार्थयते मृगाधिपः।
प्रकृतिः खलु सा महीयसः सहते नान्यसमुन्नतिं यया॥
पुराणमित्येव न साधु सर्वं न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।
सन्तः परीक्ष्यान्यतरद्भजन्ते मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः॥
वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही॥
कुलीनैः सह संपर्कं पण्डितैः सह मित्रताम्।
ज्ञातिभिश्च समं मेलं कुर्वाणो न विनश्यति॥
हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकापि वा॥
विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रन्तन्न आसुव॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिशिष्ट १.

छन्द 'Prosody or Metre'

संस्कृत पद्य (stanza) में चार पाद (quarter verses) या चरण (poetical feet) होते हैं। दो पदों का श्लोकार्ध (hemistich or half-verse) होता है। प्रत्येक पाद अक्षरों (syllables) या मात्राओं (syllabic instants or morae) का बना होता है। अक्षरों पर आश्रित छन्द (metre) को वृत्त और मात्राओं पर आश्रित छन्द को जाति कहते हैं।

अक्षर (syllable) शब्द के उस भाग को कहते हैं जिसका उच्चारण एक बार में किया जा सके। अक्षर का प्रधान अंग एक स्वर अवश्य होता है। इस स्वर के साथ एक या अधिक व्यंजन भी हो सकते हैं। यदि अक्षर ह्रस्व स्वर हो तो छन्द की परिभाषा में उसे लघु और यदि दीर्घ या संध्यक्षर स्वर हो तो इसे गुरु अक्षर कहते हैं। यदि ह्रस्व स्वर से परे अनुस्वार, विसर्ग या संयुक्त व्यंजन (conjunct consonant) हो तो छन्द में इसे गुरु ही गिना जाता है। छन्द की जरूरत के अनुसार अन्तिम अक्षर (last syllable) लघु या गुरु हो सकता है। किसी पाद या चरण के पाठ में जो ठहरना होता है उसे यति (caesura) कहते हैं।

वृत्त-छन्दों में प्रत्येक पाद के तीन भाग होते हैं और प्रत्येक भाग में तीन अक्षर होते हैं। इन तीन अक्षरों (syllables) वाले पाद (verse) के भागों को गण (syllabic feet) कहते हैं। शास्त्र के अनुसार म, न, भ, य, ज, र, स और त इन गणों के नाम हैं। इनके लक्षण नीचे दिए गए हैं:—

मस्त्रिगुरुस्त्रिलघुश्च नकारो भादिगुरुः पुनरादिलघुर्यः।
जोगुरुमध्यगतो रलमध्यः सोन्तगुरुः कथितोऽन्तलघुस्तः॥

'म तीन गुरु अक्षरों वाला, न तीन लघु अक्षरों वाला, भ में पहला गुरु और अन्य लघु, य में पहला लघु और अन्य दो गुरु, ज में बीच का अक्षर गुरु,।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

र में बीच का अक्षर लघु, स में अन्त का अक्षर गुरु और पहले दो लघु, और त में अन्त का अक्षर लघु और पहले दो गुरु होते हैं।' ल लघु का और ग गुरु का बोधक है।

यदि लघु के लिए ⏑ यह चिह्न और गुरु के लिए — यह चिह्न प्रयुक्त किए जाएँ तो गणों को नीचे लिखे तरीके से दिखाया जाएगा :—

म—त्रिगुरुः — — —।
न—त्रिलघुः ⏑ ⏑ ⏑।
भ—आदिगुरुः — ⏑ ⏑।
य—आदि लघुः ⏑ — —।
ज—गुरुमध्यगतः ⏑ — ⏑।
र—लमध्यः — ⏑ —।
स—अन्तगुरुः ⏑ ⏑ —।
त—अन्तलघुः — — ⏑।[1]

वृत्त-छन्दों के नीचे लिखे तीन भेद हैं :—

(१) समवृत्त—इस में चारों पाद समान (similar) होते हैं।

(२) अर्द्धसमवृत्त—इसमें क्रम से (alternate) आधे पाद समान होते हैं, अर्थात् पहला और तीसरा तथा दूसरा और चौथा पाद समान होते हैं।

(३) विषमवृत्त—इसमें चारों पाद विषम (dissimilar) होते हैं।

जो समय ह्रस्व स्वर के उच्चारण में लगता है उसे मात्रा (syllabic instant) कहते हैं। इसलिए ह्रस्व स्वर की एक मात्रा (mora) दीर्घ स्वर की दो और प्लुत स्वर की तीन मात्राएँ गिनी जाती हैं व्यंजन की आधी मात्रा गिनी जाती है। जाति या मात्रा छन्दों के प्रत्येक पाद में चार चार मात्रा गण होते हैं। मात्रा-गण पांच हैं और उनके लक्षण नीचे दिए गए हैं:—

म — — —। स ⏑ ⏑ —। ज ⏑ — ⏑।
भ — ⏑ ⏑। न ⏑ ⏑ ⏑ ⏑।

Principal metres with Schemes and Examples.

१. समवृत्त छन्द।

अनुष्टुप्—संस्कृत छन्दों में अनुष्टुप सब से प्रसिद्ध छन्द है। इसके

१. गणों में द्वन्द हैं। एक दूसरे का उलट है। जैसे, म का न, भ का य, ज का र, और स का त।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कई भेद हैं। इसके पाद में आठ अक्षर होते हैं। इन में पाँचवाँ लघु और छटा गुरु होता है। रामायण, महाभारत, पुराण आदि में इस छन्द की प्रधानता है।

त्रिष्टुभ् or metres with 11 syllables to a pada.

इन्द्रवज्रा—स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः (11 to a pada).

Sch: त त ज ग ग ॥ — — ⏑ । — —, ⏑ । ⏑ — ⏑ । — — ॥ (5. 6.)

Ex. अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य संप्रेष्य परिग्रहीतुः ।
जातो ममायं विशदः प्रकामं प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा ॥श०॥

उपेन्द्रवज्रा—उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ । (5, 6.)

Sch: ज त ज ग ग ॥ ⏑ — । — —, ⏑ । ⏑ — ⏑ । — — ॥

Ex. प्रजाः प्रजाः स्वा इव तंत्रयित्वा, निषेवते श्रान्तमना विविक्तम् ।
Sak. यूथानि संचार्य रविप्रतप्तः शीतं दिवा स्थानमिव द्विपेन्द्रः ॥

उपजाति—a mixture of above two.

Sch: ⏓ — ⏑ । — — ⏑ । ⏑ — ⏑ । — ⏓ ॥

Ex. शमप्रधानेषु तपोधनेषु, गूढं हि दाहात्मकमस्ति तेजः ।
Sak. स्पर्शानुकूला इव सूर्यकान्तास्तदन्यतेजोऽभिभवाद्वमन्ति ॥

also Raghu. cantos II. V. VI. etc., Kumara. I III. VII.

जगती or metres with 12 syllables to a pada.

वंशस्थविल—वदन्ति वंशस्थविलं जतौ जरौ । (5, 7.)

Sch: ज त ज र ॥ ⏑ — ⏑ । — —, ⏑ । ⏑ — ⏑ । — ⏑ — ॥

Ex. इदं किलाव्याजमनोहरं वपुस्तपःक्षमं साधयितुं य इच्छति ।
Sak. ध्रुवं स नीलोत्पलपत्रधारया, शमीलतां छेत्तुमृषिर्व्यवस्यति ॥

also Raghu canto III. Kumara. V.

द्रुतविलम्बित—द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ । (4,8 or 4, 4, 4,)

Sch: न भ भ र ॥ ⏑ ⏑ ⏑ । —, ⏑ ⏑ । — ⏑, ⏑ । — ⏑ — ॥

Ex. यदि यथा वदति क्षितिपस्तथा, त्वमसि किं पितुरुत्कुलया त्वया ।
Sak. अथ तु वेत्सि शुचिव्रतमात्मनः पतिकुले तव दास्यमपि क्षमम् ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्करी or metres with 14 syl. to a pada.

वसन्ततिलका—उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः । (8, 6).

Sch : त भ ज ज ग ग ॥ — — ⏑ । — ⏑ ⏑ । ⏑ —, ⏑ ।
⏑ — ⏑ । — — ॥

Ex. मुक्तेषु रश्मिषु निरायतपूर्वकाया,
निष्कम्पचामरशिखा निभृतोर्ध्वकर्णाः ।
आत्मोद्धतैरपि रजोभिरलंघनीया,
धावन्त्यमी मृगजवाक्षमयेव रथ्याः ॥ शकु० ॥

अतिशक्करी or metres with 15 syl. to a pada.

मालिनी—ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः (8, 7).

Sch : न न म य य ॥ ⏑ ⏑ ⏑ । ⏑ ⏑ ⏑ । — —, — ।
⏑ — — । ⏑ — — ॥

Ex. सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं,
मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति ।
इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी,
किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम् ॥ शकु० ॥

अत्यष्टि or metres with 17 syl. to a pada.

मन्दाक्रान्ता—मन्दाक्रान्ताम्बुधिरसनगर्सो भनौ तौ गयुग्मम् ॥ 4,6,7.

Sch : म भ न त त ग ग ॥ — — — । —, ⏑ ⏑ ।
⏑ ⏑ ⏑ । —, — ⏑ । — — ⏑ । — — ॥ (4,6,7).

Ex. कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः etc., the whole of Megha duta. is composed in this metre.

शिखरिणी—रसैरुद्रैश्छिन्ना यमनसभला गः शिखरिणी ।

Sch : य म न स भ ल ग ॥ ⏑ — — । — — —, । ⏑ ⏑ ⏑ ।
⏑ ⏑ — । — ⏑ ⏑ । ⏑ — ॥ (6, 11.).

Ex. अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहै-
रनाविद्धं रत्नं मधु नवमनास्वादितरसम् ।
अखण्डं पुण्यानां फलमिव च तद्रूपमनघं,
न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः ॥ शकु० ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिणी—नसमरसला गः षड्वेदर्हयैर्हरिणी मता। (6, 4, 7).
Sho : न स म र स ल ग ॥ ⌣ ⌣ ⌣ । ⌣ ⌣ —, । — — —।
—, ⌣ — । ⌣ ⌣ — ।⌣ — ॥

Ex. अभिजनवतो भर्तुः श्लाघ्ये स्थिता गृहिणीपदे
विभवगुरुभिः कृत्यैस्तस्य प्रतिक्षणमाकुला।
तनयमचिरात्प्राचीवार्कं प्रसूय च पावनं
मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि ॥ शकु० ॥

अतिधृतिः or metres with 19 syl. to a pada.

शार्दूलविक्रीडित—सूर्याश्वैर्यदि मः सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम्।
Sch : म स ज स त त ग ॥ — — — । ⌣ ⌣ — । ⌣ — ⌣ ।
⌣ ⌣ —, । — — ⌣ । — — ⌣ । ⏓ ॥ (12,7)

Ex. स्निग्धं वीक्षितमन्यतोऽपि नयने यत्प्रेरयन्त्या तया
यातं यच्च नितम्बयोर्गुरुतया मन्दं विलासादिव।
मा गा इत्युपरुद्धया यदपि सा सासूयमुक्ता सखी
सर्वं तत्किल मत्परायणमहो कामी स्वतां पश्यति ॥ शकु० ॥

प्रकृतिः or metres with 21 syl. to a pada.

स्रग्धरा—म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम्।
Sch : म र भ न य य य ॥ — — — । — ⌣ — । —, ⌣ ⌣ ।
⌣ ⌣ ⌣ । ⌣ —, — । ⌣ — — । ⌣ — — ॥ (7,7,7)

Ex. या सृष्टिः स्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री
ये द्वे कालं विधत्तः श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम्।
यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः
प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः ॥ शकु० ॥

२. अर्धसमवृत्तानि।

पुष्पिताग्रा (or औपच्छन्दसिक)—

अयुजि नयुगरेफतो यकारो युजि च नजौ जरगाश्च पुष्पिताग्रा ॥
odd quarter: न न र य ॥ ⌣ ⌣ ⌣ । ⌣ ⌣ ⌣ ।
— ⌣ — । ⌣ — — ॥
Even quarter न ज ज र ग ॥ ⌣ ⌣ ⌣ । ⌣ — ⌣ ।
⌣ — ⌣ । — ⌣ — । — ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Ex. अथ मदनवधूरुपप्लवान्तं, व्यसनकृशा परिपालयांबभूव ।
शशिन इव दिवातनस्य लेखा, किरणपरिक्षयधूसरा प्रदोषम् ॥कु०॥

त्रियोगिनी (or वैतालीय or सुन्दरी)—

विषमे ससजा गुरुः समे सभरा लोऽथ गुरुर्वियोगिनी ॥

Odd quarter: स स ज ग ॥ ⏑ ⏑ — । ⏑ ⏑ — ।
⏑ — ⏑ । — ॥

Even quarter: स भ र ल ग ⏑ ⏑ — । — ⏑ ⏑ ।
— ⏑ — । ⏑ — ॥

Ex. अयि संप्रति देहि दर्शनं, स्मर ! पर्युत्सुक एष माधवः ।
दयितास्वनवस्थितं नृणां, न खलु प्रेम चलं सुहृज्जने ॥कुमार०॥
also Kumara. Canto IV, Raghu. VIII, Kirata. II

जाति: or Metres Measured By Morae.

आर्या—यस्याः पादे प्रथमे द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि ।
अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पंचदश सार्या ॥

'जिसके पहले पाद में १२ मात्रा, दूसरे में १८, तीसरे में १२ और चौथे पाद में १५ मात्रा हों उसे आर्या कहते हैं ।'

Ex. शान्तमिदमाश्रमपदं स्फुरति च बाहुः कुतः फलमिहास्य ।
अथवा भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र ॥शाकु०॥

वैतालीयम्—षड्विषमेऽष्टौ समे कलास्ताश्च समे स्युर्निरन्तराः ।
न समात्र पराश्रिता कला वैतालयेऽन्ते रलौ गुरुः ॥

इस में मात्राओं की संख्या नियत है । श्लोकार्ध में ३० मात्राएँ होती हैं, १४ पहले पाद में और १६ दूसरे में । दूसरे श्लोकार्ध में भी ऐसे हीं । अन्त की ८ मात्राओं में एक रगण और एक ल और ग (— ⏑ — ⏑ —) होते हैं । सम पादों में सभी मात्राएँ लघु या गुरु नहीं होनी चाहिएँ ।

Ex. क वयं क परोक्षमन्मथो मृगशावैः सममेधितो जनः ।
परिहासविजल्पितं सखे परमार्थेन न गृह्यतां वचः ॥शाकु०॥

———

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिशिष्ट २.

धातु-कोष ।

The order of the forms of the verb, when all are given, is : Present (*pr.*) Imperfect (*imp.*). Imperative (*ipv.*), Optative or Potential (*op.*), Perfect (*pf.*), Aorist (*ao.*) Future (*ft.*), Passive (*ps.*), Present, aorist, participle (*pp.*), Conditional (*con.*), Benedictive (*ben.*), Gerund (*gd.*), Infinitive (*inf.*), Causative (*cs.*), Aorist, Desiderative (*ds.*), Intensive (*int.*).

The Roman numerals signify the conjugational class of the verb. P. indicates the Parasmaipada, A. the Atmanepada and U. Ubhayapada.

अञ्ज् 'anoint, go'. VII, P. अनक्ति । *imp* आनक्-ग । *ipv.* अनक्तु । *op.* अञ्ज्यात् । *pf.* आनञ्ज । *ft.* अञ्जिष्यति । *con.* आञ्जिष्यत्-आङ्क्ष्यत् । *ao.* आञ्जीत् । *ben.* अज्यात् । *ds.* अञ्जिजिषति । Pass. *pr.* अज्यते । *ao.* आञ्जि । *cs.* अञ्जयति-ते । *inf.* अञ्जितुम्-अङ्क्तुम् ।

अद् 'eat,' II, P. अद्मि, अत्सि; अदन्ति । *imp.* आदम्, आदः, आदत्, आदन् । *ipv.* अदानि, अद्धि, अत्तु, अदन्तु । *op.* अद्यात् । *pf.* जघास । *ao.* अघसत् । *ft.* अत्स्यति । *ps.* अद्यते । *pp.* जग्ध (अन्न n. 'food') *con.* आत्स्यत् । *gd.* जग्ध्वा । *inf.* अत्तुम् । *cs.* आदयति । *ds.* जिघत्सति ॥

अन् 'breathe', II, P. अनिति । *imp.* आनम्, आनीः or आनः, आनीत् or आनत् । *ipv.* अनानि, अनिहि । *op.* अन्यात् । *pf.* आन । *ao.* आनीत् । *gd.* अनित्वा । *cs.* आनयति । *ds.* अनिनिषति ॥

अर्च् 'worship', 1, P. अर्चति । *pf.* आनर्च । अर्च् 'worship', X, U. अर्चयति-ते । *pf.* अर्चयाम्बभूव । *ft.* अर्चयिष्यति-ते । *ben.* अर्च्यात् अर्चयिषीष्ट । *con.* आर्चयिष्यत् । *ao.* आर्चिचत् । *ds.* अर्चिचयिषति-ते । Pass. अर्च्यते ।

अर्थ् 'request, sue', X, A. अर्थयते । *pf.* अर्थयामास । *ao.*

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्तथत। *ben.* अर्थयिषीष्ट। *ds.* अर्तिथयिषते। Pass. अर्थ्यते।

अर्ह् 'worship, deserve' 1, P. अर्हति। *pf.* आनर्ह। *con.* आर्हिष्यत। *ao.* आर्हीत्। *ben.* अर्ह्यात्। *ds.* अर्जिहिषति। Pass. अर्ह्यते। *ao.* आर्हि।

अश् 'eat', IX, P अश्नाति। *imv.* अश्नानि, अशान, अश्नातु। *op.* अश्नीयात्। *pf.* आश। *ao.* आशीत्। *ft.* अशिष्यति। *ps.* अश्यते। *pp.* अशित। *gd.* अशित्वा। *inf.* अशितुम्। *cs.* आशयति। *ds.* अशिशिषति॥

अस् 'be', II, P. अस्मि, असि, अस्ति; स्वः, स्थः, स्तः; स्मः, स्थ, सन्ति। *imp.* आसम्, आसीः, आसीत्; आस्व, आस्तम्, आस्ताम्; आस्म, आस्त, आसन्। *ipv.* असानि, एधि, अस्तु; असाव, स्तम्, स्ताम्; असाम, स्त, सन्तु। *op.* स्याम्, स्याः, स्यात; स्याव, स्यातम्, स्याताम्; स्याम, स्यात, स्युः। *pf.* आस, आसिथ, आस; आसिव, आसथुः, आसतुः; आसिम, आस, आसुः। *Ft.* भविष्यति॥

अस् 'throw', IV, P. अस्यति। *pf.* आस, आसिथ, etc. like अस् 'be'। *ao.* आस्थत्। *ft.* असिष्यति। *ps.* अस्यते। *ao.* आसि। *pp.* अस्त। *ds.* असिसिषति। *cs.* आसयति-ते। *gd.* असित्वा, अस्त्वा। *inf.* असितुम्॥

आप् 'obtain,' V, P. आप्नोति। *imp.* आप्नोत्। *ipv.* आप्नवानि, आप्नुहि, आप्नोतु। *op.* आप्नुयात्। *pf.* आप। *ao.* आपत्। *ft,* आप्स्यति। *ps.* आप्यते। *pp.* आप्त। *gd.* आप्त्वा, आप्य। *inf.* आप्तुम्। *cs.* आपयति। *ds.* ईप्सति।

आस् 'sit', II, A. आस्ते। *imp.* आस्त। *ipv.* आस्ताम्। *op.* आसीत। *pf.* आसांचक्रे। *ao.* आसिष्ट। *ft.* आसिष्यते। *ps.* आस्यते। *pp.* आसित, आसीन। *inf.* आसितुम्। *cs.* आसयति।

इ 'go' II, P. एमि, एषि, एति, इवः यन्ति। *imp.* आयम्,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Fouhdation Chennai and eGangotri

ऐः, ऐत्; ऐव; आयन्। *ipv.* अयानि, इहि, एत; अयाव; यन्तु। *op.* इयात्। *pf.* इयाय, इयेथ, इयाय; ईयिव, ईयुः। *ao.* अगात्। *ft.* एष्यात। *ps.* ईयते। *pp.* इत। *gd.* इत्वा, ० इत्य। *inf.* एतुम्। *cs.* आययति। *ao.* अगायि। *ds.* जिगमिषति।

इ with अधि 'study', II, A. अधीते। *imp.* अध्यैत; 3.*du.* अध्यैयाताम्; 3. *pl.* अध्यैयत। *ipv.* अध्ययै; अधीष्व, अधीताम्; अध्ययावहै, अधीयाथाम्; अधीध्वम्। *op.* अधीयीत। *ao.* अध्यैष्ट; 3. *du.* अध्यैषाताम्, 3. *pl.* अध्यैषत। *ft.* अध्येष्यते। *ps* अधीयते। *pp.* अधीत। *cs.* अध्यापयति।

इध् or इन्ध 'shine, kindle', :VII. A. इन्द्धे; इन्धते। *imp.* ऐन्द्ध। *ipv.* इनधै, इन्त्स्व, इन्द्धाम्। *op.* इन्धीत। *ao.* ऐन्धिष्ट। *ft.* इन्धिष्यते। *ps.* इध्यते। *pp.* इद्ध। *ds.* इन्दिधिषते। *cs.* इन्धयति-ते।

इष् 'wish', VI, P. इच्छति। *imp.* ऐच्छत्। *pf.* इयेष, इयेषिथ, इयेष; ईषिव; ईषुः। *ao.* ऐषीत्। *ft.* एषिष्यति। *ps.* इष्यते। *pp.* इष्ट। *inf,* एष्टुम्। *cs.* एषयति। *ds.* एषिषिषति। *gd.* इष्ट्वा, एषित्वा।

ईक्ष् 'see', I, A. ईक्षते। *imp.* ऐक्षत। *pf.* ईक्षांचक्रे। *ao.* ऐक्षिष्ट। *ft.* ईक्षिष्यते। *ps.* ईक्ष्यते। *ao.* ऐक्षि। *pp.* ईक्षित। *inf* ईक्षितुम्। *cs.* ईक्षयति। *gd.* ईक्षित्वा, प्रेक्ष्य। *ds.* ईचिक्षिषते।

ईड् 'praise', II, A. ईट्टे। *pf.* ईडांचक्रे। *ft.* ईडिष्यते। *con.* ऐडिष्यत। *ao.* ऐडिष्ट। *ben.* ईडिषीष्ट। *ps.* ईड्यते। *pp.* ईडित। *ine.* ईडितुम्। *cs.* ईडयति-ते।

ईश् 'rule, possess', II, A. ईष्टे। *pf.* ईशांचक्रे। *ft.* ईशिष्यते। *con.* ऐशिष्यत्। *ben.* ईशिषीष्ट। *ao.* ऐशिष्ट। *ps.* ईश्यते। *ao.* ऐशि। *pp.* ईशित। *cs.* ईशयति-ते।

एध् 'grow, prosper', I, A. एधते। *pf.* एधांचक्रे। *ft.* एधिष्यते। *con.* एधिष्यत। *ao.* ऐधिष्ट। *ben.* एधिषीष्ट। *ps.* एध्यते। *cs.* एधयति-ते। *ds.* एदिधिषते।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋ 'go', I, P. ऋच्छति। *imp.* आर्छत्। *pf.* आर, आरिथ, आर; आरिव, etc.। *ao.* आरत् (with सम्, समारत्)। *ft.* अरिष्यति। *cs.* अर्पयति। *ds.* अरिरिषति। *pp.* ऋत। (also ऋण debt)। *gd.* ऋत्वा॥

कथ् 'tell', X, U. कथयति ते। *pf.* कथयांचकार। *ft.* कथयिष्यति। *con.* अकथयिष्यत्-त। *ao* अचकथत्-त। *ds* चिकथयिषति-ते। *ben,* कथ्यात्। कथ्यते॥

कम् 'love I, A. कामयते। *pf.* चकमे or कामयांचके। *ao,* अचीकमत or अचकमत। *ft.* कामयिष्यते। *pp.* कान्त। *cs.* कामयते-ति॥

कम्प् 'shake, tremble', I, A. कम्पते। *pf.* चकम्पे। *ft.* कंपिष्यते। *con.* अकंपिष्यत। *ben.* कंपिषीष्ट। *ao.* अकंपिष्ट। *cs.* कपयति-ते। *ps.* कंप्यते॥ चिकम्पिषते *ds.*॥

कांक्ष् 'wish', I, P. कांक्षति। *pf.* चकांक्ष। *ft.* कांक्षिष्यति। *con.* अकांक्षिष्यत्। *ao.* अकांक्षीत्। *ben.* कांक्ष्यात्। *ds.* जिकांक्षिषति। *pp.* कांक्षित॥

काश् 'shine' I, IV, A. काशते। or काश्यते। *pf.* चकाशे। *ft.* काशिष्यते। *con.* अकाशिष्यत्। *ben.* काशिषीष्ट। *ao.* अकाशिष्ट। *ds* चिकाशिषते। *cs.* काशयति-ते। *ps.* काश्यते। *pp.* काशित। *gd.* काशित्वा, प्रकाश्य॥

कुप् 'be angry', IV, P. कुप्यति। *pf.* चुकोप। *ft.* कोपिष्यति। *con.* अकोपिष्यत्। *ao.* अकुपत्। *ds.* चुकुपिषति चुकोपिषति। *ben.* कुप्यात्। *pp.* कुपित। *inf* कोपितुम्॥

कृ 'do', VIII, U. करोमि, करोषि, करोति; कुर्वः, कुरुथः, कुरुतः; कुर्वन्ति। *imp.* अकरवम्, अकरोः, अकरोत्; अकुर्व; अकुर्वत्। *ipv.* करवाणि, कुरु, करोतु; करवाव कुर्वन्तु। *op.* कुर्यात्। *pf.* चकार। *ao.* अकार्षम्, अकार्षीः, अकार्षीत्; अकार्ष्व, अकार्ष्टम्, अकार्ष्टाम्; अकार्ष्म, अकार्ष्ट, अकार्षुः। *ft.* करिष्यति। कुर्वे, कुरुषे, कुरुते; कुर्वहे; कुर्वते। अकुर्वि, अकुरुथाः, अकुरुत; अकुर्वहि; अकुर्वत। करवै, कुरुष्व, कुरु-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताम्; करवामहै, कुर्वताम्। *op.* कुर्वीत। *pf.* चक्रे। *ao.* अकृषि, अकृथाः, अकृत; अकृष्वहि; अकृषत। *ben.* कारिषिष्ट, कृषीष्ट। *ft* करिष्यते। क्रियते। *ao.* अकारि। *pp.* कृत। *gd.* कृत्वा, ०कृत्य। *ine* कर्तुम्। *cs.* कारयति-ते। *ao.* अचीकरत्। *ds.* चिकीर्षति॥

कृत् 'cut', VI, P. कृन्तति। *pf.* चकर्त। *ft.* कर्तिष्यति। *ps.* कृत्यते। *pp.* कृत्त। *cs.* कर्तयति। *ds.* चिकर्तिषति। *inf.* कर्तितुम्॥

कृष् 'draw', I, P. कर्षति; 'plough', VI, P. कृषति॥ *pf.* चकर्ष चकर्षिथ, चकर्ष; चकृषिव। *ft.* क्रक्ष्यति। *ps.* कृष्यते। *ao.* अकर्षि। *pp.* कृष्ट। *gd.* कृष्ट्वा, ०कृष्य। *inf* क्रष्टुम्। *cs.* कर्षयति। *ds.* चिकृक्षति॥

कॄ 'scatter', VI, P. किरति। *pf.* चकार। *ao.* अकारीत्। *ft.* करिष्यति। *ps.* कीर्यते। *pp.* कीर्ण। *gd.* ०कीर्य। *cs.* कारयति-ते। *ds.* चिकरिषति॥

क्लृप् 'be able', I, A. कल्पते। *pf* चक्लृपे। *ao.* अचीक्लृपत्। *ft.* कल्पिष्यते। *pp.* क्लृप्त। *cs.* कल्पयति। *ds.* चिकल्पिषते, चिक्लृप्सते-ति। *gd.* कल्पित्वा, क्लृप्त्वा। *inf.* कल्पितुम्, कल्प्तुम्॥

क्रन्द् 'cry, call'; क्रन्दति। *pf.* चक्रन्द। *ft.* क्रन्दिष्यति। *con.* अक्रंदिष्यत्। *ben.* क्रन्द्यात। *ao.* अक्रन्दीत्। *ds.* चिक्रन्दिषति। *cs* क्रन्दयति-ते॥

क्रम् 'stride', I, U. क्रामति, क्रमते। *pf.* चक्राम, चक्रमे। *ao.* अक्रमीत्। *ft.* क्रमिष्यते ०ते। *ps.* क्रम्यते। *pp.* क्रान्त। *gd.* क्रान्त्वा, ०क्रम्य। *cs.* क्रमयति or क्रामयति। *ds.* चिक्रमिषति चिक्रंसते। *int.* चङ्क्रमीति, चङ्क्रम्यते॥

क्री 'buy', IX, U. क्रीणाति. क्रीणीते। *pf.* चिक्राय। *ao* अक्रैषीत्, अक्रेष्ट। *ft.* क्रेष्यति-ते। *ps.* क्रीयते *pp.* क्रीत। *gd.* क्रीत्वा, ०क्रीय। *inf* क्रेतुम्। *ds.* चिक्रीषते। *cs.* क्रापयति-ते॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रीड् 'play' amuse oneself', I, P. क्रीडति । *pf*, चिक्रीड । *ft*. क्रीडिष्यति । *con*. अक्रीडिष्यत् । *ben*. क्रीड्यात् । *ao*. अक्रीडीत् । *ds*. चिक्रीडिषति । *ps*. क्रीड्यते ॥

क्रुध् 'be angry' IV, P. क्रुध्यति । *pf*. चुक्रोध । *ft*. क्रोत्स्यति । *con*. अक्रोत्स्यत् । *ben*. क्रुध्यात् । *ao*. अक्रुधत् । *pp*. क्रुद्ध । *ps*. क्रुध्यते । *ds*.चुक्रुत्सति ॥

क्लिश् 'torment, bistress', IX, P. क्लिश्नाति । *pf*. चिक्लेश । *ft*. क्लेशिष्यति क्लेक्ष्यति । *con*. अक्लेशिष्यत् । *ben*. क्लिश्यात् । *ao*. अक्लिक्षत् । *ds* चिक्लिक्षति । *pp*. क्लिष्ट । *gd*. क्लिष्ट्वा ॥

क्षम् 'endure' IV, P, क्षाम्यति । *pf*. चक्षाम । *ft*. क्षमिष्यति । *con*. अक्षमिष्यत् । *ben*. क्षम्यात् । *ao*. अक्षमत् । *ds*. चिक्षमिषति, चिक्षंसति ॥

क्षल 'wash' X, U. क्षालयति-ते । *pf*. क्षालयाञ्चकार-चक्रे । *ft*. क्षालयिष्यति-ते । *con*. अक्षालयिष्यत् त '। *ben*. क्षाल्यात्-क्षालयिषीष्ट । *ao*. अचिक्षलत् त । *ds*. चिक्षालयिषति-ते । *pp*. क्षालित ।

क्षिण् 'kill' VIII, U. क्षिणोति or क्षेणोति; क्षिणुते or क्षेणोते । *pf*. चिक्षिणे । *ft*. क्षेणिष्यति । *con*. अक्षेणिष्यत् । *ao*. अक्षेणीत् । *ds*. चिक्षिणिषति । *gd*. क्षित्वा, क्षिणित्वा ॥

क्षि 'throw', VI, U. क्षिपति, ते । *ipv*. क्षिपाणि, क्षिपै । *pf*. चिक्षेप, चिक्षिपे । *ao*. अक्षैप्सीत् । *ft*. क्षेप्स्यति-ते । *ps*. क्षिप्यते । *pp*. क्षिप्त । *gd*. क्षिप्त्वा, ०क्षिप्य । *inf*. क्षेप्तुम् । *cs*. क्षेपयति । *ds*. चिक्षिप्सति ॥

क्षी 'kill', IV, A. क्षीयते । *pf*. चिक्षिपे । *ao*. अक्षेष्ठ । *cs*. क्षाययति-ते ॥

क्षुद् 'pouud', VII. U. क्षुणत्ति, क्षुंते । *pf*. चुक्षोद, चुक्षुदे । *ft*. क्षोत्स्यति-ते । *ben*. क्षुद्यात् , क्षुत्सीष्ट । *ao*. अक्षुदत् , अक्षौत्सीत् , अक्षुत्त । *ds*. चुक्षुत्सति-ते । *pp*. क्षुण्ण ॥

क्षुभ 'quake', IV, U. क्षुभ्यति-ते । *pf*. चुक्षोभ, चुक्षुभे । *ft*. क्षोभिष्यति । *ao*. अक्षुभत्, अक्षोभीत् । *pp*. क्षुब्ध ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

or क्षुभित । *cs.* क्षोभयति-ते । *ds.* चुक्षुभिषते, चुक्षोभिषते ।

खन् 'dig', I, U. खनति-ते । *pf.* चखान, चख्नुः । *ft* खनिष्यति-ते । *ao.* अखानीत् अखनीत्, अखनिष्ट । *ps.* खन्यते or खायते । *pp.* खात । *gd.* खात्वा or खनित्वा, ० खाय । *inf.* खनितुम् । *cs.* खानयति ।

खाद् 'eat', I, P. खादति । *pf.* चखाद । *ao.* अखादीत् । *ben.* खाद्यात् । *ft* खादिष्यति । *ps.* खाद्यते । *pp.* खादित । *cs.* खादयति । *ds.* चिखादिषति ॥

ख्या 'tell', II, P. ख्याति । *ipv. sg.* 2. ख्याहि, ख्यातु । *pf.* चख्यौ, चख्युः । *ao.* अख्यत् । *ft.* ख्यास्यति । *ps.* ख्यायते । *pp.* ख्यात । *gd.* ख्याय । *inf.* ख्यातुम् । *cs.* ख्यापयति ते । *ds.* चिख्यासति ॥

गण् 'count', X U. गणयति-ते । *pf.* गणयाञ्चकार-चक्रे । *ft.* गणयिष्यति-ते । *con.* अगणयिष्यत्-त । *ao.* अजीगणत्-त, अजगणत्-त । *ben.* गण्यात्, गणयिषीष्ट । *ds.* जिगणयिषति-ते *pp.* गणित । *gd.* विगणय्य, गणयित्वा ॥

गम् 'go', I,P. गच्छति । *pf.* जगाम । *ao.* अगमत् । *ft.* गमिष्यति । *ben.* गम्यात् । *ps.* गम्यते । *pp.* गत । *gd.* गत्वा, गम्य or ० गत्य । *inf.* गन्तुम् । *cs.* गमयति । *ds.* जिगमिषति । *int.* जङ्गन्ति । जङ्गम्यते ॥

गाह् 'plunge', I, A. गाहते । *pf.* जगाहे । *ao.* अगाहिष्ट, अगाढ । *ft.* गाहिष्यते घाक्ष्यते । *ben* गाहिषीष्ट, घाक्षीष्ट । *ps.* गाह्यते । *pp.* गाढ or गाहित । *gd.* ० गाह्य । *cs.* गाहयति । *inf.* गाहितुम्, गाढुम गाहित्वा, गाढ्वा ॥

गुप् 'protect, conceal'; I, P. गोपायति । *pf.* जुगोप । *ft.* गोपिष्यति-गोप्स्यति । *ao.* अगोपायीत्, अगौप्सीत् । *ds.* जुगुप्सति । *cs.* गोपाययति-ते, गोपयति ते ॥

गुह् 'hide', I, U. गूहति-ते । *pf.* जुगूह । *ao.* अघुक्षत् । *ft.* गूहिष्यति-ते, घोक्ष्यति-ते । *ps.* गुह्यते । *pp.* गूढ । *gd.* ०गुह्य । *inf.* गूहितुम् । *cs.* गूहयति-ते ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गॄ 'swallow, omit', VI, P. गिरति *or* गिलति। *pf.* जगार, जगाल। *ft.* गरिष्यति गलिष्यति। *ao.* अगारीत्-लीत्। *ben.* गीर्यात्। *ds.* जिगरिषति। *cs.* गारयति-गालयति। *ps.* गीर्यते। *pp.* गीर्ण॥

गै 'sing', I, U. गायति-ते। *pf.* जगौ, जगे। *ao.* अगासीत्। *ft.* गास्यति। *ps.* गीयते। *pp.* गीत। *gd.* गीत्वा, ०गीय। *inf.* गातुम्। *cs.* गापयति। *ds.* जिगासति॥

ग्रथ् or ग्रन्थ् 'tie', IX, P. ग्रथ्नाति। *ps.* ग्रथ्यते। *pp.* ग्रथित। *gd.* ०ग्रथ्य। *cs.* ग्रथयति or ग्रन्थयति॥

ग्रस् 'swallow', I, A. ग्रसते। *pf.* जग्रसे। *ft.* ग्रसिष्यते। *ao.* अग्रसिष्ट। *ben.* ग्रसिषीष्ट। *cs.* ग्रासयति। *ds.* जिग्रसिषते। *pp.* ग्रस्त। *gd.* ग्रस्त्वा॥

ग्रह् 'take', IX, U. गृह्णाति। गृह्णीते। *ipv.* गृहाण, गृह्णातु। *pf.* जग्राह, जगृहे। *ao.* अग्रहीत्, अग्रहीष्ट। *ft.* ग्रहीष्यति-ते। *ben.* गृह्यात्, ग्रहीषीष्ट। *ps.* गृह्यते। *pp.* गृहीत। *gd.* गृहीत्वा, ०गृह्य। *inf.* ग्रहीतुम्। *cs.* ग्राहयति-ते। *ao.* अजिग्रहत्। *ds.* जिघृक्षति-ते॥

घ्रा 'smell', I, P. जिघ्रति। *pf.* जघ्रौ। *ft.* घ्रास्यति। *ps.* घ्रायते *pp.* घ्रात। *cs.* घ्रापयति। *ds.* जिघ्रासति॥

चक्ष् 'speak', II, A. चष्टे, चक्षे, चष्टे; *pl.* चक्ष्महे, चड्ढ्वे, चक्षते *pf.* चचक्षे। *ft.* चक्ष्यते। *gd.* ०चक्ष्य। *inf.* चष्टुम्। *cs.* चक्षयति॥

चर् 'move', I, P. चरति *pf.* चचार, चचर्थ; 3. *pl.* चेरुः। *ao.* अचीचरत। *ft.* चरिष्यति। *ps.* चर्यते। *pp.* चरित। *gd.* चरित्वा, ०चर्य। *inf.* चरितुम्। *cs.* चारयति। *ds.* चिचरिषति॥

चल् 'move', I, P. चलति। *pf.* चचाल; 3. *pl.* चेलुः। *ao.* अचालीत्। *ft.* चलिष्यति। *pp.* चलित। *inf.* चलितुम्। *cs.* चलयति or चालयति। *ds.* चिचलिषति॥

चि 'collect', V, U. चिनोति, चिनुते। *pf.* चिकाय, चिक्ये। *ac.* अचैषीत्, अचैष्ट। *ft.* चेष्यति-ते। *ps.* चीयते। *pp.*

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस् 'dwell', I, P. वसति । *pf.* उवास; ऊषुः । *ao.* अवात्सीत् । *ft.* वत्स्यति । *ps.* उष्यते । *pp.* उषित । *gd.* उषित्वा, ०उष्य । *inf.* वस्तुम् । *cs.* वासयति । *ds.* विवत्सति ॥

वस् 'wear', II, A. वस्ते । *pf.* ववसे । *ao.* अवसिष्ट । *pp.* वसित । *gd.* वसित्वा, ०वस्य । *inf.* वसितुम् । *cs.* वासयति ॥

वह् 'carry', 1, U. वहति-ते । *pf.* उवाह; ऊहुः । *ao.* अवाक्षीत् । *ft.* वक्ष्यति । *ps.* उह्यते । *ao.* अवाहि । *pp.* ऊढ । *gd.* ०ऊह्य । *inf.* वोढुम् । *cs.* वाहयति । *int.* वावहीति । *ds.* विवक्षति-ते ॥

वा 'blow, go. kill', 11 P. वाति । *pf.* ववौ । *ao.* अवासीत् । *ben.* वायात् । *cs.* वाययति-ते, वाजयति-ते । *ds.* विवासति । *pp.* वात ॥

विद् 'kuow', II, P. वेद्मि, वेत्ति; विद्वः, वित्थः; विदन्ति । *imp.* अवेदम्, अवेः or अवेत्; अविद्व, अवित्तम; अविदन् or अविदुः । *ipv.* वेदानि, विद्धि, वेत्तु; वित्तम्;विदन्तु । *op.* विद्यात् । *pf* विवेद or. विदांचकार । *ao.* अवेदीत् । *ft.* वेदिष्यति । *ps.* विद्यते । *pp.* विदित । *gd.* विदित्वा । *inf.* वेदितुम् । *cs.* वेदयति । *ds.* विविदिषति । *pr. pf.* वेद, वेत्थ, वेद; विद्व, विदथुः, विदतु; विद्म, विद, विदुः ॥

विद् 'find', VI, U. विदन्ति-ते । *pf.* विवेद, विविदे, । *ao.* अविदत्-त । *ft.* वेत्स्यति-ते । *ps.* विद्यते । (there exists) *pp.* वित्त or. विन्न । *gd.* वित्त्वा, ०विद्य । *inf.* वेत्तुम् । *cs.* वेदयति । *ds.* विवित्सति-ते ॥

विश् 'enter', VI, P. विशति । *pf.* विवेश । *ao.* अविक्षत् । *ft.* वेक्ष्यति । *ps.* विश्यते । *ao.* अवेशि । *pp.* विष्ट । *gd.* ०विश्य । *inf.* वेष्टुम् । *cs.* वेशयति । *ao.*अवीविशत् । *ds.* विविक्षति ॥

वृ 'cover', V, U. वृणोति, वृणुते । *pf.* ववार, ववर्थ; वव्रिव:, वव्रुः; वव्रे । *ps.* व्रियते । *pp.* वृत । *gd.* ०वृत्य । *inf.* वरितुम् or. वरीतुम् । *cs.* वारयति ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृ 'choose', IX, A. वृणीते । *pf.* वव्रे । *ao.* अवृत । *pf.* व्रियते । *pp.* वृत । *inf.* वरीतुम् । *cs.* वरयति ॥

वृत् 'exist', I, A. (P. also in *ao. ft.*) वर्तते । *pf.* ववृते । *ao.* अवृतत्, अवर्तिष्ट । *ft.* वर्तिष्यते *or* वर्त्स्यते । *pp.* वृत्त । *gd.* ०वृत्य । *inf.* वर्तितुम् । *cs.* वर्तयति । *ds.* विवर्तिषते, विवृत्सति ॥

वृध् 'increase', I, A, (P. also in. *ao. ft.*) वर्धते । *pf.* ववृधे । *ao.* अवृधत्, अवर्धिष्ट । *ft.* वर्त्स्यति । *pp.* वृद्ध । *inf.* वर्धितुम् । *cs.* वर्धयति–ते । *ao.* अवीवृधत् ॥

व्यध् 'pierce', IV. P. विध्यति । *pf.* विव्याध; विविधुः । *ao.* अव्यात्सीत् । *ben.* विध्यात् । *ps.* विध्यते । *pp.* विद्ध । *gd.* विद्ध्वा, ०विध्य । *cs.* व्यधयति । *ds.* विव्यत्सति ।

शंस् 'praise', I, P. शंसति । *pf.* शशंस । *ao.* अशंसीत् । *ben.* शस्यात् । *ft.* शंसिष्यति । *ps* शस्यते । *pp.* शस्त । *gd.* शस्त्वा, ०शस्य । *inf.* शंसितुम् । *cs.* शंसयति । *ds.* शिशंसिषति ॥

शक् 'be able', V, P. शक्नोति । *pf.* शशाक; शेकुः । *ao.* अशकत् । *ft.* शक्ष्यति । *ps.* शक्यते । *pp.* शक्त *and.* शकित । *ds.* शिक्षति । *cs.* शाकयति ॥

शप् 'curse', I, U. शपति–ते । *pf.* शशाप, शेपे । *ao.* अशाप्सीत् । *ft.* शपिष्यते । *ps.* शप्यते । *pp.* शप्त । *cs.* शापयति ॥

शम् 'cease', IV, P. शाम्यति । *pf.* शशाम; शेमु; । *pp.* शान्त । *cs.* शमयति *or.* शामयति । *ao.* अशीशमत् ॥

शास् 'order', II. P. शास्ति; *i, du* शिष्वः; 3, *pl.* शासति । *imp.* अशासम्, अशाः *or.* अशात्; अशिष्व; अशासुः । *ipv.* शासानि, शाधि, शास्तु; शिष्टम्; शासतु । *op.* शिष्यात् । *pf.* शशास । *ao.* अशिषत् *ft.* शासिष्यति । *ben.* शिष्यात् । *ps.* शास्यते *or.* शिष्यते । *pp.* शिष्ट *or.* शासित । *gd.* शासित्वा । *inf.* शासितुम् । *ds.* शिशासिषति ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिष् 'leave', VII, P. शिनष्टि; शिंष्वः; शिंषन्ति। *ipv.* शिनषाणि, शिड्ढि,शिनष्टु। *ao.* अशिषत्। *ps.* शिष्यते। *pp.* शिष्ट। *gd.* शिष्ट्वा, ०शिष्य। *cs.* शेषयति। *ds.* शिशिक्षति॥

शी 'lie' II, A- शये, शेषे, शेते; शेवहे, शयाते; शेरते। *imp.* अशयि, अशेथाः; अशेत; अशयाथाम् अशेरत;', । *ipv.* शयै, शेष्व, शेताम् ; *3. pl.* शेरताम्। *op.* शयीत। *pf.* शिश्ये। *ben.* शयिषीष्ट। *ao.* अशयिष्ट। *ft.* शयिष्यते। *pp.* शयित। *cs.* शाययति। *ds.* शिशयिषते॥

शॄ 'tear to pieces, hurt, kill', IX, P. शृणाति। *pf.* शशार। *ao.* अशारीत्। *ds.* शिशरिषति, शिशरीषति, शिशीर्षति। *ps.* शीर्यते। *pp.* शीर्ण॥

श्रम् 'be fatigued' mortify'; IV, P. श्राम्यति। *pf.* शश्राम। *ft.* श्रमिष्यति। *ao.* अश्रमत्। *pp.* श्रान्त। *gd.* श्रमित्वा, श्रान्त्वा॥

श्रि 'go' I, U. श्रयति–ते। *pf,* शिश्राय, शिश्रिये। *ao.* अशिश्रियत्। *ft,* श्रयिष्यति-ते। *ps.* श्रीयते। *pp.* श्रित। *gd.* श्रयित्वा, ०श्रित्य। *inf.* श्रयितुम्। *ds.* शिश्रयिषति-ते। *cs.* श्राययति-ते॥

श्रु 'hear', V, P. शृणोति; शृणुतः; शृण्वन्ति। *pf.* शुश्राव, शुश्रोथ, *I. du; 2. pl.* शुश्रुव; शुश्रुवुः। *ao.* अश्रौषीत्। *ft.* श्रोष्यति। *ps.* श्रूयते। *ao.* अश्रावि। *pp.* श्रुत। *gd.* श्रुत्वा, ०श्रुत्य। *inf.* श्रोतुम्। *cs.* श्रावयति। *ds.* शुश्रूषते॥

श्लाघ् praise, boast of', 1, A. श्लाघते। *pp.* शश्लाघे। *ao.* अश्लाघिष्ट। *ds.* शिश्लाघिषते। *pp.* श्लाघित॥

श्लिष् 'embrace, join', IV, P. श्लिष्यति। *pf.* शिश्लेष। *ao.* अश्लिक्षत्, अश्लिषत्। *ds.* शिश्लिक्षति। *pp.* श्लिष्ट॥

श्वस् 'breathe', II, P. श्वसिति। *pf.* शश्वास। *ao.* अश्वसीत्। *ft.* श्वसिष्यति। *pp.* श्वस्त *or.* श्वसित। *gd.* ०श्वस्य। *inf.* श्वसितुम्। *cs.* श्वासयति। *ds.* शिश्वसिषति॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सञ्ज् 'adhere', I, P. सजति । *pf.* ससञ्ज । *ao.* असाङ्क्षीत् । *ps.* सज्यते । *pp.* सक्त । *gd.* ०सज्य । *inf.* सक्तुम् *cs.* सञ्जयति ॥

सद् 'sink', I, P. सीदति । *pf.* ससाद, सेदिथ *or.* ससत्थ; सेदुः । *ao.* असदत् । *ft.* सत्स्यति । *ps.* सद्यते । *pp.* सन्न । *gd.* ०सद्य । *inf.* सत्तुम् । *cs.* सादयति । *ds.* सिषत्सति ॥

सह् 'bear', I A. सहते । *pf.* सेहे । *ao.* असहिष्ट । *ben.* सहिषीष्ट । *ft.* सहिष्यते । *ps.* सह्यते । *pp.* सोढ । *gd.* ०सह्य । *inf.* सोढुम् । *cs.* साहयति । *ds.* सिसहिषते ॥

साध् 'finish accomplish', V, P. साध्नोति । *pf.* ससाध । *ft.* सात्स्यति । *ao.* असात्सीत् । *cs.* साधयति-ते । *ds.* सिषात्सते ॥

सिच् 'sprinkle', VI, U. सिञ्चति-ते । *pf.* सिषेच, सिषिचे । *ben.* सिच्यात्, सिक्षीष्ट । *ao.* असिचत्-त । *ft.* सेक्ष्यति-ते । *ps.* सिच्यते । *pp.* सिक्त । *gd.* सिक्त्वा, ०सिच्य । *cs.* सेचयति-ते । *os.* सिसिक्षति ॥

सिध् 'reach, succeed' accomplish', IV. P. सिध्यति । *pf,* सिषेध । *ao.* असिधत् । *ds.* सिषित्सति । *cs.* साधयति-ते ॥

सु 'press out'' V. U. सुनोति, सुनुते । *pf.* सुषाव, सुषुवे । *ao.* असावीत्, असोष्ट । *ben.* सूयात्, सोषीष्ट । *ft.* सोष्यति । *ps.* सूयते । *pp.* सुत । *gd.* ०सुत्य । *cs.* सावयति । *ds.* सुसूषति-ते ॥

सू 'bear' II, A. सूते । *imp.* असूत । *ipv.* सुवै, सूष्व, सूताम् । *op.* सुवीत । *pf.* सुषुवे । *ao.* असोष्ट, असविष्ट । *ft.* सविष्यते *or.* सोष्यते । *ps.* सूयते । *pp.* सूत । *ds.* सुसूषते ॥

सृ 'go', I, P. सरति । *pf.* ससार, ससर्थ; सस्रिव, सस्रुः । *ft.* सरिष्यति । *pp.* सृत । *gd.* ०सृत्य । *inf.* सर्तुम् । *cs.* सारयति । *ds.* सिसीर्षति ॥

सृज् create, emit', VI, P. सृजति । *pf.* ससर्ज । *ao.* अस्राक्षीत् । *ben.* सृज्यात् । *ft.* स्रक्ष्यति । *ps.* सृज्यते । *gd.* सृष्ट्वा, ०सृज्य । *inf.* स्रष्टुम् । *cs.* सर्जयति । *ds* सिसृक्षति ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सृप् 'creep', I, P. सर्पति। *pf.* ससर्प; ससृपिव। *ft.* स्रप्स्यति। *ao.* असृपत्। *ps.* सृप्यते। *pp.* सृप्त। *cs.* सर्पयति। *ds.* सिसृप्सति॥

स्तम्भ् 'prop', IX, P. स्तभ्नाति। *ipv.* स्तभ्नानि, स्तभान, स्तभ्नातु। *pf.* तस्तम्भ। *ao.* अस्तम्भत्। अस्तम्भीत्। *ps.* स्तभ्यते। *ao.* अस्तम्भि। *pp.* स्तब्ध। *gd.* स्तब्ध्वा or ०स्तभ्य। *inf.* स्तब्धुम्। *cs.* स्तम्भयति। *ds.* तिस्तम्भिषति।

स्तु 'praise', II, U. स्तौति or स्तवीति। *imp.* अस्तौत् or अस्तवीत्। *ipv.* स्तौतु or स्तवीतु। *op.* स्तुयात्, स्तुवीत। *pf.* तुष्टाव। *ao.* अस्तावीत् or अस्तौषीत्, अस्तोष्ट। *ft.* स्तोष्यति। *ps.* स्तूयते। *pp.* स्तुत। *gd.* स्तुत्वा, ०स्तुत्य। *inf.* स्तोतुम्। *cs.* स्तावयति। *ds.* तुष्टूषति॥

स्तृ 'cover', V or IX, U. स्तृणोति or स्तृणाति। *pf.* तस्तार, तस्तरे। *ft.* स्तरिष्यति। *ps.* स्तीर्यते। *pp.* स्तृत। *gd.* स्तृत्वा, ०स्तृत्य। *cs.* स्तारयति। *ao.* अस्तार्षीत, अस्तरिष्ट, अस्तृत, and अस्तरीत्, अस्तरीष्ट अस्तीर्ष्ट (IX)। *ds.* तिस्तरिषति–ते, तिस्तरीषति–ते, (IX.) and तिस्तीर्षति-ते (V)॥

स्था 'stand', I, P. तिष्ठति। *pf.* तस्थौ। *ao.* अस्थात्। *ft.* स्थास्यति। *ps.* स्थीयते। *ao.* अस्थायि। *pp.* स्थित। *gd.* स्थित्वा, ०स्थाय। *inf.* स्थातुम्। *cs.* स्थापयति। *ds.* तिष्ठासति॥

स्ना 'dathe', II P. स्नाति। *pf.* सस्नौ। *ft.* स्नास्यति। *ao.* अस्नासीत्। *ben.* स्नायात्,। स्नेयात्। *ds.* सिस्नासति। *cs.* स्नायते। *pp* स्नात (but निष्णात 'proficient in')॥

स्निह् 'have affection, love', IV, P. स्निह्यति। *pf.* सिष्णेह। *ao* अस्निहत्। *ds.* सिस्निक्षति, सिस्निहिषति, सिस्नेहिषति। *pp* स्निग्ध, स्नीढ। *gd.* स्निहित्वा, स्नेहित्वा, स्निग्ध्वा, स्नीढ्वा॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पृश् 'touch', VI, P. स्पृशति। *pf.* पस्पर्श; पस्पृशुः। *ao.* अस्प्राक्षीत्। *ft.* स्प्रक्ष्यति। *ps.* स्पृश्यते *pp.* स्पृष्ट। *gd.* स्पृष्ट्वा, ०स्पृश्य। *inf.* स्प्रष्टुम्। *cs.* स्पर्शयति। *ds.* पिस्पृक्षति।

स्मि 'smile', I, A. स्मयते। *pf.* सिष्मिये। *ao.* अस्मयिष्ट। *pp.* स्मित। *gd.* स्मित्वा, ०स्मित्य। *cs.* स्मापयति or स्माययति। *ds.* सिस्मयिषते॥

स्मृ 'remember', I, P. स्मरति। *pf.* सस्मार। *ao.* अस्मार्षीत्। *ft.* स्मरिष्यति। *ps.* स्मर्यते। *gd.* स्मृत्वा, ०स्मृत्य। *inf.* स्मर्तुम्। *cs.* स्मारयति। *ds.* सुस्मूर्षते॥

स्रु 'flow' I, P. स्रवति। *pf.* सुस्राव। *ao.* असुस्रवत्। *ft.* स्रविष्यति। *pp.* स्रुत। *cs.* स्रावयति। *ds* सुस्रूषति॥

स्वप् 'repose' sleep', II, P. स्वपिति। *pf* सुष्वाप सुषुपुः। *ft.* स्वप्स्यति। *ao.* अस्वाप्सीत्। *ben.* सुप्यात्। *ds.* सुषुप्सत्। *cs.* स्वापयति-ते। *ps.* सुप्यते। *pp.* सुप्त॥

हन् 'kill' II, P. हन्ति; हतः; घ्नन्ति। *imp.* अहन्; अघ्नन्। *ipv.* हनानि, जहि, हन्तु; घ्नन्तु। *op.* हन्यात्। *pf.* जघान। *ao.* अवधीत्। *ben.* वध्यात्। *ft.* हनिष्यति। *ps.* हन्यते। *pp.* हत। *gd.* हत्वा, ०हत्य। *imp.* हन्तुम्। *cs.* घातयति। *ds.* जिघांसति॥

हस् 'smile, laugh at', I, P. हसति। *pf.* जहास। *ft.* हसिष्यति। *ao.* अहसीत्। *ps.* हस्यते। *cs.* हासयति-ते। *ds.* जिहसिषति। *pp.* हसित॥

हा 'leave', III, P. जहाति; जहति। *ipv.* जहानि, जहीहि, जहातु; जहतु। *pf.* जहौ, जहिथ or जहाथ। *ao.* अहासीत् or अहात्। *ft.* हास्यति। *ps.* हीयते। *ao* अहायि। *pp.* हीन। *gd.* हित्वा, ०हाय। *inf.* हातुम्। *cs.* हापयति। *ds.* जिहासति॥

हिंस् 'strike', VII, P. हिनस्ति। *imp.* अहिनत्; अहिंसन्। *ipv.* हिनसानि, हिन्धि, हिनस्तु। *op.* हिंस्यात्। *pf.* जिहिंस। *ao.* अहिंसीत्। *ft.* हिंसिष्यति। *ps.* हिंस्यते। *ao.* अहिंसि। *pp.* हिंसित। *cs.* हिंसयति। *ds.* जिहिंसिषति॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हु 'sacrifice' III, U. जुहोति । *pf.* जुहाव *or* जुहवांचकार । *ao.* अहौषीत् । *ft.* होष्यति । *ps.* हूयते । *pp.* हुत । *gd.* हुत्वा । *inf.* होतुम् । *cs.* हावयति । *ds.* जुहूषति । *int.* जोहवीति ॥

हृ 'take' III, U. हरति-ते । *pf.* जहार, जहर्थ; जह्रुः । *ao.* अहार्षीत् , अहृत । *ft.* हरिष्यति । *ps.* ह्रियते । *ao.* अहारि । *pp.* हृत । *gd.* हृत्वा, ०हृत्य । *cs.* हारयति । *ds.* जिहीर्षति-ते । *int.* जरीहर्ति ॥

ह्री 'be ashamed' III, P. जिह्रेति; जिह्रीतः; जिह्रियति । *imp.* अजिह्रेत् । *ipv.* जिह्रेतु । *op.* जिह्रीयात् । *pf.* जिह्राय; जिह्रियुः । *ao.* अह्रैषीत् । *pp.* ह्रीण *or* ह्रीत । *cs.* ह्रेपयति । *int.* जेह्रीयते । *ds.* जिह्रीषति ॥

ह्वे 'call' I, U. ह्वयति-ते । *pf.* जुहाव; जुहुवुः । *ao.* अह्वत्-त, अह्वास्त । *ft.* ह्वास्यते । *ps.* हूयते । *pp.* हूत । *gd.* हूत्वा, ०हूय । *inf.* ह्वातुम् । *cs.* ह्वाययति । *int.* जोहवीति । *ds.* जुहूषति-ते ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिशिष्ट ३.

Syllabuses for Sanskrit Grammar for the Innter-mediate and B. A. Examinations of the East punjab University :—

Intermediate.

(Grammar 25 marks—translation 35 = 60 marks).

In addition to Syllabus in grammar prescribed for the matriculation the candidates are expected to know the following:—

1. Declension of the following bases:—

(a) Ending in consonants : विश्वजित्, तमोनुद्, मरुत्, दृषद्, दिव्, पयोमुच्, वाच्, रुज्, सम्राज्, द्विश्, उपानह्, गिर्, पुर्, धनिन्, पथिन्, चन्द्रमस्, गरीयस्, पयस्, पुंस्, ज्योतिस्, ब्रह्मन्, आत्मन्, राजन्, अहन्, विद्वस्, युवन्, श्वन्, धीमत्, विद्यावत्, लघिमन्, वृत्रहन् and participle dases in अत्।

(b) Ending in vowels : मति, वारि, वायु, सखि, पति, अस्थि, अक्षि, नदी, भू, जरा, नृ, कर्तृ, पितृ, मातृ, भ्रातृ, स्वसृ, रै, गो and नौ।

2. Uses fo Cases.

3. Conjugation of the following roots in लट्, लङ्, लोट्, विधिलिङ् and लृट् :—

गुह्, चम्, क्रम्, सद्, मृज्, दश्, रञ्ज्, ध्मा, घ्रा, पा, स्था, कम्, भ्रम् जन्, व्यध्, कृत्, मुच्, लिप्, लुप्, विद्, सिच् इष्, प्रच्छ, कथ्, मृग्, गण्, रच्, अस्, इ, अन्, ईश्, ब्रू, वच्, शास्, शी, सू, हन्, या, जागृ, आस्, दुह्, लिह्, ही, भृ, दा, धा, पृ, भी, मा, हा, शक, श्रु, धु, सु, युज्, हिंस्, कृ, मन्, तन्, बन्ध्, मुष्, ग्रह्, ज्ञा, क्री and in लिट् of roots इ, हन्

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दा, बुध्, पच्, जन्, ग्रह्, यज्, वस्, स्वप्, व्यध्, स्तु, नी, राज्, विद्, जि, एध्, दुह् पद्, स्मृ, त्यज्, ह्वे, ग्रन्थ्।

4. Causals and Desiderative forms of prominent verbs.
5. Voices.
6. Compounds, exceptional forms excluded.
7. The following Tadhita Suffixes :—
   -a, -ya, -tva, -ta, -iman, -vat, -mat, -in, -vin, -min, -ita, -maya.

B. A.

(Grammar 25 marks—translation 30 = 55 marks).

An *intensive study* of the Syllabuses prescribed for the Matriculation and the Intermediate with the following additions:—

1. Conjugation of the following roots in लुङ्:—
   अस्, पा, भू, इ, स्था, सिच्, नश्, कुप्, गम्, कम्, श्री, पच्, प्रच्छ्, दह्, वह्, वस्, दृश्, नी, कृ, पठ्, वद्, बुध्, नम्, दिश्, दुह्, छिद्, मुच्।
2. Main uses of Tenses.
3. Nominal Verbs and the use of the Atmanepada and Parasmaipada.

Matriculation.

(Grammar 35 marks—translation 40 = 75 marks)

1. Ac-, hal- and Visarga Sandhis.
2. Change of n into ṇ and s into ṣ.
3. Declensions of simple bases and Sarva-nama.
4. Prominent feminine affixes.
5. Prominent uses of cases.
6. Numerals.
7. Degrees of comparision.
8. Conjugation of the following roots in लट्, लङ्, लोट्, विधिलिङ् and लृट्:—

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(a) भ्वादि—भू, हस्, पठ्, रक्ष्, वद्, पच्, नम्, गम्, दृश्, सद्, स्था, स्मृ, पा, and जी all Parasmaipada.

सेव्, लभ्, वृत्, वृध्, मुद्, सह्, ईक्ष्, all Atmanepada, and याच्, नी हृ all Ubhayapada.

(b) अदादि—अद्, अस्, स्तु, ब्रू, रुद्, दुह्, जागृ, स्वप्, हन्. विद्, शास्, इ all parasmaipada, and आस्, शी, अधि-इ all Atmanepada.

(c) जुहोत्यादि—हु P., भी P., दा U., भृ U.

(d) दिवादि—दिव्, नृत, व्यध्, नश्, शम्, श्रम् all Parasmai, and विद्, युध्, जन् all Atmane.

(e) स्वादि—सु U., आप् P., शक् P.

(f) तुदादि—तुद् P., इष् P., स्पृश् P., प्रच्छ् P., मृ A., विद् U. मुच् U.

(g) रुधादि रुध् U., भुज् युज् U.

(h) तनादि—तन् U., कृ U.

(i) क्र्यादि—क्री U., ग्रह् U., ज्ञा, U., मुष् P.

(j) चुरादि—चुर् U., चिन्त् U., तड् U., कथ् U., भक्ष् U.

9. Prominent Causal forms.

10. Voices—an elementary knowledge only.

11. Compounds—an elementary knowledge only.

12. Kṛidanta—use of only the following affixes:—

kta, ktva, ktavatu, tum, tavya, aniya, yat, satṛ and saṇac.

———

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिशिष्ट ४.

Questions on grammar set at the various examinations of the Punjab University and E. P. U.

Intermediate.

1935.

1. Expound the following samasas:—पितृसद्मगोचरः, याथार्थ्यविदः, अकालजलदोदयः, भिन्नघटात्, दलदरविन्द, अन्तर्गतबहुलबाष्पाकुलदृशम्, वारितरंगचंचलतरे।
2. How do you form the following words:—शुश्राव, विहातुम्, निगृह्यमाणः, चकार, उत्खाय, भेत्तुम्, श्रेयसाम्, सोढा, तप्तम्, प्रार्थयितव्यः।
3. Turn the following form active into passive voice:-

   अथ सीता समुत्पत्य वेपमाना च तं पतिम्।
   अपश्यच्छोकसंतप्तं चिन्ताव्याकुलितेन्द्रियम्॥

4. (a] Give locative singular of यति, and nominative plural of स्वसृ।

   (b) Give the feminins of श्वशुरः, आचार्यः, कर्मकरः।

1937.

I. Expound the samasas in QI.:—व्यपविद्धशष्पा, विशुद्धधीरैः, निषणमृगनाभिभिः, वृक्षवृत्तिव्यतिरिक्तसाधनः, गुरुवृत्त्यनुरोधेन। 5

2. Correct the following sentences:—

   (a) सर्वतः प्रासादस्य पुष्पवाटिका। (b) ग्रामस्य बहिर्यान्ति बालाः। (c) समागतं याचकं धनं देहि। (d) अनुसूया विद्वान् नारी बभूव। (e) प्रकृत्येव सीता रामं प्रियासीत्।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Or

Make short sentences to illustrate the meanings of:—वि-√नी, प्र-√वस्, परि-√त्रै, प्रति-√श्रु, अधि,√गम्। 5

.3 (a) Decline मति (f) महत् (m) and इदम् (n) in all cases and numbers. 3

(b) Conjugate √पा 'drink' in the Present (लट्), √हु in the Imperative (लोट्), √शक् in the Second Future (लृट्) and √आप् in the Imperfect (लङ्) 4

(c) Name the genders of संग्राम, दाराः, गो, वारि, सखि, मधु। 3

4- Give the Present Participle (Active), Past Participle (passive), and Indeclinable Past Participle (क्त्वान्त) forms of the following roots:—

√दा, √दृश्, √वच्, अनु- √भू, सम्-√कृ।

Or

Explain the formation of the following words:—
वैतणी, निषेदुषी, अमीमदत्, सिषविषुः, विबोधयेयम्, निर्मितम्, दाहात्म्यम् दुधुवुः अभूत्, ग्रैवम्, 5

1938.

1. Expound the samasas in Q 1:—मुरलामारुतोद्धूतम्, दीनमुखैः आकृष्टजीर्णाम्बरा, निरन्नविधुरा, अपास्तपिपालिके। 5

2. Explain and illustrate the main uses of the Accusative case in classical Sanskirt. 5

3. (a) Decline पयस्, नामन्, भृगु and अस्मद् in all cases and numbers. 4

(b) Conjugate √ज्ञा in the Present (लट्), √स्था in the Imperfect (लङ्), √वह in the Second Future (लृट्), and √दृश् in the Perfect (लिट्)- 6

4. Write brief grammatical notes on चुकोश, सस्वरम्, दिदृक्षया, गाङ्गैः, वेत्सि, कर्षन्, अध्युषिताः, उदन्वता, अवाप्य, व्यागाह्यत।

Or

Cive the Passive Past Participle (क्तान्त), Imfini-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

tive (तुमुन्नन्त) and Desiderative (सन्नन्त) forms of the following roots:—√भिद्, √जि, √दा, √हृ √वच्। 5

1939

1. Explain the compound forms of *ony five* of the following :—नक्तन्दिवम् , श्वशुरौ, ग्रामगामी, अर्धपिप्पली, सायाह्नः, गविष्ठिरः, नीलोत्पलम् , शाकपार्थिवः, रूपवद्भार्यः, किंसखा ।

Or

Expound the Samasas in Q 1. 5

2. Write grammatical notes on *any five* of the following :—द्विरगामिना, पित्र्यम्, विवक्षुः, शोचनीयता, पिनाकिनः, निर्विशकाः, कण्डूयन्ते, प्रतीपयेत् , अग्रसरः ।

3. Correct *any five* of the following :—

(a) नित्यमसावस्मभ्यमभिद्रोग्धुं यतते ।

(b) तद्दर्शनं प्रभृत्येवेदृशीं दशां नीतोऽस्मि ।

(c) प्रभवति खलु भवानात्मनः परिजनाय ।

(d) कच्चिद्रोचन्ते त्वां विकसितानीमानि कमलानि ।

(e) धन्योऽयं भिक्षुर्यस्य मनोऽहर्निशं सन्मार्गेऽभिनिविशते ।

(f) कार्यहेतोर्नाहं पारयामि क्षणमप्यत्र विश्रान्तुम् ।

(g) ग्रन्थरत्नमिमं मुद्राप्य कीर्तिरत्नं लप्स्ये ।

(h) विमर्शयित्वैव कार्यमारम्भितव्यम् ।

Or

Which of the the following is correct and why—
(a) ताम्रमुखा or ताम्रमुखी । (b) कुम्भपात् or कुम्भपदी । (c) स्थला or स्थली । (d) सकेशा or सकेशी । (e) मृदु or मृद्वी ।

1940

1. Expound the compounds in Question 1 :—
सत्यधर्मपथे, कृतजन्मसु, प्ररोहाभिमुखः, शशिमौलिसंश्रयः, रथोद्धतम् । 5

2. Write grammatical notes on—
जिष्णुः, वर्तितुम् , प्रष्टुमनाः, त्रपते, चिकीर्षवम् ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

3. (a) Decline श्वन्, महत्, सुधी, मधु, रिपु in Dative singnlar, Genetive dual and Locative plural. 5

(b) Conjugate √स्था in the Imperative first person, √इष् in the Present third person, √शक् in the Future second person, √प्रच्छ् in the Imperfect third person, and √दा in the potential first person. 5

4. Correct or justify the following sentences :—

(a) महती देवता ह्येषा नररूपेण तिष्ठति ।

(b) नाथसे किमु पतिं न भूभृताम् ।

(c) बहु जगद पुरस्तात्तस्य मत्ता किलाहम् ।

(d) यद्यद्रोचेत बिप्राणां तत्तद्द्याद्मत्सरः ।

(e) वहेलयित्वा महतः सहसे किमु जीवितुम् । 5

1941

1. (a) Decline सव, हरि, गौरी, मित्र, विद्वस् in nominative singular, dative dual and locative plural. 5

(b) Conjugate √मुष्, √युध्, √नश्, √ग्रह्, √कथ् in the Present third person, Imperative fiast person, Imperfect third person and Potential first person respectively.

2 Give the Passive Past Participles (क्तान्त), Infinitive (तुमुन्नन्त) and Desiderative (सन्नन्त) of *ony three* of the following roots:—

√गम्, √हृ, √कृ, √स्था, √ग्रह्, √दृश् ।

3. Correct the following sentences:—

(a) मुनित्रयं नमः । (b) अलमस्ति दैत्येषु विष्णुः । (c) रामेण बाणाद् हतो बाली । (d) अनाहृत्वैव मां यासि । (e) ममेयं महत्यभिलाषा । (f) शपामि ते सत्येन ।

Expound the compounds in Q. 1 :—नृशंसवृत्ते! जराभये! संस्मरणप्रवृत्तम् । व्याहृतिविस्तरेण । .... । [illegible]

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1942

5. (a) Decline वायु, गो, राजन्, नदी, वारि, वाच् in nomenative, accusative, instrumental, genitive, and locative respectively.

   (b) Conjugate √ पा (drink), √वच् प्रच्छ् √मुच् and √ हन् in the Present first person, futuse second person; Imperative third person, Imperfect first person, and Potential second person respectively.

   (c) Give the causal, active present participle and passive participle forms of any *two* of the following roots:—

   √श्रु, √कम्, √कृ, √ज्ञा ।

6. Give taddhita forms of शिव, लघु, and प्राण with अ (अण्) *iman* (इमन्) and *in* (इन्) suffixes respectively.

7. Account for the cases in the italics words in the following sentences :—

   (१) राजा सिंहासनम् अधितिष्ठति। (२) राजन्, अलं श्रमेण। (३) अलं मल्लो मल्लाय। (४) न मे चौराद् भयम्। (५) को रामस्य समो लोके।

Or

Expound and name the compounds under lined in Question I (Text)

1943

8. (a) Decline सखि in Nominative (प्रथमा), आत्मन् in Accusative (द्वितीया), अक्षि in Instrumental तृतीया), मति in Dative (चतुर्थी), पितृ in Genitive (षष्ठी), and अस्मद् in Locative (सप्तमी)

   (b) Conjugate √क्रम in the Present third person (लट् प्र० पु०), √ दृश् in the future second

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

person (लट् म० पु०), √ व्यध् in the Imperative first person (लोट् उ० पु०), √ जन् in the Imperfect first person (लङ् उ० पु०), and √ शक् in the Potential second person (लिङ् म० पु०)।

(c) Give the causal (णिजन्त), Desiderative (सन्नन्त) and Inferitive (तुमुन्नत) forms of any *two* of the following roots:—

√ वच्, √ हन्, √ ग्रह् and √ भुज्।

6. (a) Explain the formation of any *three* of the following words-—

विदुषी, मातुलानी, धैर्य, पौर, महिमन्, वाग्मिन्

(b) Account for the cases in the italics words in any *five* of the following sentences :—

(1) शत्रूनगमयत् स्वर्गम्। (2) विद्यया लभ्यते यशः (3) नमः शान्ताय तेजसे। (4) विघ्नेभ्यः पाहि सर्वदा। (5) सीता रघुपतेः प्रिया। (6) श्रेष्ठो लोकेषुः राघवः।

or

Expound and name any *five* of the following compounds :—

प्रतिदिनम्, राजपुरुषः, नीलकमलम्, शान्तमतिः, त्रिलोकी, धर्मार्थकाममोक्षाः।

1944

V (a) Decline वारि in Nom. (प्रथमा), पथिन् in Acc. (द्वितीया), विद्वस् in Inst. (तृतीया), पति in Dat. (चतुर्थी), मातृ in Geni. (षष्ठी) and इदम् Loc. (सप्तमी)।

(b) Conjugate √ सद् in the Present third person (लट् प्र० पु०) √ दुह् in the future second person (लृट् म० पु०) √ जन् in the Imperfect first person (लोट् उ० पु०) √ दृश् in the Imperfect first

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

person (लङ् उ० पु०;) and √ग्रह in the Potential second person (लिङ् म० पु०)

(c) Give the causal (णिजन्त), Desiderative (सन्नन्त), and Infinitive (तुमुन्नन्त) forms of any *two* of the following roots :—√ स्था, √वच्, √ मुच् and √नी ।

6. (a) Explain the formation of any *three* of the following words :—धात्री, रुद्राणी, कनकमय, महत्त्वा, मनस्विन्, सत्यवान् ।

(b) Account for the cases in the italics words in any *five* of the following sentences : —

(1) धूर्तः श्यामं 'वञ्चयति' । (2) मृगो 'बाणेन' हतः । (3) धनं यच्छति 'भिक्षवे' । (4) 'बिडालाद्' भीतः बालः । (5) 'विद्यार्थिनाम्' एष मतिमत्तमः । (6) गुणाः 'गुणज्ञेषु' गुणा भवन्ति ।

or

Expound and name *any five* of the following compounds :—यथाशक्ति, ज्ञाननिधिः, उत्तमकुलम्, शीतकिरणः, त्रिभुवनम्, धर्मयशसी ।

1945

V (a) Decline सखि in Nom. (प्रथमा), श्वन् in Acc. (द्वितीया), चन्द्रमस्, in Inst (तृतीया), नदी in Dat. (चतुर्थी), पितृ in Geni (षष्ठी), and अस्मद् in Loc. (सप्तमी).

(b) Conjugate √जन् in Present third person (लट् प्र० पु०), √शक् in future second person (लृट् म० पु०) √हन् in Imperative first person (लोट् उ० पु०), √व्यध् in Imperfect first person (लङ् उ० पु०) and √प्रच्छ् in Potential second person (लिङ् म० पु०)

(c) Give the causal (णिजन्त), Desideratives (सन्नन्त), and Infinitive (तुमुन्नन्त) persons of any *two*

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

of the following roots :—√गम्, √पठ्, √हन् and √भू।

VI a) Explain the formation of any *three* of the following words:—विसृष्टः, गमितः, कम्पितुम्, लभ्यम्, जीर्णः, and पक्वम्।

(b) Account for the cases in the italics words in any *five* of the following sentences:—

(1) अजां ग्रामं नयति। (2) दण्डेन सर्पो हतः। (3) अर्थिने द्रविणं देहि। (4) अत्र चोरात् भयम्। (5) नराणां नापितो धूर्तः। (6) विहगेषु गरुत्मान् श्रेष्ठः।

or

Give derivative words for any *five* of the following:—माता च पिता च। ग्रामस्य समीपम्। श्वेताः गावः यस्य सः। त्रयाणां पथां समाहारः। ग्रामं गतः। घन इव श्यामः कृष्णश्च अर्जुनश्च। वामे लोचने यस्याः सा।

1946

5. (a) Decline वारि in Nom. (प्रथमा) पथिन् in Acc. द्वितीया, पयस् in Inst. (तृतीया), राजन् in Dat. (चतुर्थी), मातृ in Geni (षष्ठी), and युष्मद् in Loc (सप्तमी).

(b) Conjugate √हन् in present third person (लट् प्र० पु०), √प्रच्छ् in future second person (लट् म० पु०) √शास in Imperative first person (लोट् उ० पु०) √ मुच् in Imperfect first person (लङ् उ० पु०) and √गण् in Potential second person (लिङ् म० पु०)

(c) Give the causal (णिजन्त), Desiderative (सन्नन्त) and Infinitive (तुमुन्नन्त) forms of any *two* of the following roots:—√कृ, √दृश्, √या, √गम्।

6. (a) Explain the formation of any *three* of the

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

following words :—संरक्ष्य, प्रयत्नः, विद्धि, अवध्यः स्पृहणीयः, हैमवतम् ।

(b) Account for the cases in thick type words in any *five* of the following sentences :—

(1) गां दोग्धि पयः। (2) रामेण बाणेन हतो बाली । (3) अलं मल्लो मल्लाय (4) हिमवतो गंगा प्रभवति। (5) मातुः स्मरति । (6) काव्येषु नाटकं रम्यम् ।

or

Give single derivative words for any *five* of the following :—

धर्मश्च अर्थश्च । अर्थम् अर्थं प्रति । समानः पतिः यस्याः सा । न ब्राह्मणः । नीलम् उत्पलम् । कृष्णं श्रितः । पिता च पुत्रश्च । वृकाद् भीतः ।

1947

5. Decline सखि in Nom. (प्रथमा), वायु in Acc· (द्वितीया), अहन् in Inst. (तृतीया), युवन् in Dat. (चतुर्थी), भ्रातृ in Gen. (षष्ठी), and किम् in Loc. (सप्तमी).

6. Conjugate √जन् in Present third person (लट् प्र० पु०),√हन् In Imperative second person (लोट् म० पु०) √शक् in Imperfect first person (लङ् उ० पु०), √ग्रह् in Potential second person (लिङ् म० पु०) and √मुच् in future first person (लृट उ०पु०).

7. (a) Explain the formation of any *three* of the following :—

पित्र्यम् , कौमारम् , हिरण्यम् , मुदितः, and वपुष्मान् ।

(b) Give the causal (णिजन्त), Desiderative (सन्नन्त) and Infenitive (तुमुन्नन्त) of any *two* of the following roots:—

ग्रह , √हन् , √ज्ञा, √मुच्

(c) Name and expound any *five* of the following compounds :—

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिलोकी, श्वेताम्बरः, यथाशक्ति, घनश्यामः, रामकृष्णौ, जगदीश्वरः ।

Or

Correct and rewrite the following:—

(1) मित्र, अलं गमनात् । (2) नास्ति मे चौरेण भयम् । नृपः सिंहासने अधितिष्ठति । (4) स बाणात् शत्रुं हन्ति । (5) कालिदासः कविभिः श्रेष्ठः ।

B. A. Examination. 25 marks.

1939

1. Expound the following compounds —छायाबद्धकदम्बकम् । शिथिलज्याबन्धम् । आरूढबहुप्रतर्कम् । पर्णाभ्यन्तरलीनताम् । तनुभावनष्टसलिला । (from question I on text.)
2. write grammatical notes on the following :— मौर्वी, व्यायतत्वात्, वितन्वति, बाहूत्क्षेपेम्, एष्यतीः, अनारतम्, आरुरुक्षतः, रात्रिदिवम्, अक्षय्यम्, अपहारयेत् ।
3. (a) Conjugate √श्रि in the Aorist (लुङ्), √हा in the Present (लट्). √अस् (be) in the Imperfect (लङ्) and √वह् in the Perfect (लिट्),

(b) Decline अहन् (day) and इदम् (masculine only) in all cases and numbers.

4. (a) Frame nouns from सुभग, सुहृद्, मुनि and युवन् ।

(b) Frame adjectives from देव, ग्रीष्म, निशा, शरण ।

(c) Give one word for each of the following :—

(i) सुस्नातं पृच्छति इति ।

(ii) दशरथस्य अपत्यं पुमान् ।

(iii) दण्डम् अर्हति इति ।

1940.

1. Expound the compounds in Q 1 :— सर्वभोग्ये, स्तम्भितबाष्पवृत्तिकलुषः, तनयाविश्लेषदुःखै, निषण्णहरिणाः, तीर्णजलधिः ।
2. Write grammatical notes on the following :—

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुहुधि, प्रपित्सुना, ईदिवान्, दौष्यन्तिः, वत्सलयति, शारङ्गहस्ता, दिवस्पतिः, विजहति, व्यवसाययन्ति, अयुङ्क्त ।

3. Conjugate √दुह् in the Present (लट्), √ब्रू in the Imperfect (लङ्), √मुच् in the Second Future (लृट्) and √कृ in the Perfect (लिट्),

4. Correct the following :—

(a) सर्वतः प्रासादस्य जाग्रन्ति दण्डधारिणः ।

(b) देव्याः वसुमत्या अन्तरेण उपालब्धोऽस्मि ।

(c) आह्नो निवत्स्यति समं हरिणाङ्गनानाम् ।

(d) उपस्थितां होमवेलां गुरुं निवेदयामि ।

1941.

1. Expound the compounds underlined in Q x :—
निरायतपूर्वकायाः, मृगजवाक्षमया, सामान्यप्रतिपत्तिपूर्वकम्, स्वहस्तधृतदण्डम्, अव्यक्तवर्णरमणीयवचःप्रवृत्तीन् ।

2. Write grammatical notes on the following :—
इष्टिपशुमारम्, तपस्यति, अपेततमसि, स्त्रैणम्, लेलिह्यसे, ततम्, दर्शयामास, सुषुवे, दाक्षायणी, अनुकारिणि ।

3. (a) Conjugate √शास् in the Present (लट्) and √सृज् in the Perfect (लिट्)।
(b) Decline यशस् and अस्मद् in all cases and numbers.

4. (a) Name the gender of भय, निधि, द्वीप, दाराः, वह्नि, स्रज्, मन्त्र, संग्राम, यशस् ।
(b) Give one word for each of the following :—

(i) कविः इव आचरति ।

(ii) शोभना दन्ता अस्याः । or पुनःपुनः पृच्छति ।

(iii) गङ्गायाः समीपम् ।

(iv) इन्द्रस्य भार्या ।

(e) Make five sentences, each containing any form derivd form प्र- √हृ, आ- √हृ, सं- √हृ, वि- √हृ परि- √हृ ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

B. A. 1942

Attempt *any five* of the following :—

(a) Name and expound the Compounds italics in questien I (Text).

(b) Write grammatical notes on *any five* of the following :—

उपासते । (ii) अवधीः । (iii) पिधतुम् । (iv) विरमति । (v) अन्यत् । (vi) नमस्यन्ति । (vii) प्रसीद ।

(c) Conjugate *any five* of the following roots in लुङ् third person singular:—

(i) भू , (ii) कृ, (iij) ह, (iv) पठ् , (v) नी, (vi), गम् (vii) वस् ।

(d) Conjugate *any five* of the following roots in लट् third person singular :—

(i) भू, (ii) कृ, (iii) अस् 'be', (iv) हन् , (v) दृश् , (vi) दा, (vii) बुध् ।

(e) Decline राजन् and पति in all cases and numbers.

(f) Account for the case endings (विभक्ति) in *any five* of the following—words italics—

(i) भगवन् नमस्ते। (ii) स्वस्ति वाम्। (iii) अलं तावद् एतेन। (iv) तस्मै कोपिष्यामि। (v) धिग् अस्मान्। (vi) आ विषादसमयात्। (vii) कस्य हेतोः।

1943

Attempt *any five* of the following :—

(a) Name and expound the compounds italics in Question I (text).

(b) Write grammatical notes on *any five* of the following :—

(i) तपांसि (ii) अब्भिः। (iii) महान्तः। (iv) आसन् (v) दम्पत्योः। (vi) प्रतिविधीयतां। (vii) लोडुम्।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(c) Conjugate *any five* of the following roots in लुङ् third person Singular :—

(i) इ, (ii) स्था, (iii) वस् , (iv) दृश् , (v) नी (vi) कृ, (vii) पठ् ।

(d) Conjugate *any five* of the following roots in लट् third person :—

(i) पा, ii) इ, (iii) नश् , (iv) कम् , (v) प्रच्छ् (vi) दुह् , (vii) मुच् ।

(e) Decline पितृ and युवन् in all cases and numbers.

(f) Account for the case ending (विभक्ति) in *any five* of the following words italics :—

(i) मां तु वेद न कश्चन । (ii) येन सर्वमिदं ततम् । (iii) धर्मासनाद् विशति वासगृहं नरेन्द्रः । (iv) यानि प्रियासहचरश्चिरमध्यवात्सम् । (v) रामे चैतन्यमाहितम् । (vi) धिक् प्रहसनम् । (vii) नमो वः ।

1944

Attempt *any five* of the following :—

(a) Name and expound the compounds italics in Question I (Text).

(b) Write grammatical notes on *any five* of the following :—

(i) रक्षोभिः । (ii) ग्रावा । (iii) रोदिति । (iv) महिम्नाम् । (v) अन्यत् । (vi) व्यतिषजति । (vii) पिबातुम् ।

(c) Conjugate *any five* of the following roots in लुङ् second person singular :—

(i) अस् , (ii) पा, (iii) इ, (iv) नी, (v) वस् , (vi) दृश् , (vii) कृ ।

(d) Conjugate *any five* of the following roots in लोट् third person :—

(i) गम् , (ii) दृश् (iii) सद् , (iv) हन् , (v) कृ,(vi) ग्रह् , (vii) ज्ञा ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(e) Decline नदी and युष्मद् in all cases and numbers.

(f) Account for the case-ending (विभक्ति) in *any five* of the following words italics :—

(i) स्वस्ति वाम् । (ii) इमां परिददामि मृत्यवे । (iii) धिक् प्रहसनम् । (i) वन्दे भगवतीम् । (v) वेदानां सामवेदोऽस्मि । (vi) ज्ञानाद् ध्यानं विशिष्यते । (vii) नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व ।

1945

I (a) Write down in *third person singular* the Aorist (लुङ्) of—

√गम्, √प्रच्छ्, √पठ्, √and स्था ।

(b) Point-out, in each case the sense conveyed by the tenses used in the following examples :—

(१) अयमागच्छामि । (२) रामो वनं जगाम । (३) मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः । (४) पश्चात् त्व तत्र गमिष्यसि ।

c) make sentences to illustrate the uses of:—

(1) √जि 'to conquer' also √जि preceded by वि,

(2) √गम्, preceded by सम् and √दा 'to give' also √दा preceded by आ ।

(e) Write down grammatical notes on the words italics words in Question V (text).

1946

I. (a) Give the second person singular forms of the लुङ् of the following roots :—

√श्री, √नम्, √नी and √बुध् ।

(b) Write sentences illustrating the difference in meaning in

लङ्, लुङ्, and लिट् ।

(c) Write sentences to illustrate the uses of √कृ with उत्, √गृ with सम् and √ज्ञा with आ ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(d) Write sentences using the following nouns as verbs in their correct meanings :—
पुत्र, नमस्, अप्सरस् and त्रिदृस्।

(e) Use the following pairs in sentences, fully bringing out their difference in meanings :–
प्रयुङ्क्ते and प्रयुनक्ति। आयच्छेत and आयच्छति। संप्रवदन्ते and संप्रवदन्ति।

2. (a) Make feminine forms from *any three* of the following :—क्षत्रिय, नील, चौर and अश्व।

(b) Give single derivative words for *any three* of the following :—कृष्णस्य समीपम्। जाया च पतिश्च। हंसी च हंसश्च। कुत्सितः सखा। ग्रामं गच्छति।

3. (a) Distinguish between the members of *any three* of the following pairs :—सुहृत् and सुहृदयः। महत्सेवा and महासेवा। स्त्रीसभा and स्त्रीसभम्। स्थली and स्थला। ओदनं भुङ्क्ते and महीं भुनक्ति।

(b) Use compounds for *any three* of the following :—न अश्वः। त्रयाणां पन्थाः। मूर्खो भ्राता यस्य। अर्जुनश्च युधिष्ठिरश्च। अहनि च दिवा च।

(c) Change the voice of *any three* of the following :—अजां ग्रामं नयति। खादन् न गच्छामि। हसन् न जल्पे। विचारमूढः प्रतिभासि राजन्। गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पंडिताः।

4. State half a dozen examples in which the Dative case is required to be used in Sanskrit :–

Or

Name sentences to illustrate the use of *any three* of the following :—वा, ननु, अपि, दिष्ट्या, हि।

5. (a) Correct *any four* of the following sentences, stating reasons for your corrections :—

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(1) उपतिष्ठामि सूर्य ! त्वां किल्विषध्वंसकारक ।
(2) नाथसे किमु पतिं न भूभृताम् ।
(3) कृष्णायति बुद्धिपराक्रमेण ।
(4) अलमस्मि शृगालस्य राजाऽस्मि वनवासिनाम् ।
(5) वसादोऽपि प्रसादाय रोचते मां जनार्दनः ।

(b) What cases are governed by *any three* of the following :—वषट्, अनु, एनय, अधि ।

1947

1. (a) Decline fully *any three* of the following :— मातृ, युवन्, इदम् and सखि ।

(b) Conjugate fully *any three* of the following roots :—√गम् in Perfect (लिट्), √अद् in Imperative (लोट्), √भू in Aorist (लुङ्) and √क्री in Imperfect (लङ्) ।

(c) Give suffixes (प्रत्ययाः) used in forming *any three* of the following :—प्राप्य, क्षामः, सोढुम्, पिपासति and गन्तव्यम् ।

2. a) Make feminine forms from *any three* of the following :— ब्रह्मा, स्थल, पति and स्वामिन् ।

(b) Give single derivative words for *any three* of the following :—नद्याः समीपम्, कुशाश्च काशाश्च, मृगी च मृगाश्च, मक्षिकाणामभावः मृदोविकारः ।

3. (a) Give compound forms of *any three* of the following :—त्रयाणां लोकानां समाहारः । सुन्दरः पन्था । नक्तं च दिवा च । मया आदिष्टः । विसगुणैर्निगडितौ पादौ यस्य सः ।

(b) Distinguish between the members of *any three* of the following pairs :—

महाधीः and महद्धीः । राज्यं भुनक्ति and अन्न भुङ्क्ते । पीताम्बरः and पीताम्बरम् । इक्षुच्छाया and इक्षुच्छायम् ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(c) Change the voice of *any three* of the following :—गां पयो दोग्धि । राजाह कथ्यतां याथातथ्येन त्वया । केनः देवोमातरिश्वा बद्धः ।

4. State half a dozen examples in which the Instrumental or the Ablative case in Sanskrit is required to be used.

Or

Frame sentences to illustrate the use of *any three* of the following :—

अपि, बत, हन्त, दिष्ट्या, and नूनम् ।

5. (a) Correct *any four* of the following sentences, stating reasons for your corrections :—
(1) भगवन्तं सूर्यमुपतिष्ठस्व । (2) हितान्न संशृणुते स किम्प्रभुः । (3) अलं महीपाल तव श्रमाय । (4) क्रोधं विनयति । (5) अयं बाला मञ्चेऽधिशेते । (6) कृष्णो मह्य दयते ।

(b) What cases are governed by *any three* of the following :—स्वाहा, उपरि, अभितः, हा ।

B.

B. A. Hons. 30 marks.

1940.

1. Rewrite the following effecting Sandhis :—
(a) अमी आगच्छन्ति ऋषिपुत्राः । (b) अस्मिन् उपवने उपविश । (c) पुनः चक्रिन् त्रायस्व माम् । (d) अधोक् हरिः रमणीयां धेनुम् । (e) अहःअहः आख्यानं श्रावय । and (f) काव्यम् तत् टीकते पण्डितः । 3

2. (a) Decline fully *any three* of the following :—
गो, सखि, तिर्यच् (पुं०), अदस् (पुं०) and अहन् । 6

(b) Give the feminine froms of *any four* of the following :—बहु, पाचक, ब्रह्मन्, उपाध्याय (meaning 'female preceptor') अग्नि and सुकेश । 4

III. (a) Conjugate fully the roots—
(1) भुज in Imperative (लोट्), (2) जन् in Second

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Future (लट्) and (3) ब्रू (A) in Past Perfect(लिट्) 3.

(b) Give the forms of the roots :—

(1) अस् (be) in Imperative Mood (लोट्) second person singular, (2) विद् (know) in Imperfect Past(लङ्) second person singular and (3) वच् in Aorist (लुङ्) third person singular. 3

(c) Give the causative forms of लभते, देग्धि and रोहति। 3

IV. (a) Name and expound *any three* of the following compounds :—

पारेसमुद्रम्, सुदति, प्रियजानिः, अर्धर्चः, द्वीपम्, त्रिलोकी, and जरद्गवः। 3

(b) Form compounds from *any three* of the following :—

(1) पञ्च षड् वा (वस्तूनि), (2) उन्नता नासिका यस्य सः, (3) ग्रामस्य अर्धम्, (4) इक्षूणां छाया, (5) माता च पिता च, (6) हरश्च हरिश्च। 3

(c) Form *any three* of the following primary (कृत) or secondary (तद्धित) derivatives and illustrate them in sentences of your own :—

(1) विज्+क्त (त); जि+क्वरप् (वर) सह+तुमुन् (तुम्); (4) from सर्वलोक in the sense of 'belonging to all worlds'; (5) from अस्मद् in the sense of mine'; (6) from विनता in the sense of 'Vinatā's son'. 3

(d) Distinguish between the two words in *any three* of the following pairs :—

(1) देवनाम् प्रियः and देवप्रियः। (2) सुगन्धः and सुगन्धिः।(3) उत्तिष्ठति and उत्तिष्ठते। (4) पुत्रीयति and पुत्रायते। (5) महत्सेवा and महासेवा। 3

V. Correct the following, giving reasons :—

(1) कैकेयी रामेण वनमगयत्।

(2) दिदृक्षामि समुद्रमहम्।

(3) क्षणेन भीषणं युद्धं अप्रवर्तत।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(4) सो माम् सन्दृष्ट्वा सुखी जातः ।
(5) परिश्रान्तः कार्याद् विरमते ।
(6) शता नराः अत्र आगच्छन्ति । 6

1941

I. Rewrite the following, making *Sandhis* where necessary :—

(a) तान् छत्रिणः आह्वय । (b) सः प्रातः नदीं गच्छति । (c) हरिः रम्ये फले अश्नाति । (d) आगच्छति अयं तव आत्मजः । 2

II. (a) Decline fully *any three* of the following :—
पथिन्, आशिस्, पुंस्, तस्थिवस्, and इदम् (स्त्री०) । 6

(b) Conjugate fully :—

दुह् (P). in the Imperfect Past (लङ्), भी in the Imperative (लोट्), and स्मृ in the Aorist (लुङ्). 6

(a) Recognise fully *any three* of the following forms, stating the roots from which they are derived :—
सोढा, पिहितम्, निषेदुषी, अरोदि and तोष्टूयते । 3

III. (a) Give the feminine forms of *any three* of the following :—
श्वशुर, श्वन्, इन्द्र, हिरण्मय, and वृषल । 3

(b) Give single derivative words for *any four* of the following :—

(1) हन्तुमिच्छुः, (2) कलहं करोति, (3) द्रोणस्य अपत्यं पुमान्, (4) प्रावृषि भवम्, (5) अतिथिषु साधुः, (6) पितुः ईषत् ऊनः, and (7) कृष्णः इव आचरति । 4

(c) Distinguish between the words in *any three* of the following pairs :—
(1) राज्ञा पूजितः and राज्ञः पूजितः । (2) अर्थी and अर्थवान् । (3) स्थूलाक्षा and स्थूलाक्षो । (4) यवनी and यवनानी । (5) सीमन्तः and सीमान्तः । (6) पीताम्बरम् and पीताम्बरः । 3

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

IV. (a) Dissolve and name *any three* of the the following compounds :—

सपत्नी, छायाद्रुम, उत्तरपूर्वा, श्रुतपूर्वम् , प्रष्टुमनाः । 3

(b) Form compounds from *any three* of the following:—

(1) लब्धः श्रीः येन सः । (2) अल्पा मेधा यस्य सः । (3) अन्यत् नगरम् । (4) अन्धं तमः । (5) राज्यस्य धूः । (6) रात्री च दिवा च । (7) पंकज इव अक्षिणी यस्याः सा ।

V. (a) Frame or quote sentences to illustrate the use of *any three* of the following :—

किमुत, उत्सुक, संक्रुध, क्लृप् and अन्तरेण ।

(b) Correct the grammatical mistakes, if any, in the following, stating reasons :—

(1) स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः ।

(2) सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ।
... ...तत्क्षामय त्वामहमप्रमेयम् ।।

(3) लोकान्विश्वासयित्वैव ततो लुम्पेद्यथा वृकः ।

(4) दुष्यन्त इन्द्रस्य सिंहासनेऽधितस्थौ ।

1942

1. (a) Decline *any three* of the following :—

नृ, वृत्रहन् , अदस् , (f), गिर् and अस्थि ।

(b) Conjugate fully any *three* of the following :—

रुध् (A) in the Imperfect (लङ्), ग्रह् (p) in the second future (लृट्), जि in the Aorist (लुङ्) and भज् (p) in the prefect (लिट्).

(c) Recognize fully *any three* of the following forms stating the roots from which they are derived :—

जग्ध, वत्स्यन्ति, अधुक्ष, बिभेति, पेतुषि ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2. (a) In what senses is the feminine affix added in:—

भवानी, हिमानी and यवनानी ।

(b) Give single derevative words for *any four* of the following:—

(1) न्यायादनपेतम् । (2) धुरं वहतीति । (3) वनानां समूहः । (4) अश्वानं गच्छति । (5) सुस्नायं पृच्छति इति । (6) स्त्रीणां समूहः ।

3. State the main senses of the Instrumental case, adding suitable illustrations.

Write notes on the senses denoted by the case affixes in any *three* italics words in the following:—

(१) चर्मणि द्वीपिनं हन्ति । (२) वाताय कपिला विद्युत् । (३) राज्ञः पूजितः । (४) मातुः स्मरति । (५) अध्ययनात्पराजयते ।

4. (a) Distinguish between the words in any *three* of the following pairs.

(1) आचार्या and आचार्यानी । (2) पश्चिमरात्रि and पश्चिमरात्रः । (3) प्रक्रामति and प्रक्रमते । (4) राजवान् and राजन्वान् । (5) आकृष्टधनुः and आकृष्टधन्वा ।

(b) Frame or quote sentences to illustrate the use of *any three* of the following :—

√धृ (to owe), √ईश्, आरात्, अभि + √क्रुध् and दक्षिणेन ।

(c) Correct the grammatical mistakes, if any, in any *three* of the following sentences stating reasons :—

(1) आपृच्छ पुत्रकृतकान् हरिणान् द्रुमांश्च । (2) परदारास्मि भद्रं ते । (3) विजयिष्ये रणे पाण्डूनिति मे निश्चितं मनः । (4) परशंकामलं कर्तुं गृह्यतां भरतोह्यियम् । (5) उत्सादयिष्यान्नेव सवराज्ञः ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

5. (b) Name and expound *any three* of the following compounds :—

(1) दक्षिणस्याः पूर्वस्याश्च दिशोऽन्तरालम् । (2) पूर्वं विज्ञातः । (3) कुत्सितः सखा । (4) शोभना दन्ता यस्याः सा । (5) अन्यस्मिन् जन्मनि ।

1945

1. (a) Decline fully any *three* of the following :-
मति, पथिन्, अस्मद् (m) and मधु ।

(b) Conjugate fully any *three* of the following roots :—
√यज् in perfect (लिट्) √कृ in Imperative (लोट्), √गम् in Aorist (लुङ्) and √हन् in Imperfect (लङ्) ।

1945

1. (a) Decline fully *any three* of the following :—
मति, पथिन्, अस्मद् (m) and मधु ।

(b) Conjugate fully *any three* of the following notes :—
√यज् in Perfect (लिट्), √कृ in Imperative (लोट्), √गम् in Aorist (लुङ्) and √हन् in Imperfect (लङ्) ।

(c) Give the suffixes (प्रत्ययाः) used in forming *any three* of the following words :—
शुष्कः, सोढुम्, प्रणत्य, दित्सति, अकृत ।

2. (a) Make feminine forms from *any three* of the following :—पति, कुमार, नद and नगर ।

(b) Give single derivative words for *any three* of the following :—

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूपस्य योग्यम्। कुत्सितो राजा। कुत्सितः पुरुषः। माता च पिता च। विरूपः पन्थाः।

3. (a) Distinguish between the members of *any three* of the following pairs :—
दण्डपाणिः and पाणिदण्डः। पञ्चनदः and पाञ्चनदः। रथाश्वः and अश्वरथः। चतुर्मुखः and चतुर्मुखम्। प्रियसुतः and सुतप्रियम्।

(b) Use compounds for *any three* of the following :—न स्त्री न पुमान्। न ब्राह्मणः। कुम्भं करोति। महतः सेवा।

(c) Change the voice of *any three* of the following :—अजां ग्रामं नयति। नीरसतरुरिह विलसति पुरतः। पश्य लक्ष्मण, पम्पायां बकः परमधार्मिकः। मोहभिया बन्धुजनदर्शनमपि तेन परिहृतम्।

4. State half a dozen examples in which the Accusative case is required to be used.

Or

Name sentences to illustrate the use of *any three* of the following :—

खलु, वत, द्वा, एव, किल।

5. (a) Correct *any four* of the following, stating reasons for your corrections :—

(1) देहि मां वाजिनं राजन् गजेन्द्रं वा मदालसम्।
(2) का दिनश्रीर्विनार्कस्य का निशा शशिने विना।
(3) लक्ष्मणस्य समं रामः काननं गहनं ययौ।
(4) नमस्त्वां चन्द्रचाण्डाल जनसन्तापकारक!
(5) स्वस्ति स्याच्चव राजेन्द्र! साधयामो गृहान् वयम्।

(b) State what cases are governed by *any three* of the following :—

नाना, स्वाहा, पृथक्, ऋते।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1946

1\. (a) Decline fully *any three* of the following :—
पितृ, श्वन्, अदस् (m) and राजन्।

(b) Conjugate fully *any three* of the following notes :—√वस् in Perfect (लिट्), √जन् in Imperative (लोट्), √शास् in Aorist (लुङ्) and √नी Imperfect (लङ्)।

(c) Give the suffixes (प्रत्ययाः) used in forming *any three* of the following words :—
जीर्णः, वोढुम्, अधीत्य, बुभूषति, अगमत्।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लघुसिद्धान्त कौमुदी

उपेन्द्रविवृति तथा भाषा टीका सहित

विवृतिकार पं० विश्वनाथजी शास्त्री "प्रभाकर"
आचार्य श्री सरस्वती संस्कृत विद्यालय "खन्ना"

सुन्दर छपाई-कागज। मूल्य ३६८ पृष्ठ की पुस्तक का केवल १॥) छात्रों को कमीशन काटकर लागत दाम से भी कम केवल १।) में।

(१) ह्रस्व-दीर्घ-प्लुत भेदों के चक्र (२) आभ्यन्तर और बाह्य प्रयत्नों के दो चित्र (३) सन्धि प्रकरण में मूल के प्रयोगों का सन्धिविच्छेद (४) विशेष प्रयोगों की सिद्धि का प्रकार (५) सूत्र-विषयक सुभाषितों का उल्लेख (६) अव्ययों के अर्थ (७) अकर्मक और सकर्मक धातुओं का निर्णय (८) कर्त्ता और कर्म आदि का उक्त और अनुक्त का विचार (९) कोष्ठक में प्रथम मध्यम और उत्तम पुरुष का विचार (१०) चित्र में परस्मैपद और आत्मनेपद की व्यवस्था (११) चक्र में धातुओं के अनुबन्ध की इत्संज्ञा का फल (१२) धातुओं के मूल में न दिये गये रूपों के विशेष उच्चारण और उनकी सिद्धि (१३) तद्धित प्रकरण के सब सूत्रों के अर्थ। इनके अतिरिक्त परिशिष्ट में—(१४) लिङ्ग के बोध के लिये लघुलिङ्गानुशासन दे दिया है। (१५) व्याकरण, सूत्र, वार्त्तिक, भाष्य, और व्याख्यान के लक्षण और उदाहरण दिये गये हैं। (१६) व्याकरण के चार अनुबन्ध, पांच सन्धियों का विवरण (१७) विद्यार्थी के लिये लेखोपयोगी नियम और चिन्ह (१८) प्रायः अनुवाद में होने वाली अशुद्धियाँ और उनका संशोधन (१९) अनुवाद के लिये उपसर्ग साथ लग जानेसे धातुओं का अर्थ भेद भाषार्थ सहित (२०) लघुकौमुदी के मूल तथा टिप्पणी में आए हुए समस्त प्रयोगों का संग्रह तथा उनका हिन्दी में अर्थ (२१) अव्यय, धातुपाठ आदि का हिन्दी में अर्थ। भाषाटीका भी साथ दे दी है। काशी, बिहार, तथा पंजाब के परीक्षाओं के प्रश्न पत्र भी हैं। इन उपरोक्त विशेषताओं के पढ़ते ही आप स्वयं अनुभव करेंगे कि पुस्तक छात्रों के लिये कितनी अधिक उपयोगी है।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नया सप्तम संस्करण छप कर तैयार है।

अनुवाद-चन्द्रिका

लेखक—

श्रीचक्रधर "हंस" एम० ए० शास्त्री, हिन्दी प्रभाकर

इस पुस्तक में हंस जी ने बालकों की कोमल बुद्धि का ध्यान रखते हुए इतनी सरलता से अनुवाद सीखने की प्रणाली दी है जिसे थोड़े ही ध्यान देकर पढ़ने से व्याकरण ज्ञान के साथ साथ अनुवाद की आशातीत योग्यता प्राप्त हो जाती है। क्योंकि इसमें छोटे-छोटे और सरल वाक्यों द्वारा व्याकरण को समझाते हुए अनुवाद की परंपरा बांधी गई है। इसकी उपयोगिता इसी से सिद्ध है कि इसके ६ संस्करण हाथों हाथ बिक गये और यह सुन्दर सातवाँ संस्करण छप कर तैयार है।

इसमें—(१) अनुवादार्थ महाकवियों के सरस गद्य-पद्य संग्रह है। (२) अशुद्धि-संशोधन (३) संस्कृत में पत्र लेखन शैली (४) वाच्य परिवर्तन (५) धातु से कृदन्त रूप बनाना (६) अनुवादार्थ गद्य संग्रह (७) लोकोक्ति-संग्रह पंजाब यूनिवर्सिटी की मैट्रिक तथा प्राज्ञ परीक्षा, पटना यूनिवर्सिटी की मैट्रिक परीक्षा, काशी गवर्नमेंट संस्कृत कालेज की प्रथमा परीक्षा यू. पी. हाई स्कूल बोर्ड परीक्षा, बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी परीक्षा। इन सब परीक्षाओं के प्रश्न पत्र भी साथ दिये हैं। इसलिये सहानुभूति के साथ छात्रों को हम परामर्श देते हैं कि वे एक बार तो अवश्य इससे लाभ उठावें। मूल्य केवल २।)। छात्रों से कमीशन काटकर २) रु०।

संसार भरकी हिन्दी संस्कृत पुस्तकें नीचे लिखे पते से मंगाएँ।

मोतीलाल बनारसी दास

पोष्ट बक्स नं० ७५,

किनारी बाजार	चौक	बांकीपुर
दिल्ली	बनारस	पटना

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.